प्रौढ-रचनानुवादकौमुदी

नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गयी संस्कृत-व्याकरण,
अनुवाद और निबन्ध की पुस्तक

लेखक

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी), एम०ओ०एल०, डी० फिल्०,
पी० ई० एस० (अ० प्रा०), विद्याभास्कर, साहित्यरत्न, व्याकरणाचार्य

निदेशक

विश्वभारती अनुसंधान परिषद्

ज्ञानपुर (वाराणसी)

प्रणेता—'अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन', 'संस्कृत-व्याकरण',
'संस्कृत निबन्ध-शतकम्' (तीनों उ० प्र० शासन द्वारा सम्मानित),
'भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र', 'राष्ट्र-गीताञ्जलिः' आदि।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

समर्पण

इदं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः
पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः ।

(ऋग्वेद १०.१४.१५)

संस्कृत भाषा के प्रचार और प्रसार
में संलग्न
संस्कृत-प्रेमी जनता की
सेवा में
सस्नेह समर्पित।

कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

विषय-सूची
विवरण

परिशिष्ट

भूमिका

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी ने प्रौढ-रचनानुवादकौमुदी का निर्माण करके उस काम की पूर्ति की है जो रचनानुवादकौमुदी से आरम्भ हुआ था। मैं स्वयं संस्कृत व्याकरण और साहित्य का इतना ज्ञान नहीं रखता कि पुस्तक के गुण-दोषों की यथार्थ समीक्षा कर सकूँ। परन्तु उसका स्वरूप ऐसा है जिससे मुझको यह प्रतीत होता है कि वह उन लोगों को निश्चय ही उपयोगी प्रतीत होगी जिनके लिए उसकी रचना हुई है। मैं संस्कृत ग्रन्थों को पढ़ता रहता हूँ। कभी-कभी संस्कृत में कुछ लिखने का भी प्रयास करता हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि इस पुस्तक से मेरे जैसे व्यक्ति को सहायता मिलेगी और कई भद्दी भूलों से त्राण हो जायेगा। यों तो संस्कृत के प्रामाणिक व्याकरणों का स्थान दूसरी पुस्तकें नहीं ले सकतीं, फिर भी जिन लोगों को किन्हीं कारणों से उनके अध्ययन का अवसर नहीं मिला है, उनके लिए प्रौढ-रचनानुवादकौमुदी जैसी पुस्तकें वस्तुतः बहुमूल्य हैं।

नैनीताल,
जुलाई, ७, १९६०

(डॉ०) सम्पूर्णानन्द
मुख्यमन्त्री,
उत्तर प्रदेश

आत्म-निवेदन

(१) पुस्तक-लेखन का उद्देश्य—यह पुस्तक कतिपय विशेष उद्देश्यों को लक्ष्य में रखकर लिखी गयी है। उनमें से विशेष उल्लेखनीय ये हैं—(क) संस्कृत के प्रौढ विद्यार्थियों को प्रौढ संस्कृत सिखाना। (ख) अति सरल और सुबोध ढंग से अनुवाद और निबन्ध सिखाना। (ग) २ वर्ष में प्रौढ संस्कृत लिखने और बोलने का अभ्यास कराना। (घ) अनुवाद के द्वारा सम्पूर्ण व्याकरण सिखाना। (ङ) संस्कृत के मुहावरों का वाक्य-रचना के द्वारा प्रयोग सिखाना। (च) प्रौढ संस्कृत-रचना के लिए उपयोगी समस्त व्याकरण का अभ्यास कराना। (छ) इस पुस्तक के प्रथम दो भाग प्रारम्भिक छात्रों के लिए हैं, यह प्रौढ विद्यार्थियों के लिए है। अतः यह उचित है कि इस पुस्तक का अभ्यास करने से पूर्व छात्र 'रचनानुवादकौमुदी' का अभ्यास अवश्य कर लें।

(२) पुस्थक की शैली—यह पुस्तक कतिपय नवीनतम विशेषताओं के साथ प्रस्तुत की गयी है। (क) इंग्लिश, जर्मन, फ्रेंच और रूसी आदि भाषाओं में अपनायी गयी वैज्ञानिक पद्धति इस पुस्तक में अपनायी गयी है। (ख) प्रत्येक अभ्यास में २५ नए शब्द तथा कुछ व्याकरण के नियम दिए गए हैं। (ग) शब्दकोश और व्याकरण से सम्बद्ध सभी मुहावरे प्रत्येक अभ्यास में सिखाए गए हैं।

(३) अभ्यास—इस पुस्तक में ६० अभ्यास हैं। प्रत्येक अभ्यास दो पृष्ठों में हैं। बाईं ओर शब्दकोश और व्याकरण हैं, दाईं ओर संस्कृत में अनुवादार्थ गद्य तथा संकेत हैं।

(४) शब्दकोश—(क) प्रत्येक अभ्यास में २५ नये शब्द हैं। शब्दकोश में ४८ वर्ग भी दिए गए हैं। प्रयत्न किया गया है कि सभी उपयोगी शब्दों का संग्रह हो। अमरकोश के प्रायः सभी उपयोगी शब्द विभिन्न वर्गों में दिए गए हैं। यह भी ध्यान रखा गया है कि प्रौढ रचना को ध्यान में में रखते हुए उच्च संस्कृत-साहित्य में प्रयुक्त शब्दों को विशेष रूप से अपनाया जाए। प्रत्येक वर्ग में उस वर्ग से सम्बद्ध सभी उपयोगी शब्द दिए गए हैं। (ख) यह भी प्रयत्न किया गया है कि आधुनिक प्रचलित शब्दों और भावों के लिए भी उपयोगी संस्कृत शब्द दिए जाएँ। इसके लिए दो बातें मुख्यतया ध्यान में रखी गयी हैं—१. जिन भावों के लिए प्राचीन संस्कृत-ग्रन्थों में कोई शब्द मिल सकता है, वहाँ उन संस्कृत-शब्दों को अपनाया गया है। जो प्राचीन संस्कृत शब्द नवीन अर्थों का बोध करा सकते हैं, उनका नवीन अर्थों में प्रयोग किया गया है। २. जिन शब्दों के लिए संस्कृत में प्राचीन शब्द नहीं हैं, उनके लिए नए शब्द बनाए गए हैं। कहीं पर ध्वन्यनुकरण के आधार पर और कहीं पर भावानुकरण के आधार पर। जैसे—मिष्टान्नवर्ग और पानादिवर्ग में सभी मिठाइयों, चाय, टोस्ट और पेस्ट्री आदि के लिए शब्द हैं। नवशब्द-निर्माण वाले स्थलों पर अपने विवेक के अनुसार कार्य किया गया है। ऐसे स्थलों पर मतभेद सम्भव है। जो विद्वान् नवीन भावों के लिए अधिक उपयुक्त शब्दों का सुझाव देंगे, उनके सुझावों पर विशेष ध्यान दिया जायगा। (ग) शब्दकोश को चार भागों में विभक्त

किया गया है। इसके लिए इन संकेतों को स्मरण कर लें। शब्दकोश में (क) का अर्थ है—संज्ञा या सर्वनाम शब्द। (ख) का अर्थ है—धातु या क्रिया-शब्द। (ग) =अव्यय। (घ) =विशेषण। (क) भाग में दिए अधिकांश शब्द राम, रमा या गृह के तुल्य चलते हैं। शब्दों के स्वरूप से इस बात का बोध हो जाता है। जहाँ पर सन्देह हो, वहाँ पर पुस्तक के अन्त में दिए हिन्दी-संस्कृत शब्दकोश से सहायता लें। वहाँ पर लिंग-निर्देश विशेष रूप से किया गया है। (ख) भाग में दी गयी धातुओं के गण और पद के विषय में जहाँ पर सन्देह हो, वहाँ पर धातुरूप-कोश में दिए हुए धातु के विवरण से सन्देह का निराकरण करें। (ग) भाग में दिए हुए शब्द अव्यय हैं, इनके रूप नहीं चलते हैं। (घ) भाग में दिए शब्द विशेषण हैं, इनके लिंग आदि विशेष्य के तुल्य होंगे। विशेषण-शब्द तीनों लिंगों में आते हैं। **(घ)** शब्दकोश में यह भी ध्यान रखा गया है कि जिस शब्द या धातु का प्रयोग उस अभ्यास में सिखाया गया है, उस प्रकार के अन्य शब्दों या धातुओं का भी अभ्यास उसी पाठ में कराया जाए। इसके लिए दो प्रकार अपनाए गए हैं। **१.** उस प्रकार के शब्द या धातुएँ शब्दकोश में दी गयी हैं। **२.** उस प्रकार के शब्दों या धातुओं का प्रयोग उसी पाठ के 'संस्कृत बनाओ' वाले अंश में सिखाया गया है। कोष्ठ में ऐसे शब्दों का संकेत कर दिया गया है। **(ङ)** शब्दकोश के विषय में इन संकेतों का उपयोग किया गया है—**१.** 'वत्' अर्थात् इसके तुल्य रूप चलेंगे। **जैसे**—रामवत्, राम के तुल्य रूप चलेंगे। भवतिवत्, भू धातु के तुल्य रूप चलेंगे। **२.** — डैश, यहाँ से लेकर यहाँ तक के शब्द या धातु। **३.** > अर्थात् 'का रूप बनता है'। भू > भवति, अर्थात् भू का भवति रूप बनता है। **(च)** शब्दकोश में शब्द विविध वर्गों के अनुसार रखे गए हैं। प्रयत्न किया गया है कि उस वर्ग से सम्बद्ध शब्द उसी अभ्यास में दिए जायँ। अतः प्रत्येक वर्ग से सम्बद्ध शब्दों को उसी अभ्यास में देखें। प्रत्येक अभ्यास के शब्दकोश में (क) (ख) आदि के बाद निर्देश कर दिया गया है कि (क) या (ख) आदि में कितने शब्द दिए गए हैं। **(छ)** प्रत्येक अभ्यास में २५ नए शब्द हैं। प्रत्येक अभ्यास के प्रारम्भ में निर्देश किया गया है कि अबतक कितने शब्द पढ़ चुके हैं। ६० अभ्यासों में १५०० शब्दों का अभ्यास कराया गया है। लगभग इतने ही नए शब्दों और मुहावरों का प्रयोग 'संकेत' में सिखाया गया है। इस प्रकार लगभग ३ हजार शब्दों का ज्ञान विद्यार्थी को हो जाता है। शब्दकोश के शब्दों का वर्गीकरण इस प्रकार से है—

(क) अर्थात् संज्ञा या सर्वनाम शब्द	**११३४**
(ख) अर्थात् धातु या क्रिया शब्द	**२१५**
(ग) अर्थात् अव्यय शब्द	**६९**
(घ) अर्थात् विशेषण	**८२**
पठित एवं अभ्यस्त शब्दों का योग	**१५०० (शब्दकोश)**

(५) व्याकरण—(क) प्रत्येक अभ्यास में कुछ शब्दों और धातुओं का प्रयोग सिखाया गया है। अतः आवश्यक है कि उन शब्दों और धातुओं को प्रत्येक अभ्यास में अवश्य स्मरण कर लें। **(ख)** सम्पूर्ण संस्कृत व्याकरण को केवल ३०० नियमों में समाप्त किया गया है। इन ३०० नियमों को विषयों के अनुसार ६० अभ्यासों में बाँटा गया है। प्रत्येक

अभ्यास में कुछ नियमों का अभ्यास कराया गया है। इन नियमों को ठीक स्मरण कर लें। इनको ठीक स्मरण कर लेने पर ही संस्कृत में अनुवाद शुद्ध एवं सरलता से हो सकेगा। **(ग)** नियमों के साथ पाणिनि के प्रामाणिक सूत्र भी कोष्ठ में दिए गए हैं। **(घ)** यह भी प्रयत्न किया गया है कि ह्विटनी, काले, आप्टे आदि विद्वानों के द्वारा निर्दिष्ट नियम या विवरण भी न छूटने पावें। ऐसे नियमों या विवरणों के साथ पाणिनि के नियमों का भी संकेत कर दिया गया है। **(ङ)** इस पुस्तक में यह भी प्रयत्न किया गया है कि संस्कृत-व्याकरण के सभी उपयोगी एवं प्रचलित नियमों का संग्रह हो। जो नियम अप्रचलित एवं विशेष उपयोगी नहीं हैं, वे छोड़ दिए गए हैं।

(६) अनुवाद—(क) शब्दकोश में दिए शब्दों और व्याकरण के नियमों से सम्बद्ध वाक्य अनुवादार्थ दिए गए हैं। **(ख)** प्रत्येक पाठ में जिन शब्दों और धातुओं का अभ्यास कराया गया है, उनसे संबद्ध वाक्य तथा उनसे संबद्ध मुहावरे भी उसी अभ्यास में दिए गए हैं। **(ग)** कठिन वाक्य और मुहावरे वाले वाक्य काले टाइप में छपे हैं। उनकी संस्कृत नीचे 'संकेत' वाले अंश में दी गयी है। वहाँ देखें। कुछ विशेष मुहावरे सिखाने के लिए कतिपय सरल वाक्य भी काले टाइप में दिए गए हैं। उन सभी मुहावरों को सावधानी से स्मरण कर लें। **(घ)** व्याकरण के नियमों के जो उदाहरण संस्कृत में दिए हैं, उनका हिन्दी-रूप अनुवादार्थ दिया गया है। ऐसे वाक्यों की संस्कृत दिए गए नियमों के उदाहरणों में देखें। इनकी संस्कृत 'संकेत' में नहीं दी है। **(ङ)** प्रत्येक अभ्यास में प्रयुक्त शब्दों और धातुओं के तुल्य जिन शब्दों और धातुओं के रूप चलते हैं, उनका भी उसी पाठ में अभ्यास कराया गया है। ऐसे शब्द या धातुएँ उन अभ्यासों में कोष्ठ में दी गयी हैं।

(७) संकेत—(क) 'संस्कृत बनाओ' वाले अंश में जितना अंश काले टाइप में छपा है, उसकी संस्कृत 'संकेत' में उसी क्रम और उन्हीं वाक्य-संख्याओं के साथ दी गयी है। **(ख)** संस्कृत में प्रचलित मुहावरे इस अंश में विशेष रूप से दिए गए हैं। **(ग)** कठिन शब्दों की संस्कृत, सूक्तियाँ, व्याकरण के विशिष्ट प्रयोग तथा अन्य उपयोगी संकेत इस अंश में दिए गए हैं।

(८) परिशिष्ट—पुस्तक के अन्त में अत्यन्त उपयोगी १५ परिशिष्ट दिए गए हैं। इनका विशेष विवरण विषय-सूची तथा विषयानुक्रमणिका में देखें। यहाँ पर कुछ विशेष उल्लेखनीय बातों का ही निर्देश किया गया है।

(९) शब्दरूप-संग्रह—संस्कृत में विशेष प्रचलित सभी शभ्दों के रूप इस परिशिष्ट में दिए गए हैं। पुंलिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंग के शब्द प्रत्येक लिंग में अन्त्याक्षर के क्रम से दिए गए हैं। अन्य शब्दों के रूप लिंग तथा अन्त्याक्षर को देखकर इन शब्दों के तुल्य चलावें।

(१०) संख्याएँ—संस्कृत में १ से १०० तक गिनती तथा महाशंख तक संख्याएँ इस परिशिष्ट में दी गयी हैं।

(११) धातुरूप-संग्रह—संस्कृत में अधिक प्रयुक्त १०० धातुओं के दसों लकारों के रूप इस परिशिष्ट में दिए गए हैं। अन्य धातुओं के रूप गण तथा पद को देखकर इनके तुल्य चलावें।

(१२) धातुरूप-कोश—इस परिशिष्ट में संस्कृत में विशेष रूप से प्रयुक्त ४६५ धातुओं के दसों लकारों के प्रारम्भिक रूप दिए गए हैं। साथ में उनके अर्थ, गण और पद का भी निर्देश है। सभी धातुँ अकारादि-क्रम से दी गयी हैं।

(१३) प्रत्यय-विचार—१५ मुख्य कृत्-प्रत्ययों से बनने वाले सभी विशेष रूप इस परिशिष्ट में अकारादि-क्रम से दिए गए हैं।

(१४) सन्धि-विचार—इस परिशिष्ट में प्रयोग में आने वाले सभी सन्धिनियम ७५ नियमों में दिए गए हैं।

(१५) पत्रादि-लेखन-प्रकार—इस परिशिष्ट में संस्कृत में पत्र लिखना, प्रार्थना-पत्र देना, निमन्त्रण देना, परिषत्-सूचना और पुरस्कार-वितरण आदि का प्रकार बताया गया है।

(१६) निबन्ध-माला—इसमें उदाहरण के रूप में २० अत्युपयोगी विषयों पर संस्कृत में निबन्ध दिए गए हैं। इसमें प्रयत्न किया गया है कि भाषा न अति कठिन हो और न अति सरल। भाषा में प्रौढता के साथ ही प्रवाह और मुहावरे आदि भी हों। शास्त्रीय और साहित्यिक विषयों पर उद्धरणों की संख्या अधिक दी गयी है। इसका कारण यह है कि छात्र स्वयोग्यतानुसार उन उद्धरणों की व्याख्या आदि करें। छात्र इन निबन्धों के आधार पर संस्कृत में अन्य निबन्ध स्वयं लिखने का अभ्यास करें।

(१७) अनुवादार्थ गद्य-संग्रह—इस परिशिष्ट में ४० सन्दर्भ अनुवादार्थ दिए गए हैं। इनमें से अधिकांश प्रौढ संस्कृत-ग्रन्थों से लिए गए हैं और उनका हिन्दी-रूपान्तर अनुवादार्थ दिया गया है। 'संकेत' में मुहावरे आदि भी मूल रूप से दिए गए हैं। ऐसे सन्दर्भ भी अनुवादार्थ दिए गए हैं, जिनके अभ्यास से संस्कृत साहित्य और नाट्यशास्त्र आदि का ज्ञान प्राप्त हो सके।

(१८) सुभाषित-मुक्तावली—इसमें १४६७ सुभाषित १७ प्रमुख शीर्षकों तथा ८४ उपशीर्षकों में दिए गए हैं। सुभाषित अकारादि-क्रम से दिए गए हैं। यथासम्भव उनके मूल आकार-ग्रन्थों का भी संकेत किया गया है। ये सुभाषित निबन्ध, व्याख्यान आदि के लिए अत्युपयोगी हैं।

(१९) पारिभाषिक शब्दकोश—इसमें १६५ व्याकरण के पारिभाषिक शब्द अकारादि-क्रम से पूर्ण विवरण के साथ दिए हैं। साथ में पाणिनि के सूत्रादि भी दिए गए हैं। व्याकरण ठीक समझने के लिए इनका ज्ञान अनिवार्य है।

(२०) हिन्दी-संस्कृत-शब्दकोश—इस पुस्तक में प्रयुक्त सभी शब्दों का इसमें संग्रह किया गया है। अकारादि-क्रम से हिन्दी-शब्द दिए गए हैं। इनके आगे उनकी संस्कृत दी गयी है। शब्दों के आगे लिंग-निर्देश आदि भी किया गया है।

(२१) विषयानुक्रमणिका—पुस्तक में वर्णित सभी विषयों का इस परिशिष्ट में अकारादि-क्रम से उल्लेख है। प्रत्येक विषय के आगे पृष्ठ-संख्या के द्वारा निर्देश किया गया है कि वह विषय अमुक पृष्ठ पर मिलेगा।

(२२) मुद्रण—मुद्रण में ह्रस्व और दीर्घ ऋ में यह अन्तर रखा गया है। इसे स्मरण रखें। ऋ = ह्रस्व ऋ। ॠ = दीर्घ ॠ।

पुस्तक की विशेषताएँ

(१) इंग्लिश, जर्मन, फ्रेंच और रूसी भाषाओं में अपनायी गयी नवीनतम वैज्ञानिक पद्धति इस पुस्तक में अपनायी गयी है।

(२) प्रौढ संस्कृत-ज्ञान के लिए उपयुक्त समस्त व्याकरण अनुवाद और प्रौढ वाक्य-रचना के द्वारा अति सरल और सुबोध रूप में समझाया गया है।

(३) केवल ६० अभ्यासों में ३०० नियमों के द्वारा समस्त आवश्यक व्याकरण समाप्त किया गया है। नियमों के साथ पाणिनि के सूत्र भी दिए गए हैं।

(४) ४८ वर्गों और १२ विशिष्ट शब्द-संग्रहों के द्वारा सभी उपयोगी और आवश्यक शब्दों का संग्रह किया गया है। प्रत्येक अभ्यास में २५ नए शब्द हैं। १५०० उपयोगी शब्दों और धातुओं का प्रयोग सिखाया गया है।

(५) लगभग एक सहस्र संस्कृत की लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग अनुवाद के द्वारा सिखाया गया है।

(६) परिशिष्ट में लगभग १५०० सुभाषितों की 'सुभाषित-मुक्तावली' विभिन्न ८८ विषयों पर अकारादि-क्रम से दी गयी है।

(७) संस्कृत साहित्य के उच्च कोटि के अन्य ग्रन्थों से अनुवादार्थ सन्दर्भों का संचयन किया गया है। इनके लिए उपयुक्त संकेत भी दिए गए हैं।

(८) सभी प्रचलित शब्दों के रूपों का संग्रह किया गया है।

(९) १०० विशेष प्रचलित धातुओं के दसों लकारों के रूपों का संकलन 'धातुरूप-संग्रह' में किया गया है। 'धातुरूप-कोष' में अत्युपयोगी ४६५ धातुओं के दसों लकारों के प्रारम्भिक रूप दिए गए हैं। साथ में उनके अर्थ, गण और पद का भी निर्देश है। धातुएँ अकारादि-क्रम से दी गयी हैं।

(१०) सभी उपयोगी व्याकरण की बातों का संग्रह किया गया है। जैसे सन्धि-विचार, कारक-विचार, समास विचार, क्रिया-विचार, कृत्प्रत्यय-विचार, तद्धित-प्रत्यय-विचार, स्त्री-प्रत्यय-विचार आदि।

(११) व्याकरण-ज्ञान के लिए अनिवार्य १३५ पारिभाषिक शब्दों का एक 'पारिभाषिक-शब्दकोश' अकारादि-क्रम से परिशिष्ट में दिया गया है।

(१२) अत्युपयोगी २० विषयों पर प्रौढ संस्कृत में निबन्ध दिए गए हैं।

(१३) प्रत्येक अभ्यास में व्याकरण के कुछ विशेष नियमों का अभ्यास कराया गया है और अनुवादार्थ अत्युपयोगी संकेत दिए गए हैं।

(१४) परिशिष्ट के अन्त में बृहत् हिन्दी-संस्कृत-शब्दकोश भी दिया गया है।

कृतज्ञता-प्रकाशन

इस पुस्तक के लेखन में मुझे जिन महानुभावों से विशेष आवश्यक परामर्श, प्रेरणा और प्रोत्साहन मिला है, उनमें विशेष उल्लेखनीय ये हैं। मैं इनका कृतज्ञ हूँ।

सर्वश्री राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, डॉ० सम्पूर्णानन्द, डॉ० ज० कि० बलवीर (पेरिस), पं० छेदीप्रसाद व्याकरणाचार्य (गुरुकुल म० वि० ज्वालापुर), स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (रामगढ़, नैनीताल), डॉ० हरिदत्त शास्त्री सप्ततीर्थ (कानपुर), श्रीमती ओम्‌शान्ति द्विवेदी, श्री पुरुषोत्तमदास मोदी।

अन्त में विद्वज्जन से निवेदन है कि वे पुस्तक के विषय में जो भी संशोधन, परिवर्तन, परिवर्धन आदि का विचार भेजेंगे, वह बहुत कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जायगा।

गर्वनमेण्ट कॉलेज, नैनीताल **कपिलदेव द्विवेदी**

ता० १-६-६० ई०

परिवर्धित एवं परिष्कृत संस्करण की भूमिका

संस्कृत-प्रेमी शिक्षकों और छात्रों ने इस पुस्तक का जो हार्दिक स्वागत किया है, तदर्थ उनका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। उत्तर भारत के प्रायः सभी विश्वविद्यालयों ने इसको अपने पाठ्यक्रम में स्थान दिया है, तदर्थ उनका अनुगृहीत हूँ। जिन विद्वानों ने आवश्यक संशोधनादि के विचार भेजे हैं, उनको विशेष धन्यवाद देता हूँ। उनके संशोधनादि के विचारों का यथासम्भव पूर्ण पालन किया गया है। पुस्तक को विशेष उपयोगी बनाने के लिए इस संस्करण में ३२ पृष्ठ और बढ़ाए गए हैं। १०० धातुओं के क्त आदि प्रत्ययों से बने रूपों की सारणी दी गयी है। वाक्यार्थ में प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का एक संग्रह दिय. गया है। १० निबन्धों को विस्तृत करके समस्त उद्धरणों को पूर्ण किया गया है तथा परिवर्धित रूप में लिखा गया है। यथास्थान आवश्यक सभी परिवर्तन, परिवर्धन और संशोधनादि किए गए हैं।

इस संस्करण को कम्प्यूटर द्वारा कम्पोज़ कराकर नया परिष्कृत रूप दिया गया है। प्रयत्न किया गया है कि ग्रन्थ पूर्ण रूप से शुद्ध हो। आशा है प्रस्तुत संस्करण छात्रों के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगा।

शान्तिनिकेतन, **—कपिलदेव द्विवेदी**

ज्ञानपुर (भदोही)

स्वतन्त्रता-दिवस

दिनांक १५-८-२००२ ई०

आवश्यक निर्देश

१. 'संस्कृत' शब्द का अर्थ है—शुद्ध, परिमार्जित, परिष्कृत। अत: संस्कृत भाषा का अर्थ है—शुद्ध एवं परिमार्जित भाषा।

२. निम्नलिखित १४ माहेश्वर सूत्र हैं। इनमें पूरी वर्णमाला इस प्रकार दी हुई है—क्रमश: स्वर, अन्त:स्थ, वर्ग के पंचम, चतुर्थ, तृतीय, द्वितीय, प्रथम वर्ण, ऊष्म।

१. अइउण्। २. ऋलृक्। ३. एओङ्। ४. ऐऔच्। ५. हयवरट्। ६. लण्। ७. ञमङणनम्। ८. झभञ्। ९. घढधष्। १०. जबगडदश्। ११. खफछठथचटतव्। १२. कपय्। १३. शषसर्। १४. हल्।

३. पाणिनि के सूत्रों में प्रत्याहारों का प्रयोग है। प्रत्याहार का अर्थ है संक्षेप में कहना। उपर्युक्त सूत्रों से प्रत्याहार बनाने के लिए ये नियम हैं—(क) प्रत्याहार बनाने के लिए पहला अक्षर सूत्र में जहाँ हो, वहाँ से लें और दूसरा अक्षर सूत्रों के अन्तिम अक्षरों में ढूँढें। (ख) सूत्रों के अन्तिम अक्षर (ण्, क् आदि) प्रत्याहार में नहीं गिने जाते हैं। वे प्रत्याहार बनाने के साधन हैं। जैसे—अल् प्रत्याहार—प्रथम अ से लेकर हल् के ल् तक। इक्—इ उ ऋ ऌ। अच्—अ से औ तक पूरे स्वर। हल्—सारे व्यंजन।

४. संस्कृत में ३ वचन होते हैं—एकवचन (एक०), द्विवचन (द्वि०), बहुवचन (बहु०)। तीन पुरुष होते हैं—प्रथम या अन्य पुरुष (प्र० पु० या प्र०) मध्यम पुरुष (म० पु० या म०), उत्तम पुरुष (उ० पु० या उ०)। कारक ६ हैं। षष्ठी और संबोधन को लेकर आठ कारक (विभक्तियाँ) होते हैं। इनके नाम और चिह्न ये हैं :—

विभक्ति	कारक	चिह्न	विभक्ति	कारक	चिह्न
(१) प्रथमा (प्र०)	कर्ता	—, ने	(५) पंचमी (पं०)	अपादान	से
(२) द्वितीया (द्वि०)	कर्म	को	(६) षष्ठी (ष०)	सम्बन्ध	का, के, की
(३) तृतीया (तृ०)	करण	ने, से, द्वारा	(७) सप्तमी (स०)	अधिकरण	में, पर
(४) चतुर्थी (च०)	संप्रदान	के लिए	(८) संबोधन (सं०)	संबोधन	हे, अये, भो:

कर्ता कर्म च करणं संप्रदानं तथैव च।
अपादानाधिकरणमित्याहु: कारकाणि षट्॥

५. संस्कृत में क्रिया के १० लकार (वृत्तियाँ) होते हैं। इनके नाम तथा अर्थ ये हैं—(१) लट् (वर्तमान काल), (२) लोट् (आज्ञा अर्थ), (३) लङ् (अनद्यतन भूतकाल), (४) विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ), (५) लृट् (भविष्यत् काल), (६) लिट् (अनद्यतन परोक्ष भूत), (७) लुट् (अनद्यतन भविष्यत्), (८) आशीर्लिङ् (आशीर्वाद), (९) लुङ् (सामान्य भूत) (१०) लृङ् (हेतुहेतुमद् भूत या भविष्यत्)।

६. धातुएँ तीन प्रकार की हैं, अत: धातुओं के रूप तीन प्रकार से चलते हैं। परस्मैपदी (प०; ति त: अन्ति आदि अन्त में)। आत्मनेपदी (आ०; ते एते अन्ते आदि अन्त में)। उभयपदी (उ०, दोनों प्रकार के रूप)।

७. संस्कृत में १० गण (धातुओं के विभाग) होते हैं। प्रत्येक धातु किसी एक गण में आती है। इनके लिए कोष्ठगत संकेत हैं। भ्वादिगण (१), अदादि० (२), जुहोत्यादि० (३), दिवादि० (४), स्वादि० (५), तुदादि० (६), रुधादि० (७), तनादि० (८), क्र्यादि० (९), चुरादि० (१०)। ११वाँ गण कण्वादिगण है।

८. शब्दकोष में इन संकेतों का प्रयोग किया गया है। इन्हें स्मरण रखें।

(क) = संज्ञा या सर्वनाम शब्द। **(ख)** = धातु या क्रिया शब्द।
(ग) = अव्यय या क्रिया-विशेषण। **(घ)** = विशेषण शब्द।

शब्दकोष—२५]

अभ्यास १

(व्याकरण)

(**क**) रामः (राम), पातोत्पातः (उत्थान-पतन), सद्वृत्तः (सदाचारी), दुराचारः (दुराचारी), वैधेयः (मूर्ख), बुभुक्षितः (भूखा), मल्लः (पहलवान)। (७)। (**ख**) भू (होना), अनुभू (अनुभव करना), प्रभू (१. प्रकट होना, २. समर्थ होना, ३. अधिकार होना, ४. बराबर होना, ५. समाना), पराभू (हराना), परिभू (तिरस्कृत करना), अभिभू (हराना, दबाना), सम्भू (उत्पन्न होना), उद्भू (पैदा होना), आविर्भू (प्रकट होना), तिरोभू (छिप जाना), प्रादुर्भू (जन्म लेना), अर्ह् (योग्य होना), परिहस् (हँसी करना), प्रलप् (बकवाद करना)। (१४)। (**ग**) परमार्थतः (सत्य, ठीक), नाम (निश्चय से)। (२)। (**घ**) मधुरम् (मीठा), तीव्रम् (तेज)। (२)

व्याकरण (राम, लट्, प्रथमा, द्वितीया)

१. राम शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्दरूप संख्या १)

२. भू तथा हस् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातुरूप संख्या १, २)

३. भू धातु के उपसर्ग लगाने से हुए विशेष अर्थों को स्मरण करो और उनका प्रयोग करो।

नियम १—कर्तृवाच्य में कर्ता (व्यक्तिनाम, वस्तुनाम आदि) में प्रथमा होती है और कर्मवाच्य में कर्म में प्रथमा होती है। जैसे—रामः पठति। अश्वो धावति। रामेण पाठः पठ्यते।

नियम २—किसीके अभिमुखीकरण तथा संमुखीकरण में (सम्बोधन करने में) सम्बोधन विभक्ति होती है। जैसे—हे राम, हे कृष्ण।

नियम ३—(कर्तुरीप्सिततमं कर्म) कर्ता जिसको (व्यक्ति, वस्तु या क्रिया को) विशेष रूप से चाहता है, उसे कर्म कहते हैं।

नियम ४—(कर्मणि द्वितीया) कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—स पुस्तकं पठति। स रामं पश्यति। ते प्रश्नं पृच्छन्ति।

नियम ५—(अभितःपरितःसमयानिकषाहाप्रतियोगेऽपि) अभितः, परितः, समया, निकषा, हा और प्रति के साथ द्वितीया होती है। जैसे—नृपम् अभितः परितः वा। ग्रामं समया निकषा वा (गाँव के समीप)। बुभुक्षितं न प्रतिभाति किंचित्।

नियम ६—(उभसर्वतसोः कार्या०) उभयतः, सर्वतः, धिक् उपर्युपरि, अधोऽधः अध्यधि के साथ द्वितीया होती है। जैसे—कृष्णमुभयतो गोपाः। नृपं सर्वतो जनाः। धिक् नास्तिकम्।

नियम ७—गति (चलना, हिलना, जाना) अर्थ की धातुओं के साथ द्वितीया होती है। गत्यर्थ का आलंकारिक प्रयोग होगा तो भी द्वितीया होगी। जैसे—गृहं गच्छति। वनं विचरति। तृप्तिं ययौ। मम स्मृतिं यातः। उमाख्यां जगाम। निद्रां ययौ।

नियम ८—अकर्मक धातुएँ उपसर्ग पहले लगने से प्रायः अर्थानुसार सकर्मक हो जाती हैं, उनके साथ द्वितीया होगी। जैसे—हर्षमनुभवति। स खलम् अभिभवति। स शत्रुं परिभवति पराभवति वा। वृक्षमारोहति। दिवमुत्पतति। स्वामिचित्तमनुवर्तते।

नियम ९—स्मृ धातु के साथ साधारण स्मरण में द्वितीया होती है। खेदपूर्वक स्मरण में षष्ठी होती है। जैसे—स पाठं स्मरति (वह पाठ याद करता है)। बालः मातुः स्मरति। (बालक खेद के साथ माता को स्मरण करता है।)

अभ्यास १

१. संस्कृत बनाओ—(क) (रामं, लट्) १. राम **मीठे स्वर से** पढ़ता है। २. देवता **तेरा चरित** लिख रहे हैं। ३. **होनहार होकर ही रहती** है। ४. जीवन में **उत्थान और पतन** सबके ही होते हैं। ५. **वह तिल का ताड़ बनाता** है। ६. उसे **पुरस्कार मिलना चाहिए**। ७. वह सदाचारी है, अतः उसका सर्वत्र **सम्मान होना चाहिए**। ८. वह दुराचारी है, अतः **आदर के योग्य नहीं** है। ९. **दुष्ट व्यक्ति दूसरों के सरसों के बराबर भी छोटे दोषों को देखता है और अपने बड़े दोषों को देखता हुआ भी नहीं देखता** है। १०. **मैं तुमसे हँसी नहीं कर** रहा हूँ, **ठीक** कह रहा हूँ। ११. **मनुष्य का भाग्य रथ-चक्र के सदृश कभी नीचे जाता है और कभी ऊपर**। १२. **यह मूर्ख बकवाद करता है। (ख)** (भू धातु) १. क्रोध से मोह होता है (भू)। २. **भाग्य से ही धन मिलता है और नष्ट होता है**। ३. **ऐसा कैसे हो सकता है**? ४. **चाहे जो हो,** मैं यह काम अवश्य करूँगा। ५. उस बालक का **क्या हाल हुआ**? ६. **यदि तुम्हें सन्देह हो** तो पिता से पूछना। ७. दुष्ट, यदि **प्रहार करेगा तो जीवित नहीं बचेगा**। ८. **यह जल आपके पैर धोने का काम देगा**। ९. जो विद्या पढ़ता है, वह **हर्ष का अनुभव करता** है। १०. सज्जन सुख का अनुभव करता है। ११. **वृक्ष अपने ऊपर तीक्ष्ण गर्मी सहन करता** है। १२. तुम अपने किए हुए पुण्य कर्मों का फल भोग रहे हो (अनुभू)। १३. लोभ से क्रोध होता है (प्रभू)। १४. गंगा हिमालय से निकलती है (प्रभू)। १५. **भाग्य बलवान् है**। १६. **आग के अतिरिक्त और कौन जला सकता है? (ग)** (द्वितीया) १. उसने प्रश्न पूछा। २. नदी के दोनों ओर खेत (क्षेत्राणि) हैं। ३. नगर के चारों ओर वन है। ४. नगर के पास ही एक सुन्दर उपवन है। ५. भूखे को कुछ अच्छा नहीं लगता है। ६. संसार के ऊपर, अन्दर और नीचे ईश्वर है। ७. सिंह वन में घूमता है (विचर्)। ८. यह बात मेरी समझ में आई। ९. वह पेड़ पर चढ़ता है। १०. छात्र पाठ याद कर रहा है। ११. उसका नाम राम रखा गया। १२. उसे नींद आ गई।

संकेत—(क) १. मधुरम्। २. त्वच्चरितम्। ३. भवितव्यानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र। ४. पातोत्पाताः। ५. तिले तालं पश्यति। ६. पुरस्कारमर्हति। ७. सम्मानमर्हति। ८. समादरं नार्हति। ९. खलः सर्षपमात्राणि परछिद्राणि पश्यति। आत्मनो बिल्वमात्राणि पश्यन्नपि न पश्यति। १०. नाहं परिहसामि, परमार्थतः। ११. नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण। १२. प्रलपत्येष वैधेयः **(ख)** २. भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति। ३. कथमेवं भवेन्नाम। ४. यद्भावि तद्भवतु। ५. किमभवत्। ६. यदि ते संशयो भवेत्। ७. प्रहरिष्यसि—न भविष्यसि। ८. इदं ते पादोदकं भविष्यति। ९. हर्षमनुभवति। ११. अनुभवति हि मूर्ध्ना पादपस्तीव्रमुष्णम्। १५. प्रभवति विधिः। १६. कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।

शब्दकोष— २५+२५=५०] **अभ्यास २** (व्याकरण)

(क) गृहम् (घर), नियोग: (आज्ञा, निर्धारित कार्य), शिलापट्टः (शिला), अर्थप्रतिपत्तिः (स्त्री०, अर्थज्ञान)। (४)। (ख) अनुष्ठा (करना), अधिवस् (रहना), उपवस् (उपवास करना, रहना), दण्डि (दण्ड देना), अवचि (चुनना), मुष् (चुराना)। (६)। (ग) तावत् (तो, जरा), मुहूर्तम् (थोड़ी देर), जोषम् (चुप), अन्तरा (बीच में), अन्तरेण (बिना, बारे में), किं नु (क्या), अनु (बाद में, घटिया, किनारे), उप (समीप, घटिया), अति (बढ़कर), अभि (समीप), दिवा (दिन में), नक्तम् (रात में)। (१२)। (घ) वाचंयमः(मौन), अब्रह्मण्यम् (अनर्थ), सकुसुमास्तरणम् (फूल के बिस्तर से युक्त)। (३)।

व्याकरण (गृह, लोट्, द्वितीया)

१. गृह शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्दरूप संख्या ६१)

२. पठ् तथा रक्ष् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३, ४)

नियम १०—(अन्तरान्तरेणयुक्ते) अन्तरा और अन्तरेण के साथ द्वितीया होती है। विना के साथ भी द्वितीया होती है। गङ्गां यमुनां चान्तरा प्रयागः। ज्ञानमन्तरेण न सुखम्। भवन्तमन्तरेण (आपके बारे में) कीदृशोऽस्या अनुरागः। श्रमं विना न सिद्धिः।

नियम ११—(अधिशीङ्स्थासां कर्म) अधिशी, अधिस्था और अध्यास् धातु के साथ आधार में द्वितीया होती है। जैसे—आसनमधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा।

नियम १२—(अभिनिविशश्च) अभि+नि+विश् धातु के साथ आधार में द्वितीया होती है। जैसे—अभिनिविशते सन्मार्गम् (सन्मार्ग पर चलता है)। परन्तु पापेऽभिनिवेशः भी रूप बनता है।

नियम १३—(उपान्वध्याङ्वसः) उप, अनु, अधि और आ उपसर्ग के साथ वस् धातु होगी तो उसके आधार में द्वितीया होगी, किन्तु उपवास करना अर्थ में सप्तमी होगी। जैसे— हरिः वैकुण्ठम् उपवसति अनुवसति अधिवसति आवसति वा (रहता है)। वने उपवसति (वन में उपवास करता है)-उपवास अर्थ के कारण सप्तमी होगी।

नियम १४—(कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे) समय और मार्ग के दूरीवाची शब्दों में द्वितीया होती है, जब कार्य निरन्तर हुआ हो। मासं पठति। क्रोशं गच्छति। क्रोशं कुटिला नदी (नदी एक कोस तक टेढ़ी है)।

नियम १५—इन उपसर्गों के साथ इन अर्थों में द्वितीया होती है—अनु (बाद में, घटिया, किनारे), उप (समीप, घटिया), अति (बढ़कर), अभि (समीप)। क्रमशः उदाहरण हैं :—जपमनु प्रावर्षत्। अनु हरिं सुराः। नदीमनु सेना। उप हरिं सुराः। अति देवान् कृष्णः। भक्तो हरिमभि वर्तते।

नियम १६—(दुह्याच्पच्दण्ड्०) ये धातुएँ द्विकर्मक हैं। इन अर्थोंवाली अन्य धातुएँ भी द्विकर्मक हैं। इनके साथ दो कर्म होते हैं—दुह्, याच्, पच्, दण्ड्, रुध्, प्रच्छ्, चि, ब्रू, शास्, जि, मथ्, मुष्, नी, हृ, कृष्, वह्। जैसे—गां दोग्धि पयः। बलिं याचते वसुधाम्। तण्डुलान् ओदनं पचति। गर्गान् शतं दण्डयति। व्रजमवरुणद्धि गाम्। माणवकं पन्थानं पृच्छति। वृक्षमवचिनोति फलानि। माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा। शतं जयति देवदत्तम्। सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति। देवदत्तं शतं मुष्णाति। अजां ग्रामं नयति, हरति, कर्षति, वहति वा।

अभ्यास २

संस्कृत बनाओ—(क) (गृह, लोट्) १. **जरा रुकिये।** २. **जरा यह बात बन्द कीजिये।** ३. चुप रहो। ४. उस मूर्ख को बकवाद करने दो, तुम सज्जन हो अतः मौन रहो। ५. **अपना काम करो।** ६. **अपने काम पर जाओ।** ७. **आगे कहिये,** वहाँ क्या अनर्थ हो गया? ८. **भला या बुरा चाहे जो हो,** मैं अपने वचन का पालन करूँगा। (ख) (भू) १. मैं कठिन परिश्रम के बिना (विना, अन्तरेण) **सफलता नहीं प्राप्त कर सकता हूँ।** २. **आपका छात्रों पर अधिकार है।** ३. **यदि अपने-आपको सँभाल सकी तो** यहाँ से जाऊँगी। ४. **यह पहलवान उस पहलवान से लड़ सकता** है। ५. **वह अति प्रसन्नता से फूला नहीं समाया।** ६. **बाँधें या छोड़ें, यह आपका अधिकार है।** ७. राजा शत्रु को हराता है (पराभू)। ८. भरत सिंह-शावक को तिरस्कृत कर रहा है। (परिभू)। ९. तुझे कौन दबा सकता है (अभिभू)? १०. **आप जैसे विरले ही** संसार में जन्म लेते हैं (सम्भू)। ११. **दरिद्रता** से दुःख उत्पन्न होते हैं (उद्भू)। १२. रात्रि में चन्द्रमा निकलता है (आविर्भू)। १३. सुख में सुख उत्पन्न होते हैं (प्रादुर्भू) और दुःख में दुःख। १४. दिन में तारे छिप जाते हैं (तिरोभू) और रात में निकलते हैं (प्रादुर्भू)। १५. यह विचार मेरे मन में आया (प्रादुर्भू)। **(ग)** (द्वितीया) १. **दूधयुक्त भोजन अमृत है,** प्रिय का मिलन अमृत है, राजसम्मान अमृत है, **जाड़े में** आग अमृत है। २. द्युलोक और पृथ्वी के बीच में अन्तरिक्ष है। ३. परिश्रम के बिना सुख नहीं है। ४. अर्थ जाने बिना प्रवृत्ति की योग्यता नहीं होती। ५. मैं आज विद्यालय नहीं गया, आचार्य **मेरे बारे में** क्या सोचेंगे, यह चिन्ता **मुझे व्याकुल कर रही है।** ६. शकुन्तला फूलों के बिस्तरवाली शिला पर लेटी है। ७. राम दुर्गम वन में **रहे।** ८. बालक **पलँग पर** बैठा है (अध्यास्)। ९. राम सन्मार्ग पर चलता है (अभिनिविश्)। १०. उसकी पाप में प्रवृत्ति है। ११. राम पंचवटी में बहुत दिन रहे (अधिवस्)। १२. गांधीजी ने अपने आश्रम में २१ दिन का **उपवास किया।** १३. वह बारह वर्ष गुरुकुल में **पढ़ा।** १४. वह प्रातः कोसभर घूमने जाता है। १५. यज्ञ के **बाद** वर्षा हुई। १६. सब कवि कालिदास से **घटिया हैं।** १७. **गंगा के किनारे** हरिद्वार है। १८. सब राजा राम से **घटिया** हैं। १९. कपिल सब **मुनियों से बढ़कर** हैं। २०. राम के **पास** भक्त हैं। २१. वह गाय का दूध दुहता है। २२. वह राजा से धन माँगता है। २३. वह चावलों से भात पकावे। २४. राजा ने अपराधी पर सौ रुपया जुर्माना किया। २५. वह बकरी को बाड़े में बन्द करता है।

संकेत—(क) १. तिष्ठतु तावत्। २. मुहूर्तं तदास्ताम्। ३. आस्स्व। ५. अनुतिष्ठात्मनो नियोगम्। ६. स्वनियोगमशून्यं कुरु। ७. ततः परं कथय। ८. शुभं वाऽशुभं वा। **(ख)** १. साफल्यं लब्धुं न प्रभवामि। २. प्रभवति भवान् छात्राणाम्। ३. यद्यात्मनः प्रभविष्यामि। ४. प्रभवति मल्लो मल्लाय। ५. गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि। ६. प्रभवति भवान् बन्धे मोक्षे च। १०. भवादृशा विरला एव। ११. दारिद्र्यात्। **(ग)** १. अमृतं क्षीरभोजनम्, शिशिरे। ५. मामन्तरेण, मां बाधते। ७. अध्यास्त। ८. पल्यङ्कम्। ११. अध्युवास। १२. उपावसत्। १४. भ्रमति। १५. अनु। १६. अनु। १७. गङ्गामनु। १८. उप। १९. अति मुनीन्। २०. अभि।

शब्दकोष—५०+२५=७५] **अभ्यास ३** (व्याकरण)

(**क**) शिखा (चोटी), संचिका (कापी), लेखनी (स्त्री०, होल्डर), कौमुदी (स्त्री०, चाँदनी), प्राघुणिकः (अतिथि, पाहुन), आतिथेयः (अतिथि-सत्कारकर्ता), कूर्चम् (दाढ़ी)। (७)। (ख) गम् (जाना, बीतना, प्राप्त होना), आगम् (आना), अनुगम् (पीछे जाना), अवगम् (जानना), अधिगम् (प्राप्त करना, जानना), अभ्युपगम् (स्वीकार करना), अभ्यागम् (आना), प्रत्यागम् (लौटकर आना), निर्गम् (निकलना), संगम् (मिलना), उद्गम् (निकलना, उड़ना), अपगम् (नष्ट होना), उपगम् (पास जाना), परागम् (लौटना), प्रत्युद्गम् (स्वागतार्थ जाना), समधिगम् (पाना, जानना), ताडि (मारना)। (१७)। (घ) असंस्तुतम् (अपरिचित)। (१)

व्याकरण (रमा, मति, नदी, लङ्, तृतीया)

१. रमा, मति, नदी के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४१, ४२, ४३)

२. भू तथा अन्य तत्सम धातुओं के लङ् के रूप स्मरण करो।

३. गम् और वद् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५, ६)

नियम १७—(साधकतमं करणम्) क्रिया की सिद्धि में सहायक को करण कहते हैं।

नियम १८—(कर्तृकरणयोस्तृतीया) करण में तृतीया होती है और कर्मवाच्य या भाववाच्य में कर्ता में। तृतीया मुख्यतः दो अर्थों को बताती है—(१) कर्ता, (२) साधन। जैसे—कन्दुकेन क्रीडति, दण्डेन चलति, बाणेन हन्ति। रामेण गृहं गम्यते। रामेण पाठः पठितः।

नियम १९—(प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्) प्रकृति आदि शब्दों में तृतीया होती है। ये शब्द साधारणतया क्रियाविशेषण या क्रिया-विशेषण-वाक्यांश होते हैं। जैसे—प्रकृत्या साधुः। सुखेन जीवति। दुःखेन जीवति। नाम्ना रामोऽयम्। गोत्रेण काश्यपः। समेनैति। विषमेणैति।

नियम २०—(अपवर्गे तृतीया) समय और मार्ग के दूरीवाची शब्दों में तृतीया होती है, यदि कार्य की सफलता बताई जाए। मासेन ग्रन्थोऽधीतः। क्रोशेन पाठोऽधीतः। दशभिर्दिनैरारोग्यं लब्धवान् (दस दिन में नीरोग हुआ)।

नियम २१—(सहयुक्तेऽप्रधाने) सह, साकम्, सार्धम्, समम् आदि के साथ तृतीया होती है, साथ अर्थ हो तो। पित्रा सह साकं सार्धं समं वा गृहं गच्छति। मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति (मृग मृगों के साथ चलते हैं।)

नियम २२—(येनाङ्गविकारः) जिस अंग में विकार से शरीर विकृत दिखाई पड़े अर्थात् शरीर ही विकृत माना जाय, उसमें तृतीया होती है। नेत्रेण काणः। पादेन खञ्जः। कर्णेन बधिरः। शिरसा खल्वाटः।

नियम २३—(इत्थंभूतलक्षणे) जिस चिह्न से किसी व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, उसमें तृतीया होती है। जटाभिस्तापसः। कूर्चेन यवनः। शिखया हिन्दुः।

नियम २४—(हेतौ) कारण-बोधक शब्दों में तृतीया होती है। अध्ययनेन वसति। पुण्येन दृष्टो हरिः। श्रमेण धनं विद्या वा भवति। विद्यया यशो लभते।

नियम २५—लङ्, लुङ् और लृङ् में अ या आ शुद्ध धातु से पहले ही लगेगा, उपसर्ग से पूर्व नहीं। अतः उपसर्गयुक्त धातुओं में लङ् आदि में धातु से पहले अ या आ लगाकर उपसर्ग मिलावें। (सन्धिकार्य भी करें)। जैसे—अनुगम् > अन्वगच्छत्, उद्गम् > **उदगच्छत्**।

अभ्यास ३

संस्कृत बनाओ—(क) (रमा, लङ्) १. सुशीला सबेरे उठी, उसने माता और पिता को प्रणाम किया, पाठ पढ़ा, लेख लिखा, व्याकरण याद किया, खाना खाया और विद्यालय गई। २. पार्वती उपवन में गई, उसने फल देखे, फूल सूँघे, पेड़ पर **चढ़ी,** लता से फूल चुने और फूलों को घर **लाई।** ३. **न इधर का रहा, न उधर का रहा।** ४. **लड़की पराई सम्पत्ति है।** (ख) (गम् धातु) १. मेरा शरीर आगे जा रहा है और **मन अपरिचित-सा होकर पीछे की ओर दौड़ता है।** २. **बुद्धिमानों का समय** काव्य-शास्त्र के विनोद में **बीतता है।** ३. **निरर्थक बकवाद से विद्वानों में मेरी हँसी हो जाएगी।** ४. **न चले तो गरुड भी** एक पैर नहीं सरक सकता। ५. उस बालिका का नाम **भारती रखा गया।** ६. **जलाशय तक प्रिय व्यक्ति को पहुँचाने जाना चाहिए।** ७. राजा **दिलीप छाया की तरह उस गाय के पीछे चला।** ८. सुदक्षिणा इस प्रकार गाय के मार्ग पर चली, **जैसे श्रुति के अर्थ के पीछे स्मृति चलती है।** ९. मैं आपकी बात नहीं समझा। १०. **आगे की बात तो समझ में आ गई।** ११. **मैं अपने-आपको अपराधी-सा समझ रहा हूँ।** १२. **मेरी बुद्धि कुछ निश्चय नहीं कर पा रही है।** १३. अगस्त्य आदि ऋषियों से **वेदान्त पढ़ने के लिए** मैं वाल्मीकि के पास से यहाँ आई हूँ। १४. **हम आपकी यह बात स्वीकार करते हैं।** १५. मेरे घर **पाहुन** (अतिथि) आए हैं, १६. सज्जन सज्जनों के घर आते हैं। १७. कमला विद्यालय से घर लौटकर आई (प्रत्यागम्)। १८. ऋषि दयानन्द **घर से निकलकर** वन में गए। १९. प्रयाग में गंगा और यमुना **मिलती हैं।** २०. **मिलकर चलो, मिलकर बोलो।** २१. चन्द्रमा **निकलता है, अन्धकार दूर होता है।** २२. **पक्षी आकाश में उड़कर जाते हैं।** २३. शिष्य गुरु के **पास गया।** २४. **मेघरहित चन्द्रमा को चाँदनी प्राप्त हुई। (ग)** (तृतीया) १. कमला ने होल्डर से कॉपी पर लेख लिखा। २. उमा ने डंडे से बन्दर को मारा। ३. बालक गेंद से खेला। ४. धनहीन दुःख से जीते हैं। ५. शान्ति **ने सरलता** से पुस्तक पढ़ ली। ६. **उसका नाम कृष्ण है।** ७. उसका गोत्र भारद्वाज है। ८. वह सममार्ग से आता है। ९. उसने **एक वर्ष में** गीता पढ़ी। १०. **वह सात दिन में** नीरोग हुआ। ११. वह धर्म से बढ़ता है।

संकेत—(क) १. उदतिष्ठत्, पितरौ। २. आरोहत्, अचिनोत्, आनयत्। ३. इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्टः। ४. अर्थो हि कन्या परकीय एव। **(ख)** १. धावति पश्चादसंस्तुतं चेतः। २. कालो गच्छति धीमताम्। ३. अनर्गलप्रलापेन विदुषां मध्ये गमिष्याम्युपहास्यताम्। ४. अगच्छन् वैनतेयोऽपि। ५. भारत्याख्यां जगाम। ६. ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः। ७. छायेव तां भूपतिरन्वगच्छत्। ८. श्रुतेरिवार्थं स्मृतिरन्वगच्छत्। ९. न खल्ववगच्छामि। १०. परस्तादवगम्यत एव। ११. कृतापराधमिवात्मानमवगच्छामि। १२. न मे बुद्धिर्निश्चयमधिगच्छति। १३. तेभ्योऽधिगन्तुं निगमान्तविद्याम्। १४. अभ्युपगतं तावदस्माभिरेवम्। १५. अभ्यागतः। १८. गृहान्निर्गत्य। १९. संगच्छेते (सम्+गम् आत्मनेपदी है)। २०. संगच्छध्वं संवदध्वम्। २१. उद्गच्छति, तिमिरमपगच्छति। २२. खगाः खमुद्गच्छन्ति। २३. उपागच्छत्। २४. शशिनमुपगतेयं कौमुदी मेघमुक्तम्। **(ग)** ५. सरलतया। ६. नाम्ना कृष्णः। ९. वर्षेणैकेन। १०. सप्तभिर्दिनैः।

शब्दकोष—७५+२५=१००] **अभ्यास ४** (व्याकरण)

(**क**) गिरिः (पु०, पर्वत), पदातिः (पुं०, पैदल चलनेवाला), भूपतिः (पुं०, राजा), पविः (पुं०, वज्र), निर्बन्धः (आग्रह, ज़िद), परिदेवनम् (रोना), वाष्पम् (भाप), कल्याणाभिनिवेशिन् (कल्याण का इच्छुक)। (८)। (**ख**) चर् (घूमना, करना, चरना), आचर् (व्यवहार करना), अनुचर् (पीछे चलना), संचर् (घूमना), विचर् (विचरण करना), उच्चर् (उठना, उल्लंघन करना), उपचर् (सेवा करना), प्रचर् (प्रचार होना), अनुहृ (सदृश होना), संवद् (संवाद करना, सदृश होना), शप् (शपथ लेना), योजि (मिलाना)। (१२)। (**ग**) अलम् (बस), कृतम् (बस), किम् (क्या, क्या लाभ)। (३)। (**घ**) नष्टाशङ्कः (निर्भय), मुग्धा (भोली-भाली)। (२)।

व्याकरण (हरि, विधिलिङ्, तृतीया)

१. हरि और भूपति शब्दों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ४, ७)

२. भू तथा अन्य तत्सम धातुओं के विधिलिङ् के रूप स्मरण करो।

३. दृश् धातु के रूप स्मरण करो (देखो धातु० ७)। चर्, पठ् के तुल्य।

नियम २६—(गम्यमानापि क्रिया कारकविभक्तौ प्रयोजिका) अलम् और कृतम् के साथ तृतीया होती है, यदि बस या मत अर्थ हो तो। जैसे—अलं श्रमेण। कृतम् अत्यादरेण। अलम् के साथ इस अर्थ में क्त्वा (ल्यप्) प्रत्यय भी होता है। अलमन्यथा सम्भाव्य (उलटा न समझें)।

नियम २७—किम्, कार्यम्, अर्थः, प्रयोजनम्, गुणः के साथ तथा किं+कृ धातु के साथ तृतीया होती है, यदि प्रयोजन या लाभ अर्थ हो तो। जैसे—मूर्ख पुत्र से क्या लाभ—मूर्खेण पुत्रेण किम्, किं कार्यम्, कोऽर्थः, किं प्रयोजनम्, को गुणः, किं क्रियते वा।

नियम २८—(पृथग्विना०, तुल्यार्थैरतुलो०) पृथक्, विना और तुल्यार्थक शब्दों के साथ तृतीया भी होती है। रामेण पृथक्। प्रियया वियोगः। ज्ञानेन विना। कृष्णेन तुल्यः। पक्ष में पृथक्, विना के साथ द्वितीया और पंचमी भी होती हैं।

नियम २९—(कर्तृकरणयोस्तृतीया) करणत्व या क्रिया-विशेषणत्व के कारण इन स्थानों पर तृतीया होती है। (**क**) कार्य करने के ढंग में। जैसे—विधिना यजते। (**ख**) जिस मूल्य से कोई वस्तु खरीदी जाए। जैसे—कियता मूल्येन क्रीतं पुस्तकम्? शतेन०। (**ग**) यात्रा के साधन में। जैसे—रथेन चरति। विमानेन विगाहमानः। (**घ**) वहनार्थक धातु के साथ ढोने के साधन में। जैसे—स्कन्धेन शत्रुं वहति। भर्तुराज्ञां मूर्ध्ना आदाय। (**ङ**) शपथ अर्थ में शपथ की वस्तु में। जैसे—जीवितेन शपामि। आत्मना शपे। (च) युक्त और हीन अर्थ में। जैसे—समायुक्तोऽप्यर्थैः अर्थेन हीनः।

नियम ३०—(हेतौ) हेत्वर्थ के कारण इन अर्थों की धातुओं के साथ तृतीया होती है। (१) सन्तुष्ट या प्रसन्न होना, (२) आश्चर्ययुक्त होना, (३) लज्जित होना। (१) कापुरुषः स्वल्पेनापि तुष्यति। (२) तव प्रावीण्येन विस्मितोऽस्मि। (३) अनेन प्रागल्भ्येन लज्जे।

नियम ३१—(हेतौ) उत्कर्ष और सादृश्य अर्थ की धातुओं के साथ गुणबोधक शब्द में तृतीया होती हैं। त्वं श्रद्धया पूर्वान् अतिशेषे (पूर्वजों से बढ़कर हो)। स्वरेण रामभद्रमनुहरति (आवाज में राम से मिलता है)। अस्य मुखं मातुः मुखेन संवदति।

अभ्यास ४

संस्कृत बनाओ—(क) (विधिलिङ्) १. हरि भोजन खावे, विद्यालय जावे, आसन पर बैठे और पाठ पढ़े। २. वह उपवन में जावे, फूल सूँघे, फलों को देखे, वृक्ष पर चढ़े। ३. भूपति तलवार से और इन्द्र वज्र से शत्रुओं को **नष्ट करें**। ४. **मैं समझता हूँ कि यह बात उसको स्वीकार होगी**। ५. इष्ट को धर्म से **मिला दे**। ६. अति का सर्वत्र **त्याग करे**। ७. **कौन क्षत्रिय होकर** अधर्मयुद्ध से जय चाहेगा। **(ख)** १. **धर्म करो**। २. मृगशिशु निःशंक हो धीरे-धीरे **घूम रहे हैं**। ३. वह पहाड़ पर **तप कर** रहा है। ४. बैल खेत में **घास चरता है**। ५. **जो दुष्ट का सत्कार करता है, वह जल में लकीर खींचता है**। ६. **तुमने उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया**। ७. **सोलह वर्ष के पुत्र के साथ** मित्रवत् **व्यवहार करे**। ८. यह कौन **भोली-भाली** तपस्वि-कन्याओं **के साथ अशिष्टता कर रहा है ?** ९. **विद्वान् व्यक्ति जानते हुए भी जड़ के तुल्य लोक में व्यवहार करे**। १०. गुरु **शिष्य** से पुत्रवत् **व्यवहार करे**। ११. **चन्द्रमा के राहु से ग्रस्त होने पर भी रोहिणी उसके पीछे चलती है**। १२. कल्याण का इच्छुक **सन्मार्ग पर चले**। १३. वह **रथ में घूमता** है। १४. इस रास्ते से पैदल चलनेवाले जाते हैं। १५. गिरि पर यति घूमते हैं। १६. राम **वन में घूमे**। १७. भाप उठी। १८. कोलाहल की ध्वनि उठी। १९. वह **धर्म का उल्लंघन करता है**। २०. तुम सबकी **समानरूप से सेवा करो**। २१. उसने भोजनादि से **मेरी सेवा की**। २२. **रोगी की सावधानी से सेवा करो**। २३. रामायण की कथा का **संसार में प्रचार होगा**। **(ग)** (तृतीया) १. **हठ मत करो**। २. **श्रम से यह काम सिद्ध नहीं होगा**। ३. विवाद मत करो, मत हँसो, **मत रोओ**। ४. **हँसी मत करो**। ५. **बात बहुत मत बढ़ाओ**। ६. **इस बात से क्या लाभ, बस करो**। ७. पुरुषार्थ के बिना भाग्य नहीं **बनता**। ८. इसकी आवाज कृष्ण से मिलती है। ९. इसका मुँह पिता के मुँह से मिलता है। १०. वह विधिपूर्वक पढ़ता है। ११. तुमने यह साड़ी कितने मूल्य में **खरीदी ? सौ रुपए में**। १२. विमान से **आकाश में घूमता है**। १३. धन से युक्त मनुष्य **आदृत होता** है, धन से हीन **तिरस्कृत** होता है। १४. दुर्जन थोड़े से प्रसन्न होता है। १५. उसकी विद्वत्ता से विस्मित हूँ। १६. मैं असत्य-भाषण से लज्जित हूँ।

संकेत—(क) ३. नाशयेताम्। ४. यथाहं पश्यामि, तथा तस्यानुमतं भवेत्। ५. योजयेत्। ६. वर्जयेत्। ७. को हि क्षत्रियो भवन्⋯इच्छेत् **(ख)** १. धर्मं चर। २. चरन्ति। ३. तपश्चरति। ४. शस्यं चरति। ५. रचयति रेखाः सलिले यस्तु खले चरति सत्कारम्। ६. तस्मिन् त्वं साधु नाचरः। ७. प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रम्⋯आचरेत्। ८. मुग्धासु⋯आचरत्यविनयम्। ९. जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोक आचरेत्। १०. शिष्यं⋯आचरेत्। ११. अनुचरति शशाङ्कं राहुदोषेऽपि तारा। १२. सन्मार्गमनुचरेत्। १३. रथेन संचरते (तृ० के साथ आत्मने० है) १६. विचचार दावम्। १७. उदचरत्। १९. धर्ममुच्चरते (सकर्मक आत्मने० है)। २०. सममुपचर। २१. मामुपाचरत्। २२. यत्नादुपचर्यतां रुग्णः। २३. लोकेषु प्रचरिष्यति। **(ग)** १. अलं निर्बन्धेन। २. अलं श्रमेण। ३. अलं परिदेवनेन। ४. अलमुपहासेन। ५. अलमतिविस्तरेण। ६. किमनेन, आस्तां तावत्। ७. सिध्यति। ११. शाटिका क्रीता⋯शतकेन। १२. दिवं विगाहते। १३. आद्रियते, तिरस्क्रियते।

शब्दकोष—१००+२५=१२५]　　**अभ्यास ५**　　(व्याकरण)

(क) साधुः (पुं०, सज्जन), मृत्युः (पुं०, मृत्यु), पांसुः (पुं०, धूल), असुः (पुं०, प्राण), सानुः (पुं०, शिखर)। (६)। **(ख)** सद् (बैठना, खिन्न होना), प्रसद् (प्रसन्न होना, स्वच्छ होना, सफल होना), विषद् (दुःखित होना), आसद् (पहुँचना), प्रत्यासद् (समीप आना), निषद् (बैठना), अवसद् (नष्ट होना), उत्सद् (नष्ट होना), उपसद् (पास जाना), स्वद् (अच्छा लगना), प्रतिश्रु (प्रतिज्ञा करना), अवहननम् (कूटना)। (१२)। **(ग)** कृते (लिए)। (१)। **(घ)** प्रांशुः (ऊँचा), आगन्तुः (आगन्तुक), प्रभविष्णुः (समर्थ, स्वामी), स्पृहयालुः (इच्छुक), द्वित्राः (दो-तीन), पञ्चषाः (पाँच-छः)। (६)। पांसु और असु शब्द नित्यबहुवचन हैं।

व्याकरण (गुरु, लट्, चतुर्थी)

१. गुरु शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ९)

२. सद् और पा धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ८, ११)

नियम ३२—(कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम्, क्रियया यमभिप्रैति०) दान आदि कार्य या कोई क्रिया जिसके लिए की जाती है, उसे संप्रदान कहते हैं।

नियम ३३—(चतुर्थी सम्प्रदाने) संप्रदान में चतुर्थी होती है। जैसे—विप्राय गां ददाति युद्धाय संनह्यते (तैयारी करता है)। विद्यायै यतते। पुत्राय धनं प्रार्थयते।

नियम ३४—(रुच्यर्थानां प्रीयमाणः) रुच् (अच्छा लगना) अर्थ की धातुओं के साथ चतुर्थी होती है। हरये रोचते भक्तिः। यद् भवते रोचते। बालकाय मोदकं रोचते (बालक को लड्डू अच्छा लगता है)।

नियम ३५—(धारेरुत्तमर्णः) धारि धातु (ऋण लेना) के साथ ऋणदाता में चतुर्थी होती है। देवदत्तो रामाय शतं धारयति (राम का सौ रुपये ऋणी है)।

नियम ३६—(स्पृहेरीप्सितः) स्पृह् धातु तथा उससे बने शब्दों के साथ इष्ट वस्तु में चतुर्थी होती है। पुष्पेभ्यः स्पृहयति (फूलों को चाहता है)। भोगेभ्यः स्पृहयालवः।

नियम ३७—(क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः) क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्य्, असूय अर्थ की धातुओं के साथ जिस पर क्रोध किया जाए, उसमें चतुर्थी होती है। रामः मूर्खाय (मूर्ख पर) क्रुध्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति। सीतायै नाक्रुध्यन्नाप्यसूयत। यदि क्रुध् और द्रुह् से पूर्व उपसर्ग होगा तो द्वितीया होगी। क्रूरम् अभिक्रुध्यति, अभिद्रुह्यति।

नियम ३८—(प्रत्याङ्भ्यां श्रुवः०) प्रतिश्रु और आश्रु धातु के साथ प्रतिज्ञा करने के अर्थ में चतुर्थी होती है। विप्राय गां प्रतिशृणोति (गाय देने की प्रतिज्ञा करता है)।

नियम ३९—(तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या) जिस प्रयोजन के लिए जो वस्तु या क्रिया होती है, उसमें चतुर्थी होती है। मोक्षाय हरिं भजति। यूपाय दारु। काव्यं यशसे।

नियम ४०—चतुर्थी के अर्थ में 'अर्थम्' और 'कृते' अव्ययों का प्रयोग होता है। अर्थम् के साथ समास होगा और कृते के साथ षष्ठी। भोजनार्थम्, भोजनस्य कृते।

अभ्यास ५

संस्कृत बनाओ—(क) (गुरु, लृट्) १. **जो जन्म लेगा, उसकी मृत्यु अवश्य होगी और जो मरेगा, उसका जन्म अवश्य होगा।** २. राम लम्बा है, पर उसका छोटा भाई भरत **नाटा** है। ३. छोटे बच्चे **धूल में** खेलते हैं। ४. शिशु के **प्राण बचाने हैं।** ५. ऋषि पर्वतों के शिखर पर रहते हैं। ६. भानु **उदय होता है** ओर विधु **अस्त होता है।** ७. **अनुचरों को चाहिए कि स्वामी को धोखा न दें।** ८. **हाथी और गीदड़ की मित्रता नहीं होती।** ९. दो-तीन आगन्तुक कल मेरे घर आएँगे और मेरे यहाँ **रहेंगे।** १०. हम **पाँच-छः दिन में** बनारस जाएँगे। ११. जाड़े में पहाड़ की चोटियों पर बर्फ गिरेगी और वे सफेद हो जाएँगी। १२. **बड़े आदमी हँसी उड़ाएँगे।** १३. **गुरुओं की आज्ञा पर तर्क-वितर्क नहीं करना चाहिए।** १४. **तरु फल आने पर झुक जाते हैं।** १५. ऐसा करूँगा तो **मेरी हँसी होगी।** १६. **मरना अच्छा है, अपमान सहना अच्छा नहीं।** १७. **ढीठ स्त्री शत्रुतुल्य है। (ख)** (सद् धातु) १. मैं यहीं **बैठा हूँ,** आप शीघ्र आवें। २. मेरा हृदय **खिन्न हो रहा है।** ३. मेरे **अंग व्याकुल हो रहे हैं।** ४. **नीति की व्यवस्था ठीक न होने पर सारा संसार विवश हो दुःखित होता है।** ५. जगदाधार भगवन्! **मुझसे प्रसन्न हों।** ६. माता-पिता पुत्र की नम्रता से प्रसन्न होते हैं (प्र+सद्)। ७. जो **किसी कारण से** क्रुद्ध होता है, वह **उस कारण के समाप्त होने पर** प्रसन्न हो जाता है। (प्र+सद्)। ८. **दिशाएँ स्वच्छ हो** गईं (प्र+सद्)। ९. **उचित पात्र में रखी हुई क्रिया शोभित होती है।** १०. धीरे पुरुष सुख में प्रसन्न नहीं होते और दुःख में दुःखी नहीं होते (न, विषद्)। ११. **दुःखित न होइये।** १२. **वह ज्योंही घर पहुँचे, त्यों ही मेरे पास भेजना।** १३. कुत्ता नदी पर **पहुँचा।** १४. **घर जाने का समय हो रहा है, जल्दी करो।** १५. तुम **इधर** बैठो। १६. आप बैठिये, मैं भी **सुख से बैठता हूँ।** १७. **हल्की चीज तैरती है, भारी चीज नीचे बैठ जाती है।** १८. उद्यम के तुल्य कोई बन्धु नहीं है, **जिसे करके कोई दुःखित नहीं होता।** १९. मेरे प्राण नष्ट हो रहे हैं (अवसद्)। २०. **यदि मैं काम नहीं करूँगा तो ये लोग नष्ट हो जाएँगे।**

संकेत—(क) १. जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। २. वामनः, खर्वः, पृश्निः। ३. पांसुषु। ४. असवो रक्षणीयाः। ५. उदेति····अस्तमेति। ७. न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः। ८. भवन्ति गोमायुसखा न दन्तिनः। ९. निवत्स्यन्ति। १०. पञ्चषैर्दिवसैः। १२. महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति। १३. आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया। १४. भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैः। १५. गमिष्याम्युपहास्यताम्। १६. वरं मृत्युर्न पुनरपमानः। १७. अविनीता रिपुर्भार्या। **(ख)** १. सीदामि। २. सीदति। ३. सीदन्ति गात्राणि। ४. विपन्नायां नीतौ सकलमवशं सीदति जगत्। ५. प्रसीद मे। ७. निमित्तमुद्दिश्य····तस्यापगमे। ८. दिशः प्रसेदुः। ९. क्रिया हि वस्तूपहिता प्रसीदति। ११. मा विषीदत। १२. यदैव आसीदति-तदैव मां प्रति प्रेषय। १३. आससाद। १४. प्रत्यासीदति गृहगमनकालः, त्वर्यताम्। १५. इतः। १६. सुखासीनो भवामि। १७. यल्लघु तदुत्प्लवते, यद् गुरु तन्निषीदति। १८. यं कृत्वा नावसीदति। १९. उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्।

शब्दकोष—१२५+२५=१५०] **अभ्यास ६** (व्याकरण)

(क) क्रमेलक: (ऊँट), निसर्ग: (स्वभाव), प्रवृत्ति: (स्त्री०, समाचार), विसृष्टि: (स्त्री०, छुट्टी), कुलक्रमम् (कुल-परम्परा), शासनम् (आज्ञा), धामन् (नपुं०, स्थान)। (७)। **(ख)** वृत् (होना, बर्ताव करना), प्रवृत् (लगना, चलना), अनुवृत् (पीछे चलना), निवृत् (लौटना), अभिवृत् (पास आना), अतिवृत् (१. उल्लंघन करना, २. बीतना), आवृत् (लौटकर आना), आवर्ति (फेरना, दुहराना), परिवृत् (चक्कर खाना), आशङ्क् (आशंका करना), विप्रलभ् (ठगना), आशंस् (आशा करना), स्पन्द् (फड़कना), घट् (घटना होना), परिणम् (बदलना)। १५। **(ग)** उभयथा (दोनों प्रकार से), वृथा (व्यर्थ ही), अद्यत्वे (आजकल)। (३)।

व्याकरण (९ सर्वनाम पुंलिग, लट् आत्मनेपदी, चतुर्थी)

१. सर्व शब्द के पुंलिंग के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ७७)

२. सेव् और वृत् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २०, २५)

नियम ४१—**(क)** (क्लृपि संपद्यमाने च) क्लृप्, संपद्, जन्, भू, अस् (२ प०) आदि धातुओं के साथ समर्थ होना या होना अर्थ में चतुर्थी होती है। विद्या ज्ञानाय कल्पते संपद्यते जायते वा। कल्पसे रक्षणाय। भू या अस् के प्रयोग के बिना भी चतुर्थी होती है। काव्यं यशसे। **(ख)** (उत्पातेन०) कोई उत्पात किसी अशुभ घटना का संकेत करे तो चतुर्थी होगी। वाताय कपिला विद्युत्। **(ग)** हित और सुख के साथ चतुर्थी होती है। ब्राह्मणाय हितं सुखं वा।

नियम ४२—(क्रियार्थोपपदस्य च०) यदि तुमुन्-प्रत्ययान्त धातु का अर्थ गुप्त हो तो कर्म में चतुर्थी होती है। फलेभ्यो याति। (फल लाने के लिए०)। वनाय गां मुमोच (वन जाने के लिए०)। (तुमर्थाच्च०) यदि तुमुन् के अर्थ में घञ् प्रत्यय होगा तो भी चतुर्थी होगी। यागाय याति (यष्टुं यातीत्यर्थ:, यज्ञ करने के लिए जाता है)।

नियम ४३—(नम:स्वस्तिस्वाहास्वधालंवषड्योगाच्च) नम:, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् (तथा पर्याप्त अर्थवाले अन्य शब्द), वषट् के साथ चतुर्थी होती है। गुरवे नम:। पुत्राय स्वस्ति। अग्नये स्वाहा। पितृभ्य: स्वधा। इन्द्राय वषट्। हरि: दैत्येभ्य: अलम्, प्रभु:, समर्थ:, शक्त: वा। **(क)** नमस्कृ के साथ साधारणतया द्वितीया होती है। नमस्करोति देवान्। मुनित्रयं नमस्कृत्य। **(ख)** प्रणाम करना अर्थवाली प्रणम्, प्रणिपत् आदि धातुओं तथा इनके संज्ञाशब्दों के साथ द्वितीया और चतुर्थी दोनों होती हैं। जैसे—न प्रणमन्ति देवताभ्य:। तां प्रणनाम। प्रणिपत्य सुरास्तस्मै। धातारं प्रणिपत्य। अस्मै प्रणाममकरवम्। **(ग)** आशीर्वादार्थक स्वागतम्, कुशलम् आदि के साथ चतुर्थी और षष्ठी दोनों होती हैं। **(घ)** अलम्, प्रभु: आदि तथा प्र+भू धातु के साथ चतुर्थी होती है। प्रभुर्मल्लो मल्लाय। प्रभवति मल्लाय।

नियम ४४—(क्रियया यमभिप्रैति०) 'कहना' अर्थ की धातुओं कथ, ख्या, शंस्, चक्ष् और निवेदि आदि के साथ तथा 'भेजना' अर्थ की धातुओं प्र+हि, वि+सृज् आदि के साथ चतुर्थी होती है। मैथिलाय कथयांबभूव स:। आख्याहि मे को भवानुग्ररूप:। होमवेलां गुरवे निवेदयामि। भोजेन दूतो रघवे विसृष्ट:।

नियम ४५—(मन्यकर्मण्यनादरे०) अनादर अर्थ में मन् धातु के साथ द्वितीया और चतुर्थी होती है। न त्वां तृणं मन्ये तृणाय वा।

नियम ४६—(गत्यर्थकर्मणि द्वितीया०) गत्यर्थक धातु के साथ कर्म में द्वितीया और चतुर्थी होती हैं, यदि चेष्टा हो तो। अन्यत्र द्वितीया ही होगी। ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति। मनसा हरिं व्रजति। पन्थानं गच्छति।

अभ्यास ६

संस्कृत बनाओ—(क) (सर्वनाम, लट् आ०) १. **तू जिसको अग्नि समझता है, वह स्पर्श के योग्य रत्न है।** २. **क्यों मुझे धोखा देते हो?** ३. **मैं मनोरथ की आशा नहीं करता,** हे भुजा, तू क्यों व्यर्थ **फड़क रही है?** ४. दूध **दही के रूप में परिणत होता है।** ५. **क्या सोचकर आप यह कह रहे हैं?** ६. **यह बात दोनों तरह से हो सकती है।** ७. **ऊँट क्रीडोद्यान में जाकर भी काँटे ही ढूँढ़ता है।** ८. **अर्जुन, भाग्य से ही ऐसा युद्ध क्षत्रियों को मिलता है। (ख) (वृत्, सेव् धातु)** १. **ऐसा मेरे मन में है।** २. इस विषय में हमारी बड़ी **उत्सुकता है।** ३. आप ही बताओ, इस **दुष्ट के साथ कैसा बर्ताव करें।** ४. वह आजकल **परेशानी में है।** ५. अब प्रातःकाल है, तुम सब पढ़ाई में **लगो।** ६. सीता देवी का क्या **हुआ, क्या कुछ समाचार है?** ७. यज्ञ **ठीक चल रहा है।** ८. मेरी जीवन-यात्रा सुख से चल रही है। (वृत्)। ९. परीक्षा **सिर पर** है, वह अध्ययन में लगा हुआ है। (वृत्)। १०. माता **स्वाभाविक स्नेह से सन्तान से** व्यवहार करती है। (वृत्)। ११. ऐसे **पुत्र से क्या लाभ, जो पिता को दुःख दे।** १२. **क्या शक्तिभर** पढ़ाई में लगे हो (प्रवृत्)? १३. **राजा प्रजा के हित में लगे।** १४. सहसा उसकी **आँसू की धार बह चली।** १५. **बड़ा आदमी जैसा करता है, लोग उसका ही अनुसरण करते हैं।** (अनुवृत्)। १६. **लोग मालिक की इच्छा के अनुसार चलते हैं।** १७. **लौकिक सज्जनों की वाणी अर्थ के पीछे चलती है।** १८. सत्पुत्र **कुल-परम्परा का** अनुसरण करता है (अनुवृत्)। १९. **जहाँ जाकर नहीं लौटते, वह मेरा परम धाम है।** २०. सज्जन पाप से निवृत्त होता है (निवृत्)। २१. मांसभक्षण से रुके (निवृत्)। २२. कन्याएँ **पौधों को जल** देने के लिए **इधर ही आ रही हैं।** २३. भौंरा मेरे **मुँह की ओर आ रहा है।** २४. जो **पिता की आज्ञा का उल्लंघन करता है,** वह दुःख पाता है। २५. माता-पिता की सेवा करो। **(ग)** (चतुर्थी) १. धन दान के लिए होता है (क्लृप्)। २. **तुम रक्षा में समर्थ हो।** ३. **काव्य यश के लिए, धन के लिए, व्यवहारज्ञान के लिए और अशिवक्षति के लिए होता है।** ४. शिष्यों का हित और सुख हो। ५. फूलों के लिए उद्यान में जाता है। ६. हवन करने के लिए जाता है। ७. पिताजी को नमस्कार, शिष्यों को आशीर्वाद। ८. इन्द्र के लिए स्वाहा। ९. **यह योद्धा उस योद्धा से लड़ने में समर्थ है।** १०. राजा शत्रुओं के लिए समर्थ है, पर्याप्त है।

संकेत—(क) १. आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्। २. किं मां विप्रलभसे। ३. मनोरथाय नाशंसे स्पन्दसे। ४. दधिभावेन परिणमते। ५. किमुद्दिश्य भवान् भाषते। ६. इदमुभयथाऽपि घटते। ७. निरीक्षते केलिवनं प्रविष्टः क्रमेलकः कण्टकजालमेव। ८. सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्। **(ख)** १. इदं मे मनसि वर्तते। २. महत् कुतूहलं वर्तते। ३. दुर्जने कथं वर्तताम्। ४. दुःखे। ५. प्रवर्तध्वम्। ६. वृत्तम्, अस्ति काचित् प्रवृत्तिः। ७. सर्वथा प्रवर्तते। ९. प्रत्यासीदति। १०. निसर्गस्नेहेनापत्येषु। ११. पुत्रेण किम्, यः पितृदुःखाय वर्तते। १२. अपि स्वशक्त्या। १३. प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः। १४. प्रावर्तताश्रुधारा। १५. यद्यदाचरति श्रेष्ठो लोकस्तदनुवर्तते। १६. प्रभुचित्तमेव हि जनोऽनुवर्तते। १७. लौकिकानां हि साधूनामर्थं वागनुवर्तते। १८. कुलक्रमम्। १९. यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद् धाम परमं मम। २२. बालपादपेभ्यः, इत एवाभिवर्तन्ते। २३. वदनमभिवर्तते। २४. पितुः शासनमतिवर्तते। **(ग)** २. कल्पसे रक्षणाय। ३. काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये। ४. भूयात्। ९. प्रभवति मल्लो मल्लाय।

शब्दकोष—१५०+२५=१७५] **अभ्यास ७** (व्याकरण)

(**क**) लोकापवादः (अफवाह), अभिजनः (कुलीन), अङ्गुलीयकम् (अँगूठी), वचनीयम् (निन्दा), संगतम् (मित्रता), गोमयम् (गोबर), वयस् (नपुं०, आयु)। (७)। (**ख**) ईक्ष् (१. देखना, २. परवाह करना), अपेक्ष् (१. प्रतीक्षा करना, २. ध्यान रखना), अवेक्ष् (१. देखना, २. सोचना, ३. रक्षा करना), उपेक्ष् (उपेक्षा करना), निरीक्ष् (१. ध्यान से देखना, २. ढूँढ़ना), परीक्ष् (परीक्षा करना), प्रतीक्ष् (प्रतीक्षा करना), प्रेक्ष् (देखना), समीक्ष् (१. देखना, २. समीक्षा करना), भ्रंश् (गिरना), पराजि (हारना), त्रै (रक्षा करना)। (१२)। (**ग**) रहः (एकान्त में), सदसत् (उचित-अनुचित)। (२)। (**घ**) सज्जः (तैयार), तीक्ष्णम् (तीव्र, उग्र), योत्स्यमानः (लड़ने का इच्छुक), कामवृत्तिः (पुं०, स्वेच्छाचारी)। (४)।

व्याकरण (९ सर्वनाम नपुं०, लोट् आत्मने०, पंचमी)

१. सर्व शब्द के नपुंसक० के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ७७)

२. वृध् और ईक्ष् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २२, २६)

नियम ४७—(ध्रुवमपायेऽपादानम्) जिससे कोई वस्तु आदि अलग हो, उसे अपादान कहते हैं।

नियम ४८—(अपादाने पञ्चमी) अपादान में पंचमी होती है। ग्रामादायाति। वृक्षात् पत्रं पतति।

नियम ४९—(जुगुप्साविरामप्रमादार्थानाम्०) जुगुप्सा (घृणा), विराम (रुकना) और प्रमाद अर्थ की धातुओं और शब्दों के साथ पंचमी होती है। पापात् जुगुप्सते, विरमति। धर्मात् प्रमाद्यति।

नियम ५०—(भीत्रार्थानां भयहेतुः) भय और रक्षा अर्थ की धातुओं के साथ भय के कारण में पंचमी होती है। चोराद् बिभेति। चोरात् त्रायते। न भीतो मरणादस्मि।

नियम ५१—(पराजेरसोढः) परा+जि के साथ असह्य अर्थ में पंचमी होती है। अध्ययनात् पराजयते (पढ़ाई से हार मानता है)। परन्तु शत्रून् पराजयते (शत्रुओं को हराता है) में द्वितीया होगी।

नियम ५२—(वारणार्थानामीप्सितः) जिस वस्तु से किसी को हटाया जाए, उसमें पंचमी होती है। यवेभ्यो गां वारयति। पापात् निवारयति (पाप से हटाता है)।

नियम ५३—(अन्तर्धौ येनादर्शनमिच्छति) जिससे छिपना चाहता है, उसमें पंचमी होती है। मातुर्निलीयते कृष्णः (कृष्ण माता से छिपता है)।

नियम ५४—(आख्यातोपयोगे) जिससे नियमपूर्वक विद्या आदि पढ़ी जाए, उसमें पञ्चमी होती है। उपाध्यायादधीते। मया तीर्थात् (गुरु से) अभिनयविद्या शिक्षिता। तेभ्योऽधिगन्तुं निगमान्तविद्याम् (उनसे वेदान्त पढ़ने को)।

नियम ५५—(जनिकर्तुः प्रकृतिः, भुवः प्रभवः) उत्पन्न या प्रकट होना अर्थवाली जन् और भू आदि धातुओं के साथ पञ्चमी होती है। ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते। हिमवतो गङ्गा प्रभवति, उद्भवति, उद्गच्छति। परन्तु पुत्रादि के जन्म में स्त्री में सप्तमी होगी—मेनकायामुत्पन्नां गौरीम् (मेनका से उत्पन्न पार्वती को)।

नियम ५६—(ल्यब्लोपे कर्मण्यधिकरणे च) क्त्वा या ल्यप् का अर्थ गुप्त होगा तो कर्म और अधिकरण में पंचमी होगी। प्रासादात् प्रेक्षते। आसनात् प्रेक्षते। श्वशुरात् जिह्रेति।

नियम ५७—(गम्यमानापि क्रिया०) प्रश्न और उत्तर आदि में गुप्त क्रिया के आधार पर पंचमी होती है। कस्मात् त्वम्? नद्याः (कहाँ से आए? नदी से)। कुतो भवान्? पाटलिपुत्रात् (आप कहाँ से आए? पटना से)।

अभ्यास ७

संस्कृत बनाओ—(क) (ईक्ष्, वृध् धातु, लोट् आ०) १. माता पुत्र को देखे। २. **स्वेच्छाचारी व्यक्ति निन्दा की चिन्ता नहीं करता (ईक्ष्)। (३) स्नेह समय की अपेक्षा नहीं करता।** ४. रथ तैयार है, महाराज के विजय-**प्रस्थान की प्रतीक्षा कर रहा है।** ५. **भाग्य भी पुरुषार्थ की अपेक्षा करता है।** ६. **विद्वान्** भाग्य और पुरुषार्थ **दोनों की आवश्यकता** मानता है। ७. **मैं लड़ने के इच्छुकों को देखता हूँ** (अवेक्ष्)। ८. **कुछ बात सोचकर** वह मौन हो गया। ९. अपने कर्तव्य की **क्षणभर भी उपेक्षा न करे** (उपेक्ष्)। १०. **अच्छी तरह परीक्षा करके ही गुप्त-प्रेम करना चाहिए।** ११. भले **और बुरे की परीक्षा करके विद्वान् एक को अपनाते हैं।** १२. **तेजस्वियों की आयु नहीं देखी जाती।** १३. **धर्मवृद्धों की आयु नहीं देखी जाती।** १४. **धन कम होने पर भूख अधिक लगती है।** १५. **पुत्र-मुख-दर्शन के लिए आपको बधाई। (ख)** (पंचमी) १. वृक्ष से **पुराने** पत्ते गिरे। २. वह **दौड़ते हुए** घोड़े से गिरा। ३. वह सदाचार से **हीन हो** रहा है। ४. वह असत्य-भाषण से घृणा करता है। ५. **धीर लोग अपने निश्चय से नहीं हटते हैं।** ६. मेरी **उँगलियों से** अँगूठी **गिर गई।** ७. मेनका पार्वती को **कठोर मुनिव्रत से रोकती हुई** बोली। ८. बालक महल से गिर पड़ा (पत्)। ९. पुत्र, **इस काम से रुको।** १०. **वह अपने कर्तव्य को भूल गया था।** ११. सब प्राणि-हिंसा से **बचें** (निवृत्)। १२. **सभी प्रकार के मांस-भक्षण से बचें।** १३. मैं मृत्यु से नहीं डरता। १४. **धर्म का थोड़ा अंश भी उसे बड़े भय से बचाता है।** १५. **लोग उग्र पुरुष से डरते हैं।** १६. **मुझे लोक-निन्दा से भय है।** १७. वह पढ़ाई से हार मानता है। १८. वह दुर्जनों को हराता है। १९. वह बकरी को खेत से हटाता है। २०. चोर **सिपाही** से छिपता है। २१. मैंने गुरु से अभिनय की विद्या सीखी है। २२. अगस्त्य मुनि से **वेदान्त पढ़ने के लिए** यहाँ आया हूँ। २३. हिमालय से गंगा निकलती है। २४. काम से क्रोध होता है। २५. **गोबर से बिच्छू होता है।** २६. लोभ से क्रोध **होता है।** २७. शुकनास को **मनोरमा से एक पुत्र हुआ।** २८. ब्रह्मा के **मुख से अग्नि उत्पन्न हुई और मन से चन्द्रमा।**

संकेत—(क) २. न कामवृत्तिर्वचनीयमीक्षते। ३. न कालमपेक्षते स्नेहः। ४. प्रस्थानमपेक्षते। ५. दैवमपि पुरुषार्थमपेक्षते। ६. द्वयं विद्वानपेक्षते। ७. योत्स्यमानानवेक्षेऽहम्। ८. किमपि निमित्तमवेक्ष्य। ९. नोपेक्षेत क्षणमपि। १०. अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् सङ्गतं रहः। ११. सदसत्, सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते। १२. तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। १३. न धर्मवृद्धेषु वयः समीक्ष्यते। १४. धनक्षये वर्धते जाठराग्निः। १५. दिष्ट्या पुत्रमुखदर्शनेन वर्धते भवान्। **(ख)** १. जीर्णानि। २. धावतः। ३. भ्रंशते। ५. न निश्चितार्थाद् विरमन्ति धीराः। ६. अग्रहस्तात् प्रभ्रष्टम्। ७. निवारयन्ती महतो मुनिव्रतात्। ९. एतस्माद् विरम। १०. स्वाधिकारात् प्रमत्तः। ११. निवर्तेरन्। १२. निवर्तेत सर्वमांसस्य भक्षणात्। १४. स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्। १५. तीक्ष्णादुद्विजते लोकः। १६. लोकापवादाद् भयं मे। १९. क्षेत्रात्। २०. रक्षिणः। २२. निगमान्तविद्यामधिगन्तुम्। २४. अभिजायते। २५. गोमयाद् वृश्चिको जायते। २६. प्रभवति। २७. मनोरमायां तनयो जातः। २८. मुखादग्निरजायत, चन्द्रमा मनसो जातः।

शब्दकोष—१७५+२५=२००] **अभ्यास ८** (व्याकरण)

(**क**) हुतवहः (आग), मरालः (हंस), अवकरः (कूड़ा), मानसम् (१. मन, २. मानसरोवर), जाड्यम् (मूर्खता), अकिंचित्करत्वम् (तुच्छता), संनिधानम् (समीपता), अवज्ञा (तिरस्कार), अनुपलब्धिः (स्त्री०, अप्राप्ति)। (९)। (**ख**) मन्त्र् (१. मन्त्रणा करना, २. कहना), आमन्त्र् (१. विदाई लेना, २. बुलाना), निमन्त्र् (न्योता देना), रम् (१. मन लगाना, २. क्रीडा करना), विरम् (१. हटना, २. रुकना, ३. समाप्त होना), उपरम् (१. रुकना, २. मरना), स्यन्द् (बहना), दह् (जलाना), आरभ् (प्रारम्भ करना)। (९)। (**ग**) आरात् (१. दूर, २. समीप), ऋते (बिना), नाना (बिना), प्राक् (पूर्व की ओर), प्रत्यक् (पश्चिम की ओर), उदक् (उत्तर की ओर), दक्षिणा (दक्षिण की ओर)। (७)।

व्याकरण (९ सर्वनाम स्त्री०, लङ् आत्मने०, पंचमी)

१. सर्व शब्द के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ७७)

२. मन्त्र् और रम् धातु के रूप स्मरण करो। मन्त्रयते, रमते (सेव् के तुल्य)।

नियम ५८—(अन्यारादितरर्ते०) अन्य, आरात्, इतर (तथा अन्य अर्थवाले और भी शब्द) ऋते, पूर्व आदि दिशावाची शब्द (इनका देश, काल अर्थ हो तो भी), प्राक् आदि शब्दों के साथ पंचमी होती है। कृष्णात् अन्यो भिन्न इतरो वा। आराद् वनात्। ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः। ग्रामात् पूर्वः, उत्तरो वा। चैत्रात् पूर्वः फाल्गुनः। ग्रामात् प्राक् प्रत्यक् वा।

नियम ५९—(प्रभृत्यर्थयोगे बहिर्योगे च पञ्चमी) बहिः तथा 'बाद में' 'तब से लेकर' अर्थ के बोधक प्रभृति, आरभ्य, अनन्तरम्, परम्, ऊर्ध्वम् आदि शब्दों के साथ पंचमी होती है। शैशवात् प्रभृति। तद्दिनादारभ्य। विवाहविधेरनन्तरम्। अस्मात्परम् (इसके बाद)। वर्षाद् ऊर्ध्वम् (एक वर्ष बाद)। ग्रामाद् बहिः।

नियम ६०—(अपपरी वर्जने, आङ् मर्यादा०, प्रतिः प्रतिनिधि०) ये उपसर्ग इन अर्थों में हों तो इनके साथ पंचमी होती है :—अप (छोड़कर), परि (छोड़कर), आ (तक), प्रति (१. प्रतिनिधि, २. बदलना)। अप हरेः, परि हरेः संसार। आ मुक्तेः संसारः। आ सकलाद् ब्रह्म। प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति। तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्।

नियम ६१—(अकर्तर्यृणे०, विभाषा गुणे०) हेतुबोधक ऋण या गुणवाची शब्दों में पंचमी होती है। ऋणाद् बद्धः, जाड्याद् बद्धः। मौनान्मूर्खः। वाद-विवाद में युक्ति देने या उत्तर देने में भी पंचमी होती है। पर्वतो वह्निमान् धूमात्। नास्ति घटोऽनुपलब्धेः (घड़ा नहीं है, क्योंकि अविद्यमान है)।

नियम ६२—(पृथग्विनानानाभिः०) पृथक्, विना और नाना के साथ पंचमी, द्वितीया और तृतीया होती हैं। रामात् रामं रामेण विना पृथक् वा।

नियम ६३—(दूरान्तिकार्थेभ्यो०) दूर और समीपवाची शब्दों में पंचमी, द्वितीया और तृतीया तीनों होती हैं। ग्रामस्य दूरात् दूरेण दूरं वा।

नियम ६४—(पञ्चमी विभक्ते) तुलना में जिससे तुलना की जाती है, उसमें पंचमी होती है। रामात् कृष्णः पटुतरः। अणोरणीयान् महतो महीयान्। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी (जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से बढ़कर हैं)।

नियम ६५—(यतश्चाध्वकालनिर्माणं०) स्थान और समय की दूरी नापने में पंचमी होती है। दूरीवाचक शब्द में प्रथमा और सप्तमी होती हैं, समयवाचक में सप्तमी। वनाद् ग्रामो योजनं योजने वा। कार्तिक्या आग्रहायणी मासे।

अभ्यास ८

संस्कृत बनाओ—(क) (मन्त्र, रम्, धातु, लङ् आ०) १. राजा सचिवों के साथ **मन्त्रणा करे**। २. तुम **कुछ मन में रखकर** कह रहे हो (मन्त्र्)। ३. **तुम अकेले क्या गुनगुना रहे हो?** ४. **चकवी, अपने साथी से विदाई ले**। ५. यज्ञों में ब्राह्मणों को आमन्त्रित करो (आमन्त्र्)। ६. राजा ने विद्वानों को **निमन्त्रण दिया**। ७. **उसका एकान्त में मन लगता है**। ८. **हंस का मन मानसरोवर के बिना नहीं लगता**। ९. पत्नी पति के साथ क्रीड़ा करती है (रम्)। १०. मेरा चित्त विषयों से **हटता है**। ११. **रात्रि इस प्रकार बीत गयी**। १२. यह कहकर शेर **चुप हो गया**। १३. **राम के वियोग से उत्पन्न शोक से** दशरथ का **स्वर्गवास हो गया**। **(ख)** (पंचमी) १. **आपका शुभागमन कहाँ से हुआ? प्रयाग से**। २. **मकान पर चढ़कर उसने बरात** देखी। ३. वह **आसन पर बैठकर** चित्र देखता है। ४. बहू **श्वशुर से शर्माती है**। ५. **आग के अतिरिक्त और कौन जला सकता है?** ६. गाँव से दूर (आरात्) नदी है। ७. घर के पास (आरात्) **उद्यान** है। ८. श्रम के बिना (ऋते) धन नहीं। ९. गाँव के पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर **अनाज से हरे-भरे खेत हैं**। १०. वह बचपन से ही **व्यायाम का प्रेमी है**। ११. **उसी दिन से** दोनों की मित्रता हो गई। १२. **इसके बाद** क्या करना चाहिये? १३. गाँव के बाहर उसकी कुटी है। १४. **जन्म से लेकर आज तक इसने शठता नहीं सीखी है**। १५. उड़द से जौ को बदलता है। १६. चोर ऋण के कारण **पकड़ा गया**। १७. **मूर्खता के कारण** अनादृत हुआ। १८. **अति परिचय से अपमान होता है और किसीके यहाँ अधिक जाने से अनादर होता** है। १९. **दो हृदयों की एकता से प्रेम होता है, समीप रहने मात्र से कुछ नहीं होता**। २०. **मैं निन्दा से** मुक्त हो गया हूँ। २१. **पहाड़ में आग है, चूँकि धुआँ दीखता है**। २२. यहाँ पुस्तक नहीं है, **चूँकि दिखाई नहीं देती है**। २३. चाँदनी चन्द्रमा के बिना **नहीं रह सकती**। २४. **कूड़ा** घर से दूर फेंकना चाहिए (प्रक्षिप्)। २५. ईश्वर छोटे-से-छोटा और बड़े-से-बड़ा है। २६. कृष्ण राम से अधिक चतुर है। २७. प्रयाग नगर से गंगा-यमुना का संगम **कोस भर पर** है। २८. माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। २९. भक्तिमार्ग से ज्ञानमार्ग **अच्छा** है। ३०. कार्तिक से अगहन **एक महीने** बाद होता है।

संकेत—(क) १. मन्त्रयेत। २. किमपि हृदये कृत्वा। ३. किमेकाकी मन्त्रयसे। ४. चक्रवाकवधुके, आमन्त्रयस्व सहचरम्। ६. न्यमन्त्रयत। ७. स रहसि रमते। ८. रमते न मरालस्य मानसं मानसं विना। १०. विरमति। ११. रात्रिरेवं व्यरंसीत्। १२. उपरराम। १३. दाशरथिवियोगजन्मना शोकेन, उपरतः। **(ख)** १. कुतो भवान्, प्रयागात्। २. प्रासादात् वरयात्रां प्रैक्षत। ३. आसनात्। ४. श्वशुरात् जिह्रेति। ५. कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति। ७. निष्कुटः। ९. शस्यश्यामानि क्षेत्राणि। १०. व्यायामप्रियः। ११. तद्दिनादारभ्य। १२. अस्मात् परम्। १४. आ जन्मनः शाठ्यमशिक्षितोऽयम्। १६. बद्धः। १७. जाड्यात्। १८. अतिपरिचयादवज्ञा, सन्ततगमनादनादरो भवति। १९. हृदोरैक्यात् स्नेहः संजायते, संनिधानस्याकिंचित्करत्वात्। २०. वचनीयात्। २१. पर्वतो वह्निमान्, धूमात्। २२. अनुपलब्धेः। २३. न स्थातुं शक्नोति। २४. अवकरनिकरः। २७. क्रोशः क्रोशे वा। २९. श्रेयान्। ३०. मासे।

शब्दकोष—२००+२५=२२५] **अभ्यास ९** (व्याकरण)

(**क**) उद्गीथ: (ओम्, ब्रह्म), विश्रम: (विश्राम), नियोग: (आज्ञा), विनियोग: (उपयोग, खर्च), विदग्ध: (विद्वान्, चतुर), कालहरणम् (देर करना), कैतवम् (धोखा), कार्यकालम् (मौका), साक्षिन् (पुं०, साक्षी)। (९)। (**ख**) स्था (१. रुकना, २. रहना), उत्था (१. उठना, २. यत्न करना), उपस्था (१. पूजा करना, २. मिलना आदि), प्रस्था (प्रस्थान करना), अवस्था (१. रुकना, २. रहना), अनुष्ठा (१. करना, २. मानना), आस्था (मानना), संशी (संशय करना), अधि+इ (पर०, स्मरण करना), दय् (दया करना)। (१०)। (**ग**) कृते (लिए), अन्तरे (अन्दर, बीच में), शतम् (सौ रुपये)। (३)। (**घ**) अक्षम: (असमर्थ), अभिज्ञ: (जाननेवाला), अव्याजमनोहरम् (स्वभाव से ही सुन्दर)। (३)।

व्याकरण (इदम्, विधिलिङ् आत्मने०, षष्ठी)

१. इदम् शब्द के तीनों लिंगों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ८७)

२. लभ् और स्था धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ९, २१)

नियम ६६—(षष्ठी शेषे) सम्बन्ध का बोध कराने के लिए षष्ठी विभक्ति होती है। राज्ञ: पुरुष:। रामस्य पुस्तकम्। गङ्गाया जलम्। देवदत्तस्य धनम्।

नियम ६७—(षष्ठी हेतुप्रयोगे) हेतु शब्द के साथ षष्ठी होती है। अन्नस्य हेतोर्वसति (अन्न के लिए रहता है)।

नियम ६८—(निमित्तपर्यायप्रयोगे सर्वासां प्रायदर्शनम्) निमित्त अर्थवाले शब्दों (निमित्त, हेतु, कारण, प्रयोजन) के साथ प्राय: सभी विभक्तियाँ होती हैं। किं निमित्तं वसति, केन निमित्तेन, कस्मै निमित्ताय। कस्य हेतो:। कस्मात् कारणात्। केन प्रयोजनेन।

नियम ६९—(षष्ठ्यतसर्थप्रत्ययेन) उपरि, उपरिष्टात्, पुर:, पुरस्तात्, अध:, अधस्तात्, पश्चात्, अग्रे, दक्षिणत:, उत्तरत: आदि दिशावाची शब्दों के साथ षष्ठी होती है। गृहस्योपरि पुर: पश्चात् अग्रे वा। ग्रामस्य दक्षिणत: उत्तरतो वा। तरोरध:।

नियम ७०—(षष्ठी शेषे) कृते, समक्षम्, मध्ये, अन्त:, अन्तरे, पारे, आदौ आदि के साथ षष्ठी होती है। धनस्य कृते। गुरो: समक्षम्। छात्राणां मध्ये। गृहस्य अन्त: अन्तरे वा। गङ्गाया: पारे। रामायणस्यादौ।

नियम ७१—(एनपा द्वितीया) 'एन' प्रत्ययान्त दिशावाची दक्षिणेन उत्तरेण आदि के साथ षष्ठी और द्वितीया होती हैं। दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा। दक्षिणेन वृक्षवाटिकाम् (वृक्ष-वाटिका के दाहिनी ओर)।

नियम ७२—(दूरान्तिकार्थै: षष्ठी०) दूर और समीपवाची शब्दों के साथ षष्ठी और पंचमी दोनों होती हैं। ग्रामस्य ग्रामाद् वा दूरं समीपं निकटं पार्श्वं सकाशं वा।

नियम ७३—(अधीगर्थदयेशां कर्मणि) स्मरण करना, दया करना और स्वामी होना, इन अर्थवाली धातुओं के साथ कर्म में षष्ठी होती है। मातु: स्मरति। रामस्य दयमान:। अयं गात्राणामीष्टे (यह अपने अंगों का स्वामी है)।

नियम ७४—(यतश्च निर्धारणम्) बहुतों में से एक को छाँटने में, जिसमें से छाँटा जाए, उसमें षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं। कवीनां कविषु वा कालिदास: श्रेष्ठ:।

अभ्यास ९

संस्कृत बनाओ—(क) (इदम्, विधिलिङ् आ०) १. **इसमें जरा भी देरी न करो।** २. **बिना कृत्रिमता के भी यह शरीर सुन्दर** है। ३. यह कथा मुझे ही **लक्ष्य करती है।** ४. इस वन में अगस्त्य **आदि ब्रह्मवेत्ता** रहते हैं। ५. **न यह मिला, न वह मिला।** ६. **इसने धूर्तता नहीं सीखी** है। ७. भला **इस** तरह **भी चैन मिले।** ८. युद्ध में जाकर **पीठ न दिखावे।** ९. सदा गुरु की सेवा करे, कष्टों को सहन करे, उन्नति के लिए यत्न करे, ज्ञान से बढ़े, प्रसन्न हो और सुख पावे। **(ख)** (स्था धातु) १. वह घर में रहता है (स्था)। २. बुद्धिमान् आदमी **एक पैर से चलता है** और एक पैर से **रुका रहता है।** ३. **पति के कहने में रहना।** ४. दुर्योधन **सन्देह होने पर कर्ण आदि के पास निर्णयार्थ जाता था।** ५. मुनि लोग **मुक्ति के लिए यत्न करते हैं** (उत्था, आ०)। ६. वह आसन से **उठता है** (उत्था, पर०)। ७. इस **गाँव से सौ रुपए लगान मिलता है।** (उत्था, पर०)। ८. **वह सूर्य की पूजा करता है** (उपस्था, आ०)। ९. प्रयाग में यमुना **गंगा से मिलती** है। १०. वह **रथिकों से मित्रता करता** है। ११. यह मार्ग **वाराणसी को जाता है** और यह प्रयाग को। १२. भिक्षुक धनी के पास जाता है (उपस्था, आ०)। १३. **वह खाने के समय आ जाता है** (उपस्था, आ०), **पर काम पड़ने पर दिखाई भी नहीं देता।** १४. मैं वाराणसी चार दिन **रुकूँगा** (अवस्था, आ०), फिर प्रयाग **चला जाऊँगा** (प्रस्था, आ०)। १५. **कृष्ण दिल्ली के लिए चल पड़े** (प्रस्था, आ०)। १६. गुरु का वचन मानो (अनुष्ठा, पर०)। १७. भगवान् मारीच **क्या कर रहे हैं** (अनुष्ठा, पर०)? १८. आप **आज्ञा दें, क्या काम करें?** १९. वैयाकरण **शब्द को नित्य मानते हैं** (आस्था, आ०)। **(ग)** (षष्ठी) १. यह किस छात्र की पुस्तक है? २. राजा का आदमी किसलिए यहाँ आया है? ३. हरिद्वार में गंगा का जल शीतल, स्वच्छ और मधुर होता है। ४. वह अध्ययन के लिए छात्रावास में रहता है। ५. पेड़ के ऊपर और नीचे बन्दर कूद रहे हैं। ६. बच्चे मकान के आगे-पीछे, दक्षिण और उत्तर की ओर गेंद खेल रहे हैं। ७. याचक धन के लिए (कृते) धनी के सामने हाथ फैलाता है (प्रसारि)। ८. ईश्वर **प्राणियों के बाहर और अन्दर** है। ९. हे **अग्नि, तुम सब प्राणियों के अन्दर साक्षिरूप में हो।** १०. **पता नहीं, मरूँगा कि जीऊँगा।** ११. गंगा के पार मुनि लोग रहते हैं। १२. महाभारत के आदि में यह श्लोक है। १३. गाँव के दक्षिण की ओर वन है। १४. वाटिका के उत्तर की ओर कुछ **बातचीत-सी सुनाई देती** है। १५. पिता के पास से यहाँ आया हूँ। १६. शिशु माता को स्मरण करता है।

संकेत—(क) १. अक्षमोऽयं कालहरणस्य। २. इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः। ३. लक्ष्यीकरोति। ४. प्रभृतयः, उद्गीथविदः। ५. इदं च नास्ति, न परं च लभ्यते। ६. अनभिज्ञोऽयं जनः कैतवस्य। ७. यद्येवमपि नाम विश्रमं लभेय। ८. न निवर्तेत। **(ख)** २. चलत्येकेन पादेन, तिष्ठति। ३. शासने तिष्ठ भर्तुः। ४. संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः। (आत्मनेपद के नियमों के लिए देखें अभ्यास २९, ३०)। ५. मुक्तावुत्तिष्ठन्ते। ६. उत्तिष्ठति। ७. ग्रामाच्छतमुत्तिष्ठति। ८. आदित्यमुपतिष्ठते। ९. गङ्गामुपतिष्ठते। १०. रथिकानुपतिष्ठते। ११. वाराणसीमुपतिष्ठते। १३. भोजनकाले उपतिष्ठते, कार्यकाले तु न लभ्यते। १४. अवस्थास्ये, प्रयागं प्रस्थास्ये। १५. हरिर्हरिप्रस्थमथ प्रतस्थे। १७. किमनुतिष्ठति १८. आज्ञापयतु, को नियोगोऽनुष्ठीयताम्। १९. शब्दं नित्यमातिष्ठन्ते। **(ग)** ८. बहिरन्तश्च भूतानाम्। ९. त्वमग्ने सर्वभूतानामन्तश्चरसि साक्षिवत्। १०. मरणजीवितयोरन्तरे वर्ते। १४. आलाप इव श्रूयते।

शब्दकोष—२२५+२५=२५०]　　**अभ्यास १०**　　(व्याकरण)

(**क**) रथ्यः (घोड़ा), वेला (१. समय, २. किनारा), रसना (जीभ)। (३)। (**ख**) मुद् (प्रसन्न होना), सह् (सहना), यत् (यत्न करना), वन्द् (प्रणाम करना), भाष् (कहना), कूर्द् (कूदना), शिक्ष् (सीखना), कम्प् (काँपना), ईह् (चाहना), शुभ् (शोभित होना), स्पर्ध् (स्पर्धा करना), चेष्ट् (चेष्टा करना), परा+अय्, पलाय् (भागना), द्युत् (चमकना), वेप् (काँपना), त्रप् (लज्जित होना), भास् (चमकना), दीक्ष् (दीक्षा देना), स्रंस् (गिरना), ध्वंस् (नष्ट होना), अव+लम्ब् (१. सहारा देना, २. सहारा लेना), व्यथ् (दुःखित होना)। (२२)।

व्याकरण (अदस्, लट् आत्मने०, षष्ठी)

१. अदस् शब्द के तीनों लिगों के रूप स्मरण करो (देखो शब्द० ८८)

२. मुद् और सह् धातुओं के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २३, २४)

नियम ७५—(कर्तृकर्मणोः कृति) कृदन्त शब्दों के कर्ता और कर्म में षष्ठी होती है। जिनके अन्त में कृत् प्रत्यय अर्थात् तृच् (तृ), क्तिन् (ति), अच् (अ), घञ् (अ), ल्युट् (अन), ण्वुल् (अक) आदि हों, उन्हें कृदन्त कहते हैं। जैसे—शिशोः शयनम्। पुस्तकस्य पाठः। शास्त्राणां परिचयः। दुःखस्य नाशः। ग्रन्थस्य प्रणेता। कवेः कृतिः। जनानां पालकः (लोगों का पालक)।

नियम ७६—(उभयप्राप्तौ कर्मणि) कृदन्त के साथ जहाँ कर्ता और कर्म दोनों हों, वहाँ कर्म में षष्ठी होती है। आश्चर्यो गवां दोहोऽगोपेन। शब्दानामनुशासनमाचार्येण आचार्यस्य वा (आचार्य के द्वारा शब्दों का शिक्षण)।

नियम ७७—(क्तस्य च वर्तमाने, अधिकरणवाचिनश्च) वर्तमानार्थक और भावार्थक क्तप्रत्ययान्त के साथ षष्ठी होती है। राज्ञां मतः, सतां मतः। मयूरस्य नृत्तम्। छात्रस्य हसितम् (छात्र का हँसना)।

नियम ७८—(न लोकाव्यय०) इन प्रत्ययों से बने हुए कृदन्त शब्दों के साथ षष्ठी नहीं होती :—शतृ, शानच्, उ, उक, क्त्वा, तुमुन्, क्त, क्तवतु, खल्, तृन्। जैसे—कर्म कुर्वन् कुर्वाणो वा। हरिं दिदृक्षुः। दैत्यान् घातुको हरिः। जगत् सृष्ट्वा। सुखं कर्तुम्। विष्णुना हता दैत्याः। हरिणा ईषत्करः प्रपञ्चः। कामुकः और द्विषत् के साथ षष्ठी होगी। लक्ष्म्याः कामुक। मुरस्य मुरं वा द्विषन्।

नियम ७९—(कृत्यानां कर्तरि वा) कृत्य प्रत्ययों (तव्य, अनीय, यत्, ण्यत् आदि) के साथ कर्ता में तृतीया और षष्ठी होती हैं। मया मम वा सेव्यो हरिः। न वयमनुग्राह्याः प्रायो देवतानाम्। न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।

नियम ८०—(तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्यां०) तुल्य अर्थवाले शब्दों के साथ तृतीया और षष्ठी होती हैं। तुला और उपमा के साथ षष्ठी ही होगी। कृष्णस्य कृष्णेन वा तुल्यः सदृशः समो वा (कृष्ण के सदृश)।

नियम ८१—(चतुर्थी चाशिष्यायुष्य०) आशीर्वाद देने में आयुष्यम्, भद्रम्, कुशलम्, सुखम्, हितम् आदि के साथ चतुर्थी और षष्ठी होती हैं। कृष्णस्य कृष्णाय वा कुशलं भद्रं वा भूयात् (कृष्ण का भला हो)।

नियम ८२— (व्यवहृपणोः०, दिवस्तदर्थस्य, कृत्वोऽर्थ०) इन स्थानों पर षष्ठी होती है :—व्यवहृ, पण् और दिव् धातु जब जुआ खेलने या क्रय-विक्रय अर्थ में हों और कृत्व प्रत्यय के साथ। शतस्य व्यवहरणं पणनं वा। शतस्य दीव्यति। पञ्चकृत्वोऽह्नो भोजनम्।

अभ्यास १०

संस्कृत बनाओ—(क) (अदस्, लृट् आ०) १. **सामने इस देवदार के पेड़ को देख रहे हो, इसे शिव ने पुत्रवत् माना है।** २. **ये घोड़े मृग के वेग को सहन न करते हुए दौड़ रहे हैं।** ३. **इसकी विद्या जिह्वाग्र पर रहती है।** ४. इनको पढ़ने में प्रवृत्ति है। ५. मैं स्वामी की **चित्तवृत्ति का अनुसरण करूँगा।** ६. **तुम थोड़ी देर में अपने घर पहुँच लोगे।** ७. पिता इस समाचार को सुनकर **न जाने क्या विचारेंगे ?** ८. जो दुःख सहेगा, यत्न करेगा, गुरु की सेवा करेगा, सत्य बोलेगा, वह सदा सुख पायेगा। ९. जो माता-पिता की **वन्दना करेगा,** समयानुसार खेलेगा, **कूदेगा,** वेद को **सीखेगा,** सबका हित **चाहेगा,** ज्ञानोपार्जन में **स्पर्धा करेगा, सत्कर्म में चेष्टा करेगा,** अध्ययन से नहीं घबड़ाएगा, दुष्कर्म से **लज्जित होगा,** धर्म की **दीक्षा लेगा,** वह कभी भी **न च्युत होगा, न नष्ट होगा** और **न दुःखी होगा।** **(ख)** (षष्ठी) १. यह कालिदास की कृति है। २. शास्त्रों का परिचय बुद्धि को **बढ़ाता** है। ३. मित्रों का दर्शन अब **गम के लिए दुःखद हो गया** है। ४. पाणिनि की अष्टाध्यायी की **रचना सुन्दर है।** ५. **त्रुटि करना** मनुष्यों का **स्वभाव** है। ६. **इन दोनों** पुस्तकों **में से एक ले लो।** ७. इन बालकों में से **एक** यहाँ आवे। ८. **उसका स्वर्गवास हुए आज दसवाँ महीना है।** ९. **उसको तप करते हुए कई वर्ष हो गए।** १०. स्वभाव से ही **सीता राम को प्रिय थी, इसी प्रकार राम सीता को प्राणों से भी प्रिय थे।** ११. वह सत्कार **मेरे मनोरथ से भी परे की चीज थी।** १२. **थोड़े के लिए बहुत छोड़ने के इच्छुक तुम मुझे मूर्ख प्रतीत होते हो।** १३. ग्वाले के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति का गाय को दुहना आश्चर्य की बात है। १४. अनुचरों को चाहिये कि वे स्वामी को धोखा न दें। १५. हम लोग देवताओं के अनुग्रह के योग्य नहीं हैं। १६. मोर का नाचना मन को हरता है। १७. **कोयल की आवाज कानों को सुखद होती है।** १८. परिश्रम करता हुआ व्यक्ति सुखी रहता है। १९. राम को देखने का इच्छुक यहाँ आया। २०. रावण से द्वेष करनेवाले राम की विजय हो। २१. शिष्य का शुभ हो। २२. **राजा मुझे ही मानता है।** २३. **मनोरथों के लिए कुछ भी अगम्य नहीं है।** २४. **यह आपके योग्य नहीं है।** २५. **यह स्नेह के योग्य ही है।** २६. वह **सौ रुपए की लेन-देन करता है।** २७. वह हिमालय की **शोभा का अनुकरण करता था।** २८. **आपको न दीखे हुए बहुत दिन हो गए।**

संकेत—(क) १. अमुं पुरः पश्यसि देवदारुं, पुत्रीकृतोऽसौ वृषभध्वजेन। २. धावन्त्यमी मृगजवाक्षमयेव रथ्याः। ३. अमुष्य विद्या रसनाग्रनर्तकी। ५. चित्तवृत्तिमनुवर्तिष्ये। ६. क्षणात् स्वगृहे वर्तिष्यसे। ७. न जाने किं प्रतिपत्स्यते। ८. लप्स्यते। ९. वन्दिष्यते, कूर्दिष्यते, शिक्षिष्यते, ईहिष्यते, स्पर्धिष्यते, सत्कर्मणि चेष्टिष्यते, पलायिष्यते, त्रपिष्यते, दीक्षिष्यते, स्रंसिष्यते, ध्वंसिष्यते, व्यथिष्यते। **(ख)** २. वर्धयति। ३. रामस्य दुःखाय। ४. शोभना कृतिः। ५. स्खलनं, धर्मः। ६. गृह्यतामनयोरन्यतरत्। ७. अन्यतमः। ८. अद्य दशमो मासस्तस्योपरतस्य। ९. कतिपये संवत्सरास्तस्य तपस्तप्यमानस्य। १०. प्रिया तु सीता रामस्य, तथैव रामः सीतायाः प्राणेभ्योऽपि प्रियोऽभवत्। ११. मनोरथानामप्यभूमिः। १२. अल्पस्य हेतोर्बहु हातुमिच्छन्, विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्। १७. कोकिलस्य व्याहृतं कर्णौ सुखयति। २२. अहमेव मतो महीपतेः। २३. मनोरथानामगतिर्न विद्यते। २४. नैतदनुरूपं भवतः। २५. सदृशमेवैतत् स्नेहस्य। २६. शतस्य व्यवहरति। २७. लक्ष्मीमनुचकार। २८. कापि महती वेला तवादृष्टस्य।

शब्दकोष—२५०+२५=२७५] **अभ्यास ११** (व्याकरण)

(**क**) कन्दुकः (गेंद), मयूखः (किरण), व्यसनम् (विपत्ति), स्यन्दनम् (रथ), क्षतम् (चोट)। (५)। (**ख**) पत् (१. गिरना, २. पड़ना), आपत् (१. आ पड़ना, २. प्रतीत होना), अनुपत् (पीछा करना), उत्पत् (१. उड़ना, २. उठना), निपत् (१. गिरना, २. पड़ना) प्रणिपत् (प्रणाम करना)। नम् (१. प्रणाम करना, २. झुकना), उन्नम् (उठना), अवनम् (झुकना), अवनमय (झुकाना), प्रणम् (प्रणाम करना)। पच् (पकाना), परिपच् (परिपक्व होना), विपच् (फलित होना)। आस् (बैठना)। (१५)। (**ग**) सद्यः (शीघ्र), मुहुः (बार-बार), अभीक्ष्णम् (१. बार-बार, २. निरन्तर)। (३)। (**घ**) अधीतिन् (विद्वान्), गृहीतिन् (सीखनेवाला)। (२)

व्याकरण (युष्मद्, सप्तमी)

१. युष्मद् के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ८५)

२. पत्, नम्, पच् सोपसर्ग के अर्थों तथा रूपों को स्मरण करो। (देखो धातु० १२, १३)

नियम ८३—(आधारोऽधिकरणम्) किसी क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं, जहाँ पर या जिसमें वह कार्य किया जाता है। आधार तीन प्रकार का है—१. औपश्लेषिक (संयोग-सम्बन्धवाला), २. वैषयिक (विषय में), ३. अभिव्यापक (व्यापक होकर रहना)।

नियम ८४—(सप्तम्यधिकरणे च) तीनों प्रकार के आधार या अधिकरण में सप्तमी होती है। १. आसने उपविशति, स्थाल्यां पचति। २. मोक्षे इच्छाऽस्ति। ३. सर्वस्मिन्नात्माऽस्ति (सबमें आत्मा है)।

नियम ८५—(वैषयिकाधारे सप्तमी) 'विषय में, बारे में' तथा समय-बोधक शब्दों में सप्तमी होती है। मोक्षे इच्छाऽस्ति। प्रातःकाले मध्याह्ने सायंकाले दिवसे रात्रौ वा कार्यं करोति। शैशवे, यौवने, वार्धके (बाल्य, यौवन, वृद्धत्वकाल में)। आषाढस्य प्रथमदिवसे।

नियम ८६—(**क**) (क्तस्येन्विषयस्य०) क्त-प्रत्ययान्त के अन्त में इन् प्रत्यय होगा तो उसके कर्म में सप्तमी होगी। अधीती व्याकरणे। गृहीती षट्स्वङ्गेषु। (**ख**) (साध्वसाधुप्रयोगे च) साधु और असाधु के साथ सप्तमी। साधुः कृष्णो मातरि, असाधुर्मातुले। (**ग**) (निमित्तात् कर्मयोगे) जिस फल के लिए कोई काम किया जाता है, उसमें सप्तमी होगी। चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्। केशेषु चमरीं हन्ति।

नियम ८७—(आयुक्तकुशलाभ्याम्०, साधुनिपुणाभ्याम्०) संलग्न अर्थवाले शब्दों (व्यापृतः, आयुक्तः, लग्नः, आसक्तः, युक्तः, व्यग्रः, तत्परः आदि) तथा चतुर अर्थवाले शब्दों (कुशलः, निपुणः, साधुः, पटुः, प्रवीणः, दक्षः, चतुरः आदि) के साथ सप्तमी होती है। गृहकर्मणि लग्नः, व्यापृतः, व्यग्रो वा। शास्त्रेषु निपुणः प्रवीणः दक्षो वा।

नियम ८८—(यतश्च निर्धारणम्) बहुतों में से एक के छाँटने में, जिसमें से छाँटा जाय, उसमें षष्ठी और सप्तमी होती हैं। छात्राणां छात्रेषु वा रामः श्रेष्ठः पटुतमो वा।

नियम ८९—(सप्तमीपञ्चम्यौ कारकमध्ये) समय और मार्ग का अन्तर बतानेवाले शब्दों में पंचमी और सप्तमी होती हैं। अद्य भुक्त्वाऽयं द्व्यहे द्व्यहाद् वा भोक्ता। क्रोशे क्रोशाद् वा लक्ष्यं विध्येत् (कोसभर के लक्ष्य को बींध देगा)।

नियम ९०—(वैषयिकाधारे सप्तमी) प्रेम, आसक्ति और आदर-सूचक धातुओं और शब्दों (स्निह्, अभिलष्, अनुरञ्ज्, आदृ, रम्, रतिः, स्नेहः, आसक्तः, अनुरक्तः आदि) के साथ सप्तमी होती है। पिता पुत्रे स्निह्यति। रहसि रमते। श्रेयसि रतः। दण्डनीत्यां नात्यादृतोऽभूत्।

अभ्यास ११

संस्कृत बनाओ—(क) (पत्, नम्, पच्) १. आश्रम के वृक्षों पर **धूल गिर रही है** (पत्)। २. चन्द्रमा **थोड़ी सी किरणों के साथ** आकाश से नीचे आ रहा है। ३. **परधर्म को अपनाकर जीवित रहनेवाला शीघ्र ही जाति से पतित हो जाता है।** ४. **श्रेष्ठ आदमी पतित होता हुआ भी गेंद की तरह उठ जाता है।** ५. **यह बात आपके कानों में पड़ी ही होगी।** ६. **ओह, बड़ी विपत्ति आ पड़ी** है। ७. **ओह, यह अच्छा नहीं हुआ।** ८. **संसार में जन्म लेनेवालों पर ऐसी घटनाएँ आती ही हैं।** ९. **नवयौवन से कसैले मनवालों को वे ही विषय मधुरतर प्रतीत होते हैं, जिनका वे आस्वादन कर चुके हैं (आपत्)।** १०. मृग **पीछा करते हुए रथ को बार-बार देखता** था। ११. पक्षी आकाश में उड़ते हैं (उत्पत्)। १२. **हाथ से पटकी हुई भी गेंद उछलती है।** १३. **शेर छोटा होने पर भी हाथियों पर टूटता** है (निपत्)। १४. वृक्ष से फल भूमि पर गिर रहे हैं (निपत्)। १५. पुत्र **पिता को प्रणाम करता है** (प्रणिपत्)। १६. ईश्वर को **प्रणाम करके** कार्य को प्रारम्भ करता हूँ (प्रारभ्)। १७. **चोट पर ही चोट बार-बार लगती है।** १८. आप सबको नमस्कार करता हूँ (नम्)। १९. बादल **कभी झुकता है, कभी उठता है।** २०. **कमजोर व्यक्ति सन्धि का इच्छुक होने पर झुके।** २१. बादल **जल लेने के लिए झुकता है।** २२. **शत्रुओं का शिर झुका देना।** २३. **वे देवताओं को प्रणाम करते हैं।** २४. **चावलों से** भात पकाता है। २५. वह विद्वान् परिपक्व-बुद्धि है। २६. उसकी सारी योजनाएँ **फलित हुईं।** **(ख)** (सप्तमी) १. **वे चटाई पर बैठते हैं।** २. वे पतीली में भोजन पकाते हैं। ३. सबमें ब्रह्म है। ४. बचपन में **विद्याभ्यास करनेवाले,** यौवन में **विषयों के इच्छुक,** वृद्धावस्था में **मुनिवृत्तिवाले** और अन्त में योग से **शरीर छोड़नेवाले** रघुवंशियों **का वर्णन करूँगा।** ५. फाल्गुन शुक्ला **पंचमी** को वसन्त-पंचमी का पर्व होता है। ६. उसने **दर्शन पढ़ रखे** हैं। ७. उसने वेद के **छहों अंग सीख लिये हैं।** ८. इन्द्र देवों पर सज्जन है और असुरों पर क्रूर। ९. **चर्म के लिए** मृग को मारता है, दाँतों के लिए हाथी को मारता है। १०. वह अध्ययन में लगा हुआ है। ११. कृष्ण व्याकरण और साहित्य में निपुण है। १२. मनुष्यों में बुद्धिमान् श्रेष्ठ हैं। १३. आज खाना खाकर यह दो दिन बाद खायेगा। १४. **यहाँ बैठकर** वह कोसभर दूर निशाना मार सकता है। १५. उसका एकान्त में मन लगता है। १६. उसका दण्डनीति में विश्वास है।

संकेत—(क) १. रेणुः। २. अल्पशेषैर्मयूखैः। ३. परधर्मेण जीवन् हि सद्यः पतति जातितः। ४. प्रायः कन्दुकपातेनोत्पतत्यार्यः पतन्नपि। ५. एतद् भवतः श्रुतिविषयमापतितमेव। ६. अहो, महद् व्यसनमापतितम्। ७. अहो, न शोभनमापतितम्। ८. आपतन्ति हि संसारपथमवतीर्णानामेते विषयाः। ९. नवयौवनकषायितात्मनश्च तान्येव विषयस्वरूपाण्यास्वाद्यमानानि मधुरतराण्यापतन्ति मनसः। १०. मुहुरनुपतति स्यन्दने दत्तदृष्टिः। १२. पतितोऽपि कराघातैरुत्पतत्येव कन्दुकः। १३. सिंहः शिशुरपि निपतति गजेषु। १५. पितरं प्रणिपतति। १६. प्रणिपत्य। १७. क्षते प्रहारा निपतन्त्यभीक्ष्णम्। १९. उन्नमति नमति च। २०. अशक्तः सन्धिमान् नमेत्। २१. जलमादातुमवनमति। २२. अवनमय द्विषतां शिरांसि। २३. प्रणमन्ति देवताभ्यः। २४. तण्डुलान्। २६. विपेचिरे। **(ख)** १. कटे आसते। ४. अभ्यस्तविद्यानाम्, विषयैषिणाम्, मुनिवृत्तीनाम्, तनुत्यजाम्, रघूणामन्वयं वक्ष्ये। ५. पञ्चम्याम्। ६. अधीती दर्शने। ७. गृहीती षट्स्वङ्गेषु। ९. चर्मणि। १४. इहस्थः।

शब्दकोष—२७५+२५=३००] **अभ्यास १२** (व्याकरण)

(**क**) सांयात्रिकः (समुद्री व्यापारी), पोतः (पानी का जहाज), उडुपः (छोटी नौका), रक्षिन् (सिपाही), सचेतस् (विद्वान्), अनागस् (निरपराध)। (६)। (**ख**) तॄ (१. तैरना, २. पार करना), अवतॄ (उतरना), उत्तॄ (१. पार करना, २. उत्तीर्ण होना), वितॄ (देना), निस्तॄ (पार करना), संतॄ (तैरना), स्मृ (याद करना), संस्मृ (याद करना), विस्मृ (भूलना), जि (जीतना), विजि (जीतना), पराजि (१. हराना, २. हारना), स्निह् (प्रेम करना), विश्वस् (विश्वास करना), आक्षिप् (टोकना, बात काटना), गण् (गिनना), मुच् (छोड़ना), श्रद्धा (श्रद्धा करना), उपपद् (ठीक घटना)। (१९)।

व्याकरण (अस्मद्, सप्तमी विभक्ति)

१. अस्मद् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ८६)

२. तॄ, स्मृ और जि के विशेष अर्थों को स्मरण करो। (देखो धातु० १४, १५)

नियम ९१—(आधारे सप्तमी) इन स्थानों पर सप्तमी होती है—(**क**) फेंकना अर्थ की धातुओं क्षिप्, मुच्, अस् आदि के साथ। मृगे बाणं क्षिपति, मुञ्चति, अस्यति वा। (**ख**) विश्वास और श्रद्धा अर्थवाली धातुओं और शब्दों (विश्वसिति, विश्वासः, श्रद्धा, निष्ठा, आस्था आदि) के साथ व्यक्ति में। न विश्वसेदविश्वस्ते। ब्रह्मणि श्रद्दधाति, श्रद्धा निष्ठा वा वर्तते। (**ग**) 'व्यवहार करना' अर्थ में वृत् और व्यवहृ आदि के साथ। गुरुषु विनयेन वर्तते। कुरु सखीवृत्तिं सपत्नीजने। विश्वस् के साथ द्वितीया भी।

नियम ९२—(आधारे सप्तमी) इन स्थानों पर सप्तमी होती है :—(**क**) युज् धातु तथा उससे बने शब्दों के साथ। इमामाश्रमधर्मे नियुङ्क्ते। (**ख**) 'योग्य' और 'उपयुक्त' आदि अर्थों में व्यक्ति में। युक्तरूपमिदं त्वयि। त्रैलोक्यस्यापि प्रभुत्वं तस्मिन् युज्यते। एते गुणा ब्रह्मण्युपपद्यन्ते। (**ग**) ग्रहण और प्रहार अर्थवाली धातुओं के साथ। केशेषु गृहीत्वा। न प्रहर्तुमनागसि। (**घ**) रखना अर्थ में। मन्त्रिणि राज्यभारमारोप्य। सचिवे भारो न्यस्तः। (**ङ**) अपराध् के साथ षष्ठी और सप्तमी होती हैं। कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शकुन्तला। सुभगमपराद्धं युवतिषु। अपराद्धोऽस्मि तत्रभवतः कण्वस्य।

नियम ९३—(षष्ठी चानादरे) अनादर अर्थ में षष्ठी और सप्तमी दोनों होती हैं। रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत् (रोते हुए पुत्रादि को छोड़कर उसने संन्यास ले लिया)।

नियम ९४—(यस्य च भावेन भावलक्षणम्) एक क्रिया के बाद दूसरी क्रिया होने पर पहली क्रिया में सप्तमी होती है। कर्तृवाच्य में कर्ता और कृदन्त में सप्तमी होगी। कर्मवाच्य में कर्म और कृदन्त में सप्तमी होगी, कर्ता में तृतीया। प्रथम क्रिया में कृदन्त का प्रयोग होना चाहिए। गोषु दुह्यमानासु गतः। रामे वनं गते दशरथो दिवंगतः।

नियम ९५—(यस्य च भावेन०) (**क**) 'ज्योंही, इतने ही में, उसी क्षण' इन अर्थों में सप्तमी होती है। ऐसे स्थलों पर मात्र या एव का प्रयोग होता है। अनवसितवचने एव मयि (मेरी बात पूरी न हो पाई थी, उसी समय)। प्रविष्टमात्रे एव तत्रभवति (ज्योंही आप आए, त्योंही)। (**ख**) 'जब' अर्थ में षष्ठी और सप्तमी होती हैं। एवं तयोः परस्परं वदतोः (जब वे दोनों बात कर रहे थे)। (**ग**) 'रहते हुए' अर्थ में सप्तमी। कुतो धर्मक्रियाविघ्नः सतां रक्षितरि त्वयि (तेरे रक्षक रहते हुए)। (**घ**) 'होने पर' या 'करने पर' अर्थ में सप्तमी। एवं गते, तथाऽनुष्ठिते। (**ङ**) प्रधान और उपप्रधान वाक्यों में कर्ता या कर्म एक ही हो तो उसे एक वाक्य के तुल्य मानना चाहिए, बीच में भावे सप्तमी नहीं करनी चाहिए। जैसे—'आगतेषु विप्रेषु तेभ्यो दक्षिणां देहि' न कहकर 'आगतेभ्यो विप्रेभ्यो दक्षिणां देहि' कहना चाहिए।

अभ्यास १२

संस्कृत बनाओ—(क) (अस्मद् शब्द) १. वह मुझ पर स्नेह करता है और विश्वास करता है। २. मेरी बात झूठी नहीं हो सकती है। ३. मेरी बात काटकर उसने कहना शुरू किया। ४. यह मुझे कुछ नहीं समझता। (ख) (तॄ, स्मृ, जि धातु) १. वह छोटी नौका से नदी पार करता है (तॄ)। २. छात्र नदी में तैर रहे हैं। ३. जल में पत्ता तैर सकता है, न कि पत्थर। ४. धीर आपत्ति को पार करते हैं (तॄ)। ५. समुद्र में जहाज के टूटने पर भी समुद्री व्यापारी तैरकर उसे पार करना चाहता है। ६. वह रथ से उतरा (अवतॄ)। ७. कृष्ण ने आकाश से उतरते हुए नारद को देखा। ८. समुद्र को छोड़कर महानदी और कहाँ उतरती है? ९. राम परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ (उत्तॄ)। १०. वह गंगा पार करके प्रयाग गया। ११. गुरु जिस प्रकार चतुर को विद्या पढ़ाता है, उसी प्रकार मूर्ख को। १२. भगवान् मारीच तुम्हें दर्शन देते हैं। १३. धन से मनुष्य आपत्ति को पार करते हैं (निस्तॄ)। १४. मैंने प्रतिज्ञारूपी नदी पार कर ली। १५. ग्रीष्म ऋतु में लोग नदी में तैरते हैं। १६. क्या तुम्हें मधुर जलवाली गोदावरी की याद है? १७. क्या तुम्हें पति की याद आती है ? १८. उसकी याद करके मुझे शान्ति नहीं है। १९. हे भौंरे, तुम उसको कैसे भूल गए? २०. महाराज की जय हो। २१. आपकी विजय हो। २२. उसने षड्वर्ग को जीत लिया। २३. उसकी आँख कमल को भी जीतती है। २४. वह शत्रुओं को हराता है (पराजि)। २५. वह पढ़ाई से हार मानता है (पराजि)। (ग) (सप्तमी) १. इस मृग पर बाण न छोड़ना। २. वह मृगों पर बाण छोड़ता है। ३. अविश्वासी पर विश्वास न करे और विश्वासी पर भी अधिक विश्वास न करे। ४. गुरुओं के साथ विनयपूर्वक व्यवहार करे (वृत्)। ५. तू सपत्नियों के साथ प्रियसखी का व्यवहार करना। ६. राजा ने इसको रक्षा के काम में लगाया है। ७. विचित्रता के रहस्य के लोभी सहृदय इस काव्य में श्रद्धा करेंगे। ८. सज्जन विद्वानों के गुणों की श्रद्धा करते हैं। ९. यह तुम्हारे योग्य नहीं है। १०. ये गुण ईश्वर में ठीक घटते हैं। ११. सिपाही ने चोर को बाल पकड़कर पटक दिया। १२. निरपराधी पर क्यों प्रहार कर रहे हो? १३. पुत्र पर कुटुम्ब का भार रखकर वह विदेश गया। १४. मैंने गुरु के प्रति अपराध किया है। १५. मेरे घर आने पर नौकर अपने घर गया। १६. रोते हुए पुत्रों को छोड़कर वह संन्यासी हो गया। १७. जब वह पढ़ रहा था, उसी समय उसके पिता यहाँ आए।

संकेत—(क) १. स्निह्यति, विश्वसिति। २. न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति। ३. वचनमाक्षिप्य। ४. न मामयं गणयति। **(ख)** १. नदीं तरति। २. नद्याम्। ३. पर्णं तरिष्यति। ५. याते समुद्रेऽपि च पोतभङ्गे, सांयात्रिको वाञ्छति तर्तुमेव। ६. अवततार। ७. अवतरन्तमम्बरात्। ८. सागरं वर्जयित्वा कुत्र वा महानद्यवतरति। ९. परीक्षामुदतरत्। १०. उत्तीर्य। ११. वितरति गुरुः प्राज्ञे विद्यां यथैव तथा जडे। १२. ते दर्शनं वितरति। १३. निस्तरन्ति। १४. निस्तीर्णा प्रतिज्ञासरित्। १५. निदाघे। १६. स्मरसि सरसनीरां तत्र गोदावरीं वा। १७. कच्चिद् भर्तुः स्मरसि। १८. तं संस्मृत्य न मे शान्तिरस्ति। १९. विस्मृतोऽस्येनां कथम्। २१. विजयते भवान्। २२. व्यजेष्ट। २३. विजयते। **(ग)** १. न संनिपात्यः। २. मुञ्चति। ३. विश्वस्ते नाति विश्वसेत्। ४. गुरुषु। ६. रक्षणे। ७. वैचित्र्यरहस्यलुब्धाः श्रद्धां विधास्यन्ति सचेतसोऽत्र। ८. विद्वत्सु गुणान् श्रद्दधति। ११. केशेषु गृहीत्वाऽपातयत्। १२. अनागसि। १३. न्यस्य। १४. अपराद्धोऽस्मि गुरोः। १७. पठति तस्मिन्।

शब्दकोष—३००+२५=३२५] **अभ्यास १३** (व्याकरण)

(**क**) नाकः (स्वर्ग), सुरः (देवता), असुरः (राक्षस), अच्युतः (विष्णु), त्र्यम्बकः (शिव), कृतान्तः (यम), शतक्रतुः (पुं० इन्द्र), कृशानुः (पुं०, अग्नि), पुष्पधन्वन् (कामदेव), मातरिश्वन् (वायु), मनुष्यधर्मन् (कुबेर), वेधस् (ब्रह्मा), प्रचेतस् (वरुण), सेनानीः (पुं०, कार्तिकेय), लक्ष्मीः (स्त्री०, लक्ष्मी), शर्वाणी (स्त्री० पार्वती), पौलोमी (स्त्री०, इन्द्राणी), पविः (पुं०, वज्र), पीयूषम् (अमृत), एकवाक्यम् (एक बात)। (२०)। (**ग**) एकतः (एक ओर से), एकधा (एक प्रकार से), एकैकशः (एक-एक करके), एकान्ततः (सर्वथा)। (४)। (**घ**) एकमतिः (एक रायवाले)। (१)

व्याकरण (एक शब्द, एकवचनान्त शब्द, घ्रा, लिट्, स्वरसन्धि)

१. एक शब्द के तीनों लिंगों में रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ८९)

२. घ्रा धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० सं० १०)

नियम ९६—पात्र, आस्पद, स्थान, पद, भाजन, प्रमाण शब्द जब विधेय के रूप में प्रयुक्त होंगे तो इनमें नपुंसक लिंग एकवचन ही रहेगा। उद्देश्यरूप में होंगे तो अन्य वचन भी होंगे। जैसे—गुणाः पूजास्थानं सन्ति। यूयं मम कृपापात्रं स्थ।

नियम ९७—(संख्याया विधार्थे धा) सभी संख्यावाचक शब्दों से 'प्रकार से' अर्थ में 'धा' लगता है। 'प्रकार का' अर्थ में 'विध', 'गुना' अर्थ में 'गुण' तथा 'बार' अर्थ में 'वारम्' लगता है। जैसे—एकधा, एकविधः, एकगुणः, एकवारम्। द्विधा, द्विविधः, द्विगुणः।

नियम ९८—(इको यणचि) इ ई को य्, उ ऊ को व्, ऋ ॠ को र्, ऌ को ल् हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वर हो तो। सवर्ण (वैसा ही) स्वर हो तो नहीं। जैसे—इति+अत्र=इत्यत्र। मधु+अरिः=मध्वरिः। धातृ+अंशः=धात्रंशः। ऌ+आकृतिः=लाकृति।

नियम ९९—(एचोऽयवायावः) ए को अय्, ओ को अव्, ऐ को आय्, औ को आव् हो जाता है, बाद में कोई स्वर हो तो। (पदान्त ए या ओ के बाद अ होता तो नहीं)। जैसे—हरे+ए=हरये। विष्णो+ए=विष्णवे। नै+अकः=नायकः। पौ+अकः=पावकः। परन्तु रामो+अयम्=रामोऽयम्।

नियम १००—(वान्तो यि प्रत्यये) ओ को अव्, औ को आव् हो जाता है, बाद में यकारादि प्रत्यय हो तो। जैसे—गो+यम्=गव्यम्। नौ+यम्=नाव्यम्। यूति बाद में होने पर गो के ओ को अव् होता है। गो+यूतिः=गव्यूतिः।

नियम १०१—(आद्गुणः) अ या आ के बाद (१) इ या ई को ए, (२) उ या ऊ को ओ, (३) ऋ या ॠ को अर्, (४) ऌ को अल् होता है। जैसे— रमा+ईशः=रमेशः। पर+उपकारः=परोपकारः। महा+ऋषिः=महर्षिः। तव+ऌकारः=तवल्कारः। **सूचना**—दोनों वर्णों के स्थान पर एक आदेश को एकादेश कहते हैं।

नियम १०२—(वृद्धिरेचि) अ या आ के बाद (१) ए या ऐ को ऐ, (२) ओ या औ को औ होता है। तदा+एकः=तदैकः। राज+ऐश्वर्यम्=राजैश्वर्यम्। जल+ओघः=जलौघः। देव+औदार्यम्=देवौदार्यम्। यह भी एकादेश है।

नियम १०३—(एङः पदान्तादति) पद के अन्तिम ए या ओ के बाद अ हो तो उसे पूर्वरूप (ए या ओ) हो जाता है। हरे+अव=हरेऽव। विष्णो+अव=विष्णोऽव।

अभ्यास १३

संस्कृत बनाओ—(क) (एक शब्द) १. **राजा या संन्यासी एक को मित्र बनावे।** २. **एक निवासस्थान बनावे, नगर या वन में।** ३. **बाह्यविषयों से निवृत्त और एकाग्र-चित्त मनुष्य तत्त्व को देख पाता है।** ४. **दो चित्तों के एक होने पर क्या असम्भव हो सकता है ?** ५. **गुण-समूह में एक दोष उसी प्रकार छिप जाता है, जैसे चन्द्रमा की किरणों में उसका कलंक। (ख)** (एक, एकवचनान्त शब्द) १. एक वन में एक शेर रहता था। २. इस स्त्री के **दो बच्चे** हैं, एक लड़का और एक लड़की। ३. एक पढ़ने में चतुर है, दूसरी **गाने में** दक्ष है। ४. एक बालक को पुस्तक दो और एक लड़की को फूल दो। ५. एक बालक एक बालिका से बात कर रहा है। ६. युद्धभूमि में एक ओर से एक सेना आई और **दूसरी ओर से** दूसरी सेना आई। ७. कक्षा से एक-एक करके सब छात्र चले गये। ८. मैं इस प्रश्न को एक प्रकार से **हल कर सकता हूँ,** परन्तु अध्यापक इसे दो प्रकार से हल कर सकता है। ९. जनता की एक राय थी, उन्होंने राजा के सम्मुख **एक बात कही। १०. किसको सदा सुख मिला है और किसको सदा दुःख ?** ११. **कुछ लोग ऐसा मानते हैं।** १२. गुण पूजा के स्थान हैं। १३. तुम कृपा के पात्र हो। १४. आप इस विषय में प्रमाण हैं। **(ग)** (देववर्ग) १. देवता स्वर्ग में रहते हैं। २. देवों और असुरों का **युद्ध हुआ।** ३. इन्द्र ने वज्र से असुरों को **नष्ट किया।** ४. देवता अमृत पीकर अमर **हो गये।** ५. इन्द्र ने इन्द्राणी को, शिव ने पार्वती को और विष्णु ने लक्ष्मी को पत्नी के रूप में **स्वीकार किया।** ६. कुबेर धनाधिपति हैं, उसकी नगरी अलका है और उसका विमान पुष्पक है। ७. विष्णु का शंख पांचजन्य, चक्र सुदर्शन, गदा कौमोदकी, खड्ग नन्दक और मणि कौस्तुभ हैं। ८. इन्द्र की नगरी अमरावती, घोड़ा उच्चैःश्रवाः, हाथी ऐरावत, सारथि मातलि, उपवन नन्दन और पुत्र जयन्त हैं। ९. **ब्रह्मा सृष्टि-कर्ता है।** १०. वरुण जलपति है। ११. यम जीवों के प्राणों को हरता है। १२. अग्नि वन को जलाती है। १३. वायु अग्नि का मित्र होकर उसे बढ़ाता है। १४. कामदेव दम्पती में स्नेह का संचार करता है। १५. बालकों ने फूल सूँघा। १६. मैं फल सूँघूँगा। **(घ)** (लिट् का प्रयोग करो) १. सभासद् अपने स्थानों को **गये।** २. **वह कहानी समाप्त हुई।** ३. राम के सारे प्रयत्न **सफल हुए** और देवदत्त के विफल। ४. उसकी लड़की का **नाम उमा पड़ा।** ५. वसुदेव का पुत्र कृष्ण नाम से **संसार में प्रसिद्ध हुआ।** ६. पार्वती हिमालय की **चोटी पर गई।** ७. स्वायम्भुव मरीचि से कश्यप हुए। ८. पार्वती ने हृदय से अपने **रूप की निन्दा की,** क्योंकि मदन के दाह के कारण वह रूप से शिव को **नहीं जीत सकती थी।**

संकेत—(क) १. एकं मित्रं भूपतिर्वा यतिर्वा। २. एको वासः पत्तने वा वने वा। ३. एकाग्रो हि बहिर्वृत्तिनिवृत्तस्तत्त्वमीक्षते। ४. एकचित्ते द्वयोरेव किमसाध्यं भवेदिह। ५. एको हि दोषो गुणसन्निपाते निमज्जतीन्दोः किरणेष्विवाङ्कः। **(ख)** २. अपत्यद्वयम्। ३. गाने। ६. अपरतः। ८. साधयितुं शक्नोमि। ९. एकवाक्यं विवव्रुः। १०. कस्यैकान्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा। ११. एके एवं मन्यन्ते। **(ग)** २. युयुधिरे। ३. जघान। ४. बभूवुः। ५. स्वीचक्रुः। **(घ)** १. प्रतिजग्मुः। २. विच्छेदमाप स कथाप्रबन्धः। ३. सफलतां ययुः। ४. उमाख्यां जगाम। ५. भुवि पप्रथे। ६. शिखरं जगाम। ७. प्रबभूव। ८. रूपं निनिन्द, न जेतुं शशाक।

शब्दकोष—३२५+२५=३५०] **अभ्यास १४** (व्याकरण)

(**क**) पाठशाला (पाठशाला), विद्यालयः (स्कूल), महाविद्यालयः (कॉलेज), विश्वविद्यालयः (यूनिवर्सिटी), अध्यापकः (अध्यापक), प्राध्यापकः (प्रोफेसर), आचार्यः (प्रिन्सिपल), कुलपतिः (पुं०, वाइस-चान्सलर), कुलाधिपतिः (पुं०, चान्सलर), प्रस्तोतृ (रजिस्ट्रार), अन्तेवासिन् (शिष्य), अध्येतृ (छात्र), अध्येत्री (स्त्री०, छात्रा), सतीर्थ्यः (सहाध्यायी, कक्षा का साथी), विद्यालय-निरीक्षकः (स्कूल-इन्स्पेक्टर), उप-शिक्षासंचालकः (एडिशनल डाइरेक्टर, A.D.E.), शिक्षा-निदेशकः (डाइरेक्टर, D.E.), करणिकः (क्लर्क), प्रधानकरणिकः (हेड क्लर्क), द्विजातिः (पुं०, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य), द्विजिह्वः (१. साँप, २. चुगलखोर), द्विपाद् (मनुष्य)। (२३)। (**ग**) द्विधा (दो प्रकार से) (१)। (**घ**) द्वित्राः (दो तीन)। (१)।

व्याकरण (द्वि शब्द, द्विवचनान्त शब्द, कृष्, वस्, लिट्, स्वरसन्धि)

१. द्वि शब्द के तीनों लिंगों में रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ९०)

२. कृष् और वस् धातु के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० १७, १८)

नियम १०४—द्वि और उभ शब्द सदा द्विवचन में ही आते हैं। उभय (दोनों) शब्द तीनों वचनों में आता है। (उभ और उभय के रूप तीनों लिंगों में सर्ववत् होंगे)।

नियम १०५—(**क**) दम्पती, पितरौ, अश्विनौ, इनके रूप द्विवचन में ही चलते हैं। इनके साथ क्रिया द्विवचन में आती है। दम्पती, पितरौ, अश्विनौ वा गच्छतः। (**ख**) द्वय, युगल, युग, द्वन्द्व, ये चारों 'दो' अर्थ के बोधक हैं। ये शब्द के अन्त में जुड़ते हैं और नपुंसक लिंग एकवचन होते हैं। इनके साथ क्रिया एक० में रहती है। जैसे—छात्रद्वयं, छात्रयुगलं, छात्रयुगं (छात्रद्वयी वा) पुस्तकानि पठति। (**ग**) हस्तौ, नेत्रे, पादौ, कर्णौ आदि द्विवचन में ही प्रयुक्त होते हैं।

नियम १०६—(एत्येधत्यूठ्सु) अ के बाद एकारादि इ और एध् धातु या ऊठ् (ऊ) हो तो दोनों की वृद्धि होती है। अ+ए=ऐ, अ+ऊ=औ। उप+एति=उपैति। उप+एधते=उपैधते। विश्व+ऊहः=विश्वौहः।

नियम १०७—(एङि पररूपम्) उपसर्ग के अ के बाद धातु का ए या ओ हो तो वहाँ ए या ओ ही रहता है। प्र+एजते=प्रेजते। उप+ओषति=उपोषति।

नियम १०८—(शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्) शकन्धु आदि में टि (अन्तिम स्वरसहित अंश) को पररूप होता है। शक+अन्धुः=शकन्धुः। मनस्+ईषा=मनीषा।

नियम १०९—(ओमाङोश्च) अ के बाद ओम् या आङ् (आ) हो तो पररूप अर्थात् ओम् या आ रहता है। शिवाय+ओं नमः=शिवायों नमः। शिव+एहि=शिवेहि।

नियम ११०—(अकः सवर्णे दीर्घः) (१) अ या आ+अ या आ=आ, (२) इ या ई+इ या ई=ई, (३) उ या ऊ+उ या ऊ=ऊ, (४) ऋ + ऋ = ॠ। विद्या+आलयः=विद्यालयः। गिरि+ईशः=गिरीशः। गुरु+उपदेशः=गुरूपदेशः। होतृ+ऋकारः=होतॄकारः।

नियम १११—(ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम्) द्विवचन के ई, ऊ और ए के साथ कोई सन्धि नहीं होती। हरी+एतौ=हरी एतौ। विष्णू इमौ। गङ्गे अमू। पचेते इमौ।

नियम ११२—(अदसो मात्) अदस् के म् के बाद ई या ऊ होंगे तो उनके साथ कोई सन्धि नहीं होगी। अमी+ईशाः=अमी ईशाः। अमू आसाते।

अभ्यास १४

संस्कृत बनाओ——(क) (द्वि शब्द) १. **फूल के गुच्छे की तरह** मनस्वियों की दो **गति** होती हैं, या तो सबके सिर पर रहेंगे या वन में ही **झड़ जायँगे**। २. व्यास का कथन है कि इन दो को गले में **भारी शिला बाँधकर जल में फेंक देना चाहिए, धनी जो दान न दे** और निर्धन जो तपस्वी न हो। ३. ये दोनों पुरुष **शिर-दर्द करनेवाले** होते हैं, गृहस्थी **निकम्मा** हो और संन्यासी **सपत्नीक** हो। ४. ये दोनों कभी सुखी नहीं होते, **निर्धन महत्त्वाकांक्षी और दरिद्र होकर क्रोधी**। ५. शत्रु **मिलने पर** जलाता है, मित्र वियोग के समय। दोनों ही दुःखदायी हैं, शत्रु-मित्र में क्या अन्तर है ? ६. शिव से **मिलने की इच्छा से दो चीजें शोक-योग्य हो गई** हैं, चन्द्रमा की कान्तिमयी कला और संसार के **नेत्र की कौमुदी** पार्वती। ७. राम एक बार ही कहता है, **दुबारा नहीं**। ८. मैं जगत् के **माता-पिता** शिव-पार्वती को **नमस्कार करता हूँ**। ९. दम्पती **सुख से बढ़ रहे हैं**। १०. अश्विनीकुमार ध्यान दें। ११. अपने **हाथ,** पैर, मुँह, आँख, कान **धोओ**। १२. **दो ब्राह्मण** दो प्रकार से दो मन्त्रों को पढ़ते हैं। १३. दो-तीन चुगलखोर इस कक्षा में हैं। **(ख)** (कृष्, वस्) १. कृषक **हल से खेत जोतता है**। २. शेर ने **बलात् गाय को खींच लिया**। ३. **सीधे जुते** खेत को उल्टा जोतता है। ४. बलवान् इन्द्रिय-समूह विद्वान् को भी अपनी ओर **खींच लेता है**। ५. वह दो वर्ष **वन में रहा**। ६. सम्पत्ति और कीर्ति चतुर में रहती हैं, **आलसी में नहीं**। ७. गुण **प्रेम में रहते हैं,** वस्तु में नहीं। **(ग)** (लिट् का प्रयोग करो) १. पार्वती **मन की बात न कह सकी**। २. पार्वती **न चल सकी, न रुक सकी**। ३. शिव ने उसको **सहारा दिया**। ४. रानी ने आँखें **बन्द कर लीं**। ५. वह इस नाम से **प्रसिद्ध हुआ**। ६. पार्वती ने वल्कल **बाँधा**। ७. मृग उस पर **विश्वास करते थे**। ८. वह वन **पवित्र हो गया**। ९. उसने कठोर **तप करना प्रारम्भ किया**। १०. वह गेंद खेलने से **थक जाती थी**। ११. उसके मुख ने **कमल की शोभा धारण की**। १२. एक तपस्वी **तपोवन में आया**। १३. उसने **कहना शुरू किया**। १४. जल की बूँद **भूमि पर पहुँचीं**। **(घ)** (विद्यालयवर्ग) १. अध्यापक, प्रोफेसर और आचार्य अपने शिष्यों और शिष्याओं को प्रेम से पढ़ाते हैं। २. **कुछ** छात्र और छात्राएँ पाठशाला में पढ़ते हैं, कुछ स्कूल में, कुछ कॉलेज में और कुछ यूनिवर्सिटी में। ३. रजिस्ट्रार परीक्षाओं का **टाइम-टेबुल** बनाता है और परीक्षाओं का फल घोषित करता है। ४. इन्स्पेक्टर स्कूलों और कॉलेजों का निरीक्षण करते हैं। ५. हेडक्लर्क **टाइप-राइटर से टाइप कर रहा है**।

संकेत—(क) १. कुसुमस्तबकस्येव⋯द्वे गती⋯विशीर्यन्ते। २. दृढां⋯बद्ध्वा⋯क्षेप्यौ, धनिनं चाप्रदातारम्। ३. शिरःशूलकरौ, निरारम्भः, सपरिग्रहः। ४. यश्चाधनः कामयते, यश्च कुप्यत्यनीश्वरः। ५. संयोगे। ६. समागमप्रार्थनया द्वयं शोचनीयतां गतम्। नेत्रकौमुदी। ७. द्विर्नाभिभाषते। ८. पितरौ, वन्दे। ९. सुखमेधेते। १०. दत्ताम्। ११. हस्तौ, प्रक्षालय। १२. द्विजातिद्वयम्। **(ख)** १. क्षेत्रं कर्षति। २. प्रसह्य गां चकर्ष। ३. अनुलोमकृष्टं⋯प्रतिलोमं०। ४. कर्षति। ५. वनमध्युवास। ६. नालसे। ७. प्रेम्णि। **(ग)** १. मनोगतं सा न शशाक शंसितुम्। २. न ययौ न तस्थौ। ३. समाललम्बे। ४. निमिमील। ५. पप्रथे। ६. बबन्ध। ७. विशश्वसुः। ८. बभूव। ९. तपश्चरितुं प्रचक्रमे। १०. क्लमं ययौ। ११. कमलश्रियं दधौ। १२. तपोवनं विवेश। १३. वक्तुं प्रचक्रमे। १४. भुवं प्रपेदिरे। **(घ)** १. अध्यापयन्ति। २. कतिपये। ३. समय-सारणीम्। ५. टंकणयन्त्रेण टंकयति।

शब्दकोष—३५०+२५=३७५]　　**अभ्यास १५**　　(व्याकरण)

(**क**) कलमः (कलम), लेखनी (होल्डर), धारालेखनी (स्त्री०, फाउण्टेन पेन), तूलिका (पेन्सिल), मसीतूलिका (डॉट पेन), कठिनी (स्त्री०, चाक), लेखनीमुखम् (निब), पट्टिका (पट्टी), अश्मपट्टिका (स्लेट), कागदः (कागज), कागद-दस्तकः (दस्ता), कागद-रीमकः (कागज का रीम), संचिका (कॉपी), पञ्जिका (रजिस्टर), पत्रसंचयनी (स्त्री०, फाइल), प्रावरणम् (जिल्द), वेष्टनम् (बस्ता), श्यामफलकः (ब्लैकबोर्ड), मार्जकः (डस्टर), मसीशोषः (ब्लाटिंग पेपर), घर्षकः (रबड़), पाठ्यपुस्तकम् (पाठ्यपुस्तक)। (२२)। (**ख**) साध् (हल करना)। (१)। (**ग**) कति (कितने), रुचिरम् (सुन्दर)। (२)

व्याकरण (त्रिशब्द, नित्य बहु० शब्द, त्यज्, लुङ्, व्यंजन सन्धि)

१. त्रि शब्द के तीनों लिंगों में रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ९१)

२. त्यज् धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० १९)

नियम ११३— (**क**) दार, अक्षत, लाज (लाजा), असु, प्राण, इनके रूप पुंलिंग में और बहुवचन में ही चलते हैं। (**ख**) अप्, अप्सरस्, वर्षा, सिकता, समा, सुमनस्, इनके रूप स्त्रीलिंग में और बहुवचन में ही चलते हैं। (अप्सरस्, वर्षा, समा, सुमनस् इनका कहीं-कहीं एकवचन में भी प्रयोग मिलता है)। दाराः (स्त्री), अक्षताः (अक्षत चावल), लाजाः (खील), असवः (प्राण), प्राणाः (प्राण), आपः (जल), अप्सरसः (अप्सरा), वर्षाः, सिकताः (रेत), समाः (वर्ष), सुमनसः (फूल)।

नियम ११४—त्रि से अष्टादशन् (३ से १८) तक सारे शब्द तथा कति शब्द सदा बहुवचन में ही आते हैं। एक०=एकवचन, द्वि०=द्विवचन, बहु०=बहुवचन।

नियम ११५—(**क**) (आदरार्थे बहुवचनम्) आदर प्रकट करने में एक के लिए भी बहु० हो जाता है। गुरवः पूज्याः। (**ख**) (अस्मदो द्वयोश्च) अस्मद् शब्द के एक० और द्वि० (अहम्, आवाम्) के स्थान पर बहुवचन (वयम्) का प्रयोग होता है, यदि वक्ता विशिष्ट व्यक्ति हो तो। वयं ब्रूमः। (**ग**) (जात्याख्यायाम्०) जातिवाचक शब्दों में एक० और बहु० दोनों होते हैं। ब्राह्मणः पूज्यः, ब्राह्मणाः पूज्याः। (**घ**) देशवाचक शब्दों में बहु० का प्रयोग होता है। 'नगर' या 'देश' अन्त में होने पर एक० होगा। अहम् अङ्गान् बङ्गान् कलिङ्गान् विदर्भान् गौडान् वा अगच्छम्। पाटलिपुत्रम् अङ्गदेशं वा अगच्छम्। (**ङ**) वंश का बोध कराने में बहु०। कुरूणाम्, रघूणाम्।

नियम ११६—(स्तोः श्चुना श्चुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में श् या चवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः श् और चवर्ग हो जाता है। स् को श्, त् को च्, द् को ज्, न् को ञ् होगा। रामश्च। सच्चित्। सज्जनः।

नियम ११७—(ष्टुना ष्टुः) स् या तवर्ग से पहले या बाद में ष् या टवर्ग कोई भी हो तो स् और तवर्ग को क्रमशः ष् और टवर्ग होता है। स् को ष्, त् को ट्, द् को ड्, न् को ण् होगा। इष्+तः=इष्टः। उड्डीनः। विष्णुः।

नियम ११८—(झलां जशोऽन्ते) झल् (वर्ग के १, २, ३, ४, ऊष्म) को जश् (३ अर्थात् अपने वर्ग का तृतीय अक्षर) होता है, झल् पद के अन्तिम अक्षर हों तो। जगत्+ईशः=जगदीशः। उद्देश्यम्। अच्+अन्तः=अजन्तः।

नियम ११९—(झलां जश् झशि) झल् को जश् होता है, बाद में झश् (वर्ग के ३, ४) हों तो। बुध्+धिः=बुद्धिः। क्षुभ्+धः=क्षुब्धः। दघ्+धः=दग्धः। वृद्धिः। शुद्धिः। सिद्धिः।

अभ्यास १५

संस्कृत बनाओ :—(क) (त्रिशब्द, बहुवचनान्त शब्द) १. **दान,** भोग और नाश ये धन की **तीन गतियाँ** होती हैं, जो न देता है और न **भोगता है,** उसकी **तीसरी** गति होती है। २. तीन अग्नियाँ हैं, तीन वेद हैं, तीन देव हैं, तीन गुण हैं। तीन **दण्डी के ग्रन्थ हैं** और वे तीनों लोकों में **प्रसिद्ध हैं।** ३. त्रैलोक्य में **धर्म दीपक के तुल्य है।** ४. **तीन प्रकार के** पुरुष हैं, उत्तम, मध्यम और अधम। उनको उसी प्रकार **तीन प्रकार के** कामों में **लगावे।** ५. **वृक्ष और पर्वत** में क्या अन्तर रहेगा, **यदि वायु चलने पर दोनों ही चञ्चल हो जाएँ?** ६. तीन ही लोक हैं, तीन ही आश्रम हैं। ७. तीन प्रियाओं से वह राजा **शोभित हुआ।** ८. तीन दिन मेरे आने की **प्रतीक्षा करना।** ९. सीता राम की **स्त्री** थीं। १०. **परस्त्री** को न देखे। ११. **अक्षत** और **खील** यहाँ लाओ। १२. वर्षा में **रेत पर जल** शोभित होता है। १३. **इन फूलों** को देखो। दशरथ ने **प्राणों को छोड़ा।** १५. गुरुजी मेरे घर पधारे। १६. हम कहते हैं कि सत्यभाषण से ही तुम्हारा उद्धार होगा। १७. **मैं कुरुवंशियों और रघुवंशियों के वंश का वर्णन करूँगा।** १८. वह भारत-दर्शन के लिए अंग, बंग, कलिंग, विदर्भ और पांचाल को गया। १९. इस कक्षा में कितने विद्यार्थी हैं? २०. इस कक्षा में सोलह छात्र हैं। (त्यज् धातु) २१. यति गृह को छोड़ता है। २२. घोड़े के मार्ग को छोड़ दो। २३. राम ने सीता को छोड़ दिया। २४. ऋषि लोग योग से शरीर को छोड़ेंगे। २५. राम ने रावण पर बाण छोड़ा। २६. धर्म की मर्यादा को **क्लेश की दशा में होकर भी** न छोड़े। २७. **मानी लोग हर्ष से अपने प्राण और सुख छोड़ देते हैं, पर न माँगने के व्रत को नहीं छोड़ते। (ख)** (लुङ् लकार) १. **दुःख मत करो।** २. **कुत्ते से मत डरो।** ३. **शोक न करो।** ४. कुकर्म **मत करो।** ५. स्वार्थपरायण **मत हो।** ६. **अपना उत्साह मत छोड़ो।** ७. माँ ने बच्चे को एक स्लेट, एक पेन्सिल, एक कॉपी और एक चाक दी। ८. बच्चे ने स्लेट पर चाक से लेख **लिखा, पाठ पढ़ा** और होल्डर से कॉपी पर सुलेख लिखा। ९. राम ने अपना फाउण्टेन पेन **पाँच रुपये में मुझे बेचा** और **मैंने** उससे खरीदा। **(ग)** (लेखनसामग्री) १. डॉट पेन में **स्याही भरने** की आवश्यकता नहीं होती। २. मैं **दुकान से** एक रीम और चार दस्ते कागज लाया। **उसके साथ ही** एक रजिस्टर, एक फाइल, एक निब और एक रबड़ लाया। ३. **यदि** कॉपी पर स्याही **गिर जाए तो** ब्लाटिंग पेपर या चाक से **सुखा लो।** ४. वह अपनी पाठ्यपुस्तक पढ़ता है और गणित के प्रश्नों को **हल करता है।** ५. डस्टर से ब्लैकबोर्ड को **पोंछो।**

संकेत—(क) १. तिस्रो गतयः, भुङ्क्ते, तृतीया। २. दण्डिप्रबन्धाः, विश्रुताः। ३. दीपको धर्मः। ४. त्रिविधाः, त्रिविधेषु, नियोजयेत्। ५. द्रुमसानुमतोः ··· यदि वायौ द्वितयेऽपि ते चलाः। ७. तिसृभिः, बभौ। ८. प्रतीक्षेथाः। ९. दाराः। १०. परदारान्। ११. अक्षतान्, लाजान्। १२. सिकतासु, आपः। १३. इमाः सुमनसः। १४. असून्, प्राणान् तत्याज। १७. त्यजन्त्यसून् शर्म च मानिनो वरं, त्यजन्ति न त्वेकमयाचितव्रतम्। **(ख)** १. विषादं मा गाः। २. शुनो मा भैषीः। ३. शुचो वशं मा गमः। ४. मा कार्षीः। ५. मा भूः। ६. उत्साहभङ्गं मा कृथाः। ७. अदात्। ८. अलेखीत्, अपठीत्। ९. मह्यं रूप्यकपञ्चकेन व्यक्रेष्ट, अक्रैषम्। **(ग)** १. मसीपूरणस्य। २. आपणात्, तत्सार्धमेव। ३. पतति चेत्, शोषय। ४. साधयति। ५. मार्जय।

शब्दकोष—३७५+२५=४००] **अभ्यास १६** (व्याकरण)

(**क**) काष्ठा (दिशा), प्राची (स्त्री०, पूर्व), प्रतीची (स्त्री०, पश्चिम), उदीची (स्त्री०, उत्तर), दक्षिणा (दक्षिण), घटिका (घड़ी), वेला (समय), होरा (घण्टा), कला (मिनट), विकला (सेकण्ड), वादनम् (बजे), पूर्वाह्णः (दोपहर से पहले का समय, a.m.) पराह्णः (तीसरा पहर), प्रदोषः (सूर्यास्त समय), दिवसः (दिन), विभावरी (स्त्री०, रात), निशीथः (आधीरात), निदाघः (ग्रीष्म ऋतु), प्रावृष् (वर्षाकाल)। (२२)। (**ग**) दिवा (दिन में), नक्तम् (रात में), रात्रिन्दिवम् (दिन-रात)। (३)

व्याकरण (चतुर् शब्द, याच्, लुङ्, व्यञ्जन सन्धि)

१. चतुर् शब्द के तीनों लिंगों में रूप स्मरण करो। (देखो शब्द सं० ९२)

२. याच् धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २९)

नियम १२०—(यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा) पदान्त यर् (ह् के अतिरिक्त सभी व्यञ्जन) के बाद अनुनासिक (वर्ग का पंचम अक्षर) हो तो यर् को अपने वर्ग का पंचम अक्षर हो जायगा। यह नियम ऐच्छिक है। तत्+न=तन्न। तद्+मयम्=तन्मयम्। वाक्+मयम्=वाङ्मयम्। सद्+मतिः=सन्मतिः।

नियम १२१—(तोर्लि) तवर्ग के बाद ल हो तो तवर्ग को भी ल् हो जाता है। अर्थात् (१) त् या द्+ल=ल्ल, (२) न्+ल=ँल्ल। तत्+लीनः=तल्लीनः। विद्वान्+लिखति=विद्वाँल्लिखति।

नियम १२२—(उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य) उद् के बाद स्था या स्तम्भ् धातु हो तो उसे पूर्वसवर्ण होता है। उद्+स्थानम्=उत्थानम्। उद्+स्तम्भनम्=उत्तम्भनम्।

नियम १२३—(झयो होऽन्यतरस्याम्) झय् (वर्ग के १, २, ३, ४) के बाद ह हो तो उसे विकल्प से पूर्वसवर्ण होता है। वाग्+हरिः=वाग्घरिः। तद्+हितः=तद्धितः।

नियम १२४—(शश्छोऽटि) पदान्त झय् (वर्ग के १, २, ३, ४) के बाद श् हो तो उसे छ् हो जाता है, यदि उस श् के बाद अट् (स्वर, ह, य, व, र) हो तो। नियम ११६ से छ के पूर्ववर्ती त् को च्। तत्+शिवः=तच्छिवः। सत्+शीलः=सच्छीलः।

नियम १२५—(खरि च) झलों (१, २, ३, ४) को चर् (१, उसी वर्ग के प्रथम अक्षर) होते हैं, बाद में खर् (१, २, श ष स) हों तो। सद्+कारः=सत्कारः। तद्+परः=तत्परः। सद्+पुत्रः=सत्पुत्रः।

नियम १२६—(मोऽनुस्वारः) पदान्त म् के बाद हल् (व्यञ्जन) हो तो म् को अनुस्वार (ं) हो जाता है, बाद से स्वर हो तो नहीं। कार्यम्+कुरु=कार्यं कुरु। सत्यं वद। धर्मं चर।

नियम १२७—(नश्चापदान्तस्य झलि) अपदान्त न् म् को अनुस्वार हो जाता है, बाद में झल् (१, २, ३, ४, ऊष्म) हो तो। यशान्+सि=यशांसि। पुम्+सु=पुंसु।

नियम १२८—(अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः) अनुस्वार के बाद यय् (ऊष्म को छोड़कर सभी व्यञ्जन) हो तो उसे परसवर्ण (अगले वर्ण का पंचम अक्षर) होता है। शां+तः=शान्तः। अं+कः=अङ्कः।

नियम १२९—(ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम्) ह्रस्व स्वर के बाद ङ् ण् न् हों और बाद में कोई स्वर हो तो बीच में एक ङ् ण् न् और लग जाता है। प्रत्यङ्ङात्मा। सुगण्णीशः। सन्+अच्युतः=सन्नच्युतः।

अभ्यास १६

संस्कृत बनाओ :—(क) (चतुर् शब्द) १. हम चार भाई **ऋत्विज्** हैं, युधिष्ठिर यजमान हैं और भगवान् कृष्ण कर्मोपदेष्टा हैं। २. चार अवस्थाएँ हैं—**बाल्य,** कौमार, यौवन और वार्धक। ३. ब्रह्मरूपी वृषभ के **चार सींग और तीन पैर हैं।** ४. शेष चार **महीने** जैसे भी हो **आँख बन्द करके बिताओ।** ५. **आय के चौथे अंश से खर्च चलावे। अधिक तेलवाला दीपक** चिरकाल तक सुख देखता है। ६. **गुरु-सेवा** से विद्या मिलती है अथवा **प्रचुर** धन से या **विद्या से** विद्या प्राप्त होती है, अन्य **चौथे किसी उपाय से नहीं।** ७. हे युधिष्ठिर, **मेरे चार प्रश्नों को बता।** (याच् धातु) ८. **राजा से** धन माँगता है। ९. **बलि से** भूमि माँगता है। १०. पार्वती ने **पिता से** तपःसमाधि के लिए अरण्य-**निवास** की माँग की। ११. उसने **पिता से माँग की कि उसे न छोड़ें।** १२. **तिनके से भी हलकी रूई होती है और रूई से भी हलका माँगनेवाला होता है।** **(ख)** (लुङ् का प्रयोग करो) १. मैं **सुख से सोया।** २. उसने कहा कि **बहुत दिन मेरी** यहाँ **रहने की इच्छा है।** ३. वह बोली—मैं **तुम्हारे कहने में हूँ।** ४. वह तपस्या के लिए **वन में गया।** ५. वह घर से **निकल पड़ा।** ६. उसने **चपरासी को अन्दर आता हुआ देखा।** ७. उसने **सामने से आते हुए** एक शिष्य को **देखा** और **पूछा** तुम्हारे गुरु **कहाँ** हैं? ८. वह सबेरे ही महल से **निकल पड़ा** और **ढाई घण्टे** घूमने के लिए गया। ९. उसने **जागते हुए ही** सारी रात **बिताई।** १०. हर्ष ने **आँसू भरी दृष्टि से माँ से कहा**—तुम मुझे क्यों छोड़ रही हो? ११. यशोवती **आँचल से** मुँह **ढककर साधारण स्त्री के तुल्य बहुत देर तक रोई।** १२. वह उसके पास ही **चुप बैठा रहा।** **(ग)** (दिक्कालवर्ग) १. चार दिशाएँ हैं, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण। २. इस समय तुम्हारी घड़ी में **क्या बजा है?** ३. **एक घण्टे में साठ** मिनट होते हैं और एक मिनट में साठ सेकण्ड। ४. इस **स्टेशन पर** एक **डाक-गाड़ी सबेरे सवा दस बजे** आती है और दूसरी **शाम को पौने** सात बजे। ५. राम सबेरे उठता है, दोपहर को खाना खाता है, तीसरे पहर फलाहार करता है, शाम को खेलता है, रात में सोता है और आधी रात में नहीं **जागता।** ६. **आजकल** परीक्षा के दिन हैं, वह दिन-रात पढ़ाई में लगा रहता है।

संकेत—(क) १. ऋत्विजः। २. चतस्रः, बाल्यम् (बाल्य आदि चारों नपुं० हैं)। ३. चत्वारि शृङ्गा(णि) त्रयोऽस्य पादाः। ४. मासान्, गमय लोचने मीलयित्वा। ५. आयाच्चतुर्थभागेन व्ययकर्म प्रवर्तयेत्। प्रभूततैलदीपो हि। ६. गुरुशुश्रूषया, पुष्कलेन, विद्यया, चतुर्थान्नोपलभ्यते। ७. ब्रूहि मे चतुरः प्रश्नान्। ८. राजानम्। ९. बलिम्। १०. पितरम्, निवासम्। ११. पितरम्, अपरित्यागमयाचतात्मनः। १२. तृणादपि लघुस्तूलस्तूलादपि च याचकः। **(ख)** १. सुखमस्वाप्सम्। २. अवादीत्, भूयसो दिवसान् स्थातुमभिलषति मे हृदयम्। ३. अवोचत्, एषास्मि ते वचसि स्थिता। ४. वनमगात्। ५. निरगात्। ६. लेखहारकं प्रविशन्तमद्राक्षीत्। ७. अभिमुखम् आपतन्तम्, अद्राक्षीत्, क्वास्ते। ८. निरयासीत्, सार्धहोराद्वयम्, अयासीत्। ९. जाग्रदेव, अनैषीत्। १०. बाष्पायमाणदृष्टिर्मातरम् अभ्यधात्। ११. पटान्तेन, आच्छाद्य, प्राकृतप्रमदेवातिचिरम् अरोदीत्। १२. तूष्णीं समवास्थित। **(ग)** २. का वेला। ३. एकस्यां होरायां षष्टिः। ४. यानावतारे, द्राक्यानम्, पूर्वाह्णे, सपाददशवादने, पराह्णे, पादोन०। ५. जागर्ति। ६. अद्यत्वे।

शब्दकोष—४००+२५=४२५] **अभ्यास १७** (व्याकरण)

(**क**) सप्तसप्तिः (पुं०, सूर्य), सुधांशुः (पुं०, चन्द्रमा), गभस्तिः (पुं०, स्त्री०, किरण), आतपः (धूप), ज्योत्स्ना (चाँदनी), नक्षत्रम् (नक्षत्र), नवग्रहाः (नवग्रह), द्वादश राशयः (१२ राशियाँ), सप्ताहः (सप्ताह), राका (पूर्णिमा), दर्शः (अमावस्या), जीमूतः (मेघ), सौदामिनी (स्त्री०, विद्युत्), करकाः (ओले), वृष्टिः (स्त्री०, वर्षा), आसारः (मूसलाधार वर्षा), अवग्रहः (अवृष्टि), इन्द्रायुधम् (इन्द्रधनुष), उत्तरायणम् (उत्तरायण), दक्षिणायनम् (दक्षिणायन), शीकरः (जल-कण), अवश्यायः (हिम, बर्फ), लक्ष्मन् (नपुं०, चिह्न), वियत् (नपुं०, आकाश), स्तनितम् (गर्जन)। (२५)

व्याकरण (पञ्चन् से दशन्, वह्, लुट्, हल् और विसर्ग-सन्धि)

१. पञ्चन् से दशन् तक के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ९३ से ९८)। त्रि से अष्टादशन् (३ से १८) तक के रूप केवल बहुवचन में ही चलते हैं। तीनों लिंगों में वही रूप होंगे। एक से दश तक की संख्याओं के संख्येय (व्यक्ति या वस्तुबोधक क्रमवाचक विशेषण) शब्द क्रमशः ये हैं:—प्रथमः, द्वितीयः, तृतीयः, चतुर्थः, पञ्चमः, षष्ठः, सप्तमः, अष्टमः, नवमः, दशमः। इनके रूप पुं० में रामवत्, स्त्री० में रमा या नदीवत्, नपुं० में गृहवत् चलेंगे।

२. वह् धातु के पूरे रूप स्मरण करो (देखो धातु० ३०)।

नियम १३०—(नश्छव्यप्रशान्) पदान्त न् को रु (:, स्) होता है, यदि छव् (च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्) बाद में हो और छव् के बाद अम् (स्वर, ह, अन्तःस्थ, वर्ग का पंचम अक्षर) हो तो। प्रशान् शब्द में नियम नहीं लगेगा। इसके साथ कुछ अन्य नियम भी लगते हैं, अतः इस नियम का रूप होगा—न्+छव्=स्+छव् या ँस्+छव्। श्चुत्व नियम यदि प्राप्त होगा तो लगेगा। कस्मिन्+चित्=कस्मिंश्चित्। अस्मिंस्तरौ। तस्मिन्+तथा=तस्मिंस्तथा।

नियम १३१—(छे च, पदान्ताद्वा) ह्रस्व स्वर के बाद छ होगा तो छ से पूर्व त् (च्) लगेगा, किन्तु पदान्त दीर्घ स्वर के बाद छ से पूर्व त् विकल्प से लगेगा। शिव+छाया=शिवच्छाया। वृक्षच्छाया। लताच्छविः। लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया।

नियम १३२—(विसर्जनीयस्य सः) विसर्ग को स् होता है, खर् (वर्ग के १, २, श, ष, स) बाद में हो तो। (श्चुत्वसन्धि भी होगी)। हरिः+त्रायते=हरिस्त्रायते। कः+चित्=कश्चित्। रामः+तिष्ठति=रामस्तिष्ठति।

नियम १३३—(वा शरि) विसर्ग के बाद (श, ष, स) हो तो विसर्ग को विसर्ग और स् दोनों होते हैं। नियम ११६, ११७ भी लगेंगे। हरिश्शेते। रामष्षष्ठः।

नियम १३४—(ससजुषो रुः) पद के अन्तिम स् को रु (र् या :) होता है, सजुष् को भी। जहाँ रु को उ या य् नहीं होगा, वहाँ र् शेष रहेगा। अ या आ के अतिरिक्त अन्य स्वरों के बाद र् शेष रहेगा, बाद में कोई स्वर या व्यंजन (३, ४, ५) हो तो। हरिः+अवदत्=हरिरवदत्। पितुः+इच्छा=पितुरिच्छा। लक्ष्मीरियम्।

नियम १३५—(अतो रोरप्लुतादप्लुते) ह्रस्व अ के बाद रु (: या र्) को उ होता है, बाद में ह्रस्व अ हो तो। नियम १०१ से गुण और १०३ से पूर्वरूप। अतः अः+अ=ओऽ। कः+अपि=कोऽपि। कोऽयम्। रामोऽवदत्।

अभ्यास १७

संस्कृत बनाओ—**(क)** (संख्याएँ) १. **देवों, माता-पिता,** मनुष्यों, भिक्षुकों और अतिथियों, इन पाँचों की ही **पूजा करता हुआ** मनुष्य यश पाता है। २. **मित्र,** अमित्र, मध्यस्थ, **आश्रित और आश्रयदाता,** ये **पाँचों** जहाँ कहीं भी जाओगे, वहाँ **तुम्हारे साथ जाएँगे।** ३. **ऐश्वर्य के चाहनेवाले** मनुष्य को ये ६ दोष **छोड़ देने चाहिएं**—निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता। ४. ये ६ गुण **मनुष्य** को कभी नहीं छोड़ने चाहिएं—सत्य, दान, अनालस्य, अनसूया, क्षमा और धृति। ५. श्लोक में **पंचम** अक्षर सदा **लघु** होता है, **द्वितीय** और **चतुर्थ चरण** में सप्तम लघु। षष्ठ सदा गुरु होता है। ६. जो **पाँचवें या छठे दिन** अपने घर **साग पकाकर खा लेता है,** परन्तु **ऋणी** और **प्रवासी नहीं है** तो वह **सुखी रहता है।** ७. ये आठ गुण मनुष्य को **चमकाते हैं**—बुद्धि, **कुलीनता, जितेन्द्रियता, अध्ययन,** पराक्रम, **कम बोलना,** यथाशक्ति दान और कृतज्ञता। ८. नित्य स्नान करनेवाले को दस गुण प्राप्त होते हैं—बल, रूप, स्वरशुद्धि, वर्णशुद्धि, सुस्पर्श, सुगन्ध, विशुद्धता, शोभा, सुकुमारता और सुन्दर प्रमदाएँ। **(ख)** (वह् धातु) १. नदियाँ परोपकार के लिए बहती हैं। २. हवा मन्द-मन्द बह रही है (वह्)। ३. ग्वाला **बकरी को गाँव में ले जा रहा है।** ४. गधे **घोड़े की धुरा को नहीं ढो सकते।** ५. राम ने **सीता से विवाह** किया। (उद्वह्)। ६. **इतनी** आय से **मेरा काम नहीं चल सकता** है (निर्वह्)। ७. **धैर्य धारण करो** (आवह्)। ८. **इतना वैभव मुझे सुख नहीं देता** (आवह्)। ९. वह **जैसे-तैसे दिन बिता रहा है।** १०. यमुना प्रयाग के समीप बहती है (प्रवह्)। **(ग)** (लुट्) १. मैं कल सबेरे **जैसी स्थिति होगी वैसा बताऊँगा।** २. जब तुम्हारी बुद्धि **मोह के दलदल को पार कर लेगी,** तब तुम्हें **वैराग्य प्राप्त होगा।** ३. मैं परसों घर **जाऊँगा।** ४. मैं कल प्रयाग से **प्रस्थान करूँगा** और परसों वाराणसी **पहुँचूँगा** और वहाँ से **एक मास बाद पटना चला जाऊँगा। (घ)** (व्योमवर्ग) १. सूर्य उदय हो रहा है और चन्द्रमा अस्त हो रहा है। २. विविध अर्थों को लेकर सूर्य के नाम हैं—दिवाकर, विवस्वान्, हरिदश्व, उष्णरश्मि, तिग्मदीधिति, द्युमणि, तरणि, विभावसु, भानुमान्, सहस्रांशु। ३. चन्द्रमा के भी अर्थानुसार अनेक नाम हैं—इन्दु, सुधांशु, ओषधीश, निशाकर, कलानिधि, शीतगु, शशांक। ४. अब आकाश में बादल आ गए, बिजली चमकने लगी, बादलों का गरजना आरम्भ हुआ, ओले पड़ने लगे और फिर मूसलाधार वर्षा होने लगी। ५. इधर इन्द्रधनुष दिखाई पड़ रहा है। ६. उत्तरायण में दिन बड़ा हो जाता है और दक्षिणायन में छोटा। ७. बारह राशियाँ हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु (धन्वी), मकर, कुम्भ, मीन। ८. नव ग्रह हैं—रवि, सोम, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु। ९. एक सप्ताह में सात दिन होते हैं। १०. गर्मी में धूप कड़ी होती है और शरद् में चाँदनी शीतल।

संकेत—**(क)** १. देवान्, पितॄन्, पूजयन्। २. मित्राणि, उपजीव्योपजीविनः, पञ्च त्वाऽनुगमिष्यन्ति। ३. भूतिमिच्छता, हातव्याः। ४. पुंसा। ५. पञ्चमं लघु, द्विचतुर्थयोः। ६. पञ्चमेऽहनि षष्ठे वा शाकं पचति, अनृणी चाप्रवासी च, मोदते। ७. दीपयन्ति, कौल्यं, दमः, श्रुतम्, अबहुभाषिता। **(ख)** ३. अजां ग्रामं वहति। ४. न वाजिधुरं वहन्ति। ५. जानकीमुदवहत्। ६. एतावता, न मे कार्यं निर्वहति। ७. धृतिमावह। ८. एतावान् विभवो, न मे सुखमावहति। ९. कथमपि दिनान्यतिवाहयति। **(ग)** १. यथावस्थितम् आवेदयितास्मि। २. मोहकलिलम्, व्यतितरिष्यति, निर्वेदं गन्तासि। ३. गन्तास्मि। ४. प्रस्थाता, आसादयितास्मि, मासात्परेण, पाटलिपुत्रं यातास्मि।

शब्दकोष—४२५+२५=४५०] **अभ्यास १८** (व्याकरण)

(**क**) स्वसृ (स्त्री०, बहिन), आत्मजः (पुत्र), अग्रजः (बड़ा भाई), अनुजः (छोटा भाई), पितृव्यः (चाचा), मातुलः (मामा), पितृष्वसृ (स्त्री०, फूआ), मातृष्वसृ (स्त्री०, मौसी), भ्रात्रीयः (भतीजा), स्वस्रीयः (भानजा), आवुत्तः (जीजा), भ्रातृजाया (भाई की स्त्री, भाभी), स्नुषा (पुत्रवधू), पितृव्यपुत्रः (चचेरा भाई), पैतृष्वस्रीयः (फुफेरा भाई), मातुष्वस्रीयः (मौसेरा भाई), जामातृ (पु०, जँवाई), पौत्रः (पोता), नप्तृ (पुं०. नाती), देवरः (देवर), ज्ञातिः (पुं०, सम्बन्धी), सम्बन्धिन् (समधी), सम्बन्धिनी (स्त्री०, समधिन), योषित् (स्त्री०, स्त्री), पुरन्ध्रिः (स्त्री०, सधवा स्त्री)। (२५)

व्याकरण (संख्या ११ से १००, नी, आशीर्लिङ्, लृङ्, विसर्गसन्धि)

१. नी धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु २७)

नियम १३६—(**क**) विंशतिः (२०) के बाद के सभी संख्यावाची शब्द केवल एकवचन में आते हैं:—'विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः संख्येयसंख्ययोः।' (**ख**) एकादशन् से अष्टादशन् (११ से १८) तक के रूप दशन् के तुल्य बहु० में ही चलेंगे। (**ग**) एकोनविंशतिः (१९) से नवनवतिः (९९) तक सारे शब्दों के रूप स्त्रीलिंग एक० में ही चलते हैं। इकारान्त विंशति, षष्टि आदि के रूप मति (शब्द सं० ४२) के तुल्य और तकारान्त त्रिंशत् आदि के रूप सरित् (शब्द सं० ५४) के तुल्य चलेंगे। (**घ**) संख्येय (क्रमवाचक विशेषण) बनाने के नियम ये हैं—(१) एक से दश तक के संख्येय प्रथम, द्वितीय आदि हैं। (२) ११ से १८ तक के संख्येय शब्दों के अन्त में 'अ' लग जाता है। एकादशः (११वाँ), द्वादशः (१२वाँ) आदि। (३) १९ के आगे संख्येय शब्दों के अन्त में 'तम' लगता है। विंशतितमः (२०वाँ) आदि। (४) संख्येय शब्दों के रूप तीनों लिंगों में चलेंगे। पुं० में रामवत्, स्त्री० में रमा या नदीवत्, नपुं० में गृहवत्।

नियम १३७—(हशि च) ह्रस्व अ के बाद रु (र् या :) को उ हो जाता है, बाद में हश् (३, ४, ५, ह, य, व, र, ल) हो तो। अः+हश्=ओ+हश्। शिवः+वन्द्यः=शिवो वन्द्यः। रामो गच्छति। बालको हसति।

नियम १३८—(भोभगोअघोअपूर्वस्य योऽशि) भोः, भगोः, अघोः और अ या आ के बाद (र् या :) को य् होता है, बाद में अश् (स्वर, ह, अन्तःस्थ, ३, ४, ५) हो तो।

नियम १३९—(हलि सर्वेषाम्, लोपः शाकल्यस्य) (१) नियम १३८ से हुए य् के बाद कोई व्यंजन होगा तो उसका लोप अवश्य होगा। (२) यदि बाद में स्वर होगा तो य् का लोप ऐच्छिक है। लोप होने पर संधि नहीं होगी। देवा गच्छन्ति। नरा हसन्ति। देवा इह, देवायिह।

नियम १४०—(रोऽसुपि) अहन् के न् को र् होता है, विभक्ति (सुप्) बाद में हो तो नहीं। अहन्+अहः=अहरहः। अहन्+गणः=अहर्गणः।

नियम १४१—(रो रि) र् के बाद र हो तो पहले र् का लोप हो जाता है।

नियम १४२—(ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः) ढ् या र् का लोप होने पर उससे पूर्ववर्ती अ, इ, उ को दीर्घ होता है। पुनर्+रमते=पुना रमते। हरी रम्यः।

नियम १४३—(एतत्तदोः सुलोपोऽकोरनञ्समासे हलि) सः और एषः के विसर्ग का लोप होता है, बाद में व्यंजन हो तो। सः+पठति=स पठति। एष वदति।

अभ्यास १८

संस्कृत बनाओ—(क) (संख्याएँ) १. इस कॉलेज में बी०ए० प्रथम वर्ष में ९०, द्वितीय वर्ष में ८०, एम०ए० प्रथम वर्ष में ७० और द्वितीय वर्ष में ५० विद्यार्थी हैं। २. इस सभा में १०० **आदमी हैं।** ३. उस **जुलूस में एक हजार आदमी हैं।** ४. वहाँ **भीड़ में** ५० आदमी **घायल हुए** और १५ **मर गए। घायल और मृतों** की संख्या ६५ है। **(ख)** (नी धातु) १. वह **गाय को गाँव में** ले जाता है। २. राम, तुम मुझे **निःसंकोच** अपने साथ वन में ले चलो। ३. उसने जागते हुए ही **रात बिताई।** ४. उसने उसके साथ **दिन बिताया।** ५. उसने अपने सच्चरित्र से लोगों को **अपने वश में कर लिया।** ६. तुम अपने बच्चों, **स्त्री, बहिनों** और **भाइयों** को मेरे घर लाना (आ+नी)। ७. उसने गुरु को **मनाया** (अनु+नी)। ८. ईश्वर तुम्हारी तामसी वृत्ति को **दूर करे।** ९. मैं **तुम्हारे घमण्ड को दूर कर दूँगा।** १०. उसने **दोनों हाथ जोड़कर** गुरु को प्रणाम किया। ११. पुत्रवधू श्वशुर के सामने अपना मुँह फेर लेती है। (वि+नी)। १२. गुरु शिष्य का **उपनयन-संस्कार करता है।** १३. राम ने **सीता से विवाह किया** (परि+नी)। १४. **सुनने का अभिनय करके।** १५. आप लोग **ऋषियों के लिए** फूल और फल **लाकर दें।** १६. न्यायाधीश **विवाद का निर्णय करेगा** (निर्णी)। १७. विद्वान् पुस्तक **लिखेगा** (प्रणी)। १८. दिलीप ने अपना शरीर **शेर को समर्पण किया।** १९. इसकी **हँसी का** अभिप्राय **समझा जा सकता है।** २०. तुम अपने चरित्र से देश की कीर्ति को **ऊँचा उठाओ। (ग)** (आशीर्लिङ्, लृङ्) १. **वीर सन्तानवाली हो।** २. **देव परिणाम को शुभ बनावें।** ३. तुम इन्द्राणी और **सावित्री के तुल्य हो।** ४. तुम्हारा मार्ग **शुभ हो।** ५. **यदि अच्छी वर्षा होती तो सुभिक्ष हुआ होता।** ६. **क्या अरुण अन्धकार को दूर कर सकता था, यदि उसे सूर्य अपनी धुरा में न बैठाता ?** ७. यदि परमात्मा इस **जोड़े** को परस्पर **न मिलाता** तो उसका रूप-निर्माण का यत्न **विफल होता। (घ)** (सम्बन्धिवर्ग) १. मेरे घर में मेरे माता-पिता, चाचा-**चाची,** दादा-**दादी,** पुत्र-पुत्रियाँ और चचेरे-फुफेरे तथा मौसेरे भाई हैं। २. भानजे, पोते, **पोतियों, नाती** और **नातिनों** से **प्रेम का व्यवहार करो।** ३. मेरी बहिन के विवाह में **मामा-मामी, नाना-नानी,** जीजा और अन्य **सम्बन्धी** आए थे। ४. **सधवा स्त्रियों का चित्त** फूल के तुल्य सुकुमार होता है। ५. समधी से समधी और समधिन से समधिन प्रेम से मिले।

संकेत—(क) १. नवतिः, अशीतिः, सप्ततिः, पञ्चाशत्। २. शतं जनाः सन्ति। ३. जनयात्रायां सहस्रं जनाः सन्ति। ४. जनौघे, आहताः, हताः। हताहतानाम्, पञ्चषष्टिः। **(ख)** १. गां ग्रामम्। २. विस्रब्धम्। ३. निशामनैषीत्। ४. वासरं निनाय। ५. आत्मवशम् अनयत्। ६. जायाम्, स्वसृः, भ्रातॄन्। ७. अन्वनैषीत्। ८. व्यपनयतु। ९. व्यपनेष्यामि ते गर्वम्। १०. हस्तौ समानीय। ११. विनयति, अपनयति। १२. उपनयते। १३. सीतां परिणिनाय। १४. श्रुतिमभिनीय। १५. ऋषिभ्यः, उपनयन्तु। १६. विवादं निर्णेष्यति। १७. प्रणेष्यति। १८. हरये उपानयत्। १९. परिहासस्य, उन्नेतुं शक्यते। २०. उन्नय। **(ग)** १. वीरप्रसविनी भूयाः। २. देवाः परिणतिं परमरमणीयां विधेयासुः। ३. सावित्रीसमा भूयाः। ४. शिवो भूयात्। ५. सुवृष्टिश्चेदभविष्यत् सुभिक्षमभविष्यत्। ६. किं वाऽभविष्यदरुणस्तमसां विभेत्ता, तं चेत् सहस्रकिरणो धुरि नाकरिष्यत्। ७. द्वन्द्वं, न अयोजयिष्यत्, विफलोऽभविष्यत्। **(घ)** १. पितृव्या, पितामही। २. पौत्रीषु, नप्तृषु, नप्त्रीषु स्नेहेन वर्तेत। ३. मातुलः, मातुलानी, मातामहः, मातामही, ज्ञातयश्च। ४. पुरन्ध्रीणां चित्तम्।

शब्दकोष—४५०+२५=४७५] **अभ्यास १९** (व्याकरण)

(**क**) कन्दुकः (गेंद), पादकन्दुकः (फुटबॉल), यष्टिक्रीडा (हॉकी का खेल), क्षेप-कन्दुकः (वॉलीबॉल), पत्रिक्रीडा (बैडमिण्टन), पत्रिन् (चिड़िया), प्रक्षिप्त-कन्दुक-क्रीडा (टेनिस का खेल), जालम् (नेट), काष्ठपरिष्करः (रैकेट), क्रीडाप्रतियोगिता (मैच), निर्णायकः (रेफरी), उपस्करः (फर्नीचर), आसन्दिका (कुर्सी), फलकम् (मेज), लेखनपीठम् (डेस्क), काष्ठासनम् (बेंच), काष्ठमञ्जूषा (अलमारी), मञ्जूषा (सन्दूक), संवेशः (स्टूल), खट्वा (खाट), प्रल्यङ्कः (पलंग), पर्यङ्कः (सोफा), निवारः (निवाड़), पुस्तकाधानम् (बुक रैक), पर्पः (चारों ओर मुड़नेवाली कुर्सी)। (२५)

व्याकरण (सखि, हृ धातु, अव्ययीभाव समास)

१. सखि शब्द के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ५)

२. हृ धातु के दोनों पदों के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० २८)

नियम १४४—(समास) (१) एक या अधिक शब्दों के मिलाने या जोड़ने को समास कहते हैं। समास का अर्थ है संक्षेप। समास करने पर समास हुए शब्दों के बीच की विभक्ति (कारक) नहीं रहती। समस्त (समासयुक्त) शब्द एक शब्द हो जाता है, अतः अन्त में विभक्ति लगती है। समास के तोड़ने को 'विग्रह' कहते हैं। जैसे—राज्ञः पुरुष (राजा का पुरुष) विग्रह है, राजपुरुषः समस्त पद है। बीच की षष्ठी का लोप है। (२) समास के ६ भेद हैं—१. अव्ययीभाव, २. तत्पुरुष, ३. कर्मधारय, ४. द्विगु, ५. बहुव्रीहि, ६. द्वन्द्व।

नियम १४५—(अव्ययीभाव) (अव्ययं विभक्ति०) अव्ययीभाव समास की पहचान यह है कि इसमें पहला शब्द अव्यय (उपसर्ग या निपात) होगा और दूसरा संज्ञाशब्द। अव्ययीभाव समासवाले अकारान्त शब्द नपुं० एक० में ही रहते हैं। अ-भिन्न स्वर अन्तवाले अव्ययीभाव अव्यय हो जाते हैं, अतः उनके रूप नहीं चलते। इन अर्थों में अव्ययीभाव समास होता है और ये अव्यय इन अर्थों में आते हैं—१. विभक्ति। सप्तमी के अर्थ में 'अधि'—हरौ > अधिहरि। २. समीप अर्थ में 'उप'—कृष्णस्य समीपे > उपकृष्णम्। इसी प्रकार उपगङ्गम्, उपयमुनम्। ३. समृद्धि अर्थ में 'सु'— मद्राणां समृद्धिः > सुमद्रम्। ४. व्यृद्धि (क्षय) अर्थ में 'दुर्'—यवनानां व्यृद्धिः > दुर्यवनम्। ५. अभाव अर्थ में 'निर्'—मक्षिकाणाम् अभावः > निर्मक्षिकम्। इसी प्रकार निर्जनम्, निर्विघ्नम्, निर्द्वन्द्वम्। ६. अत्यय (नाश) अर्थ में 'अति'—हिमस्यात्ययः > अतिहिमम्। ७. असंप्रति (अनुचित) अर्थ में 'अति'—अतिनिद्रम्। ८. शब्द-प्रादुर्भाव (शब्द का प्रकाश) अर्थ में 'इति'—हरिशब्दस्य प्रकाशः > इतिहरि। ९. पश्चात् (पीछे) अर्थ में 'अनु'—रथस्य पश्चात् > अनुरथम्। अनुहरि, अनुविष्णु। १०. यथा (योग्यता, प्रत्येक, अनुसार) के अर्थ में। अनु—रूपस्य योग्यम् > अनुरूपम्। प्रति—गृहं गृहं प्रति > प्रतिगृहम्। यथा—शक्तिमनतिक्रम्य > यथाशक्ति। ११. आनुपूर्व्य अर्थ में अनु—अनुज्येष्ठम्। १२. यौगपद्य अर्थ में सह (स)—चक्रेण सह > सचक्रम्। १३. सादृश्य अर्थ में सह (स)——सदृशः सख्या > ससखि। १४. संपत्ति अर्थ में सह (स)—सक्षत्रम्। १५. साकल्य (सहित) अर्थ में सह (स)—सतृणम्। १६. अन्त अर्थ में सह (स)—साग्नि (अग्नि ग्रन्थ तक)। १७. तक अर्थ में आ—आसमुद्रम्, आबालवृद्धम्। १८. बाहर अर्थ में बहिः—बहिर्वनम्। १९. समीप अर्थ में अनु—अनुगङ्गं वाराणसी।

अभ्यास १९

संस्कृत बनाओ—**(क)** (सखि शब्द) १. तुम मेरे मित्र हो, **जो चीज मेरी है, वह तुम्हारी हो गई।** २. वह **निकृष्ट मित्र** है, जो राजा को **ठीक शिक्षा नहीं देता।** ३. वह **नौकरों को प्रिय मित्रों के तुल्य मानता है।** ४. मित्र वह है जो विपत्ति में साथ नहीं छोड़ता। **(ख)** (हृ धातु) १. वह **गाँव में** बकरी को **ले जाता है।** २. तुम मेरे सन्देश को ले जाओ (हृ)। ३. बादल **लोगों के** ताप को हरता है (हृ)। ४. मैं तुम्हारे **मनोहर** गीत के राग से **बहुत आकृष्ट हो गया हूँ।** ५. हथिनी की गति किसके मन को नहीं हरती। ६. विधि कृश पर ही प्रहार करता है (प्र+हृ)। ७. वन से समिधाएँ लाओ (आ+हृ)। ८. अर्जुन **ने कौरवों की बड़ी सेना का संहार किया** (सं+हृ)। ९. चन्द्रमा चाण्डाल के घर से अपनी चाँदनी को **नहीं हटाता** (सं+हृ)। १०. ये बालक **आवाज में माता से मिलते-जुलते हैं** (अनु+हृ)। ११. **घोड़े पिता की चाल से चलते हैं और गाय माँ की चाल से** (अनु+हृ, आ०)। १२. वह प्रातः उद्यान में घूमता है (वि+हृ)। १३. चोर धन चुराता है (अप+हृ)। १४. **अपने-आप अपना उद्धार करो** (उद्+हृ)। १५. **उसने बात कही** (उदाहृ)। १६. **वह भात खाता है** (अभ्यवहृ)। १७. वह लड़की को पुस्तक भेंट में देता है (उपहृ)। १८. राम ने रावण के शिर पर प्रहार किया (प्रहृ)। **(ग) (अव्ययीभाव)** १. तुम **प्रतिदिन कृश-शरीर** हो रहे हो। २. **प्रत्येक पात्र की देख-भाल करो।** ३. इसकी **उत्कण्ठा बहुत बढ़ गई है।** ४. **सुविधानुसार** यह काम करना। ५. **मैं पीछे-पीछे आ रहा हूँ।** ६. **अपनी इच्छानुसार** करना। ७. **आपने यहाँ से सबको भगा दिया।** ८. **महात्माओं के लिए क्या परोक्ष** है? **(घ)** (क्रीडासनवर्ग) १. **अंग्रेजी खेलों में** हॉकी, फुटबॉल, वॉलीबॉल, बैडमिण्टन और टेनिस के खेल अधिक प्रचलित और प्रसिद्ध हैं। २. हॉकी गेंद से, बैडमिण्टन चिड़िया से और टेनिस गेंद से खेले जाते हैं। ३. बैडमिण्टन का रैकेट **हल्का** और टेनिस का रैकेट भारी होता है। ४. **खेल के मैदान में** फुटबॉल का मैच हो रहा है। ५. कॉलेज की कक्षाओं में प्रायः यह फर्नीचर होता है, मेज, कुर्सियाँ, डेस्क और बेंच। ६. **घरेलू फर्नीचर** में खाट, पलंग, सोफा, **तिपाई,** अलमारी, बुक रैक, **डाइनिंग टेबुल, पढ़ाई की मेज,** कुर्सी, **आराम कुर्सी** आदि होते हैं। ७. कुछ कार्यालयों में मुड़नेवाली कुर्सी और **सेफ** भी होते हैं। ८. पलंग निवाड़ से **बुनी जाती है।**

संकेत—**(क)** १. यन्मम, तत्तवैव। २. किंसखा, साधु न शास्ति। ३. सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनो दर्शयते। **(ख)** १. ग्रामम्, हरति। ३. लोकानाम्। ४. मनोहारिणा, प्रसभं हृतः। ८. कुरूणां महतीं चमूं समहार्षीत्। ९. नहि संहरते। १०. स्वरेण मातरमनुहरन्ति। ११. पैतृकमश्वा अनुहरन्ते, मातृकं गावः। १४. उद्धरेदात्मनात्मानम्। १५. वचनमुदाजहार। १६. भक्तमभ्यवहरति। **(ग)** १. अनुदिवसं परिहीयसेऽङ्गैः। २. प्रतिपात्रमाधीयतां यत्नः। ३. अतिभूमिं गतोऽस्या रणरणकः। ४. यथावकाशम्। ५. अनुपदमागत एव। ६. यथाभिलाषम्। ७. कृतं भवता निर्मक्षिकम्। ८. किमीश्वराणां परोक्षम्। **(घ)** १. आंग्लक्रीडासु। ३. लघुः, गुरुः। ४. क्रीडाक्षेत्रे। ६. गृहोपस्करेषु, त्रिपादिका, भोजनफलकम्, लेखनफलकम्, सुखासन्दिका। ७. लौहमञ्जूषा। ८. ऊयते।

शब्दकोष—४७५+२५=५००]　**अभ्यास २०**　(व्याकरण)

(**क**) अग्रजन्मन् (ब्राह्मण), अन्ववायः (वंश), चातुर्वर्ण्यम् (चारों वर्ण), विपश्चित् (विद्वान्), श्रोत्रियः (वेदपाठी), अनूचानः (सांगवेदज्ञ), समावृत्तः (स्नातक), यज्वन् (यज्ञकर्ता), अन्तेवासिन् (शिष्य), सतीर्थ्यः (सहपाठी), अध्वरः (यज्ञ), समिति (स्त्री०, सभा), संसद् (स्त्री०, लोकसभा), आस्थानम् (सभागृह, असेम्बली हॉल), सभासद् (सदस्य), स्थण्डिलम् (चबूतरा), विश्राणनम् (देना), प्राघुणः (पाहुन, अतिथि), सपर्या (पूजा), वाचंयमः (मुनि), इष्टापूर्तम् (धर्मार्थ यज्ञादि), मस्करिन् (संन्यासी), यमः (यम), नियमः (नियम), पौर्णमासः (पूर्णिमा का यज्ञ)। (२५)

व्याकरण (पति, श्रु धातु, तत्पुरुष समास)

१. पति शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ६)

२. श्रु धातु के दसों लकारों के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० सं० १६)

नियम १४६—(तत्पुरुष) तत्पुरुष समास उसे कहते हैं, जहाँ पर दो या अधिक शब्दों के बीच में से द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का लोप होता है। समास होने पर बीच की विभक्ति का लोप हो जाएगा। जिस विभक्ति का लोप होगा, उसी विभक्ति के नाम से वह तत्पुरुष कहा जायगा। जैसे—द्वितीया तत्पुरुष, षष्ठी तत्पुरुष आदि। (उत्तरपदार्थप्रधानस्तत्पुरुषः) इसमें बादवाले पद का अर्थ मुख्य होता है। (१) **द्वितीया**—(द्वितीया श्रितातीतपतित०)—कृष्णं श्रितः > कृष्णश्रितः। दुःखमतीतः > दुःखातीतः। दुःखं पतितः > दुःखपतितः। शोकं गतः > शोकगतः। मेघम् अत्यस्तः > मेघात्यस्तः। भयं प्राप्तः > भयप्राप्तः। जीविकाम् आपन्नः > जीविकापन्नः। (२) **तृतीया**—(तृतीया तत्कृतार्थेन०) शङ्कुलया खण्डः > शङ्कुलाखण्डः। (कर्तृकरणे कृता०) बाणेन आहतः > बाणाहतः। खड्गेन हतः > खड्गहतः। नखैर्भिन्नः > नखभिन्नः। हरिणा त्रातः > हरित्रातः। विद्यया हीनः > विद्याहीनः। (पूर्वसदृश०) मासेन पूर्वः > मासपूर्वः। मात्रा सदृशः > मातृसदृशः। पितृसमः। माषोनम्। वाक्कलहः। आचारनिपुणः। गुडमिश्रः। ज्ञानशून्यः। पितृतुल्यः। एकोनम्। (३) **चतुर्थी**—(चतुर्थी तदर्थार्थ०) यूपाय दारु > यूपदारु। द्विजाय इदम् > द्विजार्थम्। स्नानाय इदम् > स्नानार्थम्। भोजनार्थम्। भूताय बलिः > भूतबलिः। गवे हितम् > गोहितम्। गवे सुखम् > गोसुखम्। गोरक्षितम्। (४) **पंचमी**—(पंचमी भयेन) चोराद् भयम् > चोरभयम्। शत्रुभयम्। राजभयम्। वृकभीतिः। (अपेतापोढ०) सुखाद् अपेतः > सुखापेतः। कल्पनापोढः। रोगाद् मुक्तः > रोगमुक्तः। पापात् मुक्तः > पापमुक्तः। प्रासादात् पतितः > प्रासादपतितः। वृक्षपतितः। अश्वपतितः। (५) **षष्ठी**—(षष्ठी) राज्ञः पुरुषः—राजपुरुषः। ईश्वरस्य भक्तः > ईश्वरभक्तः। शिवभक्तः। विष्णुभक्तः। देवपूजकः। मूर्त्याः पूजा > मूर्तिपूजा। देवपूजा। विद्यालयः। देवालयः। देवमन्दिरम्। सुवर्णकुण्डलम्। (६) **सप्तमी**—(सप्तमी शौण्डैः) शास्त्रे निपुणः > शास्त्रनिपुणः। विद्यानिपुणः। युद्धनिपुणः। कार्यदक्षः। कार्यचतुरः। जले लीनः > जललीनः। जलमग्नः। (सिद्धशुष्क०) आतपे शुष्कः > आतपशुष्कः। स्थालीपक्कः। चक्रबन्धः।

अभ्यास २०

संस्कृत बनाओ—(क) (पति शब्द) १. **स्त्री के लिए** पति ही एक गति है। २. स्त्री का पति ही **देवता है**। ३. पति के साथ बैठकर यज्ञ करने के कारण स्त्री को पत्नी **कहा जाता है**। ४. **चन्द्रमा के साथ चाँदनी चली जाती है**, मेघ के साथ विद्युत् **अदृष्ट हो जाती है। स्त्रियाँ पति के मार्ग पर चलती हैं, यह अचेतनों ने भी स्वीकार किया है। (ख)** (श्रु धातु) १. **जो बड़ों की निन्दा करता है, वही पापी नहीं होता, अपितु जो उसे सुनता है, वह भी पापी होता है**। २. **मेरी अधूरी बात को सुनो**। ३. मित्र, सुनो, **मेरी बात ठीक है या नहीं**। ४. हे बादल, तुम **बाद में** मेरा सन्देश सुनोगे। ५. **बारह वर्ष में** व्याकरण पढ़ा **जाता है**। ६. मैंने भ्रमरों का गुंजन **सुना**। ७. **अपने से बड़ों की सेवा करो**। ८. निर्धन की पत्नी भी **सेवा नहीं करती**। ९. जो **हित की बात नहीं सुनता वह नीच स्वामी है**। १०. **वह कहना नहीं सुनता**। ११. वह **विप्र को गाय देने की प्रतिज्ञा करता है। (ग)** (तत्पुरुष०) १. **समय पता चलाने के लिए मुझसे कहा गया है**। २. यह माला **देर तक रुकनेवाली है**। ३. इस पात्र को **हाथ में** लो। ४. यह **चबूतरा अभी धुलने से शोभित है**। ५. **मेरे कुछ कहने की गुंजाइश नहीं है**। ६. **मेनका के कारण शकुन्तला मेरे देह के तुल्य है**। ७. भरत मेरे **वंश की प्रतिष्ठा है**। ८. **सांसारिक विषय ऊपर से सुन्दर लगते हैं, पर अन्त में दुःखद होते हैं**। ९. इस मृग को मैंने **बहुत प्रयत्न से पाला-पोसा है**। १०. वह मेरा **विश्वासपात्र है**। ११. **इस प्रकार काम करे कि अपना स्वार्थ भी नष्ट न हो**। १२. **सब कुछ भाग्य के अधीन है। (घ)** (ब्राह्मणवर्ग) १. ब्राह्मण, मुनि और संन्यासी ये पापों से मुक्त, रोगों से मुक्त, शास्त्र में निपुण, कार्य में चतुर और ब्रह्म में लीन होते हैं। २. विद्वान् ईश्वर के भक्त, देवों के पूजक, विद्या से युक्त और आचार में निपुण होते हैं। ३. अध्यापन, अध्ययन, यजन, याजन, **दान देना और लेना, ये ब्राह्मणों के स्वाभाविक कर्म हैं**। ४. लोकसभा के हॉल में विद्वान् संस्कृत के प्रचार और प्रसार के लिए भाषण देते हैं। ५. अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह ये यम हैं। ६. शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्राणिधान ये नियम हैं। ७. मनु का कथन है कि **यमों का अवश्य पालन करे, केवल नियमों का नहीं**। ८. वेदज्ञ, वेदपाठी, स्नातक होता, अध्वर्यु और उद्गाता यज्ञ में ऋग्, यजुः और साम के मन्त्रों का सस्वर उच्चारण कर रहे हैं।

संकेत——(क) १. स्त्रियाः। २. दैवतम्। ३. अभिधीयते, निगद्यते। ४. शशिना सह याति कौमुदी, सह मेघेन तडित् प्रलीयते। प्रमदाः पतिमार्गगा इति प्रतिपन्नं हि विचेतनैरपि। **(ख)** १. न केवलं यो महतोऽपभाषते, शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक्। २. शृणु मे सावशेषं वचः। ३. मद्वचनं संगतार्थं न वेति। ४. तदनु। ५. द्वादशभिर्वर्षैः, श्रूयते। ६. अश्रौषम्। ७. शुश्रूषस्व गुरून्। ८. न शुश्रूषते। ९. हितान्न यः संशृणुते स किंप्रभुः। १०. संशृणोति न चोक्तानि। ११. विप्राय गां प्रतिशृणोति, आशृणोति। **(ग)** १. वेलोपलक्षणार्थमादिष्टोऽस्मि। २. कालान्तरक्षमा। ३. हस्तसंनिहितं कुरु। ४. अभिनवमार्जनसश्रीकोऽलिन्दः। ५. न मे वचनावसरोऽस्ति। ६. मेनकासंबन्धेन शरीरभूता मे शकुन्तला। ७. वंशप्रतिष्ठा। ८. आपातरम्या विषयाः पर्यन्तपरितापिनः। ९. प्रयत्नसंवर्धित एषः। १०. विश्वासभूमिः, विश्रम्भभूमिः। ११. स्वार्थाविरोधेन वर्तेत। १२. सर्वं दैवायत्तम्। **(घ)** ३. दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्रह्मकर्म स्वभावजम्। ७. यमान् सेवेत सततं न नियमान् केवलान् बुधः।

शब्दकोष—५००+२५=५२५] **अभ्यास २१** (व्याकरण)

(**क**) अवनिपतिः (पुं०, राजा), अमात्यः (मन्त्री), प्रधानमन्त्रिन् (प्राइम मिनिस्टर), मुख्यमन्त्रिन् (चीफ मिनिस्टर), मन्त्रिपरिषद् (केबिनेट), सचिवः (सेक्रेटरी), शिक्षासचिवः (एजुकेशन सेक्रेटरी), प्राड्विवाकः (वकील), मुद्रा (सिक्का), टङ्कनम् (सिक्का ढालना), टङ्कशाला (टकसाल), नैष्किकः (टकसालाध्यक्ष), रक्षिन् (सिपाही), योधः (योद्धा), सेनापतिः (पुं०, सेनापति), चमूः (स्त्री०, सेना), प्रतीहारः (द्वारपाल, अर्दली), अरातिः (पुं०, शत्रु), करः (टैक्स), शुल्कः (फीस, चुंगी), शुल्कशाला (चुंगीघर), शौल्किकः (चुंगी का अध्यक्ष), चारः (दूत), राजदूतः (राज[illegible]

व्याकरण (सुधी, स्वभू, कृ पर०, कर्मधारय, द्विगु समास)

१. सुधी और स्वभू शब्दों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ८, १०)

२. कृ धातु परस्मैपदी के दसों लकारों के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ९१)

नियम १४७—(तत्पुरुषः समानाधिकरणः कर्मधारयः) तत्पुरुष के दोनों पदों में जब एक ही विभक्ति रहती है, तब उसे कर्मधारय कहते हैं। इसमें साधारणतया प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। इसके मुख्य नियम ये हैं—(१) विशेषण-पूर्वपद कर्मधारय—**(क)** (विशेषणं विशेष्येण बहुलम्) विशेषण-विशेष्य-समास—नीलम् उत्पलम् > नीलोत्पलम्। कृष्णः सर्पः > कृष्णसर्पः। इसी प्रकार नीलकमलम्, रक्तोत्पलम्। **(ख)** (किं क्षेपे) निन्दा अर्थ में किम्—कुत्सितः राजा > किंराजा। कुत्सितः सखा > किंसखा। **(ग)** (कुगतिप्रादयः) सुन्दर अर्थ में 'सु' और कुत्सित अर्थ में 'कु'—सुन्दरः पुरुषः > सुपुरुषः। सुपुत्रः, सुदेशः, सुदिनम्। कुत्सितः पुरुषः—कुपुरुषः। कुपुत्रः, कुदेशः, कुदिनम्, कुनारी। **(घ)** (सन्महत्परमो०) सत्, महत्, परम आदि—सन् चासौ जनः > सज्जनः। महान् चासौ आत्मा > महात्मा। महादेवः **(ङ)** (दिक्संख्ये संज्ञायाम्) दिशा और संख्या संज्ञावाची हों तो—सप्त च ते ऋषयः > सप्तर्षयः (२) उपमानपूर्वपद कर्मधारय—(उपमानानि सामान्यवचनैः) उपमान शब्द का गुणबोधक सामान्यधर्म के साथ—घन इव श्यामः > घनश्यामः। (३) उपमानोत्तरपद कर्मधारय—(उपमितं व्याघ्रादिभिः०) उपमेय का उपमान के साथ समास—पुरुषः व्याघ्र इव > पुरुषव्याघ्रः। मुखं कमलम् इव > मुखकमलम्। यह 'एव' लगाकर भी हो सकता है—मुखमेव कमलम् > मुखकमलम्। नरसिंहः, नृसिंहः, करकमलम्, पादपद्मम्, पुरुषर्षभः। (४) विशेषणोभयपद कर्मधारय—**(क)** (वर्णो वर्णेन) दोनों रंगवाची हों—कृष्णश्चासौ श्वेतः > कृष्णश्वेतः। श्वेतरक्तम्, कृष्णसारङ्गः। **(ख)** (क्तेन नञ्०) कृतं च तत् अकृतं च > कृताकृतम्। (पूर्वकालैक०) स्नातश्च अनुलिप्तश्च > स्नातानुलिप्तः। (५) उत्तरपदलोपी समास—(शाकपार्थिवादीनां सिद्धये०) शाकप्रियः पार्थिवः > शाकपार्थिवः। चन्द्रसदृशं मुखम् > चन्द्रमुखम्।

नियम १४८— (संख्यापूर्वो द्विगुः) जब कर्मधारय समास में प्रथम शब्द संख्यावाचक होता है तो वह द्विगु समास होता है। अधिकतर यह समाहार (समूह) अर्थ में होता है और नपुं० या स्त्री० एक० होता है। (१) समाहार अर्थ में—पञ्चानां गवां समाहारः > पञ्चगवम्। इसी प्रकार त्रिलोकी, त्रिभुवनम्, चतुर्युगम्, दशाब्दी, शताब्दी। (२) तद्धितार्थ में—षण्णां मातृणाम् अपत्यम् > षाण्मातुरः। पञ्चकपालः। (३) उत्तरपद में—पञ्च गावो धनं यस्य सः > पञ्चगवधनः।

अभ्यास २१

संस्कृत बनाओ—(क) (सुधी, स्वभू) १. **विद्वान् विद्वानों के साथ** चलते हैं, मूर्ख मूर्खों के साथ। **समान शील और व्यसनवालों में मित्रता होती है।** २. विद्वान् सर्वत्र आदर पाते हैं। ३. विद्वानों के संग से मूर्ख भी **चतुर हो जाता है।** ४. ब्रह्मा (स्वभू) से जगत् उत्पन्न होता है। ५. **प्रलय के समय** संसार ब्रह्म में ही **लीन हो जाता है।** **(ख)** (कृ धातु) १. **क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, बड़ी विपत्ति में पड़ा हूँ।** २. हंसपदिका संगीत का **अक्षराभ्यास कर रही है।** ३. तुम **अपनी ड्यूटी पर जाओ।** ४. पिता, मैं **क्या करूँ?** ५. राजा ने पुत्र को **युवराज बनाया।** ६. **कुम्हार घड़ा बनाता है,** शूद्र **चटाई** बनाता है। ७. घर **बनाओ,** सभा करो। ८. भिक्षा के लिए अंजलि **करता है।** ९. **मैं तुम्हारा कहना मानूँगा।** १०. वह रात्रि में **स्त्री का रूप बनाकर** घूमा। ११. उसने **गले में हार डाल लिया।** १२. राजा **उन-उन** कार्यों में अध्यक्षों को **लगावे।** १३. धनुष को **हाथ में ले लो।** १४. उसने नगर में **जाने की इच्छा की।** १५. **इसने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया।** **(ग)** (तत्पुरुष, कर्म०, द्विगु) १. **यह मुझसे अपृथक् है।** २. मैं **तुम्हारे अधीन हूँ।** ३. **यह मामला आपके हाथ में है।** ४. **दिन लगभग ढल गया है।** ५. **बार-बार आग्रहपूर्वक पूछे जाने पर और जिद करने पर** उसने सारी बात बताई। ६. इसके कथन से ही **ऊँच-नीच का पता लग जायगा।** ७. **यदि आपको कोई विघ्न न हो तो** मेरे साथ घूमने चलिए। ८. **मित्र, मजाक की बात को सच न समझ लेना।** ९. **उसको अपने पद से हटा दिया गया है।** १०. सज्जन महात्मा करकमल में रक्त कमल को लेकर सप्तर्षियों की अर्चना करता है। ११. कुपुत्र, कुपुरुष और कुनारी सुपुत्र, सुपुरुष और सुनारी की निन्दा करते हैं। १२. दुष्टों के संहारक घनश्याम का यश त्रिभुवन और चतुर्युगी में व्याप्त है। **(घ)** (क्षत्रियवर्ग) १. प्रधानमन्त्री श्री नेहरूजी मन्त्रिपरिषद् से मन्त्रणा करके संसद् में नवीन योजनाओं को **स्तुत करते थे।** २. प्रान्तों में मुख्यमन्त्री मन्त्रियों की सम्मति से कार्य करते हैं। ३. शिक्षामन्त्री शिक्षा-सचिव के पास अपने आदेशों को **भेजता** है। ४. टकसाल का अध्यक्ष टकसाल में सोने और **चाँदी के सिक्के ढलवाता है।** ५. चुंगी का अध्यक्ष **चुंगी के अधिकारी को** चुंगी की **आय का हिसाब प्रस्तुत करने का आदेश देता है।**

संकेत—(क) १. सुधियः सुधीभिः, समानशीलव्यसनेषु सख्यम्। ३. प्रवीणतां याति। ५. प्रलये प्रलीयते। **(ख)** १. किं करोमि क्व गच्छामि, पतितो दुःखसागरे। २. वर्णपरिचयं करोति। ३. स्वनियोगमशून्यं कुरु। ४. किं करवाणि? ५. युवराजः कृतः। ६. कुम्भकारो घटं करोति, कटम्। ७. कुरु। ८. करोति। ९. करिष्यामि वचस्तव। १०. स्त्रीरूपं कृत्वा। ११. कण्ठे हारमकरोत्। १२. तेषु तेषु कुर्यात्। १३. हस्ते कुरु। १४. गमनाय मतिमकरोत्। १५. अनेन मयि नोचितं कृतम्। **(ग)** १. अव्यतिरिक्तोऽयमस्मच्छरीरात्। २. त्वदधीनः। ३. अयमर्थस्त्वदायत्तः। ४. परिणतप्रायमहः। ५. निर्बन्धपृष्टः पुनः पुनश्चानुबध्यमानः। ६. अधरोत्तरव्यक्तिर्भविष्यति। ७. न चेदन्यकार्यातिपातः। ८. परिहासविजल्पितं सखे परमार्थेन न गृह्यतां वचः। ९. च्युताधिकारः कृतोऽसौ। **(घ)** १. प्रास्तौत्। ३. प्रेषयति। ४. रजतस्य, टङ्कयति। ५. शुल्कग्राहिणम्, आयविवरणं प्रस्तोतुमादिशति।

शब्दकोष—५२५+२५=५५०] **अभ्यास २२** (व्याकरण)

(क) आहवः (युद्ध), प्रहरणम् (शस्त्र), आयुधम् (शस्त्रास्त्र), आयुधागारम् (शस्त्रागार), वर्मन् (नपुं०, कवच), कार्मुकम् (धनुष), निस्त्रिंशः (खड्ग), कौक्षेयकः (कृपाण), विशिखः (बाण), तूणीरः (तूणीर), करवालिका (गुप्ती, कृपाण), शल्यम् (बर्छी), प्रासः (भाला), तोमरः (गँड़ासा), गदा (गदा), छुरिका (चाकू), धन्विन् (धनुर्धर), शरव्यम् (लक्ष्य), सांयुगीनः (रणकुशल), जिष्णुः (पुं०, विजयी), कबन्धः (धड़), कारा (जेल), हस्तिपकः (हाथीवान), सादिन् (घुड़सवार), वैजयन्ती (स्त्री०, पताका)। (२५)

व्याकरण (कर्तृ०, कृ आत्मने०, बहुव्रीहि समास)

१. कर्तृ शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० ११)

२. कृ धातु आत्मनेपदी के दसों लकारों के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ९१)

नियम १४९—(अनेकमन्यपदार्थे) (अन्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः) जिस समास में अन्य पद के अर्थ की प्रधानता होती है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। बहुव्रीहि समास होने पर समस्त पद स्वतन्त्र रूप से अपना अर्थ नहीं बताते, अपितु वे विशेषण के रूप में काम करते हैं और अन्य वस्तु का बोध विशेष्य के रूप में कराते हैं। बहुव्रीहि की पहचान है कि अर्थ करने पर जहाँ जिसको, जिसने, जिसका, जिसमें आदि अर्थ निकलें। बहुव्रीहि के पाँच भेद हैं— (१) समानाधिकरण, (२) व्यधिकरण, (३) सहार्थक, (४) कर्मव्यतिहार, (५) नञ् और उपसर्ग के साथ। **(१) समानाधिकरण बहुव्रीहि**—दोनों पदों में प्रथमा विभक्ति रहती है। अन्य पदार्थ कर्ता को छोड़कर कर्म, करण आदि कोई भी हो सकता है। जैसे—**(क) कर्म**—प्राप्तमुदकं यं सः > प्राप्तोदकः। **(ख) करण**—ऊढः रथः येन सः > ऊढरथः (बैल)। हतशत्रुः (राजा), उत्तीर्णपरीक्षः (छात्र), कृतकृत्यः (मनुष्य), जितेन्द्रियः (पुरुष), दत्तचित्तः (पुरुष)। **(ग) सम्प्रदान**—दत्तं भोजनं यस्मै सः > दत्तभोजनः (भिक्षुक)। उपहृतपशुः (रुद्र), दत्तधनः (पुरुष)। **(घ) अपादान**—उद्धृतम् ओदनं यस्मात् सा > उद्धृतौदना (स्थाली), पतितं पर्णं यस्मात् सः > पतितपर्णः (वृक्ष)। निर्गतं भयं यस्मात् सः > निर्भयः (पुरुष)। निर्बलः। **(ङ) सम्बन्ध**—पीतम् अम्बरं यस्य सः > पीताम्बरः (कृष्ण)। इसी प्रकार दशाननः (रावण), चतुराननः (ब्रह्मा), चतुर्मुखः, पद्मयोनिः, महाशयः, महाबाहुः, लम्बकर्णः, चित्रगुः। **(च) अधिकरण**—वीराः पुरुषा यस्मिन् सः > वीरपुरुषः (ग्राम)। **(२) व्यधिकरण बहुव्रीहि**—इसमें दोनों पदों में विभक्तियाँ विभिन्न होती हैं। धनुः पाणौ यस्य सः > धनुष्पाणिः। चक्रपाणिः, कण्ठेकालः, चन्द्रशेखरः। **(३) सहार्थक**—(तेन सहेति तुल्ययोगे) साथ अर्थ से बहुव्रीहि। सह को स। पुत्रेण सहितः > सपुत्रः। इसी प्रकार साग्रजः, सानुजः, सबान्धवः, सविनयम्, सादरम्। **(४) कर्मव्यतिहार**— (तत्र तेनेदमिति सरूपे) तृतीयान्त या सप्तम्यन्त का युद्ध होना अर्थ में समास। पूर्वपद को दीर्घ, अन्त में इ लगेगा और अव्यय होगा। केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम् > केशाकेशि। दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य० > दण्डादण्डि। मुष्टीमुष्टि। **(५) नञादि**—अविद्यमानः पुत्रः यस्य सः > अपुत्रः। प्रपतितपर्णः > प्रपर्णः। अस्तिक्षीरा गौः।

अभ्यास २२

संस्कृत बनाओ—(क) (कर्तृ शब्द) १. दिलीप ने **वशिष्ठ से वंश के चलानेवाले पुत्र को सुदक्षिणा में माँगा**। २. पाणिनि अष्टाध्यायी का, पतंजलि महाभाष्य का और कालिदास रघुवंश का कर्ता है। ३. ऋण का करनेवाला पिता शत्रु है। ४. वक्ता **श्रोता को धर्म सिखा रहा है**। ५. जगत् का कर्ता, धर्ता, भर्ता और हर्ता ईश्वर है। ६. विश्वनियन्ता पर श्रद्धा करो। **(ख)** (कृ धातु) १. उसने मन में **यह सोचा**। २. **आप अपनी थकान दूर कीजिये**। ३. **मैं तुम्हारा और अधिक क्या उपकार करूँ ?** ४. ग्रीष्म **समय के बारे में गाइए**। ५. विदेशियों के **वेष का अनुकरण मत करो** (अनु+कृ)। ६. सत्संगति पाप को **दूर करती है** (अपाकृ)। ७. देशभक्त नेता लोग **लोगों का उपकार करते हैं** (उपकृ)। ८. **सौ रुपये धर्मार्थ लगाता है**। ९. **वह गीता की कथा करता है** (प्रकृ)। १०. वह शत्रु को **हराता है** (अधिकृ)। ११. मैं **मुनित्रय को** नमस्कार करता हूँ (नमस्कृ)। १२. कामभाव चित्त को **विकृत करता है** (विकृ)। १३. **बुद्धिमान्** का अपकार न करे (अपकृ)। १४. सज्जन मेरे घर को अलंकृत करें (अलंकृ)। १५. रूस देश ने **चन्द्रमा तक जानेवाले विमानों का** आविष्कार किया है (आविष्कृ)। १६. यदि वह **चोरी** नहीं छोड़ता है तो **बिरादरी से निकाल दिया जायगा** (निराकृ) १७. वेदाध्ययन मन को **पवित्र करता है** (संस्कृ)। १८. योद्धा धनुष, खड्ग और कृपाण को **स्वीकार करता है** (स्वीकृ)। १९. स्त्रियाँ अपने घरों को **सजाती** हैं (परिष्कृ)। २०. **निर्धन का** तिरस्कार न करे (तिरस्कृ)। **(ग)** (बहुव्रीहि) १. **राजाओं को उत्सव प्रिय होता है, वीरों को युद्ध और बालकों को मनोरंजन**। २. **सूर्य ने एक बार ही अपने घोड़ों को जोता है, शेषनाग सदा भूमि का भार ढोता है, षष्ठांशवृत्ति राजा का भी यही धर्म है**। ३. शकुन्तला **बाएँ हाथ पर मुँह रखे हुए बैठी है**। ४. **अच्छे प्रकार से धनुष पर चढ़ाए हुए** बाण को **उतार लीजिये**। **(घ)** (आयुधवर्ग)। १. उर्वशी इन्द्र का **कोमल हथियार है**। २. **तुम्हारे अतिरिक्त और किसीने मेरे शस्त्र को नहीं सहा है**। ३. रणकुशल विजयी वीर कवच **पहनकर** हाथों में धनुष, तलवार, बर्छी, भाले लेकर शत्रुओं को **परास्त करते** हैं और अपनी विजय-वैजयन्ती को **फहराते हैं**। ४. प्राचीन समय में कुछ लोग घोड़ों पर, कुछ हाथियों पर और कुछ **रथों पर बैठकर** युद्ध करते थे।

संकेत—(क) १. वशिष्ठं वंशस्य कर्तारं तनयं सुदक्षिणायां ययाचे। ४. श्रोतारं शास्ति। **(ख)** १. एवमकरोत्। २. परिश्रमविनोदं करोत्वार्यः। ३. किं ते भूयः प्रियमुपकरोमि। ४. समयमधिकृत्य गीयताम्। ५. वेषं वेषस्य वा अनुकुर्याः। ६. अपाकरोति। ७. लोकानामुपकुर्वते। ८. शतं प्रकुरुते। ९. गीतां प्रकुरुते। १०. अधिकुरुते। ११. मुनित्रयम्। १२. विकरोति (पर०)। १३. बुद्धिमतः। १५. विधुगामीनि विमानानि। १६. स्तेयम्, जात्या निराकरिष्यते। १७. संस्करोति। १८. स्वीकरोति। १९. परिष्कुर्वन्ति। २०. निर्धनम्। **(ग)** १. उत्सवप्रिया राजानः, युद्धप्रिया वीराः, आमोदप्रिया बालाः। २. भानुः सकृद्युक्ततुरंग एव, शेषः सदैवाहितभूमिभारः, षष्ठांशवृत्तेरपि धर्म एषः। ३. वामहस्तोपहितवदना तिष्ठति। ४. तत्साधुकृतसन्धानं प्रतिसंहर। **(घ)** १. सुकुमारं प्रहरणम्। २. न मे त्वदन्येन विसोढमायुधम्। ३. परिधाय, अभिभवन्ति, उत्तोलयन्ति। ४. रथान् आरुह्य, अधिष्ठाय वा।

शब्दकोष—५५०+२५=५७५] **अभ्यास २३** (व्याकरण)

(क) भुशुण्डिः (स्त्री०, बन्दूक), लघुभुशुण्डिः (स्त्री०, पिस्तौल), शतघ्नी (स्त्री०, तोप), गुलिका (गोली), अग्निचूर्णम् (बारूद), आग्नेयास्त्रम् (बम), आग्नेयास्त्रक्षेपः (बम फेंकना), परमाण्वस्त्रम् (एटम बम), जलपरमाण्वस्त्रम् (हाइड्रोजन बम), धूमास्त्रम् (टीयर गैस), विमानम् (विमान), युद्धविमानम् (लड़ाई का विमान), पोतः (पानी का जहाज), युद्धपोतः (लड़ाई का जहाज), जलान्तरितपोतः (पनडुब्बी), एकपरिधानम्, एकवेषः (यूनिफॉर्म), सैन्यवेषः (वर्दी), रक्षिन् (सिपाही), सैनिकः (फौजी आदमी), भूसेनाध्यक्षः (भू-सेनापति), वायुसेनाध्यक्षः (वायु-सेनापति), नौसेनाध्यक्षः (जलसेनापति), शिरस्त्रम् (लोहे का टोप), पदातिः (पुं०, पैदल-सेना)। (२४)। **(ख)** परिखया परिवेष्टय (मोरचा बाँधना)। (१)

व्याकरण (पितृ, नृ, अद् और शास् धातु, बहुव्रीहि समास)

१. पितृ और नृ शब्दों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० १२, १३)

२. अद् और शास् धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३१, ४२)

नियम १५०—(स्त्रियाः पुंवद्भाषित०) बहुव्रीहि समास में यदि पुंलिंग शब्द से बना हुआ स्त्रीलिंग शब्द प्रथम पद हो तो उसे पुंलिंग हो जाता ह, ऊ को नहीं। (गोस्त्रियोः०) अन्तिम पद में गो को गु, आ को अ, ई को इ हो जाता है। रूपवती भार्या यस्य सः > रूपवद्भार्यः। चित्रा गावो यस्य सः > चित्रगुः। वामोरूभार्यः ही होगा।

नियम १५१—बहुव्रीहि समास करने पर इन स्थानों पर अन्तिम पद में कुछ समासान्त प्रत्यय या परिवर्तन होते हैं—(१) (जायाया निङ्) जाया को जानि हो जाता है। युवतिः जाया यस्य सः > युवजानिः। भूजानिः, महीजानिः। (२) (धनुषश्च) धनुष् को धन्वन् हो जाता है। पुष्पाणि धनुः यस्य सः > पुष्पधन्वा (कामदेव)। शार्ङ्गधन्वा, शतधन्वा। (३) (गन्धस्येदुत्०) उत्, पूति, सु, सुरभि के बाद गन्ध को गन्धि होता है। शोभनः गन्धो यस्य सः > सुगन्धिः। सुरभिगन्धिः। (४) (पादस्य लोपो०) पाद को पाद् हो जाता है, कोई उपमान शब्द पहले हो तो, हस्ति आदि को छोड़कर। (संख्यासुपूर्वस्य) कोई संख्या या सु पहले हो तो पाद को पाद्। व्याघ्रपात्। द्विपात्। सुपात्। स्त्री० में पाद् को पद्। द्विपदी। सप्तपदी। (५) (प्रसंभ्यां जानुनो ज्ञुः) प्र, सम् और ऊर्ध्व के बाद जानु को ज्ञु होता है। प्रज्ञुः, संज्ञुः, ऊर्ध्वज्ञुः (६) (इच् कर्मव्यतिहारे) कर्मव्यतिहार में अन्त में इ लग जायगा। केशाकेशि, दण्डादण्डि, बाहूबाहवि। (७) (धर्मादनिच्०) धर्म शब्द को धर्मन् हो जाता है। कल्याणधर्मा, समानधर्मा। (८) (नित्यमसिच् प्रजामेधयोः) नञ्, दुः, सु के बाद प्रजा और मेधा में अस् लग जाता है। अप्रजाः, सुप्रजाः। अमेधाः, दुर्मेधाः। (९) (उपसर्गाच्च) उपसर्ग के बाद नासिका को नस। प्रणसः, उन्नसः। (१०) (द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः) द्वि, त्रि के बाद मूर्धन् को मूर्ध। द्विमूर्धः, त्रिमूर्धः। (११) (अङ्गुलेर्दारुणि) लकड़ी अर्थ के अङ्गुलि को अङ्गुल। पञ्चाङ्गुलं दारु। (१२) (बहुव्रीहौ०) अक्षि को अक्ष। जलजाक्षः, कमलाक्षी। (१३) (बहुव्रीहौ संख्येये०) त्रि को त्र, विंशति को विंश, दशन् को दश। द्वित्राः, द्विदशाः, आसन्नविंशाः।

नियम १५२—इन स्थानों पर अन्त में क लगता है—(१) (उरःप्रभृतिभ्यः०) उरस् आदि के बाद। व्यूढोरस्कः, प्रियसर्पिष्कः। (२) (इनः स्त्रियाम्) इन्-प्रत्ययान्त के बाद। बहुदण्डिका नगरी। (३) (नद्यृतश्च) ई, ऊ, ऋ के बाद। सुश्रीकः, सुवधूकः, सुमातृकः। (४) (शेषाद् विभाषा) अन्यत्र विकल्प से। महायशस्कः, महायशाः।

अभ्यास २३

संस्कृत बनाओ—(क) (पितृ, नृ) १. **इससे बढ़कर** और कोई धर्माचरण नहीं है, जितना **पिता की सेवा और उनका कहना मानना**। २. मैं जगत् के **माता-पिता** पार्वतीपरमेश्वर की **वन्दना करता हूँ**। ३. पार्वती ने **पिता से अरण्य में निवास की माँग की**। ४. **पिता सौ आचार्यों से बढ़कर है और माता सौ पिताओं से**। ५. **मनुष्यों में** तुम ही एक धन्य हो। ६. भगवन्, **दीन मनुष्यों की रक्षा करो**। **(ख)** (अद्, शास्) १. **मैं जिस जीव का मांस यहाँ खाता हूँ, वह परलोक में मुझे खाएगा। यह मांस का मांसत्व है** (मां+स=मांस)। २. फल खाओ, साग खाओ और दूध-घी खाओ। ३. वह बालक को **धर्म सिखाता है**। ४. **मैं तुम्हारा शिष्य हूँ, तुम्हारी शरण में आया हूँ, तुम मुझे शिक्षा दो**। ५. **अद्वितीय शासनवाली पृथ्वी का उसने शासन किया**। ६. **शिष्य को वेद-ज्ञान दिया**। ७. धार्मिक राजा **चोरों को दण्ड दे**। **(ग)** (बहुव्रीहि) १. कृष्ण की **भार्या रूपवती है** और **उसकी गायें चितकबरी हैं**। २. **अद्भुत गुणों से युक्त नल पृथ्वी का पति था**। ३. दुष्टों में परस्पर **बाल खींचकर, डण्डे मारकर, हाथापाई करके झगड़ा हुआ**। ४. **कामदेव का धनुष फूलों का है**। **(घ)** (सैन्यवर्ग) १. डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे और डॉ० राधाकृष्णन् भी राष्ट्रपति हुए। २. भू, वायु और जल-सेना के कमाण्डर-इन-चीफों की **एक बैठक** सुरक्षामन्त्री के नेतृत्व में दिल्ली में हुई, जिसमें भारत की सुरक्षा के विषय में विचार-विनिमय हुआ। ३. सिपाही **वर्दी पहने पहरा दे रहे हैं**। ४. फौजी लोगों ने **विद्रोहियों को दबाने के लिए** पहले टीयर गैस छोड़ी और बाद में बन्दूक, पिस्तौल और तोपों का **प्रयोग करके** उनको .स्मसात् कर दिया। ५. गत महायुद्ध में अंग्रेजों का **जंगी बेड़ा बहुत प्रसिद्ध था**। ६. आजकल **रूस** और अमेरिका के पास एटम बम, हाइड्रोजन बम और युद्ध के विमान सबसे अधिक हैं। ७. **आजकल के** युद्धों में परमाणु बमों और युद्ध-विमानों का महत्त्व बढ़ गया है। ८. परमाणु बम **फेंककर** हजारों लोगों का संहार किया जा सकता है। ९. बारूद से मकानों को **उड़ाया जा सकता है**। १०. नगर की सुरक्षा का भार **एस०पी०** और **डी०एस०पी०** पर मुख्यतः होता है। ११. प्रत्येक प्रान्त में **पुलिस** के उच्च अधिकारी **आई०जी०** और **डी०आई०जी०** होते हैं। १२. लड़ाई में **मोर्चाबन्दी की जाती है** और उसमें लड़ाई के विमान, पोत, पनडुब्बियों आदि का उपयोग होता है।

संकेत—(क) १. अतो महत्तरम्। पितरि शुश्रूषा, वचनक्रिया। २. पितरौ, वन्दे। ३. पितरम् अरण्यनिवासम् अयाचत। ४. आचार्याणां शतं पिता, पितॄणां शतं माता, गौरवेणातिरिच्यते। ५. नृणाम्। ६. नॄन् पाहि। **(ख)** १. मां स भक्षयिताऽमुत्र यस्य मांसमिहाद्म्यहम्। एतन्मांसस्य मांसत्वम्। ३. शास्ति। ४. शिष्यस्तेऽहं, शाधि मां त्वां प्रपन्नम्। ५. अनन्यशासनामुर्वीं शशास। ६. शिष्यायाशिषद् वेदम्। ७. चौरान् दण्डेन शिष्यात्। **(ग)** १. रूपवद्भार्यः, चित्रगुश्च कृष्णः। २. नलः स भूजानिरभूद् गुणाद्भुतः। ३. केशाकेशि, दण्डादण्डि, बाहूबाहवि युद्धं प्रवृत्तम्। ४. पुष्पधन्वा कामः। **(घ)** २. समितिरेका। ३. परिधाय पर्यटति। ४. विद्रोहिणां प्रशमनार्थम्, प्रहृतम्, प्रयुज्य। ५. नौसेना, विश्रुता। ६. रूसदेशस्य। ७. आधुनिकेषु। ८. प्रक्षिप्य। ९. विध्वंसयितुं शक्यन्ते। १०. कोटपाले, उपकोटपाले। ११. रक्षिणाम्, प्रधान-रक्षिनिरीक्षकाः, उपप्रधान-रक्षि-निरीक्षकाः। १२. परिखया परिवेष्टनं क्रियते।

शब्दकोष—५७५+२५=६००] **अभ्यास २४** (व्याकरण)

(**क**) वणिज् (वैश्य), वृत्तिः (स्त्री०, जीविका), वाणिज्यम् (व्यापार), ऋणम् (कर्ज), उत्तमर्णः (कर्ज देनेवाला), अधमर्णः (कर्ज लेनेवाला), कुसीदम् (सूद), कुसीदिकः (साहूकार), कुसीदवृत्तिः (स्त्री०, बैंकिंग, साहूकारा), पण्यम् (सामान, सौदा), विपणिः (स्त्री०, बाजार), आपणः (दूकान), आपणिकः (दूकानदार), विक्रेतृ (पुं०, बेचनेवाला), ग्राहकः (गाहक, लेनेवाला), विक्रयः (बिक्री), वणिक्पञ्जिका (बही), दैनिकपञ्जिका (रोजनामचा, रोकड़), नामानुक्रमपञ्जिका (लेखा बही), आये (सप्तमी, आयमध्ये), नाम्नि (सप्तमी, उधारखाते), संख्यानम् (हिसाब), लेखकः (मुनीम), राशिः (पुं०, स्त्री०, धन, रकम)। (२४)। (**ख**) पण् (खरीदना)। (१)।

व्याकरण (गो, अस् धातु, द्वन्द्व समास)

१. गो शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० १४)

२. अस् धातु के दसों लकारों के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३२)

नियम १५३—(चार्थे द्वन्द्वः) (उभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः) जहाँ पर दो या अधिक शब्दों का इस प्रकार समास हो कि उसमें च (और) अर्थ छिपा हुआ हो तो वह द्वन्द्व समास होता है। द्वन्द्व समास में दोनों पदों का अर्थ मुख्य होता है। द्वन्द्व समास की पहचान है कि जहाँ अर्थ करने पर बीच में 'और' अर्थ निकले। द्वन्द्व समास तीन प्रकार का होता है:—१. इतरेतर, २. समाहार, ३. एकशेष। (**१**) **इतरेतर**—जहाँ पर बीच में 'और' का अर्थ होता है तथा शब्दों की संख्या के अनुसार अन्त में वचन होता है अर्थात् दो वस्तुएँ हों तो द्विवचन, बहुत हों तो बहुवचन। प्रत्येक शब्द के बाद विग्रह में च लगेगा। रामश्च कृष्णश्च > रामकृष्णौ। इसी प्रकार सीतारामौ, उमाशंकरौ, रामलक्ष्मणौ, भीमार्जुनौ। पत्रं च पुष्पं च फलं च > पत्रपुष्पफलानि। रामलक्ष्मणभरताः। (परवल्लिङ्गं द्वन्द्व०) द्वन्द्व में अन्तिम शब्द के लिंग के अनुसार पूरे समास का लिंग होगा। मयूरी च कुक्कुटश्च > मयूरीकुक्कुटौ। कुक्कुटश्च मयूरी च > कुक्कुटमयूर्यौ। पहले में पुं० है, दूसरे में स्त्री०। (**२**) **समाहार**—जहाँ पर कई शब्द अपना अर्थ बताते हुए समाहार (समूह) का अर्थ बताते हैं। इस समास में अन्त में नपुं० एक० ही रहता है। यह समास मुख्यतः इन स्थानों पर होता है:—(**क**) (द्वन्द्वश्च प्राणितूर्य०) मनुष्य के अंग, वाद्य के अंग, सेना के अंग में—पाणी च पादौ च > पाणिपादम् (हाथ-पैर)। मार्दङ्गिकपाणविकम्, रथिकाश्वारोहम्। (**ख**) (जातिरप्राणिनाम्) निर्जीव जातिवाचक शब्द। यवाश्च चणकाश्च > यवचणकम्। व्रीहियवम्। (**ग**) (येषां च विरोधः०) जिनका जन्मसिद्ध वैर हो। अहिनकुलम्, गोव्याघ्रम्, काकोलूकम्। (**घ**) (विभाषा वृक्षमृग०) वृक्ष, मृग, पशु आदि में विकल्प से। कुशकाशम्, शुकबकम्, गोमहिषम्, दधिघृतम्, पूर्वापरम्, अधरोत्तरम्। (**ङ**) (विप्रतिषिद्धं०) विरोधी चीजों में। शीतोष्णम्, सुखदुःखम्, पापपुण्यम्। (**च**) (द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्०) अन्त में चवर्ग, द, ष, ह् होंगे तो अ अन्त में जुड़ेगा। वाक्त्वचम्। त्वक्स्रजम्। शमीदृषदम्। वाक्त्विषम्। छत्रोपानहम्। (**३**) **एकशेष**—अभ्यास २५ में देखो।

अभ्यास २४

संस्कृत बनाओ—(क) (गो शब्द)१. गौएँ **दूधवाली** हों। २. **चरागाह से** गाय को लाओ। ३. **बाड़े में गाय को बन्द करो**। ४. गायों को **पालो**। ५. **गाय की महिमा अपार है**। ६. गायों में **काली गाय अधिक दूध देती है**। ७. राम की **बात सुनकर** सीता बोली। **(ख)** (अस् धातु) १. **जिसके पास स्वयं बुद्धि नहीं है, शास्त्र** उसका क्या भला कर सकता है? २. **मेरे पास खाने को है**। ३. **जो मेरी चीज है,** वह तुम ले लो। ४. **उसके पास कुछ भी धन नहीं है**। ५. वह **चुप था**। ६. अच्छा **ऐसा ही सही**। ७. सृष्टि के आदि **में न असत् था और न सत्**। ८. मैं **पहले नहीं था, ऐसी बात नहीं** है। ९. मैं जो चाहता हूँ, **वह तुम्हें मिले**। १०. शिव **तुम्हें मुक्ति दे**। ११. सज्जनों के **कल्याण के लिए** श्री और सरस्वती का **मेल** हो। १२. **अन्य राजाओं का दिया हुआ मेरे साग और नमक भर को होगा**। १३. **जैसा मैं उसके प्रति सोचता हूँ, क्या वह भी मेरे प्रति वैसा ही सोचती है?** १४. सूर्य **निकला**। **(ग)** (द्वन्द्व) १. दुर्योधन और भीम का गदा-युद्ध प्रारम्भ हुआ। २. अतिथि के लिए पत्र, पुष्प और फल लाओ। ३. राम, लक्ष्मण और भरत भ्रातृ-प्रेम की मूर्ति हैं। ४. **मोरनी और मुर्गे** वन में घूम रहे हैं। ५. मुनि सुख-दुःख, पाप-पुण्य और **सर्दी-गर्मी** को समान **मानता है**। ६. घी-दूध और जौ-चने खाओ। ७. पूर्वापर और **ऊँच-नीच** को सोचकर बोलो। ८. **छाता-जूता** लाओ **(घ)** (वैश्यवर्ग) १. बनिया साहूकारी का काम करता है, वह लोगों को **रुपया उधार देता है** और सूद **वसूल करता** है। २. आज बाजार में **बहुत रौनक** थी, दूकानें **सजी हुई** थीं, बनिए ग्राहकों को **सामान बेच रहे थे** और वे नगद खरीद रहे थे। ३. कर्ज लेनेवाला सदा दुःखी रहता है और कर्ज देनेवाला **पनपता** है। ४. वाणिज्य सुख का मूल और वैभव का **कर्ता** है। ५. बनियों की दूकानों पर मुनीम रहते हैं, वे दूकान की आय और व्यय का पूरा हिसाब बहियों में लिखते हैं। जो **आमदनी** होती है, उसे आयमध्ये और जो **उधार जाता है,** उसे उधार खाते लिखते हैं। दैनिक आय-व्यय रोजनामचा में **लिखा जाता है** और बाद में वही लेखा-बही में वर्णानुक्रम से प्रत्येक व्यक्ति के **हिसाब में** लिखा जाता है। ६. बनिये **रोज के रोज** अपना हिसाब **बहुत बारीकी से मिलाते** हैं।

संकेत—(क) १. क्षीरिण्यः। २. शाद्वलात्। ३. व्रजमवरुणद्धि गाम्। ४. पालय। ५. गोस्तु मात्रा न विद्यते। ६. कृष्णा बहुक्षीरा। ७. गां निशम्य। **(ख)** १. यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं०। २. अस्ति मे भोक्तुम्। ३. यन्ममास्ति। ४. नहि तस्यास्ति किंचित् स्वम्। ५. तूष्णीम्। ६. एवमेव स्यात्। ७. नासदासीन्नो सदासीत्तदानीम्। ८. न त्वेवाहं जातु नासम्। ९. ते तदस्तु। १०. निःश्रेयसायास्तु वः। ११. भूतये····संगतम्। १२. अन्यैर्नृपालैः परिदीयमानं शाकाय वा स्यात् लवणाय वा स्यात्। १३. किं नु खलु यथा वयमस्याम्, एवमियमप्यस्मान् प्रति स्यात्। १४. प्रादुरासीत्। **(ग)** ४. मयूरीकुक्कुटाः। ५. शीतोष्णम्, मनुते। ७. अधरोत्तरम्। ८. छत्रोपानहम्। **(घ)** १. धनम् ऋणरूपेण यच्छति, गृह्णाति। २. अपूर्वा छटा, सुसज्जिताः, वस्तूनि व्यक्रीणत, मूल्येन। ३. एधते। ४. मूलम्, कर्तृ। ५. आयः, ऋणरूपेण दीयते, लिख्यते, आयव्ययविवरणे। ६. प्रत्यहम्, अतिसूक्ष्मतया गणयन्ति।

शब्दकोष—६००+२५=६२५] **अभ्यास २५** (व्याकरण)

(**क**) अभिकर्तृ (पुं०, एजेण्ट, आढ़ती), अभिकरणम् (एजेन्सी, आढ़त), शुल्कम् (कमीशन, दलाली), शुल्काजीवः (दलाल, कमीशन एजेण्ट), तुला (तराजू), तोलनम् (तोलना), तोलः (तोल), तुलामानम् (बाट, बटखरा) अर्घः (भाव, रेट), मूल्यम् (मूल्य), मूल्येन (तृ०, नगद), ऋणरूपेण (तृ०, उधार), अर्घापचितिः (स्त्री०, भाव गिरना), अर्घोपचितिः (स्त्री०, भाव चढ़ना), मन्दायनम् (मन्दी), मूलधनम् (पूँजी), विनिमयः (अदल-बदल), आयातः (बाहर से आना, इम्पोर्ट), निर्यातः (बाहर जाना, एक्सपोर्ट), करः (टैक्स), विक्रयकरः (सेल्स टैक्स), आयकरः (इन्कम-टैक्स), क्रयः (खरीद), आयात-शुल्कम् (आयात पर चुंगी), निर्यात-शुल्कम् (निर्यात पर चुंगी)। (२५)।

व्याकरण (प्राञ्च्, उदञ्च्; ब्रू धातु, एकशेष, अलुक् समास)

१. प्राञ्च्, उदञ्च् शब्दों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० १६, १७)

२. ब्रू धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४७)

नियम १५४—(एकशेष) एकशेष मुख्यतः इन स्थानों पर होता है—**(क)** (सरूपाणाम्०) द्विवचन और बहुवचन में एक शब्द शेष रहेगा, उसीसे विभक्ति होगी। वृक्षश्च वृक्षश्च > वृक्षौ। वृक्षाः। **(ख)** (पिता मात्रा) पिता-माता में पितृ शेष रहेगा, उससे द्विवचन होगा। माता च पिता च > पितरौ। **(ग)** (पुमान् स्त्रिया) स्त्रीलिंग और पुंलिंग में पुं० शेष रहेगा, उससे द्विवचन होगा। हंसी च हंसश्च > हंसौ।

नियम १५५—(एकशेष) (नपुंसकमनपुंसकेन०) यदि एक वाक्य में पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्द हैं तो सर्वनाम और क्रिया पुं० होंगे। यदि पुं०, स्त्री०, नपुं० तीनों हैं तो सर्वनाम और क्रिया नपुंसक० होंगे। शुक्लः पटः, शुक्ला शाटी, ताविमौ क्रीतौ।

नियम १५६—(एकशेष) (त्यदादीनि०) कोई संज्ञा-शब्द और सर्वनाम होगा, तो सर्वनाम शेष रहेगा। कई सर्वनाम होंगे तो अन्तिम शेष रहेगा। स रामश्च > तौ।

नियम १५७—(एकशेष) प्रथम, मध्यम, उत्तमपुरुष एकत्र हों तो क्रिया इस प्रकार रहेगी:—**(क)** प्रथम०+प्रथम०=क्रिया प्रथमपुरुष। वचन संख्या के अनुसार। रामः रमा च पठतः। **(ख)** प्रथम०+मध्यम०=क्रिया मध्यम पु०। वचन संख्यानुसार। स त्वं च पठथः। ते यूयं च गच्छथ। **(ग)** यदि उत्तमपुरुष भी होगा तो उत्तम पुरुष शेष रहेगा। वचन संख्या के अनुसार होगा। स त्वम् अहं च पठामः।

नियम १५८—(नञ्समास) (नञ्, तस्मान्नुडचि) तत्पुरुष और बहुव्रीहि में नञ् समास होता है। नञ् का 'अ' शेष रहता है। बाद में कोई स्वर होगा तो अ को अन् हो जायगा। न ब्राह्मणः > अब्राह्मणः। न पुत्रः यस्य सः > अपुत्रः। उपस्थितः > अनुपस्थितः। अतिथिः, अज्ञः, अनुचितः, अनादरः, अनीश्वरवादी।

नियम १५९—(अलुक् समास) जिन स्थानों पर बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता है, उसे अलुक् समास कहते हैं। विभक्ति-लोप इन स्थानों पर नहीं होता है। परस्मैपदम्, आत्मनेपदम्, युधिष्ठिरः, कण्ठेकालः (शिव), अन्तेवासिन् (शिष्य), पश्यतोहरः (सुनार, डाकू), देवानांप्रियः (मूर्ख), शुनःशेपः (नाम), दिवोदासः (नाम), खेचरः (देव आदि), सरसिजम् (कमल), मनसिजः (काम), पात्रेसमिताः (खाने के साथी), गेहेशूरः (घर में शूर), गेहेनर्दी (घर में ही चिल्लानेवाला)।

अभ्यास २५

संस्कृत बनाओ— (क) (प्राञ्च्, उदञ्च्) १. इस विषय में **पूर्व, पश्चिम और उत्तर के वैयाकरणों में एकमत नहीं है।** २. **पूर्व, पश्चिम और उत्तर** के लोग अपने-अपने प्रदेश को अधिक मानते हैं। ३. **पूर्व दिग्भाग में** सूर्य उदय होता है और **पश्चिम में** अस्त होता है। **उत्तर में** हिमालय शोभित होता है। ४. **पूर्व दिशा में** अब चन्द्रमा निकल रहा है और सूर्य **पश्चिम में** छिप रहा है। उत्तर में हिमालय है। **(ख)** (ब्रू धातु) १. मैं **शकुन्तला के विषय में कह रहा हूँ।** २. वह **बच्चे को धर्म बता रहा है।** ३. **तुमसे क्या कहें ?** ४. **सज्जन कार्य से अपनी उपयोगिता बताते हैं, न कि मुँह से।** ५. **मेरे चार प्रश्नों का उत्तर दो।** ६. दिलीप ने शेर को **उत्तर दिया।** ७. **सत्य बोलो, प्रिय** बोलो, अप्रिय सत्य न बोलो। ८. मैंने **कहा** कि चरित्र की उन्नति से देशोन्नति होती है। **(ग)** (एकशेष, अलुक्) १. **माता-पिता** की वन्दना करता हूँ। २. एक कॉपी, एक होल्डर और एक पुस्तक, **ये तीन चीजें** खरीदीं। ३. एक डंडा और एक साड़ी, **ये दो सामान** खरीदे। ४. देवदत्त और तुम कब खेलने **जाओगे ?** ५. देवदत्त, तुम और हम सब आज घूमने **चलेंगे।** ६. कक्षा में अनुपस्थित न हो, अनीश्वरवादी न हो, अतिथि का अनादर न करो, अनुदार मत हो। ७. अज्ञ अनुचित कार्य करते हैं। ८. **सुनार देखते-देखते सोना चुरा लेता है।** ९. आजकल अधिकांश मित्र **खाने के साथी होते हैं, मौका पड़ने पर काम नहीं आते।** १०. कुत्ता भी **घर पर शेर होता है। (घ)** (व्यापारीवर्ग) १. आढ़ती आढ़त करता है, दूसरे के लिए सामान **मँगाता है** और **बेचता है।** २. दलाल कमीशन लेकर एक का सामान **दूसरे के हाथ बिकवाता है।** ३. ग्राहक दूकानदार से वस्तुओं का भाव पूछता है। ४. दूकानदार तराजू पर बाट रखकर सामान **तोलता है, डण्डी नहीं मारता है।** ५. कुछ दूकानदार डंडी भी मारते हैं और कम तोल देते हैं। ६. सदा नगद **लेना चाहिए।** ७. उधार **लेना** और उधार **देना दोनों** ही अनुचित और हानिकारक हैं। ८. **भाव कभी गिरता है,** कभी चढ़ता है, कभी मन्दी भी आती है। ९. **सरकार** ने बिक्री पर सेल्स-टैक्स, आयात पर आयात-कर, निर्यात पर निर्यात-कर और आमदनी पर इन्कम-टैक्स **लगाए हुए हैं।**

संकेत—(क) १. प्राचां प्रतीचामुदीचां ... नैकमत्यम्। २. प्राञ्चः, प्रत्यञ्चः, उदञ्चः। ३. प्राचि दिग्भागे, प्रतीचि, उदीचि। ४. प्राच्यां दिशि, प्रतीच्याम्, उदीच्याम्। **(ख)** १. शकुन्तलामधिकृत्य ब्रवीमि। २. माणवकं धर्मं ब्रूते। ३. किं त्वां प्रति ब्रूमहे। ४. ब्रुवते हि फलेन साधवो, न कण्ठेन निजोपयोगिताम्। ५. ब्रूहि मे चतुरः प्रश्नान्। ६. प्रत्यब्रवीत्। ७. सत्यं ब्रूयात्, प्रियम्। ८. अवोचम्। **(ग)** १. पितरौ। २. एतानि त्रीणि वस्तूनि। ३. एतौ द्वौ पदार्थौ। ४. गमिष्यथः। ५. गमिष्यामः। ८. पश्यतोहरः पश्यत एव, मुष्णाति। ९. पात्रेसमिता भवन्ति, न तु कार्ये। १०. गेहेशूरः, गेहेनर्दी वा। **(घ)** १. आनाययति, विक्रीणीते। २. अपरस्य हस्ते, विक्रापयते। ४. तोलयति, कूटमानं न कुरुते। ६. ग्रहीतव्यम्। ७. दानादानम्, द्वयमेव। ८. जातु अर्घापचितिर्भवति। ९. सर्वकारेण निर्धारितानि सन्ति।

[शब्दकोष—६२५+२५=६५०] **अभ्यास २६** (व्याकरण)

(**क**) अन्नम् (अन्न), शस्यम् (अन्न, खेत में विद्यमान), धान्यम् (धान, भूसीसहित), तण्डुलः (चावल, भूसी-रहित), व्रीहिः (पुं०, चावल), गोधूमः (गेहूँ), चणकः (चना), यवः (जौ), माषः (उड़द), मुद्गः (मूँग), मसूरः (मसूर), सर्षपः (सरसों), आढकी (स्त्री०, अरहर), द्विदलम् (दाल), तिलः (तिल), कलायः (मटर), यवनालः (ज्वार), प्रियंगुः (पुं०, बाजरा), चूर्णम् (आटा), चणकचूर्णम् (बेसन), मिश्रचूर्णम् (मिस्सा आटा), अणुः (पुं०, बासमती चावल), श्यामाकः (सावाँ, जंगली चावल), वनमुद्गः (लोबिया), रसवती (स्त्री०, रसोई)। (२५)

व्याकरण (पयामुच्, वणिज्; या, पा धातु, समासान्तप्रत्यय)

१. पयोमुच्, वणिज् के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० १५, १८)

२. या और पा धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४०, ४१)

नियम १६०—(समासान्तप्रत्यय) निम्नलिखित स्थानों पर समास होने के बाद अन्त में कोई प्रत्यय होता है। बहुव्रीहि के समासान्त प्रत्ययों के लिए देखो नियम १५१ और १५२। द्वन्द्व के समासान्त प्रत्यय के लिए देखो नियम १५३ (च)। (**१**) (राजाहःसखिभ्यष्टच्)। टच् होकर समास के अन्त में राजन् को राज, अहन् को अह या अह्न, सखि को सख हो जाता है। महान् चासौ राजा > महाराजः। देवराजः। उत्तमम् अहः > उत्तमाहः। कृष्णस्य सखा > कृष्णसखः। (**२**) (अह्नोऽह्न एतेभ्यः) इन स्थानों पर अहन् को अह्न होता है। सर्वाह्णः, पूर्वाह्णः, मध्याह्नः, सायाह्नः, द्व्यह्नः, अपराह्णः। (न संख्यादेः०) संख्या पहले होगी तो समाहार में अहन् का अहः ही होगा। एकाहः, द्व्यहः, त्र्यहः। (**३**) (आन्महतः०) प्रथम पद के महत् को महा हो जाता है, कर्मधारय और बहुव्रीहि में। महात्मा, महादेवः, महाशयः। (**४**) (अहः सर्वैकदेश०) अच् होकर रात्रि का रात्र हो जाता है, अहः सर्व आदि के बाद। अहोरात्रः, सर्वरात्रः, पूर्वरात्रः, द्विरात्रम्, नवरात्रम्, अतिरात्रः। (**५**) (अनोऽश्माय:०) अनस्, अश्मन्, अयस् और सरस् के अन्त में टच् (अ) जुड़ जाता है, जाति या संज्ञा अर्थ में। उपानसम्, अमृताश्मः, कालायसम्, मण्डूकसरसम्। महानसम् (रसोई), पिण्डाश्मः, लोहितायसम्, जलसरसम्। (**६**) (ऋक्पूरब्धूः०) समासान्त अ होकर ऋच् को ऋच, पुर् को पुर, अप् को अप, धुर् को धुरा, पथिन् को पथ हो जाता है। ऋचः अर्धम् > अर्धर्चः। विष्णोः पूः > विष्णुपुरम्। विमलापं सरः। राजधुरा। सुपथो देशः। (**७**) (द्व्यन्तरुपसर्गेभ्यो०) इन स्थानों पर अन्तिम अप् का ईप हो जाता है। द्वीपम्, अन्तरीपम्, प्रतीपम्, समीपम्। (**८**) (अच् प्रत्यन्वव०) अच् होकर इन स्थानों पर लोमन् को लोम होता है। प्रतिलोमम्, अनुलोमम्, अवलोमम्। (**९**) (अचतुर०) निपातन से ये रूप बनते हैं। नक्तन्दिवम्, रात्रिन्दिवम्, अहर्दिवम्, निःश्रेयसम्, पुरुषायुषम्, ऋग्यजुषम्। (**१०**) (न पूजनात्, किमःक्षेपे, नञस्तत्पुरुषात्) पूजा तथा निन्दा अर्थ में और नञ्समास होने पर कोई समासान्त नहीं होगा। सुराजा, किंराजा, अराजा, असखा। (**११**) (अव्ययीभावे शरत्०) अव्ययीभाव में (**क**) शरद् आदि से टच् (अ) होगा। उपशरदम्, प्रतिविपाशम्। (**ख**) (प्रतिपर०) प्रति, पर, सम्, अनु के बाद अक्षि को अक्ष होगा। प्रत्यक्षम्, परोक्षम्, समक्षम्। (**ग**) (अनश्च) अन्नन्त से टच् (अ) और अन् का लोप होगा। उपराजम्, अध्यात्मम्।

अभ्यास २६

संस्कृत बनाओ—(क) (पयोमुच्, वणिज्) १. बादल **गरजता है।** २. बादल की **बूँदों से सींची हुई** वन-राजि शोभित हुई। ३. बादल की **पंक्तियों में बिजली की तरह** वह राजा **चमक रहा था।** ४. **बादलों में** बिजली **चमकती है।** ५. **सत्यवक्ता** सदा निर्भय होते हैं। ६. **बनियों का टका ही धर्म और टका ही कर्म है।** ७. बनिया व्यापार में सर्वस्व **लगा देता है** तथा देश और विदेश में सर्वत्र ही व्यापारार्थ जाता है। ८. **राजा का** (भूभुज्) दाहिना हाथ मन्त्री होता है। ९. **वैद्यों की (भिषज्) परीक्षा सन्निपात रोग में** होती है। १०. **अग्नि (हुतभुज्) की लपटें उठ रही हैं। (ख)** (या, पा धातु) १. भाग्य से ही धन **आते हैं और जाते हैं।** २. **जवानी ढल जाती है।** ३. विश्वासघातक सर्वत्र **निन्दित होता है।** ४. बच्चा **दाई** की अँगुली **पकड़कर चला।** ५. दिलीप **गाय के पीछे चला।** ६. **अच्छा यह छोड़ो, ठीक बात पर आओ।** ७. **तुम्हारी बुद्धि मारी गयी है।** ८. झूठ बोलने से मनुष्य **गिर जाता है।** ९. बच्चा **सोता है।** १०. **खाना खिलाने से कौन वश में नहीं आ जाता ?** ११. सूर्य **उदय होता है** और **अस्त होता है।** १२. नदी के **पार जाता है।** १३. गाय उस राजा से **शोभित हुई** (भा)। १४. तुम पिता की तरह **प्रजा की रक्षा करते हो।** १५. शिव **तुम्हारी रक्षा करे। (ग)** (समासान्त) १. वह महाराजा **कृष्ण का सखा है।** २. **दिन-रात** परिश्रम से काम करो। ३. **तालाब का जल स्वच्छ है।** ४. **इस नगर की सड़कें अच्छी हैं।** ५. **अध्यात्म में मन लगाओ। (घ)** १. बाजार में सभी दूकानों पर गेहूँ, जौ, चना, चावल, दाल, मटर, ज्वार, बाजरा **बिकते हैं।** २. आजकल कई दालें **चल रही हैं, अरहर की दाल, उड़द की दाल,** मूँग की दाल और मसूर की दाल। ३. गेहूँ के आटे का भाव **४० रु० मन है।** ४. गेहूँ का आटा और बेसन की रोटी **जाड़े में** अधिक **स्वादिष्ट लगती हैं।** ५. बासमती चावल का **भात** मीठा होता है। ६. भात और दालें **अच्छी पकी होती हैं तो** भोजन रुचिकर और पौष्टिक होता है। ७. आज रसोई में **मीठे चावल, नमकीन चावल,** अरहर, उड़द, मूँग और मसूर की दालें **बनी** हैं।

संकेत—(क) १. गर्जति। २. पृषतैः सिक्ता। ३. पङ्क्तिषु विद्युदिव व्यरुचत्। ४. जलमुक्षु, द्योतते। ५. सत्यवाचः। ६. वणिजो वित्तधर्माणो वित्तकर्माणश्च भवन्ति। ७. नियुङ्क्ते। ८. भूभुजाम्। ९. भिषजां सान्निपातिके०। १०. हुतभुजोऽर्चींषि उद्यान्ति। **(ख)** १. भवन्ति यान्ति। २. यौवनमवनतिं याति। ३. वाच्यतां याति। ४. धात्र्याः, अवलम्ब्य, ययौ। ५. गामन्वग् ययौ। ६. यातु, प्रकृतमनुसंधीयताम्। ७. यातस्तवापि च विवेकः। ८. लघुतां याति। ९. निद्रां याति। १०. को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः। ११. उदयं याति, अस्तं याति। १२. पारं याति। १३. बभौ। १४. प्रजाः पासि। १५. पातु वः। **(ग)** १. कृष्णसखः। २. नक्तन्दिवम्। ३. विमलापं सरः। ४. सुपथं नगरम्। ५. अध्यात्मे, कुरु। **(घ)** १. विक्रीयन्ते। २. व्यवह्रियन्ते, आढकीद्विदलम्, माषद्विदलम्। ३. चत्वारिंशद्रूप्यकाणि। ४. शरदि रोचन्ते। ५. भक्तम्। ६. सुपक्वानि चेत्। ७. मिष्टौदनम्, लवणौदनम्, पक्वानि।

शब्दकोष—६५०+२५=६७५] **अभ्यास २७** (व्याकरण)

(**क**) रोटिका (रोटी), पूपला (फुलका), पूलिका (पूरी), शष्कुली (स्त्री०, खस्ता पूरी), पिष्टिका (कचौड़ी), पूपिका (पराँठा), लप्सिका (हलुआ), पायसम् (खीर), सूत्रिका (सेवई), पक्वान्नम् (पकवान), सूपः (दाल), शाकः (साग), राज्यक्तम् (रायता), क्षीरम् (दूध), आज्यम् (घी), नवनीतम् (मक्खन), तक्रम् (मट्ठा), यवागूः (स्त्री०, लपसी, आटे का हलुआ), दाधिकम् (लस्सी), कृशरः (खिचड़ी), शर्करा (शक्कर, बूरा), सिता (चीनी), सन्धितम् (अचार), अवलेहः (चटनी), किलाटः (खोवा)। (२५)

व्याकरण (भूभृत् शब्द; दुह्, लिह् धातु, स्त्रीप्रत्यय)

१. भूभृत् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० सं० १९)

२. दुह् और लिह् धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३६, ३७)

नियम १६१—पुंलिंग शब्दों को स्त्रीलिंग बनाने के लिए जो प्रत्यय लगते हैं, उन्हें स्त्रीप्रत्यय कहते हैं। ये साधारणतया ३ हैं—१. टाप् (आ), २. ङीप् (ई), ३. ङीष् (ई)। इनके रूप रमावत् या नदीवत् चलेंगे। **(क) टाप्—(१)** (अजाद्यतष्टाप्) अज आदि और अकारान्त शब्दों के अन्त में टाप् (आ) लगता है। जैसे—अज > अजा, बाल > बाला। इसी प्रकार अश्वा, कोकिला, प्रथमा, द्वितीया, ज्येष्ठा, कनिष्ठा। **(२)** (प्रत्ययस्थात्कात्०) यदि शब्द के अन्त में 'अक' होगा तो टाप् होने पर 'इका' हो जाएगा। कारक > कारिका। इसी प्रकार गायिका, अध्यापिका, मूषिका, बालिका।

नियम १६२—(ख) ङीप्—(१) (उगितश्च) जिन प्रत्ययों में से उ या ऋ का लोप होता है, उनमें अन्त में ङीप् (ई) लगेगा। जैसे—मतुप्, शतृ, क्तवतु, ईयसुन् प्रत्ययवाले शब्द। मतुप्—श्रीमत् > श्रीमती। बुद्धिमती, विद्यावती, भगवती। शतृ—पठत् > पठन्ती। लिखन्ती, हसन्ती, गच्छन्ती, कुर्वन्ती। क्तवतु—गतवती, पठितवती। ईयस्—श्रेयसी, गरीयसी, भूयसी, ज्यायसी। **(२)** (ऋन्नेभ्यो ङीप्) अन्त में ऋ या न् होगा तो ङीप् (ई) लगेगा। कर्तृ > कर्त्री। हर्त्री, धर्त्री, कवयित्री, अध्येत्री, विधात्री। दण्डिन्>दण्डिनी। मानिनी, मनोहारिणी, तपस्विनी, राज्ञी। **(३)** (टिड्ढाणञ्०) टित्, ढ (एय), अण् (अ), अञ् (अ), ठक् (इक), ठञ् (इक) आदि प्रत्यय होने पर ङीप् (ई) होगा। जैसे—टित्—नदी, पुरातनी, सनातनी। दैविकी, भौतिकी, आध्यात्मिकी। **(४)** (वयसि प्रथमे) बाल्य और युवा आयु में ङीप् (ई)। कुमारी, किशोरी, तरुणी। **(५)** (द्विगोः) द्विगु समास में। त्रिलोकी, शताब्दी, चतुर्युगी।

नियम १६३—(ग) ङीष्—(१) (षिद्गौरादिभ्यश्च) षित् और गौर आदि से ङीष् (ई)। नर्तकी, गौरी, रजकी। **(२)** (पुंयोगादा०) पुंलिंग से स्त्रीत्व में। गोप की स्त्री > गोपी। शूद्री। **(३)** (जातेरस्त्री०) जातिवाची शब्दों से। ब्राह्मण > ब्राह्मणी। हरिणी, मृगी, सिंही। परन्तु क्षत्रिया, वैश्या ही होगा। **(४)** (वोतो गुणवचनात्) गुणवाची से विकल्प से। मृद्वी, मृदुः। **(५)** (इन्द्रवरुणभव०) इन्द्र आदि में आनी लगेगा। इन्द्राणी, भव > भवानी, शर्व > शर्वाणी, मातुल > मातुलानी, उपाध्याय > उपाध्यायानी, आचार्य > आचार्याणी, आचार्या। यवन > यवनानी (लिपि)।

नियम १६४—इन शब्दों में स्त्रीलिंग में ये रूप होते हैं—पति > पत्नी, युवन् > युवतिः, श्वशुर > श्वश्रूः, विद्वस् > विदुषी, राजन् > राज्ञी, नर > नारी, युवत् > युवती।

अभ्यास २७

संस्कृत बनाओ—(क) (भूभृत्) १. राजा (भूभृत्) की नीति का सर्वत्र आदर है, क्योंकि वह जनता को अपनी प्रजा के तुल्य मानता है। २. राजा (भूभृत्) में गुण हैं और पर्वत पर (भूभृत्) ओषधियाँ हैं। ३. राजाओं (महीभृत्) का हित प्रजा के हित के साथ जुड़ा हुआ है। ४. राजा (महीक्षित्) के धार्मिक होने पर प्रजा धार्मिक होती है। ५. चन्द्रमा (शशभृत्) की चाँदनी जगत् को आह्लादित करती है। ६. कौए (परभृत्) की आवाज कानों को अच्छी नहीं लगती है। ७. हवाएँ (मरुत्) सुखद बह रही थीं। ८. रघु ने विश्वजित् यज्ञ में समस्त खजाना दान में दे दिया था। (ख) (दुह्, लिह्) १. गाय से दूध दुहता है। २. दिलीप यज्ञ के लिए पृथ्वी से कर लेता था। ३. ग्वाले ने गाय को दुहा। ४. सत्य और प्रिय वाणी कामनाओं को पूर्ण करती है, अशोभा को दूर करती है और कीर्ति को देती है। ५. भौंरे पद्मों से मधु पी रहे हैं। ६. गाय ने बछड़े को चाटा। ७. किसी मूर्ख ने बन्दर की छाती पर हार डाला। बन्दर ने उसे चाटा, सूँघा और लपेटकर उस पर बैठ गया। (ग) (स्त्रीप्रत्यय) १. गायिका गाती है, अध्यापिका पढ़ाती है, बालिका पढ़ती है, तपस्विनी तप करती है, रानी शृंगार कर रही है, पत्नी खाना पकाती है, कवयित्री कविता करती है, नर्तकी नाचती है, युवती वस्त्रों को सीती है, धोबिन कपड़े धोती है। २. जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं। ३. सास-ससुर, नर-नारी, युवा-युवतियाँ, राजा-रानी, पति-पत्नी, विद्वान्-विदुषी, उपाध्याय-उपाध्यायानी, आचार्य-आचार्याणी प्रातःकाल उद्यान में घूमते हैं। ४. आचार्य की स्त्री आचार्याणी होती है और जो स्वयं पढ़ाती है वह आचार्या होती है। ५. यूनानी लिपि देवनागरी लिपि से भिन्न है। (घ) (भक्ष्यवर्ग) १. आज दिवाली का शुभ पर्व है। सभी घरों में स्त्रियाँ रसोई और चूल्हे को पोतकर पूरी, खस्तापूरी, कचौड़ी, हलुवा, खीर, सेवई आदि पकवान बना रही हैं। वे कुटुम्ब के लोगों को खाना परोसती हैं और पकवान के साथ साग, रायता, अचार, चटनी, पापड़, दही, चीनी और बूरा परोसती हैं। २. साधारणतया प्रतिदिन रोटी, फुलका, भात, दाल, साग, चटनी, अचार ही खाया जाता है। दाल-साग में घी डाला जाता है। ३. कभी-कभी, खिचड़ी, कढ़ी और लपसी भी बनती है। ४. नाश्ते में प्रायः चाय, मट्ठा, लस्सी, घुघरी, पराँठा या दूध चलता है।

संकेत—(क) १. आद्रियते, प्रजाः प्रजाः स्वा इव। ३. समन्वितं वर्तते। ४. महीक्षिति धर्मिणि प्रजा धर्मिष्ठाः। ५. आह्लादयति। ६. परभृतो रवो न श्रुतिसुखदः। ७. मरुतो ववुः सुखाः। ८. विश्वजिति अध्वरे निःशेषविश्राणितकोषजातः। (ख) १. गां पयः। गां दुदोह। ३. अधुक्षत्। ४. सूनृता वाक्, कामं दुग्धे, विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं कीर्तिं च सूते। ५. लिहन्ति। ६. वत्समलिक्षत्। ७. हारं वक्षसि केनापि दत्तमज्ञेन मर्कटः। लेढि जिघ्रति संक्षिप्य करोत्युन्नतमासनम्। (ग) १. अध्यापयति, तपश्चरति, रचयति, नृत्यति, सीव्यति, रजकी, प्रक्षालयति। २. गरीयसी। ५. यवनानी, भिद्यते। (घ) १. पर्व, महानसं चुल्लिं च विलिप्य, पचन्ति, कौटुम्बिकेभ्यो जनेभ्यः, परिवेषयन्ति, पर्पटान्, दधि। २. भुज्यते अभ्यवह्रियते वा, निक्षिप्यते। ३. तेमनम्। ४. कल्यवर्ते, चायम्, कुल्माषाः, भक्ष्यते।

शब्दकोष—६७५+२५=७००]

अभ्यास २८

(व्याकरण)

(**क**) मिष्टान्नम् (मिठाई), कान्दविकः (हलवाई), मोदकः (लड्डू), पूपः (पूआ), अपूपः (मालपूआ), कुण्डली (स्त्री०, जलेबी), अमृती (स्त्री०, इमरती), हैमी (स्त्री०, बर्फी), पिण्डः (पेड़ा), कौष्माण्डम् (पेठे की मिठाई), दुग्धपूपिका (गुलाबजामुन), रसगोलः (रसगुल्ला), शर्करापालः (शक्करपारा), मधुमण्ठः (बालूशाही), संयावः (गुझिया), सन्तानिका (मलाई), कूर्चिका (रबड़ी), कलाकन्दः (कलाकन्द), पर्पटी (स्त्री०, पपड़ी), घृतपूरः (घेवर), मधुशीर्षः (खाजा), मिष्टपाकः (मुरब्बा), वाताशः (बताशा), मोहनभोगः (मोहनभोग), गजकः (गजक)। (२५)

व्याकरण (भगवत्, धीमत् शब्द; रुद्, स्वप् धातु, कर्तृवाच्य, पदक्रम)

१. भगवत् और धीमत् के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २०, २१)

२. रुद् और स्वप् धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३४, ३५)

नियम १६५—(कर्तृवाच्य) कर्तृवाच्य में कर्ता मुख्य होता है, कर्ता के अनुसार ही क्रिया का लिंग, वचन, विभक्ति या पुरुष होगा। कर्ता एक० होगा तो क्रिया एक०, द्वि० होगा तो द्वि०, बहु० होगा तो बहु०। बालकाः पुस्तकानि पठितवन्तः, बालिकाः पठितवत्यः। कर्तृवाच्य में इन बातों का ध्यान रखें:—(**१**) यदि 'च' लगाकर कर्ता अनेक हों तो तदनुसार क्रिया द्वि० या बहु० होगी। रामः कृष्णश्च गच्छतः। नियम १५७ भी देखें। (**२**) यदि 'वा' लगा हो और प्रत्येक एक० हों तो क्रिया एक०, यदि अन्तिम बहु० हो तो क्रिया बहु०। रामः कृष्णो वा पठतु। (**३**) कर्ता और कर्म के विशेषणों में कर्ता और कर्म के लिंग, वचनादि लगेंगे। रूपवती स्त्री। (**४**) कभी 'च' लगने पर क्रिया अन्तिम कर्ता के अनुसार होती है। उद्वेगः कलहः च वर्धते। (**५**) विंशतिः, शतम्, सहस्रम् आदि निश्चित लिंग और निश्चित वचन हैं, इनमें अन्तर नहीं होगा। शतं जनाः, सहस्रं स्त्रियः, विंशतिः छात्राः।

नियम १६६—(सापेक्ष सर्वनाम) यत् और तत् सापेक्ष सर्वनाम हैं (जो......वह)। जो यत् का लिंग, विभक्ति, वचन होगा, वही तत् का होगा। बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।

नियम १६७—यदि प्रथम और द्वितीय वाक्य में लिंग-भेद होगा तो तत् शब्द का लिंग प्रायः द्वितीय वाक्यवत् होगा। शैत्यं हि यत्, सा प्रकृतिर्जलस्य।

नियम १६८—'यत्' शब्द 'कि' अर्थ में भी आता है, तब वह नपुं० एक० ही रहेगा। यह सत्य है कि०—सत्यमेतद् यत् सम्पत् सम्पदमनुबध्नातीति।

नियम १६९—(पदक्रम) संस्कृत के वाक्यों में शब्दों के क्रम का कोई विशेष महत्त्व नहीं है। कर्ता कर्म क्रिया आगे-पीछे भी रखे जा सकते हैं। स पुस्तकं पठति, पुस्तकं पठति सः आदि। परन्तु साधारणतया नियम यह है कि:—(१) पहले कर्ता, फिर कर्म, बाद में क्रिया। कर्ता और कर्म के विशेषण कर्ता और कर्म से पहले रखे जाएँगे। (२) सम्बोधन सबसे पहले रखा जाता है। (३) कर्मप्रवचनीय अनु प्रति आदि कर्म के बाद आते हैं। (४) सह, ऋते, विना आदि सम्बद्ध शब्द के बाद में आते हैं। (५) च, वा, तु, हि, चेत्, ये प्रारम्भ में नहीं आते। ६. प्रश्नवाचक अपि, किम्, कथम्, कियत् आदि तथा विस्मयादिबोधक अव्यय—हो, हन्त आदि प्रारम्भ में आते हैं।

अभ्यास २८

संस्कृत बनाओ—(क) (भगवत्, धीमत्) १. भगवान् काश्यप **सकुशल तो हैं?** २. भगवन्! **मैं पराधीन हूँ।** ३. **सिद्धि-सम्पन्न महात्माओं की कुशलता अपने हाथ में होती है।** ४. **विद्वानों के लिए कोई भी चीज अज्ञात नहीं होती।** ५. **गुणवान् को कन्या देनी चाहिए, यह माता-पिता का मुख्य विचार होता है।** ६. सूर्य **(भानुमत्) जिस दिशा में उदय होता है, वही पूर्व दिशा होती है। सूर्य दिशा के अधीन होकर उदय नहीं होता।** ७. पहाड़ (सानुमत्) की **चोटी पर बर्फ दिखाई दे रही है। (ख)** (रुद्, स्वप्) १. मैं निराश्रय हूँ, कहो **किसके सामने रोऊँ।** २. सीता के वियोग में राम की दयनीय स्थिति को देखकर **पत्थर भी रो पड़ते हैं और वज्र का भी हृदय फट** जाता है। ३. यशोवती **आँचल से मुँह ढककर खूब जोर से बहुत देर रोई।** ४. हर्ष पिता के **पैर पकड़कर चीख-चीखकर बहुत देर रोया।** ५. **सभी अपने साथियों पर विश्वास करते हैं** (विश्वस्)। ६. **मुझे अँगूठी का विश्वास नहीं है।** ७. हृदय **धैर्य रख, धैर्य रख। (ग)** (कर्तृवाच्य) १. **जिसके पास पैसा होता है, उसके मित्र हो जाते हैं, उसके ही बन्धु हो जाते हैं।** २. जिसके पास बुद्धि है, उसके पास बल है। ३. जो **शीतलता है,** वह जल का स्वभाव है। ४. **जो दूसरे के गुणों की असहिष्णुता है, वह दुर्जनों का स्वभाव है।** ५. **जो जिसके योग्य हो, विद्वान् उसे उससे मिला दें।** ६. **यह कहावत सत्य है कि सम्पत्ति के पीछे सम्पत्ति चलती है और विपत्ति के पीछे विपत्ति।** ७. **सौ बालक, सौ स्त्रियाँ और एक हजार लोग** इस उत्सव में हैं। **(घ)** (मिष्टान्नवर्ग) होली का पवित्र पर्व है। सभी ओर आनन्द और उत्साह का संचार है। घरों में स्त्रियाँ लड्डू, पूए, मालपूए, रसगुल्ले, गुझिया, शक्करपारे आदि मिठाइयाँ **बना रही हैं।** हलवाई अपनी दूकानों पर लड्डू, पेड़ा, जलेबी, इमरती, बर्फी, पेठे की मिठाई, गुलाबजामुन, रसगुल्ला, **चमचम,** बालूशाही, रबड़ी, कलाकन्द, घेवर, मोहनभोग, सोहनभोग, गुझिया, बताशे और पपड़ी **बेच रहे हैं।** लोग अपने लिए और अपने मित्रों के लिए **खरीद रहे हैं।** वे मित्रों के घर मिठाइयाँ **बैना के रूप में भेजते हैं।**

संकेत—(क) १. अपि कुशली। २. परवानयं जनः। ३. स्वाधीनकुशलाः सिद्धिमन्तः। ४. न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम। ५. गुणवते कन्या प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् पित्रोः प्रथमः संकल्पः। ६. उदयति दिशि यस्यां भानुमान् सैव पूर्वा। न हि तरुणिरुदेति दिक्पराधीनवृत्तिः। ७. शिखरे हिमं दृश्यते। **(ख)** १. कस्य पुरतो रोदानि। २. अपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्। ३. पटान्तेन मुखं प्रच्छाद्य मुक्तकण्ठम् अतिचिरं प्रारोदीत्। ४. पादौ आश्लिष्य विमुक्तारावः चिरं रुरोद। ५. सर्वः सगन्धेषु विश्वसिति। ६. नास्याङ्गुलीयकस्य विश्वसिमि। ७. समाश्वसिहि। **(ग)** १. यस्यार्थास्तस्य मित्राणि, यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः। ४. परगुणासहिष्णुत्वं यत्, स दुर्जनानां स्वभावः। ५. यद्येन युज्यते लोके बुधस्तत्तेन योजयेत्। ६. सत्योऽयं जनप्रवादो यत् संपत् सम्पदमनुबध्नाति, विपद् विपदम्। ७. शतं बालकाः, शतं स्त्रियः, सहस्रं लोकाः। **(घ)** रचयन्ति, चमनम्, विक्रीणते, क्रीणन्ति, वायनरूपेण प्रहिण्वन्ति।

शब्दकोष—७००+२५=७२५] **अभ्यास २९** (व्याकरण)

(**क**) चायम् (चाय, टी), जलपानम् (जलपान), चायपानम् (चायपानी), चायपात्रम् (टी-पॉट), कफघ्नी (स्त्री०, कॉफी), कन्दुः (पुं०, स्त्री०, केतली), अभ्यूषः (डबलरोटी), भृष्टापूपः (टोस्ट), पिष्टान्नम् (पेस्ट्री), पिष्टकः (बिस्कुट), गुल्यः (टॉफी, मीठी गोली), सपीतिः (स्त्री०, टी पार्टी), सग्धिः (स्त्री०, सहभोज), सहभोजः (लंच या डिनर पार्टी), लवणान्नम् (नमकीन), अवदंशः (चाट), समोषः (समोसा), दालमुद्गः (दालमोठ), सूत्रकः (नमकीन सेव), पक्ववटिका (पकौड़ी), दधिवटकः (दही-बड़ा), पक्वालुः (पुं०, कचालू, आलू की टिकिया), कूलपी (स्त्री०, कुलफी), पुलाकः (पुलाव, ताहरी), व्यञ्जनम् (१. मसाला, २. मसालेदार पदार्थ)। (२५)

व्याकरण (महत्, भवत् शब्द; हन्, स्तु धातु, आत्मनेपद)

१. महत् और भवत् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २२, २३)

२. हन् और स्तु धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३८, ३९)

नियम १७०—(नेर्विशः) नि+विश् आत्मनेपदी होती है। निविशते।

नियम १७१—(परिव्यवेभ्यः क्रियः) परि+क्री, वि+क्री, अव+क्री आत्मनेपदी होती हैं। परिक्रीणीते, विक्रीणीते, अवक्रीणीते।

नियम १७२—(विपराभ्यां जेः) वि+जि, परा+जि आत्मनेपदी होती हैं। विजयते, पराजयते।

नियम १७३—(आङो दोऽनास्यविहरणे) आ+दा आत्मनेपदी होती है, मुँह खोलना अर्थ न हो तो। विद्यामादत्ते। परन्तु मुखं व्याददाति (मुँह खोलता है)।

नियम १७४—(क) (शिक्षेर्जिज्ञासायाम्) जिज्ञासा अर्थ में शिक्ष् धातु आत्मनेपदी है। धनुषि शिक्षते। **(ख)** (हरतेर्गतताच्छील्ये) गति के अनुकरण में हृ धातु आत्मनेपदी है। पैतृकम् अश्वा अनुहरन्ते, मातृकं गावः। **(ग)** (किरतेर्हर्षजीविकाकुलायकरणेषु०) हर्ष, जीविका और आश्रयस्थान बनाने में कृ धातु आत्मनेपदी है। अप+कृ =अपस्कृ हो जाता है। अपस्किरते वृषो हृष्टः (भूमि खोदता है), कुक्कुटो भक्षार्थी, श्वा आश्रयार्थी। **(घ)** (आङि नुप्रच्छ्योः) आ+नु, आ+प्रच्छ् आत्मनेपदी होती हैं। आनुते। आपृच्छते (विदाई लेता है)।

नियम १७५—(क) (समवप्रविभ्यः स्थः) सम्+स्था, अव+स्था, प्र+स्था, वि+स्था आत्मनेपदी होती हैं। सन्तिष्ठते, अवतिष्ठते, प्रतिष्ठते, वितिष्ठते। **(ख)** (आङः प्रतिज्ञायाम्०) आ+स्था प्रतिज्ञा अर्थ में। शब्दं नित्यमातिष्ठते। **(ग)** (उदोऽनूर्ध्वकर्मणि) उत्+स्था आत्मने०, उठना अर्थ न हो तो। मुक्तावुत्तिष्ठते (यत्न करता है)। परन्तु आसनादुत्तिष्ठति, ग्रामाच्छतमुत्तिष्ठति (गाँव से सौ रु० लगान मिलता है)। **(घ)** (उपाद् देवपूजा०) उप+स्था आत्मनेपदी होती है, देवपूजा, संगति करना, मित्र बनाना, मार्ग अर्थ में। आदित्यमुपतिष्ठते (पूजा करता है)। गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते (मिलती है)। कृष्णमुपतिष्ठते (मित्र बनाता है)। पन्थाः प्रयागमुपतिष्ठते (रास्ता प्रयाग को जाता है)।

नियम १७६—(समो गम्यृच्छिभ्याम्) अकर्मक सम्+गम् आत्मनेपदी है। संगच्छते। (अर्तिश्रुदृशिभ्यश्च०) अकर्मक सम्+श्रु, सम्+दृश् आत्मनेपदी हैं। संशृणुते। संपश्यते।

अभ्यास २९

संस्कृत बनाओ—(क) (महत्, भवत्) १. **वह बड़ा** वीर है। २. यहाँ **बड़ा अँधेरा** है। ३. मैंने एक **बड़े** शेर और **बघेरे** को देखा। ४. वहाँ **सम्पत्ति का बड़ा ढेर है।** ५. **बड़े सबेरे बहेलियों के हल्ले से जगा दिया गया हूँ।** ६. बड़ा **आदमी बड़े पर ही अपना पराक्रम दिखाता है।** ७. **बड़ों की बात बड़ी है।** ८. **इस विषय में आपका क्या विचार है?** ९. आप ही **रघुवंशियों की** कुल स्थिति को **जानते हैं।** १०. **आपके मित्र के बारे में कुछ** पूछता हूँ। ११. **आप आगे चलिए, मैं पीछे-पीछे आ रहा हूँ।** १२. **आपसे ही इस विषय का औचित्य-अनौचित्य पूछता हूँ।** १३. **आपके बारे में उसका प्रेम कैसा है?** १४. आपकी यह प्रार्थना शिरोधार्य है। **(ख)** (हन्, स्तु) १. राजा शत्रु को मारता है। २. शत्रुओं को मारो। ३. राम ने रावण को मारा। ४. **हे निषाद, तेरा कभी भला नहीं होगा,** तूने क्रौंच के जोड़े में से **एक को मारा है।** ५. देवदत्त **राम की स्तुति करता है।** ६. राम ने ईश्वर की **स्तुति की।** ७. **रजिस्ट्रार प्रस्तावों को प्रस्तुत करता है** (प्र+स्तु)। ८. मैं **यह प्रस्ताव रखता हूँ कि** छात्र-संघ का प्रधान राम हो। **(ग)** (आत्मनेपद) १. हलवाई मिठाई और नमकीन **बेचता** है (विक्री)। २. वह शत्रुओं को **पराजित करता** है (पराजि)। ३. **आपकी विजय हो** (विजि)। ४. **यदि कील की नोक पैर में चुभ जाती है (निविश्) तो कितना दर्द हो जाता है।** ५. वह विद्या ग्रहण करता है (आदा)। ६. वह मुँह खोलता है (व्यादा)। ७. वह धनुष की शिक्षा पाता है (शिक्ष्)। ८. घोड़े पिता की चाल का अनुकरण करते हैं और गौएँ माँ की (अनुहृ)। ९. बैल प्रसन्न होकर जमीन खोदता है (अपकृ)। १०. **तुम अपने मित्र से विदाई लो** (आप्रच्छ्)। ११. **कृष्ण ने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया (प्रस्था)। (घ)** (पानादिवर्ग) १. आजकल चाय का बहुत **रिवाज** है। अंग्रेजी ढंग से चाय पीनेवाले केतली में पानी **उबालकर,** टी पॉट में चाय डालकर, उस पर **उबला** हुआ पानी **डाल देते हैं** और पाँच मिनट बाद उसे **छान लेते हैं।** कुछ लोग कॉफी भी पीते हैं। उसके साथ ये डबल रोटी, मक्खन, टोस्ट, पेस्ट्री और बिस्कुट भी लेते हैं। सहभोज और टी पार्टी में मिठाइयों के साथ समोसा, पकौड़ी, सेव, दालमोठ भी चलते हैं। २. आजकल विद्यार्थियों को चाट, दही-बड़ा, पकौड़ी, कुलफी और मसालेवाली चीजें अधिक **अच्छी लगती हैं।**

संकेत—(क) १. महान्। २. महानन्धकारः। ३. महान्तम्, व्याघ्रम्। ४. महान् द्रव्यराशिः। ५. महति प्रत्यूषे शाकुनिककोलाहलेन प्रतिबोधितोऽस्मि। ६. महान् महत्स्वेव करोति विक्रमम्। ७. अपूर्वं महतां वृत्तम्। ८. अथवा कथं भवान् मन्यते। ९. रघूणाम्, जानन्ति। १०. मित्रगतं किमपि। ११. गच्छतु पुरो भवान्, अहमनुपदमागत एव। १२. भवन्तमेव गुरुलाघवं पृच्छामि। १३. भवन्तमन्तरेण कीदृशस्तस्या दृष्टिरागः। **(ख)** २. जहि। ३. अवधीत्। ४. मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः। एकमवधीः। ५. रामं स्तौति। ६. अस्तावीत्। ७. प्रस्तोता प्रस्तावान् प्रस्तौति। ८. एतत् प्रस्तवीमि, भवेत्। **(ग)** १. विक्रीणीते। २. पराजयते। ३. विजयतां भवान्। ४. निविशते यदि शूकशिखा पदे सृजति तावदियं कियतीं व्यथाम्। १०. आपृच्छस्व सहचरम्। ११. हरिर्हरिप्रस्थमथ प्रतस्थे। **(घ)** १. प्रचलनम्, आङ्ग्लपद्धत्या, क्वथयित्वा, क्वथितम्, पातयन्ति, स्रावयन्ति, भुज्यते। २. मधुरमापतन्ति तेषां मनांसि।

शब्दकोष—७२५+२५=७५०] **अभ्यास ३०** (व्याकरण)

(**क**) करकः (लोटा), स्थालिका (थाली), कंसः (गिलास), काचकंसः (काँच का गिलास), काचघटी (स्त्री०, जार), कटोरम् (कटोरा), कटोरा (कटोरी), घटः (घड़ा), उदञ्चनम् (बाल्टी), वारिधिः (पुं०, कण्डाल), द्रोणी (स्त्री०, टब), स्थाली (स्त्री०, पतीली), स्वदेनी (स्त्री०, कड़ाही), ऋजीषम् (तवा), पिष्टपचनम् (तई, जलेबी आदि पकाने की), हसन्ती (स्त्री०, अँगीठी), उद्ध्मानम् (स्टोव), धिषणा (तसला), चमसः (चम्मच), दर्वी (स्त्री०, चमचा, कलछुल), चषकः (प्याला, कप), शरावः (प्लेट, तश्तरी), उखा (सास-पेन), हस्तधावनी (स्त्री०, चिलमची), सन्दंशः (चिमटा)। (२५)

व्याकरण (पठत्, यावत्, शब्द; इ, विद् धातु, आत्मने० परस्मैपद)

१. पठत् और यावत् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २४, २५)

२. इ और विद् धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ३३, ४३)

नियम १७७—(स्पर्धायामाङः) आ+ह्वे आत्मने० है, शत्रु को आह्वान करना अर्थ में। शत्रुमाह्वयते।

नियम १७८—(उपपराभ्याम्) उप+क्रम्, परा+क्रम् आत्मने० हैं। उपक्रमते, पराक्रमते। (प्रोपाभ्यां समर्थाभ्याम्) प्र+क्रम्, उप+क्रम् प्रारम्भ अर्थ में आ०। प्रक्रमते।

नियम १७९—(अपह्नवे ज्ञः) मुकरना अर्थ में ज्ञा आत्मने० है। शतम् अपजानीते (सौ रु० को मुकरता है)। (सम्प्रतिभ्याम्०) सम्+ज्ञा, प्रति+ज्ञा स्मरण अर्थ न हो तो आत्मनेपदी हैं। संजानीते, प्रतिजानीते।

नियम १८०—(उदश्चरः०) उत्+चर् आत्मने० है, सकर्मक हो तो। धर्ममुच्चरते। (समस्तृतीया०) सम्+चर् तृतीया के साथ हो तो आत्मनेपदी। रथेन संचरते।

नियम १८१—(ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः) जिज्ञास, शुश्रूष, सुस्मूर्ष और दिदृक्ष ये आत्मनेपदी होती हैं। जिज्ञासते, शुश्रूषते, सुस्मूर्षते, दिदृक्षते।

नियम १८२—(प्रोपाभ्यां युजेः०) प्र+युज्, उप+युज् आत्मनेपदी हैं। प्रयुङ्क्ते, उपयुङ्क्ते।

नियम १८३—(भुजोऽनवने) भुज् धातु खाना तथा उपभोग अर्थ में आत्मनेपदी है और रक्षा अर्थ में परस्मैपदी है। ओदनं भुङ्क्ते। परन्तु महीं भुनक्ति।

(परस्मैपद)

नियम १८४—(अनुपराभ्यां कृञः) अनु+कृ, परा+कृ परस्मैपदी हैं। अनुकरोति, पराकरोति।

नियम १८५—(अभिप्रत्यतिभ्यः क्षिपः) अभिक्षिप् परस्मैपदी है। अभिक्षिपति।

नियम १८६—(प्राद्वहः) प्र+वह् परस्मैपदी होती है। प्रवहति।

नियम १८७—(व्याङ्परिभ्यो रमः) वि+रम् परस्मैपदी है। विरमति।

नियम १८८—(बुधयुधनशजनेङ्) बुध्, युध्, नश्, जन्, अधि+इ, प्रु, द्रु, स्रु, धातुएँ णिच् प्रत्यय करने पर परस्मैपदी होती हैं। बोधयति पद्मम्। योधयति जनान्। नाशयति दुःखम्। जनयति सुखम्। अध्यापयति वेदम्। द्रावयति। स्रावयति।

नियम १८९—(निगरणचलनार्थेभ्यश्च) खिलाना और चलाना अर्थ की धातुएँ परस्मैपदी होती हैं। आशयति, भोजयति। चलयति, कम्पयति।

अभ्यास ३०

संस्कृत बनाओ—(क) (पठत्, यावत्) १. **पढ़ते हुए को पाप नहीं लगता।** २. **मैं जब पढ़ रहा था तब** वह आया। ३. गाँव को जाता हुआ **तिनके को छूता है।** ४. **कर्मशील मनुष्य उत्तम फल पाता है।** ५. **सूर्य की शोभा को देखो, जो चलता हुआ कभी नहीं रुकता।** ६. जितने छात्र परीक्षा में **बैठे, सभी** उत्तीर्ण हो गए। ७. **वे युद्ध में जितने थे, उनको वह राजा उतने ही रूपों में दिखाई पड़ा।** ८. **जितना मिला उतना सब खा लिया। (ख)** (इ, विद्) १. **मूर्ख क्षय को पाता है।** २. **दरिद्रता से मनुष्य लज्जा को प्राप्त होता है।** ३. **चन्द्रमा को चाँदनी फिर मिल जाती है।** ४. **वे भरद्वाज मुनि के आश्रम पर पहुँचे।** ५. **पहले फूल आता है, फिर फल आता है।** ६. **सूर्य लाल ही उदय होता है और लाल ही अस्त होता है।** ७. **मुझे शिव का नौकर समझो** (अव+इ)। ८. **नीच, वहाँ से हट** (अप+इ)। ९. **तेरे हृदय से प्रत्याख्यान का दुःख दूर हो** (अप+इ)। १०. **उद्योगी पुरुष को लक्ष्मी प्राप्त होती है** (उप+इ) ११. **जो स्पर्धा करता हुआ सामने आवे** (अभि+इ), **उसे नष्ट कर दो।** १२. **वह सत्य नहीं, जो छल से युक्त हो।** १३. **वह गुरु के पीछे जाता है** (अनु+इ)। १४. **वह मुझ पर विश्वास करता है** (प्रति+इ)। १५. **जो जिसके गुण को नहीं जानता** (विद्), वह उसकी सदा निन्दा करता है। १६. **जो आत्मा को हन्ता समझता है,** वह उसे नहीं जानता। १७. **मुझे ऋषियों के तुल्य समझो।** १८. **इस जीवन में आत्मा को जान लिया तो भला है, नहीं तो बड़ा नाश होगा। (ग)** (परस्मैपद) १. राजा पृथ्वी का **पालन करता है।** २. वह भात **खाता है।** ३. पाप से रुको। ४. गंगा और यमुना **बहती हैं** (प्रवह्)। ५. विद्या दुःख को **नष्ट करती है** और **सुख उत्पन्न करती है। (घ)** (पात्रवर्ग) **खाना-पीना** जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। **भूख और प्यास के** निवारणार्थ **बर्तनों की** आवश्यकता होती है। पानी पीने और रखने के लिए घड़ा, **कलश, गागर, गगरी, सुराही,** जार, **कमण्डलु,** लोटा और काँच का गिलास, इन पात्रों की आवश्यकता होती है। पानी बाल्टी, कण्डाल और टब में रखा जाता है। **खाना बनाने** और खाने के लिए थाली, कटोरा, कटोरी, पतीली, कड़ाही, **कड़ाह,** तवा, तई, तसला, चम्मच, चमचा और चिमटा इनकी आवश्यकता होती है। खाना अँगीठी और स्टोव दोनों पर बनाया जा सकता है। सास-पैन शाकादि बनाने के लिए, प्लेट खाना रखने के लिए और कप चाय पीने के लिए होते हैं।

संकेत—(क) १. पठतो नास्ति पातकम्। २. मयि पठति सति। ३. तृणं स्पृशति। ४. चरन् वै मधु विन्दति। ५. पश्य सूर्यस्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन्। ६. यावन्तः अदुः, तावन्तः। ७. ते तु यावन्त एवाजौ, तावांश्च ददृशे स तैः। ८. यावल्लब्धं तावद् भुक्तम्। **(ख)** १. निर्बुद्धिः क्षयमेति। २. दारिद्र्याद् ह्रियमेति। ३. शशिनं पुनरेति शर्वरी। ४. ईयुर्भरद्वाजमुनेर्निकेतम्। ५. उदेति पूर्वं कुसुमं ततः फलम्। ६. उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च। ७. अवेहि मां किंकरमष्टमूर्तेः। ८. अपेहि पापे। ९. हृदयात् प्रत्यादेशव्यलीकमपैतु ते। १०. उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः। ११. यः स्पर्धमानोऽभ्येति, तं जहि। १२. सत्यं न तद्यच्छलमभ्युपैति। १३. स गुरुमन्वेति। १४. स मयि प्रत्येति। १५. न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षम्। १६. य एनं वेत्ति हन्तारम्। १७. विद्धि मामृषिभिस्तुल्यम्। १८. इह चेदवेदीदथ सत्यमस्ति, न चेदिहावेदीन्महती विनष्टिः। **(ग)** १. भुनक्ति। २. भुङ्क्ते। ३. विरम। ४. प्रवहतः। ५. नाशयति, जनयति। **(घ)** पानाशने, अशनायोदन्ययोः (अशनाया+उदन्या), पात्राणाम्, कलशः, गर्गरः, गर्गरी, भृंगारः, कमण्डलुः, पचनार्थम्, कटाहः।

शब्दकोष—७५०+२५=७७५] **अभ्यास ३१** (व्याकरण)

(**क**) अन्त्यजः (शूद्र), चर्मकारः (चमार), संमार्जकः (भंगी), शाकुनिकः (बहेलिया), अजाजीवः (गडरिया), मायाकारः (जादूगर), शौण्डिकः (सुरा-विक्रेता), कर्मकरः (नौकर), भारवाहः (कुली), मालाकारः (माली), कुलालः (कुम्हार), लेपकः (पुताईवाला), प्रैष्यः (चपरासी), वैतनिकः (वेतन पर नियुक्त नौकर), तस्करः (चोर), पाटच्चरः (डाकू), ग्रन्थिभेदकः (गिरहकट), मृगयुः (पुं०, शिकारी), मृगया (शिकार), वागुरा (जाल), मार्जनी (स्त्री०, झाड़ू), चर्मप्रभेदिका (जूता सीनेकी सूई), उपानह्,-त् (जूता, बूट), पादुका (चप्पल), अनुपदीना (गम बूट)। (२५)

व्याकरण (बुध्, आस्, कर्म-भाव-वाच्य)

१. बुध् शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २६)

२. आस् धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४४)

नियम १९०—संस्कृत में तीन वाच्य होते हैं—१. कर्तृवाच्य, २. कर्मवाच्य, ३. भाववाच्य। सकर्मक धातुओं के रूप कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में चलते हैं। अकर्मक धातुओं के रूप कर्तृवाच्य और भाववाच्य में चलते हैं। अकर्मक की साधारण पहचान है कि जहाँ किम् (क्या, किसको) का प्रश्न न उठे। १. कर्तृवाच्य में कर्ता मुख्य होता है, क्रिया कर्ता के अनुसार चलती है। कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया, क्रिया कर्ता के अनुसार होगी। २. कर्मवाच्य में कर्म मुख्य होता है। कर्म के अनुसार ही क्रिया के पुरुष, वचन, लिंग होंगे। कर्मवाच्य में कर्ता में तृ०, कर्म में प्र०, क्रिया कर्म के अनुसार। ३. भाववाच्य में कर्ता में तृ०, कर्म नहीं, क्रिया में प्रथम पु० एक०।

नियम १९१—(सार्वधातुके यक्) कर्मवाच्य और भाववाच्य में सार्वधातुक लकारों (अर्थात् लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्) में धातु के अन्त में य लगेगा। धातु का रूप आत्मनेपद में ही चलेगा, धातु चाहे किसी पद की हो। अन्य लकारों में य नहीं लगेगा। धातु के रूप में य लगाकर युध् (धातु० सं० ६६) के तुल्य चलेंगे। ऌट् में इष्यते या स्यते लगेगा। जैसे—गम् > गम्यते, गम्यताम्, अगम्यत, गम्येत, गमिष्यते।

नियम १९२—(क) लिट् में द्वित्व करके आत्मनेपदी के तुल्य रूप होंगे। जैसे—गम् > जग्मे, भू > बभूवे, नी > निन्ये, लिख् > लिलिखे। सेव् लिट् के तुल्य रूप चलाओ। जिन धातुओं के अन्त में 'आम्' लगता है, उनमें आम् लगाकर कृ, भू, अस् के रूप आत्मनेपद में चलेंगे। जैसे—कथयांचक्रे, कथयांबभूवे, कथयामासे। **(ख)** लुट्, ऌट्, आशीलिङ् में भी सेव् (धातु० २०) के तुल्य रूप चलेंगे। सेट् धातु में इ लगेगा, अनिट् में नहीं। जैसे—भविता, भविष्यते, भविषीष्ट, अभविष्यत।

नियम १९३—लुङ् प्र० पु० एक० में धातु के अन्त में इ लगेगा। बाद के त का लोप होगा। 'इ' से पूर्व धातु के अन्तिम इ, उ, ऋ को वृद्धि होगी, उपधा में अ होगा तो उसे आ और उपधा के इ, उ, ऋ को गुण होगा। जैसे—अकारि, अभावि, अपाचि, अयोजि। लुङ् में धातु के बाद प्रत्यय इस प्रकार होंगे। सेट् में इ लगेगा, अनिट् में इ नहीं लगेगा। प्र० पु०—इ, इषाताम्, इषत। म० पु०—इष्ठाः, इषाथाम्, इध्वम्। उ० पु०—इषि, इष्वहि, इष्महि।

अभ्यास ३१

संस्कृत बनाओ—(क) (बुध् शब्द) १. विद्वानों की संगति से मूर्ख भी **प्रवीण हो जाते हैं।** २. **विद्वानों के साथ** श्रद्धापूर्वक व्यवहार करें। (वृत्)। ३. विद्वानों के साथ ही उठे, बैठे, वाद और विवाद करे। **(ख)** (आस् धातु) १. आपको जहाँ **अच्छा लगे,** वहाँ बैठिए। २. **आप इस आसन पर बैठिए।** ३. वहाँ देवता **रहते हैं।** ४. **उसने स्वागत-वचन से अतिथि का अभिनन्दन करके अपने आसन पर बैठने के लिए उसे निमन्त्रित किया।** ५. **बैठे हुए का ऐश्वर्य भी बैठा रहता है और खड़े हुए का ऐश्वर्य खड़ा हो जाता है।** ६. राजा सिंहासन पर बैठा (अध्यास्त)। ७. उस ईश्वर की शैव शिव नाम से उपासना करते हैं (उपासते)। ८. दोनों सखियों के द्वारा शकुन्तला की सेवा की जा रही है (अन्वास्यते)। **(ग)** (कर्मवाच्य) १. **कल्याण के विषय में किसकी तृप्ति होती है?** २. क्या तुम्हारी आज्ञा **टाली जा सकती है?** ३. **मेरी ओर से सारथि से कहना।** ४. यह शकुन्तला पतिगृह को जा रही है, **सब स्वीकृति दें।** ५. **जाने के समय में देर हो रही है।** ६. **स्त्रियों में बिना शिक्षा के भी पटुत्व देखा जाता है।** ७. **तुम्हारी प्रार्थना के योग्य ही कोई नहीं दीखता है।** ८. **तेजस्वियों की आयु नहीं देखी जाती है।** ९. **धर्मवृद्धों में** आयु नहीं देखी जाती। १०. **रत्न किसीको नहीं ढूँढ़ता, वह स्वयं ढूँढ़ा जाता है।** ११. **गेरुए वस्त्र पहनने की स्वीकृति से मुझे अनुगृहीत कीजिए।** १२. **पुराने कर्मफलों को कौन उलट सकता है?** १३. **किसको ताना दिया जा सकता है?** १४. **दुर्भाग्य ने** ऐसा सर्वनाश किया कि विजय की आशा **तो दूर रही,** जीवन की आशा भी सन्दिग्ध दिखाई देती थी। १५. मेरे द्वारा तुम्हारा मुखकमल **देखा गया। (घ)** (शूद्रवर्ग) शूद्र समाज के योग्य सेवक होते हुए भी अपनी कुछ न्यूनताओं के कारण समाज की दृष्टि में नीचे **गिने जाते हैं।** उनमें बहुतेरे बहुत अच्छा काम करते हैं। जैसे—चमार जूता सीने की सूई से **बूटों,** चप्पलों आदि को **सीता है** और **उनकी मरम्मत करता** है, भंगी झाड़ू से मकानों और **आँगनों को साफ करता** है, गडरिया बकरियों को पालता है, कुली **भार ढोते** हैं, माली फूलों से **मालाएँ** बनाता है, कुम्हार मिट्टी के **बर्तन** बनाता है, पुताईवाला **कलई से** मकानों को **पोतता** है, चपरासी संवादों को यथास्थान **पहुँचाता है।** कुछ **बुरा काम** करते हैं, अतः वे निन्दनीय हैं। जैसे— बहेलिया जाल डालकर पक्षियों को मारता है, सुराविक्रेता शराब पीता है, चोर चोरी करता है। डाकू **दीवार में सेंध मारता है,** गिरहकट **जेब काटता** है, शिकारी शिकार खेलता हुआ **निरपराध** जीवों की **हत्या करता** है।

संकेत—(क) १. प्रावीण्यमुपयान्ति। २. भुत्सु। **(ख)** १. रोचते। २. एतदासनमास्यताम्। ३. आसते। ४. अभ्यागतमभिनन्द्य स्वेनासनेन आध्वमिति निमन्त्रयांचकार। ५. आस्ते भग आसीनस्य, ऊर्ध्वं तिष्ठति तिष्ठतः। **(ग)** १. श्रेयसि केन तृप्यते। २. विकल्प्यते। ३. मद्वचनादुच्यतां सारथिः। ४. सर्वैरनुज्ञायताम्। ५. परिहीयते गमनवेला। ६. स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वं संदृश्यते। ७. न दृश्यते प्रार्थयितव्य एव ते। ८. तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते। ९. धर्मवृद्धेषु। १०. न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्। ११. काषायग्रहणानुज्ञया अनुगृह्यतामयं जनः। १२. पुरातन्यः स्थितयः केन शक्यन्तेऽन्यथाकर्तुम्। १३. कतम उपालभ्यते। १४. दैवहतकेन अकारि, दूरे तावदास्ताम्। १५. अदर्शि। **(घ)** गण्यन्ते, उपानहः सीव्यति, संदधाति ताः, अजिराणि, मार्जयन्ति, भारं वहन्ति, स्रजः, पात्राणि, सुधामिः, लिम्पति संस्करोति वा, प्रापयति, दुष्कर्माणि, सुराम्, भित्तौ सन्धिं करोति, ग्रन्थिं भिनत्ति, निरागसः हन्ति।

शब्दकोष—७७५+२५=८००] **अभ्यास ३२** (व्याकरण)

(**क**) कारुः (पुं०, शिल्पी), नापितः (नाई), रजकः (धोबी), निर्णेजकः (ड्राईक्लीनर), रञ्जकः (रँगरेज), श्रेणिः (पुं०, स्त्री०, शिल्पि-संघ), कुलिकः (शिल्पि-संघ का अध्यक्ष), तन्तुवायः (जुलाहा), सौचिकः (दर्जी), चित्रकारः (चित्रकार, पेन्टर), लोहकारः (लुहार), स्वर्णकारः (सुनार), शौल्विकः (ताँबे के बर्तन बनानेवाला), त्वष्टृ (पुं०, बढ़ई), स्थपतिः (पुं०, मिस्त्री, राज), अश्मचूर्णम् (सीमेंट), इष्टका (ईंट), स्यूतिः (स्त्री०, सिलाई), यन्त्रम् (मशीन), उपहासचित्रम् (कार्टून), वर्तिका (ब्रश), कर्तरी (स्त्री०, कैंची), तक्षणी (स्त्री०, बसूला), अयोघनः (हथौड़ी), करपत्रम् (आरी)। (२५)

व्याकरण (आत्मन्, राजन्, शी, अधि+ई, कर्म-भाव-वाच्य)

१. आत्मन् और राजन् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २७, २८)

२. शी और अधि+इ धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४५, ४६)

नियम १९४—धातु से कर्मवाच्य या भाववाच्य बनाने के लिए ये नियम ठीक स्मरण कर लें। सार्वधातुक लकारों (लट्, लोट, लङ्, विधिलिङ्) में ही ये नियम लगते हैं। (**क**) धातु के अन्त में 'य' लगेगा। आत्मनेपद ही होगा। धातु को गुण नहीं होगा। धातु मूलरूप में रहेगी। गच्छ्, पिब्, जिघ्र् आदि नहीं होंगे। साधारणतया धातु में अन्तर नहीं होता। जैसे—भूयते, पठ्यते, लिख्यते, गम्यते। (**ख**) (घुमास्थागापा०) आकारान्त धातुओं में इनके ही आ का ई होगा—दा, धा, मा, स्था, गा, पा (पीना), हा (छोड़ना), सा। अन्यत्र आ ही रहेगा। जैसे— दीयते, धीयते, मीयते, स्थीयते, गीयते, पीयते, हीयते, सीयते। (**ग**) (अकृत्सार्वधातुकयोः०) धातुओं के अन्त में इ को ई, उ को ऊ हो जाता है। जि > जीयते, चि > चीयते, हु > हूयते। किन्तु श्वि को सम्प्रसारण होने से शूयते होगा और शी का शय्यते रूप होगा। (**घ**) (रिङ् शयग्लिङ्क्षु) ह्रस्व ऋ अन्तवाली धातुओं में ऋ के स्थान पर 'रि' हो जायगा। जैसे—कृ, हृ, धृ, भृ, मृ के क्रमशः क्रियते, ह्रियते, ध्रियते, भ्रियते, म्रियते। किन्तु ऋ धातु को और संयुक्ताक्षर आदिवाली ऋकारान्त धातु को गुण होता है। (गुणोऽर्ति०)। जैसे—ऋ > अर्यते। स्मृ > स्मर्यते। (**ङ**) (ॠत इद्धातोः, उदोष्ठ्यपूर्वस्य) दीर्घ ॠ अन्तवाली धातुओं के ॠ को ईर् होगा। यदि पवर्ग पहले होगा तो ऊर् होगा। जैसे—कॄ > कीर्यते, गॄ > गीर्यते, तॄ > तीर्यते, शॄ > शीर्यते, पॄ > पूर्यते। (**च**) (वचिस्वपि०, ग्रहिज्या०) वच्, स्वप्, ग्रह्, यज्, वप्, वह्, वद्, वस्, प्रच्छ् आदि धातुओं को सम्प्रसारण होता है, अर्थात् य् को इ, व् को उ, र् को ऋ। (ब्रू) वच् > उच्यते, स्वप् > सुप्यते, ग्रह् > गृह्यते, यज् > इज्यते, वप् > उप्यते, वह् > उह्यते, वद् > उद्यते, वस् > उष्यते, प्रच्छ् > पृच्छ्यते। (**छ**) (अनिदितां०) धातु के बीच के न् का प्रायः लोप हो जाता है। मन्थ् > मथ्यते, बन्ध् > बध्यते, भ्रंश् > भ्रश्यते, स्रंस् > स्रस्यते। इनमें न् रहेगा—वन्द्यते, चिन्त्यते, निन्द्यते (**ज**) इन धातुओं के स्थान पर ये आदेश हो जाते हैं—ब्रू > वच्, अस् > भू, अज् > वी। उच्यते, भूयते, वीयते। (**झ**) जन्, सन्, खन् और तन् के दो रूप होते हैं, न् को आ विकल्प से होगा। जैसे—जायते, जन्यते। (**ञ**) चुरादि० और णिच् प्रत्ययवाली धातुओं के इ (अय्) का लोप हो जायगा। चोर्यते, कथ्यते, भक्ष्यते।

अभ्यास ३२

संस्कृत बनाओ—(क) (आत्मन्, राजन्) १. **अपने-आपको प्रकट करने का यह मौका है।** २. **तुम अपनी तरह ही सबको समझते हो।** ३. **यदि अपने-आपको सँभाल सका तो,** यहाँ से जाऊँगा। ४. यहाँ **बाह्य और अन्तःकरण के साथ** मेरी अन्तरात्मा प्रसन्न हो रही है। ५. **यह तो तुम्हारी अपनी इच्छा है।** ६. यह तो **अपने स्वभाव पर आ गया है।** ७. **आपने यहाँ आने का कष्ट क्यों उठाया?** ८. **अति हर्ष उसके मन में नहीं समाया।** ९. **अपने में झूठे महत्त्व का आरोप** करके राजा लोग देवताओं को प्रणाम नहीं करते हैं। १०. शिक्षितों को भी **अपने ऊपर पूरा भरोसा नहीं होता।** ११. **जैसा राजा,** वैसी प्रजा। १२. **मैं राजा को कुछ नहीं समझता।** १३. **राजा से रहित देश में** शान्ति नहीं होती। १४. राजा को **जनहित की भी चिन्ता करनी चाहिए।** १५. **राजा को चाहिए कि आपत्तिग्रस्तों का दुःख दूर करे। (ख)** (शी, अधि+इ) १. **वह हाथ का तकिया लगाकर सोई।** २. इधर मोर सो रहे हैं। ३. क्यों निःशंक सो रहे हो? ४. उसने वेदों को **पढ़ा। (ग)** (कर्मवाच्य) १. चित्र में जो कुछ ठीक नहीं है, **उसे ठीक कर रहा हूँ।** २. पुरुष तभी तक है, **जब तक वह मान से हीन नहीं होता।** ३. **सोने की स्वच्छता और कालिमा आग में ही दीखती है।** ४. **विकार का कारण विद्यमान होने पर भी जिनके चित्त विकृत नहीं होते, वे धीर हैं।** ५. **पर उपदेश कुशल बहुतेरे।** ६. **क्यों गोलमाल बात करते हो?** ७. **गुणों से ही सर्वत्र स्थान बनाया जाता है।** ८. इससे **हमारा कुछ नहीं बिगड़ता।** ९. **यह बात समाप्त करो।** १०. **आगे की बात समझ ली।** ११. विपत्ति में भी उसका धैर्य **नष्ट नहीं होता।** १२. वह देवदत्त नाम से **पुकारा जाता है।** १३. **बेकार कहाँ जा रहे हो?** १४. **और कोई रास्ता नहीं दीखता है। (घ)** (शिल्पिवर्ग) शिल्पि-संघ शिल्पियों का संगठन करता है। उनको उचित कार्यों में नियुक्त करता है। धोबी वस्त्रों को **धोता है।** ड्राईक्लीनर वस्त्रों को **मशीन से धोता है** और उन पर **लोहा करता है।** जुलाहा **सूत से** वस्त्रों को **बुनता** है। दर्जी **टेलरचाक से** कपड़ों पर **निशान लगाता है** और कैंची से **काटकर** उन्हें **सिलाई की मशीन से** सीता है। चित्रकार ब्रश से चित्र को **रँगता है** और कार्टून बनाता है। बढ़ई आरी से लकड़ी **चीरता** है, बसूले **से** उसे **छीलता** है और हथौड़े से **कीलों को ठोकता है।** राज सीमेंट से ईंटों को **जोड़कर** मकान बनाता है।

संकेत—(क) १. अवसरोऽयमात्मानं प्रकाशयितुम्। २. आत्मनो हृदयानुमानेन पश्यसि। ३. यद्यात्मनः प्रभविष्यामि। ४. सबाह्यान्तःकरणो ममान्तरात्मा प्रसीदति। ५. एष तवात्मगतो मनोरथः। ६. गत एवात्मनः प्रकृतिम्। ७. किमिति भवताऽऽत्मा अत्रागमनक्लेशस्य पदमुपनीतः। ८. गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि। ९. आत्मन्यारोपितालीकाभिमानाः। १०. आत्मन्यप्रत्ययं चेतः। ११. यथा राजा। १२. राजेति का गणना मम। १३. अराजके जनपदे। १४. जनहितमपि चिन्तनीयम्। १५. आपन्नस्य जनस्यार्तिहरेण राज्ञा भवितव्यम्। **(ख)** १. अशेत सा बाहुलतोपधायिनी। ४. अध्यैष्ट। **(ग)** १. क्रियते तत्तदन्यथा। २. यावन्मानान्न हीयते। ३. हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धिः श्यामिकाऽपि वा। ४. विकारहेतौ सति विक्रियन्ते येषां न चेतांसि त एव धीराः। ५. सुखमुपदिश्यते परस्य। ६. किमिति असंबद्धम् अनुसन्धीयते। ७. पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते। ८. न नः किंचित् भिद्यते। ९. संह्रियतामियं कथा। १०. परस्तादवगम्यते। ११. न हीयते। १२. आहूयते। १३. क्वानिर्दिष्टकारणं गम्यते। १४ नान्यच्छरणमालोक्यते। **(घ)** धावति, यन्त्रेण नेनेक्ति, अयस्करोति, सूत्रैः, वयति, सौचिकवर्तिकया, चिह्नयति, कर्तित्वा, स्यूतियन्त्रेण, रञ्जयति, छिनत्ति, श्यति, कीलान् कीलति, संयोज्य।

शब्दकोष—८००+२५=८२५] **अभ्यास ३३** (व्याकरण)

(**क**) क्षुरम् (उस्तरा) क्षुरकम् (ब्लेड), उपक्षुरम् (सेफ्टी रेजर), कर्तनी (स्त्री०, बाल काटने की मशीन), शस्त्रमार्जः (धार धरनेवाला), तैलकारः (तेली), रसयन्त्रम् (कोल्हू), मिलः (मिल), अयस् (लोहा आयरन), वृश्चनः (छेनी), आविधः (बर्मा), यान्त्रिकः (मिस्त्री, मेकेनिक), सूत्रम् (धागा), सूचिका (सूई), पादुरञ्जकः (पालिश), वेतनम् (वेतन), भ्राष्ट्रम् (भाड़), भृष्टकारः (भड़भूजा), भस्त्रा (धौंकनी), नीली (स्त्री०, नील), शिल्पशाला (फैक्टरी)। (२१)। (**ख**) कृत् (काटना), अयस्+कृ (लोहा करना), मण्डा+कृ (कलफ करना), नीली+कृ (नील लगाना)। (४)।

व्याकरण (श्वन्, युवन्, हु, भी, णिच् प्रत्यय)

१. श्वन् और युवन् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २९, ३०)

२. हु और भी धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ४८, ४९)

नियम १९५—(हेतुमति च) प्रेरणार्थक धातु उसे कहते हैं जहाँ कर्ता स्वयं काम न करके दूसरे से काम कराता है। जैसे—पढ़ना > पढ़वाना, लिखना > लिखवाना, जाना > भेजना, करना > कराना। प्रेरणार्थक धातु में शुद्ध धातु के अन्त में णिच् (अर्थात् अय) लग जाता है। धातु के रूप दोनों पदों में चुर् धातु के तुल्य (देखो धातु० ९७) चलेंगे। धातु के अन्तिम ह्रस्व और दीर्घ इ, उ, ऋ को वृद्धि (अर्थात् क्रमशः ऐ, औ, आर्) हो जाता है, बाद में अयादि सन्धि भी। उपधा (अर्थात् अन्तिम अक्षर से पूर्व अक्षर) में अ को आ तथा इ, उ, ऋ को क्रमशः ए, ओ, अर् गुण हो जाता है। जैसे—कृ > कारयति, नी > नाययति, भू > भावयति, पठ् > पाठयति, लिख् > लेखयति। गम् का गमयति।

नियम १९६—प्रेरणार्थक धातुओं के साथ मूल धातु के कर्ता में तृतीया होती है और कर्म में पूर्ववत् द्वितीया ही रहती है। क्रिया कर्ता के अनुसार होती है। जैसे—शिष्यः लेखं लिखति > गुरुः शिष्येण लेखं लेखयति। नृपः भृत्येन कार्यं कारयति।

नियम १९७—(गतिबुद्धिप्रत्यवसानार्थ०) इन अर्थोंवाली धातुओं के प्रेरणार्थक रूप के साथ मूल धातु के कर्ता में तृतीया न होकर द्वितीया होती है—जाना, जानना, समझना, खाना (अद्, खाद्, भक्ष् को छोड़कर), पढ़ना, अकर्मक धातुएँ, बोलना, देखना (दृश्), सुनना (श्रु), प्रवेश (प्रविश्), चढ़ना (आरुह्), तैरना (उत्तॄ), ग्रहण (ग्रह्), प्राप्ति (प्राप्), पीना, ले जाना (हृ), (नी और वह् को छोड़कर)। जैसे बालः गृहं गच्छति > बालं गृहं गमयति। शिष्यः वेदम् अवगच्छति > शिष्यं वेदम् अवगमयति। पुत्रः अन्नं भुङ्क्ते > माता पुत्रमन्नं भोजयति। शिष्यः शास्त्रं पठति > गुरुः शिष्यं शास्त्रं पाठयति। पृथ्वी सलिले आस्त > पृथ्वीं सलिले आसयत्। (**क**) (नीवह्योर्न:) नाययति वाहयति वा भारं भृत्येन। (**ख**) (नियन्तृकर्तृकस्य वहेरनिषेधः) वाहयति रथं वाहान् सूतः। (**ग**) (आदिखाद्योर्न) आदयति, खादयति वाऽन्नं वटुना। (**घ**) (भक्षेरहिंसार्थस्य न) भक्षयत्यन्नं वटुना। (**ङ**) (जल्पतिप्रभृतीनाम्०) जल्पयति भाषयति वा धर्मं पुत्रं देवदत्तः। (**च**) (दृशेश्च) दर्शयति हरिं भक्तान्। (**छ**) (शब्दायतेर्न) शब्दाययति देवदत्तेन।

अभ्यास ३३

संस्कृत बनाओ—(क) (श्वन्, युवन्) १. कुत्ते को यदि राजा बना दिया जाता है तो क्या वह जूता नहीं चाटता है। २. पण्डित कुत्ते और चाण्डाल को समान मानते हैं। ३. काच मणि और कांचन को एक धागे में पिरो रही हो, हे बाले, यह उचित नहीं है। उसने कहा—सर्ववित् पाणिनि ने तो एक सूत्र में कुत्ता, युवक और इन्द्र तीनों को डाला है। ४. विद्वानों ने सेवा को श्ववृत्ति माना है। ५. युवक भुलक्कड़ होते हैं। ६. अति सुन्दर रमणी जिस प्रकार युवकों के मन को हरण करती है, उस प्रकार कुमारों के नहीं। यौवन के प्रारम्भ में प्रायः युवकों की दृष्टि कलुषित हो जाती है। (ख) (हु, भी धातु), १. यहाँ पर अग्नि में हवन करो। २. उसने मन्त्रपूत शरीर को भी अग्नि में हवन कर दिया। ३. हे बालक, तू मृत्यु से क्यों डरता है, वह भयभीत को भी नहीं छोड़ता। ४. मत डरो। ५. क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, कौन वेदों का उद्धार करेगा? हे स्त्री, मत डरो, अभी पृथ्वी पर कुमारिल भट्ट जीवित है। (ग) (णिच् प्रत्यय) १. उसने विषय-सुखों से विरक्त हो जीवन बिताया। २. उन्होंने अपने काम को ठीक निभाया। ३. उसने अपनी प्रतिज्ञा का पालन किया। ४. दो 'नहीं' स्वीकृतिसूचक अर्थ बताते हैं। ५. पिता पुत्र से लेख लिखवाता है। ६. धनिक नौकर से काम करता है। ७. वह पुत्र को घर भेजता है। ८. वह पुत्र को वेद पढ़ाता है। ९. माता पुत्र को फल खिलाती है। १०. गुरु शिष्य को वेद पढ़ाता है। ११. उसने पुस्तक मेज पर रखवाई। १२. वह नौकर से भार ढुलवाता है। १३. वह छात्रों को चित्र दिखाता है। १४. मैं यह पत्र उसके पास पहुँचा दूँगा। १५. बच्चा सिर हिला रहा है। (घ) (शिल्पिवर्ग) १. नाई बाल काटने की मशीन से बाल काटता है और उस्तरे से दाढ़ी बनाता है। आजकल अधिक लोग सेफ्टीरेजर से स्वयं ही दाढ़ी बना लेते हैं। २. धोबी कपड़ों को धोकर, नील लगाता है, कलफ करता है और उन पर लोहा करता है। ३. फैक्टरी में मिस्त्री मशीनों को ठीक करता है। ४. मिलों में मजदूर काम करते हैं। ५. तेली कोल्हू के द्वारा तिलों से तेल निकालता है, धार रखनेवाला उस्तरे पर धार रखता है, बढ़ई छेनी से लोहे को काटता है, बर्मा से लकड़ी में छेद करता है और बुढ़िया सूई-धागे से वस्त्र सीती है।

संकेत—(क) १. क्रियते, स किं नाश्नात्युपानहम्। २. शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः। ३. काचं मणिः काञ्चनमेकसूत्रे करोषि बाले नहि युक्तमेतत्। अशेषवित् पाणिनिरेकसूत्रे श्वानं युवानं मघवानमाह। ४. श्ववृत्तिं विदुः। ५. युवानो विस्मरणशीलाः। ६. यथा यूनस्तद्वत् परमरमणीयापि रमणी, कुमाराणामन्तःकरणहरणं नैव कुरुते। ७. कालुष्यमुपयाति। (ख) १. जुहुधीह पावकम्। २. यो मन्त्रपूतां तनुमप्यहौषीत्। ३. मृत्योर्बिभेषि किं बाल, न स भीतं विमुञ्चति। ४. मा भैषीः। ५. किं करोमि, उद्धरिष्यति। मा बिभेहि वरारोहे भट्टाचार्योऽस्ति भूतले। (ग) १. जीवितमत्यवाहयत्। २. साधु निरवाहयन्। ३. अभिसन्धाम् अपालयत्। ४. द्वौ नञौ प्रकृतार्थं गमयतः। ७. गमयति। ८. अवगमयति। ९. भोजयति। ११. आसयत्। १२. वाहयति। १३. दर्शयति। १४. तस्य हस्तं प्रापयिष्यामि। १५. मूर्धानं चालयति। (घ) १. वयति, कूर्चं मुण्डयति। २. धावित्वा। ३. संशोधयति। ४. श्रमिकाः। ५. निःसारयति, क्षुरं तीक्ष्णयति, कृन्तति, छिद्रयति, सीव्यति।

शब्दकोष—८२५+२५=८५०] **अभ्यास ३४** (व्याकरण)

(क) शाकम् (साग), आलुः (पुं०, आलू), रक्ताङ्गः (टमाटर), गोजिह्वा (गोभी), कलायः (मटर), भण्टाकी (स्त्री०, भाँटा, बैंगन), वङ्गनः (बगन), भिण्डकः (भिंडी), टिण्डिशः (टिंडा), अलाबुः (स्त्री०, लौकी), कूष्माण्डः (कद्दू), गृञ्जनम् (गाजर), मूलकम् (मूली), श्वेतकन्दः (शलगम), पालकी (स्त्री०, पालक), वास्तुकम् (बथुआ), सिम्बा (सेम), सुसिम्बः (फरासबीन, फ्रेंच बीन), जालिनी (स्त्री०, तोरई), कुन्दरुः (पुं०, कुन्दरु), पटोलः (परवल), कारवेल्लः (करेला), कर्कटी (स्त्री०, ककड़ी), पनसम् (कटहल), शदः (सलाद)। (२५)

व्याकरण (वृत्रहन्, मघवन्, हा, ह्री, णिच् प्रत्यय)

१. वृत्रहन् और मघवन् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३१, ३२)

२. हा और ह्री धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५०, ५१)

नियम १९८—मूलधातु से प्रेरणार्थक धातु बनाने के लिए ये नियम ठीक स्मरण कर लें। **(क)** धातु से णिच् (अय) प्रत्यय लगता है। नियम १९५ के अनुसार वृद्धि या गुण **(ख)** (मितां ह्रस्वः) इन धातुओं की उपधा (उपान्त्य स्वर) के अ को आ नहीं होता—गम्, रम्, क्रम्, नम्, शम्, दम्, जन्, त्वर्, घट्, व्यथ्, जॄ। गमयति, रमयति, क्रमयति, नमयति, शमयति, दमयते, जनयति, त्वरयति, घटयति, व्यथयति, जरयति। अन्यत्र अ को आ होगा। पाठयति, कामयते, चामयति। **(ग)** (० आतां पुङ् णौ) आकारान्त धातुओं के अन्त में णिच् से पहले 'प्' और लग जाता है। जैसे—दा > दापयति, धा > धापयति, स्था > स्थापयति, या > यापयति, स्ना>स्नापयति। **(घ)** (शाच्छासाह्वा०) इन आकारान्त धातुओं में बीच में 'य्' लगेगा। शो (शा), छो (छा), सो (सा), ह्वे (ह्वा), व्ये (व्या), वे (वा) और पा (पीना)। जैसे—शाययति, ह्वाययति, पाययति (पिलाता है)। (पातेर्णौ लुग्०) पा (रक्षा करना) का रूप पालयति होगा। **(ङ)** (क्रीङ्जीनां णौ) इनके ये रूप होते हैं—क्री > क्रापयति (खरीदवाना), अधि+इ > अध्यापयति (पढ़ाना), जि > जापयति (जिताना)। **(च)** इन धातुओं के ये रूप हो जाते हैं:—ब्रू > वाचयति (बाँचना), हन् > घातयति (वध कराना), दुष् > दूषयति (दोष देना) रुह् > रोपयति, रोहयति (उगाना), ऋ > अर्पयति (देना), ह्रेपयति (लज्जित करना), वि+ली > विलीनयति, विलाययति (पिघलाना), भी > भापयते, भीषयते (डर की वस्तु से डराना) भाययति (केवल डराना), वि+स्मि > विस्मापयते (किसी कारण से विस्मित करना), विस्माययति (केवल विस्मित करना), सिध् > साधयति (बनाना), सेधयति (निश्चय कराना), रञ्ज् > रञ्जयति (प्रसन्न करना), रजयति (शिकार खेलना), इ (जाना) > गमयति (भेजना), अधि+इ (जानना) > अधिगमयति (समझाना, याद दिलाना), प्रति+इ > प्रत्याययति (विश्वास दिलाना), गुह् > गूहयति (छिपाना), धू > धूनयति (हिलाना), प्री > प्रीणयति (प्रसन्न करना), मृज् > मार्जयति (साफ कराना), शद् > शातयति (गिराना), शादयति (भेजना)। **(छ)** चुरादिगण की धातुओं के रूप णिच् में वैसे ही रहते हैं। **(ज)** कर्मवाच्य और भाववाच्य में णिजन्त धातु के अन्तिम इ (अय) का लोप हो जाता है। जैसे—पाठ्यते, कार्यते, हार्यते, धार्यते, चोर्यते, भक्ष्यते।

अभ्यास

संस्कृत बनाओ—(क) (वृत्रहन्, मघवन्) १. इन्द्र ने वृत्र का वध किया। २. मैं इन्द्र के **सम्मान** से अनुगृहीत हूँ। ३. इन्द्र का यश प्रत्येक घर में गाया जाता है। ४. इन्द्र का वज्र दैत्य-सेना का संहार करता है (संह)। **(ख)** (हा, ह्री) १. हे अर्जुन, **जब** मनुष्य सभी मनोगत **कामनाओं को छोड़ देता है और अपने-आपमें सन्तुष्ट** रहता है, तब वह स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। २. तृष्णा **को छोड़ दो।** ३. तुमने जो सीता को **छोड़ दिया** है, वह क्या **तुम्हारे कुल के अनुकूल है?** ४. विपत्ति में भी **उसका धैर्य क्षीण नहीं होता।** ५. पुत्रवधू श्वशुर से **शर्माती है।** ६. **आपके साथ गुरुजनों के समीप जाने में मुझे लज्जा अनुभव होती है।** ७. **हमें आपस में ही शर्म लगती है औरों के सामने तो कहना ही क्या? (ग)** (णिच् प्रत्यय) १. **शरीर को शान्ति देनेवाली** शरत्कालीन चाँदनी को कौन **आँचल से रोकता है?** २. **मैं महल पर रहूँगा, वहाँ आवाज दे लेना।** ३. यह विवाद ही **विश्वास दिलाता है** कि तुम झूठ बोल रहे हो। ४. पार्वती ने अपनी करुण कथा **सुनाकर** अनेक बार सखियों को **रुलाया। ५. वह मुझे पिता मानता है। ६. मैं किसके सिर दोष मढूँ?** ७. वह फिर अपने काम में **लग गया।** ८. विद्या धन से **बढ़कर है।** ९. यह **समाचार पत्र में लिख दो।** १०. **वह अभी तक अपने-आपको नहीं सँभाल पाया। ११. होनहार बिरवान के होत चीकने पात। १२. उसने किसी तरह आठ वर्ष बिताए।** १३. उसने दासी को **रानी बना लिया। १४. मौका हाथ से न जाने दे। १५. सज्जनों का मेल शीघ्र ही विश्वास** दिलाता है। १६. प्रतिष्ठा **केवल उत्सुकता को शान्त करती है।** १७. बड़े दुःख को भी **आशा का बन्धन सहन करा देता है।** १८. दिन चन्द्रमा को **जितना दुःखित करता है,** उतना कुमुदिनी को नहीं। **(घ)** (शाकादि-वर्ग) हरा साग और सलाद स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभप्रद हैं। अनेक साग हैं, किसीको कोई अच्छा लगता है, किसीको कोई। कुछ लोग **बदल-बदलकर** आलू, टमाटर, गोभी, मटर बैगन, भिण्डी, टिण्डा, लौकी, कद्दू, गाजर, मूली, शलगम, परवल, पालक, बथुआ, सेम, फरासबीन, करेला और कटहल का साग खाते हैं। कुछ लोग दो-तीन साग को **मिलाकर** बनाते हैं या एक ही समय दो-**तीन साग बनाते हैं।**

संकेत—(क) २. संभावनया। **(ख)** १. प्रजहाति यदा कामान्, आत्मन्येवात्मना तुष्टः। २. जहीहि। ३. अहासीः, सदृशं कुलस्य। ४. तस्य धैर्यं न हीयते। ५. जिह्रेति। ६. जिह्रेमि आर्यपुत्रेण सह गुरुसमीपं गन्तुम्। ७. अन्योन्यस्यापि जिह्रीमः, किं पुनरन्येषाम्। **(ग)** १. शरीरनिर्वापयित्रीम्, पटान्तेन वारयति। २. मां प्रासादे शब्दायय। ३. प्रत्याययति। ४. निशाम्य, अरोदयत्। ५. मां पितेति मानयति। ६. कं दोषपक्षे स्थापयानि। ७. मनो न्यवेशयत्। ८. अतिरिच्यते। ९. वृत्तं पत्रमारोपय। १०. स नाद्यापि पर्यवस्थापयति आत्मानम्। ११. आवेदयन्ति हि प्रत्यासन्नमानन्दमग्रपातीनि शुभानि निमित्तानि। १२. तेनाष्टौ परिगमिताः समाः कथंचित्। १३. महिषीपदं प्रापिता। १४. न कार्यकालमतिपातयेत्। १५. विश्वासयत्याशु सतां हि योगः। १६. औत्सुक्यमात्रमवसाययति। १७. आशाबन्धः साहयति। १८. ग्लपयति यथा। **(घ)** पर्यायशः, संमिश्र्य, शाकत्रयं वा पचन्ति।

शब्दकोष—८५०+२५=८७५] **अभ्यास ३५** (व्याकरण)

(**क**) करमर्दक: (करौंदा), पलाण्डु: (पुं०, प्याज), लशुनम् (लहसुन), तिन्तिडीकम् (इमली), आर्द्रकम् (अदरक), व्यञ्जनम् (मसाला), मरीचम् (मिर्च), जीरक: (जीरा), धान्यकम् (धनिया), शुण्ठी (स्त्री०, सोंठ), हिङ्गु: (पुं०, नपुं०, हींग), हरिद्रा (हल्दी), लवणम् (नमक) सैन्धवम् (सेंधा नमक), रौमकम् (साँभर नमक), पिप्पली (स्त्री०, पीपर), एला (इलायची), मधुरा (सौंफ), लवङ्गम् (लौंग), दारुत्वचम् (दालचीनी), त्रिपुटा (छोटी इलायची), खादिर: (कत्था), चूर्ण: (चूना), पूगम् (सुपारी), ताम्बूलम् (पान)। (२५)

व्याकरण (करिन्, पथिन्, भृ, मा, सन् प्रत्यय)

१. करिन् और पथिन् शब्दों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३३, ३४)

२. भृ और मा धातुओं के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५२, ५३)

नियम १९९—(धातो: कर्मण: समानकर्तृकादिच्छायां वा) इच्छा करना या चाहना अर्थ में धातु से सन् (स) प्रत्यय लगता है। सन् के विषय में ये बातें स्मरण रखें—(**क**) इच्छा करनेवाला वही व्यक्ति हो, तभी सन् होगा। (**ख**) सन् प्रत्यय ऐच्छिक है, अत: सन् न लगाना चाहें तो तुमुन् (तुम्) प्रत्यय करके इष् या अभिलष् आदि धातु का प्रयोग करें। जैसे—पठितुमिच्छति। (**ग**) इच्छा करनेवाली क्रिया कर्म के रूप में होनी चाहिए, अन्य कारक के रूप में नहीं। करण में होने से यहाँ नहीं होगा—अहमिच्छामि पठनेन मे ज्ञानं वर्धेत। (**घ**) सन् का स शेष रहता है। सन् प्रत्यय करने पर धातुओं को द्वित्व होता है, जैसे लिट् लकार में। सेट् धातुओं में स से पहले इ लगाकर 'इष' हो जाएगा। अनिट् में केवल 'स' लगेगा, यह स कहीं-कहीं पर सन्धि-नियमों के कारण ष या क्ष हो जाता है। (**ङ**) धातुओं को द्वित्व करने पर अभ्यास अर्थात् प्रथम अंश में धातु में अ होगा तो उसे इ हो जाएगा। (**च**) धातुओं के रूप इस प्रकार चलेंगे:—(१) परस्मैपदी के रूप परस्मै० में और आत्मने० के आत्मने० में, उभयपदी के उभयपद में। (२) लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् में परस्मै० में रूप भवतिवत्, आत्मने० में सेव् के तुल्य (३) लिट् लकार में धातु+आम्+कृ, भू या अस्। (४) लुङ् में परस्मै० में ईत्, इष्टाम्, इषु: आदि और आत्मने० में इष्ट, इषाताम्, इषत आदि। (५) आशीलिङ् में पर० में यात्, यास्ताम् आदि; आत्मने० में इषीष्ट आदि। (६) अन्य लकारों में भू या सेव् के तुल्य। जैसे—गम् > जिगमिषति, जिगमिषतु, अजिगमिषत्, जिगमिषेत्, जिगमिषिष्यति, जिगमिषांचकार, जिगमिषिता, अजिगमिषीत्, जिगमिष्यात्, अजिगमिष्यत्। (**छ**) सन्नन्त प्रयोगवाली प्रचलित धातुएँ ये हैं:—ज्ञा > जिज्ञासते, दा > दित्सति, धा > धित्सति, पा > पिपासति, जि > जिगीषति, चि > चिचीषति, श्रु > शुश्रूषते, ब्रू > विवक्षति, भू > बुभूषति, कृ > चिकीर्षति, हृ > जिहीर्षति, मृ > मुमूर्षति, तॄ > तितीर्षति, मुच् > मुमुक्षते, प्रच्छ् > पिप्रच्छिषति, भुज् (आ०) > बुभुक्षते, पठ् > पिपठिषति, कित् > चिकित्सति, पत् > पित्सति, पिपतिषति, अद् > जिघत्सति, पद् > पित्सते, विद् > विविदिषति, बुध् > बुबोधिषति, मान् > मीमांसते, हन् > जिघांसति, आप् > ईप्सति, स्वप् > सुषुप्सति, रभ् > रिप्सते, लभ् > लिप्सते, गम् > जिगमिषति, दृश् > दिदृक्षते, ग्रह् > जिघृक्षति।

अभ्यास ३५

संस्कृत बनाओ—**(क)** (करिन्, पथिन्) १. हाथी ने इस पेड़ की **छाल छील दी।** २. साक्षी **उपस्थित नहीं** हुआ (साक्षिन्)। ३. **अतिस्नेह में अनिष्ट की शंका बनी रहती है** (पापशङ्किन्)। ४. **अगले** रविवार को **आप हमसे मिलिएगा** (आगामिन्)। ५. सहाध्यायियों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करो (सहाध्यायिन्)। ६. **शेर बादल की ध्वनि पर हुंकार करता है, गीदड़ों की आवाज पर नहीं** (केसरिन्)। ७. **कम-से-कम तीन गवाह होने चाहिए** (साक्षिन्)। ८. **गुणवानों के गुण पूजा के योग्य हैं, चिह्न और आयु नहीं** (गुणिन्)। ९. **रथी पैदल से युद्ध नहीं करते** (रथिन्)। १०. ऐसा **परोपकारियों** का स्वभाव ही होता है। ११. **हाथी के मित्र गीदड़ नहीं होते** (दन्तिन्)। १२. **मानहीन मनुष्य की और तृण की समान गति होती है** (जन्मिन्)। १३. **वे मूर्ख तिरस्कार को प्राप्त होते हैं, जो धूर्तों से धूर्तता नहीं करते** (मायाविन्)। १४. **स्वाभिमानियों का स्वाभिमान ही धन होता है** (मानिन्)। १५. **तुम्हारा मार्ग शुभ हो।** १६. धीर लोग **न्याय के मार्ग से** जरा भी विचलित नहीं होते। **(ख)** (भृ, मा) १. अपना पेट कौन नहीं **पालता?** २. उसने पृथ्वी की धुरा को **धारण किया।** ३. **राजाओं के पास चुग़लखोर रहते हैं।** ४. सदा स्वच्छ वस्त्रों को **धारण करो।** ५. व्यापारी हाथ से कपड़े को नापता है (मा)। ६. **लेखपाल ने जंजीर से** खेत **नापा। (ग)** (सन् प्रत्यय) १. विद्यार्थी पाठ पढ़ना चाहता है, लेख **लिखना चाहता है,** धर्म जानना चाहता है, दान देना चाहता है, धर्म **करना चाहता है,** जल पीना चाहता है, शत्रु को जीतना चाहता है, फूल इकट्ठा करना चाहता है (संचि), गुरुवचन सुनना चाहता है, कार्य करना चाहता है (कृ), पाप को छोड़ना चाहता है (हृ), प्रश्न पूछना चाहता है (प्रच्छ्), फल खाना चाहता है (भुज्), धन पाना चाहता है (लभ्) और मित्र को देखना चाहता है। २. गुरुओं की **सेवा करो।** ३. वह **छोटी नौका से** समुद्र को **पार करना चाहता है। (घ)** (शाकादि०) १. कुछ लोग साग और दाल में अधिक मसाला पसन्द करते हैं। वे दाल में हल्दी, धनिया, नमक के **साथ ही** प्याज, लहसुन, इमली और लाल **मिर्च** भी **डालते हैं। साग में भी मसाला डाला जाता है।** २. कुछ लोग चाय में भी काली मिर्च, दालचीनी और सोंठ या अदरक डालते हैं। ३. **पनवारी** पान में चूना और कत्था **लगाता है,** बाद में छोटी इलायची और सुपारी **डालकर** देता है। पान खानेवाले **पानदान में** पान रखते हैं।

संकेत—**(क)** १. त्वगुन्मथिता। २. नोपतस्थौ। ३. अतिस्नेहः पापशङ्की। ४. आगामिनि, भवता द्रष्टव्या वयम्। ६. अनुहुंकुरुते घनध्वनिं नहि गोमायुरुतानि केसरी। ७. त्र्यवराः साक्षिणो ज्ञेयाः। ८. गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः। ९. न रथिनः पादचारमभियुञ्जन्ति। १०. परोपकारिणाम्। ११. भवन्ति गोमायुसखा न दन्तिनः। १२. जन्मिनो मानहीनस्य तृणस्य च समा गतिः। १३. व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः। १४. सदाऽभिमानैकधना हि मानिनः। १५. शिवास्ते सन्तु पन्थानः। १६. न्याय्यात् पथः। **(ख)** १. बिभर्ति। २. बिभरांबभूव। ३. पिशुनजनं खलु बिभ्रति क्षितीन्द्राः। ४. बिभृयात्। ६. लेखपालः शृङ्खलाभिः, अमास्त। **(ग)** १. लिलिखिषति, विधित्सति। २. शुश्रूषस्व। ३. उडुपेन, तितीर्षति। **(घ)** १. सहैव, रक्तमरीचम्, निक्षिपन्ति। शाकमपि उपस्क्रियते (उपस्कृ)। ३. ताम्बूलिकः, लिम्पति, निक्षिप्य, ताम्बूलकरङ्के।

शब्दकोष—८७५+२५=९००] **अभ्यास ३६** (व्याकरण)

(क) कृषिः (स्त्री०, खेती), कृषीवलः (किसान), वसुधा (पृथ्वी), मृत्तिका (मिट्टी), उर्वरा (उपजाऊ), ऊषरः (ऊसर), शाद्वलः (शस्य-श्यामल), क्षेत्रम् (खेत), सीता (जुती भूमि), लाङ्गलम् (हल), फालः (हल की फाल), खनित्रम् (फावड़ा, कुदाल), दात्रम् (दराँती), लोष्ठम् (ढेला), लोष्ठभेदनः (१. मूँगरी, २. पटरा, ३. मैंड़ा), कोटिशः (धुर्मुश), तोत्त्रम् (चाबुक), कणिशः (अनाज की बाल), पलालः (पराल), बुसम् (भुस), तुषः (भूसी), खाद्यम् (खाद), खलम् (खलिहान), खनियन्त्रम् (ट्रैक्टर), कृषियन्त्रम् (खेती के औजार)। (२५)

व्याकरण (तादृश्, चन्द्रमस्, दा, यङ्, यङ्लुक्, नामधातु)

१. तादृश् और चन्द्रमस् शब्दों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३५, ३८)

२. दा धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५४)

नियम २००—(धातोरेकाचो हलादेः क्रियासमभिहारे यङ्) व्यंजन से प्रारम्भ होनेवाली एकाच् धातु से यङ् प्रत्यय होता है, बार-बार या अधिक करने अर्थ में। यङ् प्रत्यय के लिए ये नियम स्मरण रखें—**(क)** यङ् का य शेष रहता है। सभी धातुओं के रूप केवल आत्मनेपद में चलते हैं। **(ख)** (सन्यङोः) धातु को द्वित्व होता है। **(ग)** (गुणो यङ्लुकोः, दीर्घोऽकितः) द्वित्व होने पर अभ्यास (पूर्वपद) में अ को आ, इ ई को ए, उ ऊ को ओ होगा। नी > नेनीयते, भू > बोभूयते, पठ्—पापठ्यते। **(घ)** (नित्यं कौटिल्ये गतौ) गत्यर्थक धातुओं से कुटिलता अर्थ में ही यङ् होगा। व्रज् > वाव्रज्यते (कुटिल चलता है)। **(ङ)** (रीगृदुपधस्य च) धातु की उपधा में ह्रस्व ऋ होगा तो उसके अभ्यास में 'री' और लगेगा। नृत् > नरीनृत्यते। **(च)** (घुमास्था०) दा, धा, स्था, गा, पा, हा, सा के आ को ई होगा। देदीयते, देधीयते, तेष्ठीयते, जेगीयते, पेपीयते, जेहीयते, सेषीयते। **(छ)** कुछ अन्य प्रसिद्ध यङन्त रूप ये हैं—कृ > चेक्रीयते, दिव् > देदीव्यते, भ्रम् > बंभ्रम्यते, चर् > चंचूर्यते, वृत् > वरीवृत्यते, ग्रह् > जरीगृह्यते।

नियम २०१—(यङ्लुक्) (यङोऽचि च) धातु के बाद य का लोप होगा। यङ्लुक् के लिए ये नियम स्मरण रखें— **(क)** धातु को द्वित्व होगा। धातु के रूप परस्मैपद में ही चलेंगे। **(ख)** अभ्यास में अ को आ, इ ई को ए, उ ऊ को ओ होगा **(ग)** धातु के अन्त में ऋ होगा तो उसके अभ्यास में री या रि लगेगा। **(घ)** यङ्लुक् के प्रयोग साहित्य में बहुत कम मिलते हैं। **(ङ)** ति, सि, मि से पूर्व विकल्प से ई लगेगा। जैसे—भू > बोभवीति, बोभोति। वृत् > वरीवर्ति, कृ > चरीकर्ति, गम् > जंगमीति।

नियम २०२—(नामधातु) नामधातु में ये प्रत्यय मुख्यतया होते हैं:—**(क)** (सुप आत्मनः क्यच्) अपने लिए चाहने अर्थ में क्यच् (य) प्रत्यय। परस्मैपद होगा। आत्मनः पुत्रमिच्छति > पुत्रीयति। कवीयति, अशनायति, उदन्यति। **(ख)** (उपमानादाचारे) उसके तुल्य आचरण करने में क्यच् (य)। शिष्य को पुत्रवत् मानता है—पुत्रीयति छात्रम्। **(ग)** (काम्यच्च) अपने लिए चाहने में 'काम्य' होता है। पुत्रकाम्यति। **(घ)** (कर्तुः क्यङ्०) उसके तुल्य आचरण करने में क्यङ् (य) प्रत्यय। आत्मनेपद होगा। कृष्णवत् आचरण करता है > कृष्णायते। ओजायते, अप्सरायते। **(ङ)** (तत्करोति तदाचष्टे) करना और कहना अर्थ में णिच्। सूत्र बनाता है—सूत्रयति।

अभ्यास ३६

संस्कृत बनाओ—(क) (तादृश्, चन्द्रमस्) १. वैसे सुन्दर आकृतिवाले लोग सहृदय ही होते हैं (सचेतस्)। २. ऐसे-वैसे लोग सभाओं में आ जाते हैं और रंग में भंग करते हैं। ३. पुत्र-स्नेह कितना प्रबल होगा, जब कि भ्रातृ-स्नेह इतना प्रबल होता है। ४. नक्षत्र, तारा और ग्रहों से युक्त भी रात्रि चन्द्रमा से ही प्रकाशित होती है। ५. मुनिव्रतों से अतिकृश तुम्हें देखकर किस सहृदय का मन दुःखित नहीं होगा (सचेतस्) ? ६. उसने उसके पास खड़े हुए एक वृद्ध पुरुष को देखा (प्रवयस्)। ७. यह दुर्वासा (दुर्वासस्) के शाप का ही प्रभाव है। ८. अच्छे चित्तवालों का (सुमनस्) भले और बुरों पर समान प्रेम होता है। (ख) (दा धातु) १. पढ़ाई पर ध्यान दो। २. भगवती पृथ्वी, मुझे अपने अन्दर समा लो। ३. क्या राजा ने तुम्हें यह अँगूठी इनाम में दी है ? ४. थोड़ा स्थान देना। ५. ये कन्याएँ पौधों को जल दे रही हैं (दा)। ६. उसने स्वामी के लिए प्राण दे दिए। ७. आँसू चित्र में भी शकुन्तला को नहीं देखने देता। ८. वस्त्रों को धूप में सुखाता है। ९. गुरु शिष्य को आज्ञा देता है। १०. वह खेल में मन लगाता है। ११. उसने प्रत्युत्तर दिया। १२. उसने घर में आग लगा दी। १३. उसने यह वचन कहा। १४. हंस दूध को ले लेता है और उसमें मिले हुए जल को छोड़ देता है। १५. उसने सब लोगों का मन अपनी ओर खींच लिया (आदा)। १६. उसने निर्धनों को वस्त्र दिए (प्रदा)। (ग) (यङ्, नामधातु) १. बालक बार-बार हँसता है, रोता है, टेढ़ा चलता है, नाचता है, गाता है, खाना खाता है, पानी पीता है, काम करता है, घूमता है, प्रश्न पूछता है। २. (यङ्लुक्) वह बार-बार काम करता है, घर जाता है, विद्यालय में रहता है, साँप को मारता है और पुस्तक लेता है। ३. वह पत्नी-सहित तपस्या करता है। ४. वह अपने कुल को बदनाम करता है। ५. वह शिष्य को पुत्रवत् मानता है। ६. वह कृष्णवत् आचरण करता है। (घ) (कृषिवर्ग) भारत कृषि-प्रधान देश है। किसान उपजाऊ भूमि को हल से जोतता है, जुती हुई भूमि के ऐलों को मैंड़ा चलाकर सम कर देता है, बाद में उसमें बीज बोता है, अंकुर आने के बाद निराई करता है और अनावश्यक घास आदि को निकाल देता है। खेती तैयार होने पर दराँती से बालों को काट लेते हैं या जड़ से ही काटते हैं। भुस और भूसी गायों-बैलों को दी जाती है। आजकल ट्रैक्टरों से भी खेती की जाती है।

संकेत—(क) १. आकृतिविशेषाः, सचेतसः। २. यादृशस्तादृशो जनाः, रङ्गभङ्गं विदधति। ३. कीदृक् तनयस्नेहः, ईदृक्। ४. ०संकुलापि ज्योतिष्मती चन्द्रमसैव रात्रिः। ५. सचेतसः कस्य मनो न दूयते। ६. स्थितं प्रवयसम्। ७. दुर्वाससः शाप एष प्रभवति। ८. सुमनसां प्रीतिर्वामदक्षिणयोः समा। (ख) १. अवधानम्। २. देहि मे विवरम्। ३. पारितोषिकम्। ४. अवकाशम्। ५. बालपादपेभ्यः ६. प्राणान् अदात्। ७. बाष्पस्तु न ददात्येनां द्रष्टुं चित्रगतामपि। ८. आतपे ददाति। १०. मनो ददाति। १२. पावकम् अदात्। १३. इति वाचमाददे। १४. हंसो हि क्षीरमादत्ते तन्मिश्रा वर्जयत्यपः। १५. मन आददे। (ग) १. बालकः जाहस्यते, रोरुद्यते, वाव्रज्यते, नरीनृत्यते, जेगीयते, बोभुज्यते, पेपीयते, चेक्रीयते, बंभ्रभ्यते, प्रश्नं परीपृच्छ्यते। २. स कार्यं चरीकर्ति, जंगमीति, वरीवर्ति, जंघनीति, जाग्रहीति। ३. सपत्नीकः तपस्यति। ४. मलिनयति। (घ) कर्षति, संवाह्य समीकरोति, बीजानि वपति, क्षेत्रपरिष्कारम्, संपन्नायां सत्याम्, लुनन्ति, मूलत एव।

शब्दकोष—१००+२५=१२५] **अभ्यास ३७** (व्याकरण)

(**घ**) सुकृतिन् (भाग्यवान्), सहृदयः (सहृदय), निष्णातः (विद्वान्), प्रतीक्ष्यः (पूज्य), वदान्यः (दानी), हृष्टमानसः (प्रसन्नचित्त), विमनस् (दुःखित हृदय), उत्कः (उत्कण्ठित), विश्रुतः (प्रसिद्ध), स्निग्धः (प्रेमी), आयत्तः (अधीन), आद्यूनः (पेटू), लुब्धः (लोभी), विनीतः (नम्र), धृष्टः (ढीठ), प्रत्याख्यातः (छोड़ा हुआ), विप्रकृतः (तिरस्कृत), विप्रलब्धः (वंचित), आपन्नः (आपत्तिग्रस्त), दुर्गतः (दीन), कान्तम् (सुन्दर), अभीष्टम् (मनोहर), निकृष्टः (नीच), पूतम् (पवित्र), संख्यातम् (गिना हुआ)। (२५)

व्याकरण (विद्वस्, पुंस्, धा धातु, क्त प्रत्यय)

१. विद्वस् और पुंस् शब्द के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३६, ३७)

२. धा धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५५)

नियम २०३—(क्तक्तवतू निष्ठा, निष्ठा) भूतकाल अर्थ में धातु से क्त और क्तवतु कृत् प्रत्यय होते हैं। दोनों का क्रमशः त और तवत् शेष रहता है। 'त' प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है। तवत् प्रत्यय कर्तृवाच्य में होता है। 'त' प्रत्यय करने पर सेट् (इ-वाली) धातुओं में इ लगेगा, अनिट् (इ-नहींवाली) धातुओं में इ नहीं लगेगा। धातु को गुण या वृद्धि नहीं होती। संप्रसारण होता है।

नियम २०४—(**क**) क्त (त) प्रत्यय जब सकर्मक धातु से कर्मवाच्य में होगा तो कर्म में प्रथमा, कर्ता में तृतीया और क्रिया के लिंग, वचन और विभक्ति कर्म के अनुसार होंगे, कर्ता के अनुसार नहीं। (**ख**) अकर्मक धातु से क्त (त) प्रत्यय होगा तो कर्ता में तृतीया होगी। क्रिया में नपुंसक० एक० ही रहेगा। (**ग**) 'त'-प्रत्ययान्त क्रिया-शब्द कर्म के अनुसार पुलिंग होगा तो उसके रूप रामवत्, स्त्रीलिंग होगा तो रमावत्, नपुंसक० होगा तो गृहवत् चलेंगे। जैसे—मया पुस्तकं पठितम्, पुस्तके पठिते, पुस्तकानि पठितानि। मया ग्रन्थः पठितः, ग्रन्थौ पठितौ, ग्रन्थाः पठिताः। मया बाला दृष्टा, बालाः दृष्टाः। तेन हसितम्।

नियम २०५—(गत्यर्थाकर्मकश्लिषशीङ्०) इन धातुओं से क्त प्रत्यय कर्तृवाच्य में भी होता है:—जाना, चलना अर्थ की धातुओं, अकर्मक धातुओं तथा श्लिष्, शी, स्था, आस्, वस्, जन्, रुह्, जृ धातुओं से। अतः कर्ता में प्रथम और कर्म में द्वितीया। जैसे—गृहं गतः। स ग्रामं प्राप्तः। स भूतः। हरिः रमामाश्लिष्टः। स शेषमधिशयितः। वैकुण्ठमधिष्ठितः। शिवमुपासितः। अत्र उषितः। राममनुजातः। वृक्षमारूढः। स जीर्णः।

नियम २०६—(मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च) मन्, बुध्, पूज् तथा इन अर्थोंवाली अन्य धातुओं से क्त प्रत्यय वर्तमान काल अर्थ में होता है। इसके साथ षष्ठी होगी। राज्ञां मतः, बुद्धः, पूजितः (राजा के द्वारा सम्मानित या पूजित)।

नियम २०७—(नपुंसके भावे क्तः) कभी-कभी क्त प्रत्यय नपुंसकलिंग भाववाचक शब्द बनाने के लिए होता है। जैसे— जल्पितम् (कहना), शयितम् (सोना), हसितम् (हँसना), गतम् (चलना), स्थितम् (रहना), कस्येदमालिखितम्? (किसका चित्र है?)

अभ्यास ३७

संस्कृत बनाओ—(क) (विद्वस्, पुंस्) १. **विद्वान् ही विद्वानों के परिश्रम** को **समझता** है। २. विद्वान् को भी **दुष्ट** लक्ष्मी **दुर्जन बना देती है**। ३. विद्वानों के **मुँह से बात** सहसा बाहर नहीं निकलती और जो **निकल जाती है, वह फिर लौटती नहीं है**। ४. **जिसके पास पैसा है, वही संसार में पुरुष है**। ५. **शत्रु भी जिसके नाम का अभिनन्दन करते हैं, वही पुरुष पुरुष** है। ६. वह **पुरुषों के द्वारा** वन्दनीय है। ७. दुष्ट स्त्री पुरुष पर विश्वास नहीं करती (विश्वस्)। **(ख)** (धा धातु) १. **सहसा काम न करो**। २. **मुझे** श्रेष्ठ लक्ष्मी **दो**। ३. हे माता, तू दुर्जनों को भी **पालती है**। ४. काँच सुवर्ण के संग से **मरकत की कान्ति को धारण करता है**। ५. इधर **ध्यान दो**। ६. वह कान पर **हाथ रखता है**। ७. **वह कानों को बन्द करता है** (अपिधा) ८. **खिड़की बन्द कर दो**। ९. हे अर्जुन, इस शरीर को **क्षेत्र कहा जाता है** (अभिधा)। १०. आप **इधर ध्यान दीजिए** (अवधा)। ११. **अपने से बलवान् शत्रु से सन्धि कर लो** (संधा)। १२. उसने धनुष पर बाण **रखा** (संधा)। १३. नए कपड़े **पहनो** (परिधा)। १४. वह गुरु पर **श्रद्धा करता** है (श्रद्धा)। १५. वह **बाँह का तकिया लगाकर** सोता है (उपधा)। १६. शकुन्तला को **ठगकर मुझे क्या मिलेगा** (अभिसंधा)? १७. वैदिक वाङ्मय का **अनुसन्धान करो** (अनुसंधा)। १८. प्रायः **भाग्य ही** सबका शुभ और अशुभ **करता है** (विधा)। १९. मैं धनुष पर **विजय की आशा रखता हूँ** (निधा)। २०. मेज पर पुस्तकें रख दो (निधा)। २१. **जल ने भूमि पर धूल को दबा दिया** (निधा)। २२. मुझमें **मन लगाओ** (आधा)। २३. राक्षसों की छाया **भय उत्पन्न करती हैं** (आधा)। **(ग)** (विशेषण) १. भाग्यवान्, सहृदय, दानी और विद्वान् लोग तिरस्कृत, वंचित, आपत्तिग्रस्त और दीन को दुःख नहीं देते हैं। २. निकृष्ट व्यक्ति भी सुन्दर अभीष्ट वस्तुओं को पाकर प्रसन्नचित्त होता है और उन्हें न पाकर खिन्न होता है। ३. पेटू पराधीन होता है, नम्र प्रसिद्ध होता है, ढीठ तिरस्कृत होता है, प्रेमी विनीत होता है और उत्कण्ठित खिन्न होता है। **(घ)** (क्त प्रत्यय) १. मैंने रघुवंश के चार **सर्ग** पढ़े। २. उसने **बनी-ठनी** स्त्री देखी। ३. वह आसन पर बैठा (अधिष्ठा)। ४. वह वृक्ष पर चढ़ा (आरुह्)। ५. यह किसका चित्र है? ६. **मुझे राजा मानते हैं**। ७. यह **अफवाह फैल गई**। ८. **उसका मन कहीं और है**। ९. **उसने यह शर्त लगाई**। १०. उसने उस समय **बहुत वीरता दिखाई**।

संकेत—(क) १. विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम्। २. अनार्या, खलीकरोति। ३. वदनाद् वाचः, याताश्चेन्न पराञ्चन्ति। ४. यस्यार्थाः स पुमान् लोके। ५. यस्य नामाभिनन्दन्ति द्विषोऽपि स पुमान् पुमान्। ६. पुंसाम्। **(ख)** १. सहसा विदधीत न क्रियाम्। २. मयि धेहि। ३. दधासि। ४. धत्ते मारकतीं द्युतिम्। ५. धियं धेहि। ६. करं दधाति। ७. कर्णौ पिधत्ते। ८. गवाक्षं पिधेहि। ९. क्षेत्रमित्यभिधीयते। १०. अवधत्ताम्। ११. बलीयसा रिपुणा संदध्यात्। १२. समधत्त। १३. परिधत्त। १४. श्रद्दधाति। १५. बाहुमुपधाय। १६. अभिसंधाय किं लभ्यते मया। १७. अनुसंधत्त। १८. भवितव्यतैव, विदधाति। १९. निदधे विजयाशंसाम्। २१. सलिलैर्निहितं रजः क्षितौ। २२. आधत्स्व। २३. भयमादधति। **(घ)** १. सर्गाः। २. स्वलंकृता। ६. अहं राज्ञां मतः। ७. वार्ता प्रसृता। ८. स हृदयेनासंनिहितः। ९. इति तेन समयः कृतः। १०. धीरं विक्रान्तम्।

शब्दकोष—९२५+२५=९५०] **अभ्यास ३८** (व्याकरण)

(**घ**) प्रौढम् (प्रौढ़), ततम् (विस्तृत), ईरितम् (प्रेरित), उपचितः (मोटा), अपचितः (पतला), भुग्नम् (टूटा हुआ), शातम् (तेज), पक्वम् (पका हुआ), ह्रीणः (लज्जित), स्रुतम् (पिघला हुआ), अवगीतः (निन्दित), उद्वान्तम् (उगला हुआ), शान्तः (शान्त), दान्तः (जितेन्द्रिय), प्रच्छन्नः (ढका हुआ), अवसितः (समाप्त), प्लुष्टम् (दग्ध), त्वष्टम् (छीला हुआ), निष्पन्नम् (तैयार), स्यूतम् (सिला हुआ), लूनम् (कटा हुआ), आसादितम् (प्राप्त), उज्झितम् (त्यक्त), अवगतम् (ज्ञात), जग्धम् (खाया हुआ)। (२५)

व्याकरण (श्रेयस्, अनुडुह्, दिव्, नृत्, क्त प्रत्यय)

१. श्रेयस् और अनुडुह् शब्दों के रूप स्मरण करो (देखो शब्द० ३९, ४०)

२. दिव् और नृत् धातुओं के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५६, ५७)

नियम २०८—धातु से त, तवत् (तथा क्त्वा, क्तिन्) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम ठीक स्मरण कर लें। (देखो परिशिष्ट में क्त प्रत्यय से बने रूप)। (**क**) धातु को गुण या वृद्धि नहीं होगी। सेट् में इ लगेगा, अनिट् में नहीं। संधि-कार्य होगा। जैसे—कृ > कृतः। हृतः, धृतः, भृतः। पठितम्, लिखितम्। (**ख**) (रदाभ्यां निष्ठातो नः०) र् और द् के बाद त को न होगा, धातु के द् को भी न्। अर्थात् र्+त=र्ण। द्+त=न्न। दीर्घ ॠ को ईर् होता है, पृ को पूर्। शॄ > शीर्ण, तॄ > तीर्ण, गॄ > गीर्ण, कॄ > कीर्ण, संकीर्ण, प्रकीर्ण, विकीर्ण। पॄ > पूर्ण। भिद् > भिन्न, छिद् > छिन्न, सद् > सन्न, प्रसन्न, विषण्ण, आसन्न आदि। (**ग**) (घुमास्थागापा०) गा, पा और हा के आ को ई होगा। गीतम्, पीतम् (पिया), हीनम् (छोड़ा)। (**घ**) (द्यतिस्यतिमास्थामित्ति किति) दो (दा), सो (सा), मा, स्था, इनके आ को इ होता है। दित, अवसित, परिमित, स्थित। (**ङ**) (अनुदात्तोपदेश०) यम्, रम्, नम्, गम्, हन्, मन्, वन् और तनादिगणी धातुओं के म् और न् का लोप होता है। यम् > यत, संयत, रम् > रत, विरत, नम् > नत, प्रणत, गम् > गत, आगत, हन् > हत, मन् > मत, संमत, तन् > तत, वितत। (**च**) (अनिदितां हल०) उपधा के न् का लोप होगा, यदि धातु का इ हटा होगा तो नहीं। बन्ध् > बद्ध, ध्वंस् > ध्वस्त, स्रंस् > स्रस्त, दंश् > दष्ट। (**छ**) (जनसनखनां०) जन्, सन्, खन् के न् को आ होगा। जात, सात, खात। (**ज**) (वचिस्वपियजादीनां०, ग्रहिज्या०) वच् आदि को संप्रसारण होता है, अर्थात् य् > इ, व् > उ, र् > ऋ। ब्रू या वच् > उक्त, स्वप् > सुप्त, यज् > इष्ट, वप् > उप्त, वह् > ऊढ, वस् > उषित, ग्रह् > गृहीत, व्यध् > विद्ध, प्रच्छ् > पृष्ट, आह्वे > आहूत, वद् > उदित। (**झ**) (संयोगादेरातो०) ग्ला, म्ला आदि के बाद त को न। ग्लान, म्लान। (**ञ**) (ल्वादिभ्यः) लू आदि २१ धातुओं के बाद त को न। लू > लून, स्तॄ > स्तीर्ण, विस्तीर्ण, ज्या > जीन, दु > दून। (**ट**) (ओदितश्च) जिन धातुओं में से ओ हटा हो, उनके बाद त को न। उड्डी > उड्डीनः, भञ्ज् > भग्न, भुज् > भुग्न, मस्ज् > मग्न, रुज् > रुग्ण, ली > लीन, उद्विज् > उद्विग्न, श्वि > शून, हा > हीन। (**ठ**) इन धातुओं के ये रूप होते हैं:— दा > दत्त, धा > हित, विहित, निहित, अस् > भूत, शुष् > शुष्क, पच् > पक्व, क्षै > क्षाम। सह् > सोढ, वह् > ऊढ, अद् > जग्ध, क्षि > क्षीण, निर्वा > निर्वाण, निर्वात, गुह् > गूढ, लिह् > लीढ, प्यै > पीन, प्यान।

अभ्यास ३८

संस्कृत बनाओ—(क) (श्रेयस्, अनडुह्) १. अपना धर्म घटिया भी अच्छा है। २. कल्याण के विषय में किसकी तृप्ति होती है? ३. सूर्य अनड्वान् (बैल) है, वह पृथ्वी को धारण करता है (धृ)। ४. बैलों से खेती की जाती है। (ख) (दिव्, नृत् धातु) १. वह पासों से जुआ खेलता है। २. नाचनेवाला युवतियों के साथ नाचता है। ३. बाण चंचल लक्ष्य पर भी लगते हैं (सिध्)। ४. एक के परिश्रम से ही घर-खर्च चल जाता है। (ग) (क्त प्रत्यय) १. अच्छी याद दिलाई। २. अच्छा, हमने ऐसा मान लिया। ३. व्यापारी नाव टूट जाने से मर गया। ४. आपकी घोषणा का लोगों ने स्वागत किया है। ५. यह क्या बात शुरू की? ६. ऐसा अशुभ न हो। ७. राजा ने अनुचित किया। ८. शकुन्तला पेड़ों से ओझल हो गई। ९. उसको भाग्य पर छोड़ दिया। १०. उसकी प्रतिज्ञा सबको विदित हो गई। ११. वह दुःख के कारण अन्यमनस्क है। १२. मैं व्यर्थ ही रोया। १३. वे दोनों एक-दूसरे को मारने पर तुले हुए हैं। १४. सारी चीजें उलट-पलट हो गई हैं। १५. सीता का क्या हाल हुआ? १६. लोकापवाद मेरे लिए बलवान् है। १७. घर में आग लग गई। १८. घर में आग लगने पर कुआँ खोदना कहाँ तक उचित है? १९. राजा होश में आया। २०. तुम्हारा तर्क उचित है। २१. तुमने स्वयं अपना सत्यानाश किया है। २२. अब मेरी हालत ठीक है। २३. बड़ी कठिनाई से जान छूटी। २४. वह सदा के लिए चला गया। २५. उन्होंने उसे अपराधी ठहराया। २६. वह बहुत प्रसन्न हुआ। २७. उसकी आँखों में आँसू भर आए। २८. मैं पीछे-पीछे आ रहा हूँ। २९. तुमने देर कर दी। ३०. मैंने तुम्हारा कभी कुछ भी बुरा नहीं किया है। ३१. यह बात आपके कान तक पहुँची ही होगी। ३२. मैंने उसे कुछ मना लिया। (घ) (विशेषण) १. पके और कटे फल को खाओ। २. जले हुए, खाए हुए और छोड़े हुए भोजन को न खाओ। ३. आदमी पतला हो या मोटा, उसे शान्त और दान्त होना चाहिए। ४. प्रौढ़ व्यक्ति का ज्ञान विस्तृत, सन्तुलित, परिपक्व, तीक्ष्ण और अनिन्दित होता है। ५. सिले हुए वस्त्र, तैयार भोजन, पिघला हुआ घी, ढके हुए बर्तन और छीले हुए फल को यहाँ रखो।

संकेत—(क) १. श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः। २. श्रेयसि। ३. अनड्वान् दाधार पृथ्वीम्। (ख) १. अक्षैः दीव्यति। २. नर्तकः। ३. सिध्यन्ति। ४. व्ययः शुध्यति। (ग) १. सम्यगनुबोधितोऽस्मि। २. अभ्युपगतं तावदस्माभिरेवम्। ३. सार्थवाहो नौव्यसने विपन्नः। ४. अभिनन्दितं देवस्य शासनं जनैः। ५. किमिदमुपन्यस्तम्! ६. प्रतिहतमङ्गलम्। ७. अनुचितमाचरितम्। ८. अन्तर्हिता वनराज्या। ९. स दैवाधीनः कृतः। १०. प्रकाशतां गता। ११. सन्तापेन भ्रष्टहृदयः। १२. अरण्ये मया रुदितम्। १३. परस्परवधायोद्यतौ तौ। १४. सर्वं विपर्यासं यातम्। १५. किं वृत्तम्। १६. बलवान् मतो मे। १७. ज्वलनमुपगतं गेहम्। १८. सन्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः। १९. प्रकृतिमापन्नः। २०. उपपन्नः। २१. त्वया स्वहस्तेनाङ्गाराः कर्षिताः। २२. लब्धं मया स्वास्थ्यम्। २३. कथं कथमपि मुक्तः। २४. असंनिवृत्त्यै गतः। २५. स्थापितः। २६. आनन्दस्य परां कोटिमधिगतः। २७. तस्या नयने उद्बाष्पे जाते। २८. अनुपदमागत एव। २९. वेलातिक्रमः कृतः। ३०. विप्रियं न कृतम्। ३१. इदं भवतः श्रुतिविषयमापतितमेव। ३२. किमपि सानुक्रोशः कृतः।

शब्दकोष—९५०+२५=९७५] **अभ्यास ३९** (व्याकरण)

(**क**) अद्रिः (पुं०, पर्वत), ग्रावन् (पुं०, पत्थर), शिला (चट्टान), शृङ्गम् (चोटी), प्रपातः (झरना), उत्सः (सोता), निर्झरः (पहाड़ी नाला, बड़ा झरना), दरी (स्त्री०, दर्रा), अद्रिद्रोणी (स्त्री०, घाटी), गह्वरम् (गुफा), खनिः (स्त्री०, खान), उपत्यका (तराई, भावर), अधित्यका (पठार), निकुञ्जः (झाड़ी), हिमसरित् (स्त्री०, ग्लेशियर)। (१५)। (**ख**) क्रुध् (गुस्सा करना), द्रुह् (द्रोह करना), क्षम् (क्षमा करना), दम् (दबाना), तुष् (सन्तुष्ट होना), दुष् (दूषित होना), व्यध् (बींधना), शुष् (सूखना), सिध् (सिद्ध होना), हृष् (प्रसन्न होना)। (१०)

व्याकरण (मति, नश्, भ्रम्, क्तवतु प्रत्यय)

१. मति शब्द के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द ४२)

२. नश् और भ्रम् धातुओं के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ५८, ५९)

नियम २०९—क्तवतु प्रत्यय भूतकाल में होता है। इसका तवत् शेष रहता है। यह कर्तृवाच्य में होता है, अतः कर्ता के तुल्य क्रिया-शब्द के लिंग, विभक्ति और वचन होंगे। कर्ता में प्रथमा, कर्म में द्वितीया, क्रिया कर्ता के तुल्य। धातुओं के रूप क्त प्रत्यय के तुल्य ही बनेंगे। नियम २०८ पूरा इसमें भी लगेगा। क्त प्रत्यय लगाकर जो रूप बनता है, उसीमें 'वत्' और जोड़ दें। जैसे—कृ > कृतः, तवत् में कृतवत् होगा। तवत् प्रत्ययान्त के रूप पुंलिंग में भगवत् (शब्द० २०) के तुल्य चलेंगे, स्त्रीलिंग में ई लगाकर नदी के तुल्य और नपुंसक० में जगत् (शब्द० ६८) के तुल्य। क्त प्रत्यय लगाने पर कर्म के लिंग, वचन, विभक्ति पर ध्यान दिया जाता है, कर्ता के लिंग आदि पर नहीं। परन्तु क्तवतु प्रत्यय लगाने पर कर्ता के लिंग आदि पर ध्यान दिया जाएगा, कर्म पर नहीं। जैसे—स पुस्तकम् अपठत् का क्तवतु में स पुस्तकं पठितवान्। ते पुस्तकानि पठितवन्तः। सा पुस्तकं पठितवती।

नियम २१०—दीर्घ, गुण, वृद्धि, संप्रसारण आदि के लिए यह सारणी ठीक स्मरण कर लें। ऊपर मूल स्वर दिए गए हैं, उनके स्थान पर गुण, वृद्धि आदि कहने पर ऊपर के मूल स्वर के नीचे गुण आदि के सामने जो स्वर आदि दिए गए हैं, वे होंगे। आगे भी जहाँ गुण, वृद्धि, संप्रसारण आदि कहा जाए, वहाँ इस सारणी (टेबुल) के अनुसार कार्य करें। (रिक्त स्थानों पर वह कार्य नहीं होता।)

१. स्वर	**अ, आ**	**इ, ई**	**उ, ऊ**	**ऋ, ॠ**	**ऌ**	**ए**	**ऐ**	**ओ**	**औ**
२. दीर्घ	आ	ई	ऊ	ॠ	—	—	—	—	—
३. गुण	अ	ए	ओ	अर्	अल्	ए	—	ओ	—
४. वृद्धि	आ	ऐ	औ	आर्	आल्	ऐ	ऐ	औ	औ

५. संप्रसारण—य् को इ, व् को उ, र् को ऋ, ल् को ऌ।

अभ्यास ३९

संस्कृत बनाओ—(क) (मति शब्द) १. **विनाश के समय बुद्धि भ्रष्ट** हो जाती है। २. **सबकी रुचि पृथक्** होती है (रुचि)। ३. **कुपथ पर वर्तमान मूर्ख को दोनों लोकों में दुःख देनेवाली आपत्ति आती है** (दुर्मति)। ४. एकता से कार्य सिद्ध होते हैं (संहति)। ५. **गुणों से गौरव प्राप्त होता है, न कि मोटापे से** (संहति)। ६. **ओह, इष्ट वस्तु की सिद्धि में विघ्न आते हैं** (सिद्धि)। ७. **चेष्टा के अनुकूल ही कामी जनों की मनोवृत्ति होती है।** (वृत्ति)। ८. **अधिक पैसा हो तो बहुत-से सम्बन्धी हो जाते हैं** (ज्ञाति)। ९. **अत्युन्नति के बाद बड़ों का भी पतन होता है** (अत्यारूढि)। १०. वह सदा चौकन्ना रहता है (प्रत्युत्पन्नमतिः)। ११. **आप क्या काम करते हैं?** (वृत्ति)। १२. **यह बात उस समय मुझे नहीं सूझी** (बुद्धि)। १३. **और कोई चारा नहीं है।** १४. **इस प्रकार की स्त्रियाँ गृहिणी होती हैं और इससे विपरीत कुल के लिए दुःखद होती हैं** (युवति, आधि)। १५. राम **की बुद्धि तीक्ष्ण है** और देवदत्त की मोटी। १६. वह **देखने में सुन्दर हैं।** १७. उसने **शत्रुता का रुख अपनाया हुआ है।** १८. **वह आपाततः राम की बड़ाई कर रहा है, पर वस्तुतः बुराई कर रहा है।** **(ख)** (नश्, भ्रम् धातु) १. **देर करनेवाला** नष्ट हो जाता है (विनश्)। २. संशयात्मा नष्ट हो जाता है (विनश्)। मेरा मन **अस्थिर** घूम रहा है (भ्रम्)। ४. **पेड़ के थाँवले में जल** चक्कर खा रहा है (भ्रम्)। ५. **अधीनस्थ व्यक्ति बड़े कामों में जो सफल हो जाते हैं, वह बड़ों की कृपा ही समझनी चाहिए (सिध्)।** ६. सज्जन **पापी पर** क्रोध करता है (क्रुध्), **दुर्जन से द्रोह करता** है (द्रुह्), निरपराध को **क्षमा करता है** (क्षम्)। ७. राम बाण से मृगों को **बींधता है** (व्यध्), शत्रुओं को **दबाता है** (दम्) और रावण को जीतने से **प्रसन्न होता है** (हृष्)। ८. दुर्जन थोड़े से **सन्तुष्ट होता है** (तुष्)। ९. कुलमर्यादा के नाश से **कुलीन स्त्रियाँ बिगड़ जाती हैं** (दुष्)। १०. ग्रीष्म ऋतु में **तालाब सूख जाता** है (शुष्)। **(ग)** (क्तवतु) १. तुमने मेरा अभिप्राय **ठीक समझा।** २. **उसके खाना खा लेने पर** मैं उसके पास गया। ३. पहाड़ दिखाई दिया। ४. **पत्थर** गिरे। **(घ)** (शैलवर्ग) १. पहाड़ की चोटी से झरना बहा। २. घाटी में सोते निकलते हैं और नाले बहते हैं। ३. पर्वत की गुफाओं में ऋषि तपस्या करते हैं। ४. पिण्डारी ग्लेशियर का दृश्य मनोरम है। ५. पठार की भूमि सम होती है, वहाँ वृक्षादि भी होते हैं। ६. दर्रे के मार्ग से यातायात होता है।

संकेत—(क) १. भवत्यपाये परिमोहिनी मतिः। २. भिन्नरुचिर्हि लोकः। ३. आपदेत्युभयलोकदूषणी वर्तमानमपथे हि दुर्मतिम्। ४. संहतिः कार्यसाधिका। ५. गुरुतां नयन्ति हि गुणा न संहतिः। ६. अहो, विघ्नवत्यः प्रार्थितार्थसिद्धयः। ७. चेष्टाप्रतिरूपिका कामिजनमनोवृत्तिः। ८. अतनुषु विभवेषु ज्ञातयः संभवन्ति। ९. अत्यारूढिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा। ११. कां वृत्तिमुपजीवत्यार्यः। १२. इति मम बुद्धौ नापतितम्। १३. नान्या गतिः। १४. यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः। १५. तीक्ष्णमती रामः, स्थूलबुद्धिः। १६. शोभनाकृतिः। १७. विपक्षवृत्तितामाश्रयते। १८. स रामस्य व्याजस्तुतिमाचरति। **(ख)** १. दीर्घसूत्री। ३. निष्ठाशून्यम्। ४. वृक्षावर्ते। ५. सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यन्नियोज्याः, संभावनागुणमवेहि तमीश्वराणाम्। ६. पापिने, दुर्जनाय द्रुह्यति, क्षाम्यति। ७. विध्यति, दाम्यति, हृष्यति। ८. तुष्यति। ९. प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः। १०. शुष्यति कासारः। **(ग)** १. सम्यग् निगृहीतवानसि। २. भुक्तवति तस्मिन्। ४. ग्रावाणः।

शब्दकोष—९७५+२५=१०००]　　**अभ्यास ४०**　　(व्याकरण)

(**क**) काननम् (वन), विटपिन् (वृक्ष), व्रततिः (स्त्री०, लता), मूलम् (जड़), दारु (नपुं०, लकड़ी), इन्धनम् (ईंधन), वल्लरिः (स्त्री०, बौर), पर्णम् (पत्ता), किसलयम् (कोंपल), वृन्तम् (डंठल), देवदारुः (पुं०, देवदार), भद्रदारुः (पुं०, चीड़), सिन्दूरः (बाँझ का पेड़), सर्जः (सर्ज), सालः (साल का पेड़), तमालः (आबनूस), करीरः (करील, बबूल), गुग्गुलः (गूगल), श्लेष्मातकः (लिसोड़ा), प्रियालः (प्याल)। (२०)। (**ख**) ष्ठिव् (थूकना), अस् (फेंकना), पुष् (पुष्ट करना), शुध् (शुद्ध होना), तृप् (तृप्त होना)। (५)

व्याकरण (नदी, लक्ष्मी, श्रम्, सिव्, शतृ प्रत्यय)

१. नदी और लक्ष्मी शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४३, ४४)

२. श्रम् और सिव् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ६०, ६१)

नियम २११—(लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे) (**क**) लट् के स्थान पर परस्मैपद में शतृ और आत्मनेपद में शानच् होता है। शतृ का अत् और शानच् का आन शेष रहता है। ये दोनों प्रत्यय क्रिया की वर्तमानता को सूचित करते हैं। हिन्दी में इनका अर्थ 'रहा है, रहे हैं, रहा था, हुआ, हुए' आदि के द्वारा प्रकट किया जाता है। (**ख**) पाणिनि के नियमानुसार प्रथमा कारक में शतृ, शानच् का प्रयोग नहीं करना चाहिए। जैसे—स पठन् अस्ति, न कहकर—स पठति ही कहना चाहिए। परन्तु प्रथमा में भी कुछ प्रयोग मिलते हैं अतः प्रथमा में भी इनका प्रयोग प्रचलित है। (**ग**) शतृ और शानच्-प्रत्ययान्त शब्द विधेय या विशेषण के रूप में आते हैं। शतृ-प्रत्ययान्त के लिंग, वचन, कारक, कर्ता के तुल्य होते हैं। इसके रूप पुंलिंग में पठत् (शब्द० २४) के तुल्य चलेंगे। जुहोत्यादि० की धातुओं में न् नहीं लगेगा। जैसे—ददत् ददतौ ददतः। स्त्रीलिंग में ई लगाकर नदी के तुल्य। नपुंसक० जगत् (शब्द० ६८) के तुल्य। जैसे—पठन्तं रामं पश्य। पठते रामाय फलानि यच्छ। (**घ**) शतृ प्रत्यय में भी धातु से विकरण आदि होते हैं। अतः शतृ प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का अति सरल प्रकार यह है कि उस धातु के लट् के प्रथम पु० बहुवचन के रूप से अन्तिम इ और बीच के न् को (यदि हो तो) हटा दें। इस प्रकार शत्-प्रत्ययवाला रूप बच जाता है। जैसे—भू > भवन्ति, शतृ-भवत्। अस् > सन्ति, सत्। गम् > गच्छन्ति, गच्छत्। कृ > कुर्वन्ति, कुर्वत्। दा > ददति, ददत्। (**ङ**) शतृ-प्रत्ययान्त के बाद अर्थ के अनुसार अस्, आस् या स्था धातु का प्रयोग होता है। वर्तमान आदि में अर्थानुसार लट्, लङ् आदि। गृहं गच्छन् आसीत्, भविष्यति वा। पशूनां वधं कुर्वन् आस्ते। तं प्रतिपालयन् तस्थौ, अतिष्ठत् वा। (**च**) शतृ-प्रत्ययान्त को स्त्रीलिंग बनाने के लिए ये नियम स्मरण रखें:—(**१**) (उगितश्च) सभी जगह अन्त में ङीप् (ई) लगेगा। (**२**) (शप्श्यनोर्नित्यम्) भ्वादि०, दिवादि० और चुरादि० की धातुओं में त् से पहले न् और लगेगा। जैसे—गच्छत् > गच्छन्ती, नृत्यत् > नृत्यन्ती, कथयत् > कथयन्ती। (**३**) (आच्छीनद्योः०) अदादि० की आकारान्त धातुओं तथा तुदादि० की धातुओं के बीच में न् विकल्प से लगेगा। भात् > भान्ती, भाती, तुदत् > तुदन्ती, तुदती। (**४**) इसके अतिरिक्त शेष स्थानों पर न् नहीं लगेगा, केवल ई अन्त में लगेगा। रुदती, दधती, शृण्वती, **कुर्वती, क्रीणती।** (**देखो परिशिष्ट में शतृप्रत्यय**)।

अभ्यास ४०

संस्कृत बनाओ—(क) (नदी, लक्ष्मी) १. नदियाँ स्वयं अपना जल नहीं पीतीं। २. नदियों में लोग तैरते हैं और उनमें मगर आदि भी रहते हैं। ३. लक्ष्मी वह है, **जिससे दूसरों का उपकार होता है।** ४. लक्ष्मी के प्रसाद से दोष भी गुण हो जाते हैं। ५. यह घर में लक्ष्मी है। ६. **सधवा स्त्रियों का चित्त फूल के तुल्य कोमल होता है** (पुरन्ध्री)। ७. **जिन्होंने पुण्य कर्म नहीं किए हैं, उनकी वाणी स्वच्छ और गम्भीर पदोंवाली नहीं होती** (सरस्वती)। **(ख)** (श्रम, सिव्) १. वह कठिन परिश्रम करता है (श्रम्)। २. वह तीव्रगति से शत्रु की ओर चला (क्रम्)। ३. **बिना कारण ही** जो पक्षपात होता है, उसका प्रतिकार नहीं है। **वह प्रेमरूपी तन्तु है, जो प्राणियों को अन्दर से सी रहा है।** ४. अच्छी **सिलाई के लिए** सिलाई की मशीन से वस्त्रों को सीओ। ५. इधर-उधर मत **थूको और न कूड़ा-करकट ही मनमाने** फेंको (अस्)। ६. यज्ञ से वायु शुद्ध होती है (शुध्)। ७. **आग लकड़ी से** तृप्त नहीं होती (तृप्)। **(ग)** (शतृ प्रत्यय) १. वह **बाण चढ़ाता हुआ** दिखाई दिया। २. **थोड़ी योग्यतावाला होने पर भी मैं रघुवंशियों का वर्णन करूँगा।** ३. वह **सिर-दर्द का बहाना बनाकर** घर चला गया। ४. **सूर्य के तपते होने पर** अन्धकार कैसे प्रकट होगा (आविर्भू)? ५. **नीचों से मित्रता की अपेक्षा महात्माओं से विरोध अच्छा है, क्योंकि वह ऐश्वर्य को उन्नत करता है।** ६. **सज्जनों के सन्देहास्पद विषयों में उनके अन्तःकरण की वृत्तियाँ ही प्रमाण हैं।** **(घ)** (द्वितीया) १. तुम्हें लोग **प्रकृति कहते हैं।** २. वह यमुना के **किनारे गया।** ३. उसे **बड़ा दुःख हुआ।** ४. राजा का हितकर्ता **लोगों में बुरा समझा जाता है।** ५. **वह तृप्त नहीं हुआ।** ६. राम पहाड़ की **चोटी पर चढ़ा।** ७. पक्षी **आकाश में** उड़ा। ८. चन्द्रापीड शिला**पट्ट पर सोया।** ९. दुष्यन्त इन्द्र के **आधे आसन पर बैठा।** १०. **वह सन्मार्ग पर चलता है** (अभिनिविश्)। ११. **बदमाशों को धिक्कार।** १२. **नौकर** राजा के चारों ओर खड़े हो गए। **(ङ)** (वन-वर्ग) वन भूमि के रक्षक हैं, वे भूमि को **रेगिस्तान होने से** बचाते हैं। वृक्षों की उपयोगिता बहुत है। उनके पत्ते, जड़, लकड़ी, कोंपल, बौर, डण्ठल, **कलियाँ,** फूल और फल सभी अनेक कामों में **आते हैं।** कुछ पेड़ फल देते हैं और उनके फल खाए जाते हैं। कुछ पेड़ों की लकड़ी ईंधन के रूप में काम आती है। पहाड़ों पर देवदार, चीड़, बाँझ, सर्ज और साल के पेड़ अधिक होते हैं। गूगल, लिसोड़ा और प्याल पर फल भी होते हैं। आबनूस की लकड़ी काली होती है और बबूल की **दातूनें** अच्छी बनती हैं।

संकेत—(क) ३. उपकुरुते यया परेषाम्। ६. पुरन्ध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति। ७. प्रवर्तते नाकृतपुण्यकर्मणां प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती। **(ख)** ३. अहेतुः, स हि स्नेहात्मकस्तन्तुरन्तर्भूतानि सीव्यति। ४. स्यूत्यर्थम्। ५. ष्ठीव्यत, अवकरनिकरम्, यथेच्छम्, अस्यत। ७. काष्ठानाम्। **(ग)** १. शरसन्धानं कुर्वन्। २. रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्। ३. शिरःशूलस्पर्शनमपदिशन्। ४. घर्मांशौ तपति। ५. समुन्नयन् भूतिमनार्यसंगमाद् वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः। ६. सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः। **(घ)** १. प्रकृतिमामनन्ति। २. कच्छमवतीर्णः। ३. परं विषादमगच्छत्। ४. द्वेष्यतां याति लोके। ५. न तृप्तिमाययौ। ६. शिखरमारुरोह। ७. दिवमुदपतत्। ८. ०पट्टमधिशिश्ये। ९. अर्धासनम् अधितष्ठौ। १०. अभिनिविशते सन्मार्गम्। ११. धिक् जाल्मान्। १२. परिजनः। **(ङ)** मरुत्वात्, कलिकाः, उपयुज्यन्ते, दन्तधावनानि।

शब्दकोष—१०००+२५=१०२५] **अभ्यास ४१** (व्याकरण

(**क**) रसाल: (आम), जम्बू: (स्त्री०, जामुन), पलाश: (ढाक), प्लक्ष: (पाकड़) अश्वत्थ: (पीपल), न्यग्रोध: (बड़), नीप: (कदम्ब), शाल्मलि: (पुं०, सेमर), खदिर: (खैर) एरण्ड: (एरंड), शिंशपा (शीशम), ताल: (ताड़), नारिकेल: (नारियल), निम्ब: (नीम) मधूक: (महुआ), बिल्व: (बेल), फेनिल: (रीठा), आमलकी (स्त्री०, आँवला), विभीतक (बहेड़ा), हरीतकी (स्त्री०, हर्र), पनस: (कटहल), अपामार्ग: (चिरचिटा), वेतस: (बेंत) अर्क: (आक), धत्तूर: (धतूरा)। (२५)

व्याकरण (स्त्री, श्री, सो, शो, शतृ, शानच् प्रत्यय)

१. स्त्री और श्री शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द ४५, ४६)

२. सो और शो धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ६२, ६३)

नियम २१२—(लट: शतृशानचौ०) (**क**) आत्मनेपदी धातुओं के लट् के स्थान प शानच् हो जाता है। शानच् का आन शेष रहेगा। शानच् होने पर शब्द के रूप पुंलिंग में रामवत् स्त्रीलिंग में आ लगाकर रमावत्, नपुंसक में गृहवत् चलेंगे। शानच्-प्रत्ययान्त के लिंग, वचन औ कारक कर्ता के तुल्य होंगे। (देखो परिशिष्ट में शानच् प्रत्यय)। (**ख**) शानच्-प्रत्ययान्त के बा अर्थ के अनुसार अस्, आस् या स्था के लट्, लङ् आदि का प्रयोग होगा। (**ग**) (आने मुक्) जि धातुओं के अन्त में अ विकरण लगता है, वहाँ पर अ और आन के बीच में म् लग जायगा। अर्थात अ+आन=मान। जैसे— यजते > यजमान:। वर्तते > वर्तमान:। (**घ**) (ईदास:) आस् धातु से शानच् होने पर आसीन रूप होता है। (**ङ**) अन्यत्र आन ही जुड़ेगा। शी > शयान:, कृ > कुर्वाण: धा > दधान:।

नियम २१३—(**क**) (विदे: शतुर्वसु:) विद् के बाद शतृ को वस् विकल्प से होता है विदन्, विद्वान्। विदुषी। (**ख**) द्विष् धातु से शत्रु अर्थ में और सु से यज्ञ में रस निचोड़ना अर्थ में शतृ होता है। द्विषन्, सुन्वन्। (**ग**) अर्ह् से योग्य होना अर्थ में शतृ। अर्हन्। (**घ**) (पूङ्यजो:०) पू और यज् के वर्तमान अर्थ में पवमान:, यजमान: रूप होते हैं। (**ङ**) (ताच्छील्य०) स्वभाव आदि अर्थ में चानश् (आन) प्रत्यय होता है। भोगं भुञ्जान:। कवचं बिभ्राण:। शत्रुं निघ्नान:।

नियम २१४—(**क**) शतृ और शानच् क्रिया की वर्तमानता को बताते हैं। इनसे 'जब कि' अर्थ भी निकलता है। अरण्यं चरन्—जब वह वन में घूम रहा था। विवाहकौतुकं बिभ्रत एव—जब कि वह विवाह का सूत्र पहने हुए था। (**ख**) (लक्षणहेत्वो: क्रियाया:) स्वभाव और कारण अर्थ बताने में शतृ और शानच् होते हैं। शयाना भुञ्जते यवना: (यवन लेटे-लेटे खाते हैं) अर्जयन् वसति (धन कमाता हुआ रहता है)। (**ग**) (ताच्छील्य०) चानश् (आन) स्वभाव, आयु और शक्ति अर्थ का बोध कराता है। उदाहरण नियम २१३ (ङ) में हैं। (**घ**) शतृ और शानच प्रत्ययान्त का सप्तमी में समय-सूचक अर्थ हो जाता है। जब वह रो रहा था— तस्मिन् रुदति सति तस्मिन् पठति सति।

नियम २१५—(लृट: सद्वा) करने जा रहा है या करनेवाला है, इस अर्थ में लृट् को परस्मै० में शतृ और आत्मने० में शानच् होता है। लृट् का रूप बनाकर शतृ या शानच् लगावें। वन्यान् विनेष्यन्निव दुष्टसत्त्वान्। करिष्यमाण: सशरं शरासनम्।

अभ्यास ४१

संस्कृत बनाओ—(क) (स्त्री, श्री शब्द) १. स्त्रियाँ **जन्म से ही** चतुर होती हैं। २. **लज्जा ही वस्तुतः स्त्रियों को सुशोभित करती है। ३. स्त्रियों में बिना शिक्षा के ही चतुरता** देखी जाती है। ४. स्त्रियों का पति ही गति है। ५. स्त्रियों का भर्ता ही देवता है। ६. **अथक परिश्रम ही श्री** का मूल है। ७. साहस में श्री निवास करती है। ८. **स्वाभिमान भी रहे और धन भी मिले, ऐसा नहीं होता।** ९. सीता दशरथ के गृह में **लक्ष्मी के सदृश** थी। **(ख)** (सो, शो धातु) १. वह शत्रु को मारता है (सो)। २. भीम ने दुर्योधन को मारा। ३. **आधा काम समाप्त हो गया** (अवसो)। ४. वह ऋषि नीलकमल के पत्ते की **धार से** शमी-लता को **काटने का प्रयत्न करता है** (व्यवसो)। ५. पेड़ों को **जल दिये बिना** शकुन्तला जल **नहीं पीना चाहती थी।** ६. वह चाकू से आलू छीलता है (शो)। ७. उसने छुरी से पेन्सिल **छीली। ८. वह कुशा को काटता है** (दो)। ९. वह लकड़ी **काटता है** (छो)। **(ग)** (शतृ, शानच्) १. पुत्र और शिष्य को **बढ़ता हुआ,** प्रसन्न होता **हुआ** और **यत्न करता हुआ** देखना चाहे। २. सूर्योदय होने पर **सोनेवाले को** श्री छोड़ देती है। ३. **मैं आराम से बैठा हूँ,** आप भी आराम से बैठें। ४. **बिस्तर के पास में बैठे** हुए पुत्र को राजा ने देखा। ५. वह कवच **पहनता है,** शत्रुओं को **मारता है** और भोगों को **भोगता है।** ६. मुसलमान लेटे-लेटे खाते हैं। ७. जब वह रो रहा था, तभी कौआ रोटी लेकर उड़ गया। ८. वन्य जन्तुओं को **विनीत करने की इच्छा से मानो** वह वन में घूमा। **(घ)** (द्वितीया) १. **तुम्हारी दुष्टता की शिकायत मैंने आचार्य से कर दी है। २. आपके बारे में** उसका प्रेम कैसा है? ३. **चार महीने वर्षा नहीं हुई। ४. राम बालक से रास्ता** पूछता है। ५. पिता बालक को धर्म बताता है। ६. **वह देवदत्त से सौ रुपया** जीतता है (जि)। ७. **चोर** देवदत्त का सौ रुपया **चुराता है।** ८. विष्णु **समुद्र से अमृत को मथते हैं।** ९. वह **बकरी को गाँव में** ले जाता है (नी, हृ, कृष्)। १०. उसने राजा से कुशल पूछा। ११. शोक के **वश में न होओ। १२. अपने साथी से बिदाई लो।** १३. समय ही बलाबल को करता है। १४. **सब अपना स्वार्थ देखते हैं। (ङ)** (वृक्षवर्ग) उपवन में वृक्षों की सुन्दरता दर्शनीय है। वृक्षों की पंक्तियाँ लगी हुई हैं। आम, **कलमी आम,** जामुन, ढाक, पाकड़, पीपल, बड़, कदम्ब, रेूम, खैर, एरंड, शीशम, ताड़, नारियल, नीम, महुआ, बेल और कटहल के वृक्ष फूलों और फलों से सुशोभित हो रहे हैं। हर्र, बहेड़ा और आँवला त्रिफला कहा जाता है।

संकेत—(क) १. निसर्गादेव। २. स्फुटमभिभूषयति स्त्रियस्त्रपैव। ३. स्त्रीणामशिक्षितपटुत्वम्। ६. अनिर्वेदः। ८. न मानिता चास्ति, भवन्ति च श्रियः। ९. यथा श्रीः। **(ख)** १. स्यति। ३. अर्धमवसितं कार्यस्य। ४. धारया छेत्तुं व्यवस्यति। ५. वृक्षेष्वपीतेषु, पातुं न व्यवस्यति। ६. श्यति। ७. अशात्। ८. कुशान् द्यति। ९. छ्यति। **(ग)** १. वर्धमानम्, मोदमानम्, यतमानम्। २. शयानम्। ३. सुखासीनोऽहम्। ४. शयनान्तिके आसीनम्। ५. बिभ्राणः, निघ्नानः, भुञ्जानः। ८. विनेष्यन्निव। **(घ)** १. तवाविनयमन्तरेण परिगृहीतार्थः कृत आचार्यः। २. भवन्तमन्तरेण। ३. चतुरो मासान् न ववर्ष। ४. बालकं पन्थानम्। ५. ब्रूते। ६. देवदत्तं शतम्। ७. मुष्णाति। ८. सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति। ९. अजां ग्रामम्। ११. वशं मा गमः। १२. आपृच्छस्व सहचरम्। १४. सर्वः स्वार्थं समीहते। **(ङ)** राजाम्रः।

शब्दकोष—१०२५+२५=१०५०] **अभ्यास ४२** (व्याकरण)

(क) बकुल: (मौलसरी), कुवलयम् (नीलकमल), इन्दीवरम् (नीलकमल), कुमुदम् (श्वेतकमल), पुण्डरीकम् (सफेद कमल), कोकनदम् (लाल कमल), कह्लारम् (सफेद कमल), कुमुदिनी (स्त्री०, कुमुद की लता), नलिनी (स्त्री०, पद्म-समूह), शेफालिका (हार-सिंगार), यूथिका (जूही), चम्पक: (चम्पा), मालती (स्त्री०, चमेली), मल्लिका (बेला), गन्धपुष्पम् (गेंदा), केतकी (स्त्री०, केवड़ा), कर्णिकार: (कनेर), बन्धूक: (दुपहरिया), कुन्दम् (कुन्द), स्थलपद्मम् (गुलाब), स्तबक: (गुलदस्ता), प्रसूनम् (फूल), मकरन्द: (पराग), जपापुष्पम् (जवाकुसुम), नवमालिका (नेवारी)। (२५)

व्याकरण (धेनु, वधू, कुप्, पद्, तुमुन् प्रत्यय)

१. धेनु और वधू शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४७, ४८)

२. कुप् और पद् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ६४, ६५)

नियम २१६—(क) (तुमुन्ण्वुलौ क्रियायां क्रियार्थायाम्) को, के लिए अर्थ को प्रकट करने के लिए धातु से तुमुन् प्रत्यय होता है। ऐसे स्थानों पर दूसरी क्रिया के लिए कोई क्रिया की जाती है। तुमुन् का तुम् शेष रहता है। यह अव्यय होता है, अत: इसका रूप नहीं चलेगा। पठितुं लेखितुं क्रीडितुं च विद्यालयं याति। **(ख)** (समानकर्तृकेषु तुमुन्) इच्छार्थक धातुओं के साथ तुमुन् होता है। पठितुं भोक्तुं वा इच्छति। श्रोतुमिच्छामि। **(ग)** (शकधृषज्ञा०) शक्, ज्ञा, रभ्, लभ्, क्रम्, अर्ह्, अस् आदि के साथ तुमुन् होता है। भोक्तुं शक्नोति, पठितुं जानाति, भोक्तुमारभते। **(घ)** (पर्याप्तिवचनेषु०) पर्याप्त अर्थ में तुमुन्। भोक्तुं पर्याप्त: प्रवीण: कुशलो वा। **(ङ)** (कालसमय-वेलासु०) समयवाचक शब्दों के साथ तुमुन् होता है। काल: समयो वेला वा भोक्तुम्।

नियम २१७—तुमुन् (तुम्) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें। ये नियम तृच् (तृ), तव्यत् (तव्य) में भी लगेंगे। **(क)** धातु को गुण होता है, अर्थात् अन्तिम इ ई > ए, उ ऊ > ओ, ऋ ॠ > अर् तथा उपधा (उपान्त्य) के इ, उ, ऋ को क्रमश: ए, ओ, अर् होता है। जैसे—जि > जेतुम्, भू > भवितुम्, कृ > कर्तुम्। हर्तुम्। धर्तुम्। **(ख)** सेट् धातुओं में बीच में इ लगेगा, अनिट् में नहीं। उदाहरण उपर्युक्त हैं। **(ग)** सन्धि-नियमों के अनुसार धातु के अन्तिम च् और ज् को क्, द् को त्, ध् को द् और भ् को ब् होता है। पच्-पक्तुम्, भुज्-भोक्तुम्, छिद्-छेत्तुम्, रुध्-रोद्धुम्, लभ्-लब्धुम्। **(घ)** (व्रश्चभ्रस्जसृजमृज०) धातु के अन्तिम च्छ् और श् को ष् होता है और इन धातुओं के च् या ज् को भी ष् होता है:— व्रश्च्, भ्रस्ज्, सृज्, मृज्, यज्, राज्, भ्राज्। ष् होकर इनके ष्टुम् वाले रूप बनेंगे। प्रच्छ्-प्रष्टुम्, प्रविश्-प्रवेष्टुम्। स्रष्टुम्, यष्टुम्। **(ङ)** (आदेच०) धातुओं के अन्तिम ए और ऐ को आ हो जाता है। आह्वे-आह्वातुम्, गै-गातुम्, त्रै-त्रातुम्। **(च)** धातु के अन्तिम म् को न् हो जाता है। गम्-गन्तुम्, रम्-रन्तुम्। **(छ)** धातु के अन्तिम ह् को घ् या ढ् होकर ग्धुम् या ढुम्वाला रूप बनता है। दह्-दग्धुम्, द्रुह्-द्रोग्धुम्, दुह्-दोग्धुम्, लिह्-लेढुम्। वह्-वोढुम्। **(ज)** इन धातुओं के ये रूप होते हैं:—सह्-सोढुम्, वह्-वोढुम्, सृज्-स्रष्टुम्, दृश्-द्रष्टुम्, आरुह्-आरोढुम्, ग्रह्-ग्रहीतुम्।

नियम २१८—(तुं काममनसोरपि) तुम् के म् का लोप होता है, बाद में काम या मनस् (इच्छार्थक) शब्द हों तो। वक्तुकाम:, वक्तुमना: (बोलने का इच्छुक)।

अभ्यास ४२

संस्कृत बनाओ—(क) (धेनु, वधू) १. गाय को माता माना जाता है, यह उचित है, परन्तु इतना ही पर्याप्त नहीं है। इसकी सुरक्षा और पालन-पोषण का भी पूरा प्रबन्ध होना चाहिए। २. यह दुबला शरीर (तनु) कठिन परिश्रम के योग्य नहीं है। ३. कौआ चोंच से (चञ्चु) दाने चुगता है और बच्चों को खिलाता है। ४. तन्दूर में (कन्दु) पकी रोटियाँ जल्दी हज़म होती हैं। ५. वधू श्वशुर से शर्माती है। ६. जामुन (जम्बू) मीठी होती है। ७. कुप्पी (कुतू) में तेल भर दो। ८. यह चप्पल (पादू) मेरे पैर में ठीक आता है। **(ख)** (कुप्, पद् धातु) १. राजा लोग हितवादी पर क्रोध करते हैं (कुप्)। २. गुरु शिष्य पर बहुत अधिक क्रुद्ध हुआ। ३. रक्त के दूषित होने पर शरीर में दोष कुपित हो जाते हैं। ४. उसने विदर्भ का आधिपत्य पाया (पद्)। ५. वे अपने धर्म का पालन करते हैं (पद्)। ६. लोकाचार का पालन करो (प्रतिपद्)। ७. मनुष्य क्षुब्ध होने पर प्रायः अपने महत्त्व को प्राप्त करता है (प्रतिपद्)। ८. समय मिलने पर आपका काम पूरा करूँगा (संपादि)। ९. इधर चलो। १०. कौन तुम्हारा अनुकरण कर सकता है (प्रतिपद्)? ११. वह यौवन को प्राप्त हुआ (प्रपद्)। १२. धूल कीचड़ हो गई (प्रपद्)। १३. कोई मुझ जैसा पैदा होगा (उत्पद्)। १४. जो पाप करेगा, वह दुःखी होगा (विपद्)। १५. यह तुम्हारे योग्य नहीं है (उपपद्)। १६. पाँच को तीन से गुणा करने पर पन्द्रह हो जाते हैं (संपद्)। १७. इस शब्द का यह रूप बनता है (निष्पद्)। **(ग)** (तृतीया) १. चन्द्रमा के साथ चाँदनी चली जाती है और बादल के साथ बिजली। २. सज्जनों का सज्जनों से मिलन बड़े भाग्य से होता है। ३. मृग मृगों के साथ घूमते हैं, गाएँ गायों के साथ, घोड़े घोड़ों के साथ, मूर्ख मूर्खों के साथ, विद्वान् विद्वानों के साथ। समान स्वभाव और आदतवालों की मित्रता होती है। ४. वह आँख से काणा, कान से बहरा, सिर से गंजा, पैर से लँगड़ा और पीठ से कुबड़ा है। ५. चोटी से हिन्दू और दाढ़ी से मुसलमान जाने जाते हैं। **(घ)** (तुमुन्) १. आग के अतिरिक्त और कौन जला सकता है? २. यह इस काम को कर सकता है। ३. वह घर जाने को उतावला हो रहा था। ४. दो-तीन दिन प्रतीक्षा करो। ५. मेरे प्रेम को मत ठुकराओ। ६. तुम कुछ कहना चाहते हो। ७. मैं कुछ पूछना चाहता हूँ। **(ङ)** (पुष्पवर्ग) उपवन फूलों से सुरभित है। तालाब में नीले, लाल और सफेद कमल खिले हुए हैं। रंग-बिरंगे फूल खिले हैं। हारसिंगार, जूही, चम्पा, चमेली, बेला, जवाकुसुम, नेवारी, गुलाब, गेंदा, दुपहरिया, केवड़ा, कनेर और कुन्द के फूल शोभित हो रहे हैं।

संकेत—(क) १. मन्यते। २. इयम्, अक्षमा कठिनश्रमस्य। ३. कणान् चिनुते। ४. कन्दौ, सुपचा भवन्ति। ७. पूरय। ८. पादप्रमिता वर्तते। **(ख)** १. हितवादिने। २. भृशम्। ३. प्रकुप्यन्ति। ४. अपद्यत। ५. पद्यन्ते। ६. आचारं प्रतिपद्यस्व। ७. क्षोभात्। ८. लब्धावकाशः, संपादयिष्यामि। ९. पन्थानं प्रतिपद्यस्व। १०. अनुकृतिं प्रतिपत्स्यते। ११. प्रपेदे। १२. पङ्कभावं प्रपेदे। १३. उत्पत्स्यते च मम कोपि समानधर्मा। १४. विपत्स्यते। १५. नैतत्त्वय्युपपद्यते। १६. त्र्याहताः पञ्च पञ्चदश संपद्यन्ते। १७. निष्पद्यन्ते। **(ग)** १. सह मेघेन तडित् प्रलीयते। २. सतां सद्भिः सङ्गः कथमपि हि पुण्येन भवति। ३. मृगा मृगैः सङ्गमनुव्रजन्ति। समानशीलव्यसनेषु सख्यम्। ४. खल्वाटः, पृष्ठेन कुब्जः। **(घ)** १. कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति। २. साधयितुमलम्। ३. उदताम्यत्। ४. द्वित्राण्यहानि सोढुमर्हसि। ५. नार्हसि मे प्रणयं विहन्तुम्। ६. वक्तुकामोऽसि। ७. प्रष्टुमनाः। **(ङ)** नानावर्णानि।

शब्दकोष—१०५०+२५=१०७५] **अभ्यास ४३** (व्याकरण)

(**क**) मृद्वीका (अंगूर), द्राक्षा (अंगूर), सेवम् (सेव), आम्रम् (आम), जम्बुः (स्त्री०, जामुन), कदलीफलम् (केला), नारङ्गम् (नारंगी, संतरा), आम्रलम् (अमरूद), दाडिमम् (अनार), जम्बीरम् (नींबू), जम्बीरकम् (कागजी नींबू), बीजपूरः (बिजौरा नींबू), उदुम्बरम् (गूलर), कर्कन्धुः (बेर), श्रीपर्णिका (काफल), अमृतफलम् (नाशपाती), क्षुमानी (खुमानी), आलुकम् (आलूबुखारा), तूतम् (शहतूत), मातुलुङ्गः (मुसम्मी), क्षीरिका (खिरनी), स्वर्णक्षीरी (मकोय), नारिकेलम् (नारियल), लीचिका (लीची), अञ्जीरम् (अंजीर)। (२५)

व्याकरण (स्वसृ, मातृ, युध्, जन्, क्त्वा प्रत्यय)

१. स्वसृ और मातृ शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ४९, ५०)

२. युध् और जन् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ६६, ६७)

नियम २१९—(क) (समानकर्तृकयोः पूर्वकाले) पढ़कर, लिखकर आदि 'कर' या 'करके' अर्थ में क्त्वा प्रत्यय होता है। क्त्वा का त्वा शेष रहता है। क्रिया का कर्ता एक ही होना चाहिए। त्वा प्रत्यय अव्यय होता है, अतः इसका रूप नहीं चलता। जैसे—भोजनं खादित्वा विद्यालयं गच्छति। **(ख)** (अलंखल्वोः प्रतिषेधयोः०) निषेधार्थक अलम् और खलु के साथ धातु से क्त्वा प्रत्यय होता है। जैसे—अलं दत्त्वा (मत दो)। पीत्वा खलु (मत पीओ)। अलं हसित्वा (मत हँसो)। (देखो अभ्यास ४४ भी)। **(ग)** कुछ क्त्वा और ल्यप् प्रत्ययान्त कर्मप्रवचनीय के तुल्य व्यवहार में आते हैं। जैसे—उद्दिश्य, अधिकृत्य। किमुद्दिश्य (किसलिए), धर्ममधिकृत्य (धर्म के बारे में)।

नियम २२०—क्त्वा (त्वा) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि क्त प्रत्यय से बने रूप में से त या न हटाकर त्वा लगा दो। क्त प्रत्ययवाले सभी नियम यहाँ भी लगते हैं—जैसे पठ् > पठितम्, त्वा में पठित्वा। इसी प्रकार लिखित > लिखित्वा, गत > गत्वा, उक्त > उक्त्वा, कृत > कृत्वा। संक्षेप में नियम ये हैं:— **(क)** नियम २०८ (क) देखो। धातु को गुण या वृद्धि नहीं होगी। सेट् में इ लगेगा, अनिट् में नहीं। पठित्वा, लिखित्वा। कृत्वा, हृत्वा, धृत्वा। **(ख)** नियम २०८ (ग) देखो। गीत्वा, पीत्वा। **(ग)** नियम २०८ (घ)। दित्वा, सित्वा, मित्वा, स्थित्वा। **(घ)** २०८ (ङ)। यत्वा, रत्वा, नत्वा, गत्वा, हत्वा, मत्वा। **(ङ)** नियम २०८ (च)। बद्ध्वा, स्रस्त्वा, दष्ट्वा। **(च)** नियम २०८ (ज)। उक्त्वा, सुप्त्वा, इष्ट्वा, ऊढ्वा, उषित्वा, गृहीत्वा, पृष्ट्वा। **(छ)** नियम २१७ (ग) यहाँ भी लगेगा। पक्त्वा, भुक्त्वा, छित्त्वा, रुद्ध्वा, लब्ध्वा। **(ज)** नियम २१७ (घ) यहाँ भी लगेगा। च्छ्, श्, ज् को ष्। प्रच्छ्-पृष्ट्वा, दृश्- दृष्ट्वा, सृज्-सृष्ट्वा। **(झ)** नियम २१७ (छ)। ह् का ग्ध्वा या ढ्वावाला रूप। दह्-दग्ध्वा, दुह्-दुग्ध्वा, लिह्-लीढ्वा। **(ञ)** दीर्घ ॠ को ईर् होगा, पॄ को पूर् होगा। तॄ-तीर्त्वा, कॄ-कीर्त्वा, पॄ-पूर्त्वा। **(ट)** (उदितो वा) जिन धातुओं में से मूलरूप में उ हटा है, वहाँ बीच में इ विकल्प से होगा। अतः दो रूप बनेंगे। नियम २०८ (छ) लगेगा, जनित्वा-जात्वा, सनित्वा-सात्वा, खनित्वा-खात्वा। **(ठ)** (अनुनासिकस्य क्विझलोः०) कम्, क्रम्, शम्, दम्, भ्रम्, श्रम् के दो रूप होते हैं। एक इ लगाकर, दूसरा अम् को आन् बनाकर। जैसे—कमित्वा-कान्त्वा, क्रमित्वा-क्रान्त्वा। **(ड)** इन धातुओं के ये रूप होते हैं- दा > दत्त्वा, धा > हित्वा, हा (छोड़कर) > हित्वा, अद् > जग्ध्वा, दिव् > द्यूत्वा, देवित्वा, सिव् > स्यूत्वा, सेवित्वा।

अभ्यास ४३

संस्कृत बनाओ — (क) (स्वसृ, मातृ शब्द) १. वह अपनी बहन (स्वसृ) को लेकर घर आया। २. **माता गौरव में सौ पिताओं से भी बढ़कर है।** ३. पुत्र कुपुत्र **भले ही हो जाए,** पर माता कुमाता नहीं होती। ४. **बहू की ननद (ननान्दृ) से नहीं पटती है,** पर देवरानी (यातृ) से अच्छी **पटती है।** ५. मैं मौसी (मातृष्वसृ) और फूआ (पितृष्वसृ) के घर गया था। ६. लड़की विवाह के बाद **दूर भेजी जाती** है, **अतः उसे दुहिता कहते हैं। (ख)** (युध्, जन् धातु) १. पदाति पदातियों से लड़ते हैं और **घुड़सवार घुडसवारों से** (सादिन्)। २. ब्रह्मा से प्रजा उत्पन्न होती है। ३. **विषयों का ध्यान करनेवालों की** उनमें आसक्ति **उत्पन्न होती है, आसक्ति से काम** और काम से क्रोध होता है। ४. **उसमें कोई गुण नहीं है** (विद्)। ५. दुर्जन मित्रों से **वियुक्त हो जाता** है (वियुज्)। ६. हम अपने काम में **लगते हैं** (अभियुज्)। ७. **ऐसा मेरा विश्वास है** (मन्)। ८. वह तुम्हें बहुत मानता है (मन्)। ९. **मैं जब तक** जीवित हूँ, लड़ूँगा। **(ग)** (क्त्वा प्रत्यय) १. जो जन्म लेकर, पढ़कर, लिखकर, सुनकर और मनन करके (मन्) भी ईश्वरभक्ति नहीं करता, उसका जीवन असार है। २. बालक प्रातः उठकर, मुँह धोकर, खाना खाकर, पानी पीकर, पाठ याद करके (स्मृ), लेख लिखकर और **बस्ते में** (प्रसेवः) पुस्तकें रखकर विद्यालय को जाता है। ३. वह घर आकर, खेलकर, कूदकर, हँसकर, उठकर, बैठकर, कुछ देकर, कुछ लेकर, गाकर और नाचकर मनोरंजन करता है। ४. **कुल मिलाकर** हम सात आदमी हैं। ५. **आप इसको उलटा न समझें।** ६. समुद्र को **छोड़कर** महानदी कहाँ **उतरती है ?** ७. वह **भौं चढ़ाकर और बनावटी झगड़ा** करके बोला। ८. इसका अर्थ **ठीक समझकर** अपना कर्तव्य **निश्चित करूँगा। (घ)** (तृतीया) १. **इधर-उधर** की **मत हाँकिए, सीधी बात कहिए।** २. **चापलूसी न करिए।** ३. **बस इतने ही फूल रहने दो।** ४. **बहुत कष्ट न कीजिए।** ५. **ऐसे प्राण और पुरुषार्थ से क्या लाभ, जो आपत्तिग्रस्तों को न बचा सकें।** ६. **क्रुद्ध सर्प क्या खून की इच्छा से कुचलनेवाले को काटता है ?** ७. उद्यम से ही कार्य सिद्ध होते हैं, मनोरथों से नहीं। ८. उद्यम के बिना मनोरथ सिद्ध नहीं होते। ९. उपाय से **जो चीज सम्भव** है, वह पराक्रम से सम्भव नहीं। **(ङ)** (फलवर्ग) फल स्वास्थ्य और बुद्धि को बढ़ाते हैं। शारीरिक और बौद्धिक उन्नति के लिए फलों का सेवन अनिवार्य है। यह आवश्यक नहीं है कि **महँगे** फल ही खाए जायँ, **सस्ते** फल भी उतना ही लाभ देते हैं। अपनी स्थिति के अनुसार फल खावे। ऋतु के अनुसार अंगूर, अनार, सेव, नासपाती, खुमानी, आम, केला, सन्तरा, अमरूद, जामुन, बेर, काफल, आलूबुखारा, शहतूत, मुसम्मी, नारियल, लीची, अंजीर, खिरनी और मकोय खावे।

संकेत :- (क) २. पितृणां शतं माता गौरवेणातिरिच्यते। ३. कुपुत्रो जायेत। ४. वधूर्ननान्द्रा न संगच्छते, संजानीते। ६. दुहिता दूरे हिता भवति। **(ख)** १. सादिनश्च सादिभिः। ३. ध्यायतो विषयान्, उपजायते, संगात्, संजायते। ४. गुणास्तावत्तस्य नैव विद्यन्ते। ५. वियुज्यते। ६. अभियुज्यामहे। ७. इति दृढं मन्ये। ९. यावदहं ध्रिये। **(ग)** २. प्रसेवे। ४. सर्वे मिलित्वा। ५. अलमन्यथा संभाव्य। ६. उज्झित्वा, अवतरति। ७. भ्रूभङ्गं कृत्वा, कृतककलहम्। ८. परिगृहीतार्थो भूत्वा, निश्चेष्यामि। **(घ)** १. अलमप्रासङ्गिकेन, प्रकृतमेवानुसंधीयताम्। २. अलं स्नेहभणितेन। ३. अलमेतावद्भिः कुसुमैः। ४. कृतमत्यायासेन। ५. आपन्नत्राणविकलैः किं प्राणैः पौरुषेण वा। ६. अमर्षणः शोणितकाङ्क्ष्या किं पदा स्पृशन्तं दशति द्विजिह्वः। ९. यच्छक्यम्। **(ङ)** महार्घाणि, अल्पार्घाणि।

शब्दकोष-१०७५+२५=११००] **अभ्यास ४४** (व्याकरण)

(क) आर्द्रालुः (पुं०, आड़ू), सीताफलम् (शरीफा), पुंनागम् (फालसा), आम्रातकम् (१. आँवड़ा, २. अमावट), आम्रचूर्णम् (अमचूर), कर्कटिका (ककड़ी), मधुकर्कटी (स्त्री०, चकोतरा), खर्बुजम् (खरबूजा), कालिन्दम् (तरबूज), कर्मरक्षम् (कमरख), खर्जूरम् (खजूर), लकुचम् (बड़हल), शृङ्गाटकम् (सिंघाड़ा), निर्बीजम् (१. बिदाना अंगूर, २. बिदाना अनार), शुष्कफलम् (मेवा), वातादम् (बादाम), अक्षोटम् (अखरोट), अङ्कोलम् (पिस्ता), काजवम् (काजू), शुष्कद्राक्षा (किशमिश), मधुरिका (मुनक्का), क्षुधाहरम् (छुहारा), मखान्नम् (मखाना), प्रियालम् (चिरौंजी), पौष्टिकम् (पोस्ता) (२५)

व्याकरण (नौ, वाच्, आप्, शक्, ल्यप्, णमुल् प्रत्यय)

१. नौ और वाच् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ५१, ५२)

२. आप् और शक् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ६८, ६९)

नियम २२१—(समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्) धातु से पूर्व कोई अव्यय, उपसर्ग या च्वि प्रत्यय हो तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् हो जाता है। ल्यप् का य शेष रहता है। धातु से पहले नञ् (अ) होगा तो ल्यप् नहीं होगा। ल्यप् अव्यय होता है, अतः इसके रूप नहीं चलते। जैसे—आलिख्य, संपठ्य, स्वीकृत्य। परन्तु अकृत्वा, अगत्वा।

नियम २२२— ल्यप् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें—**(क)** साधारणतया धातु अपने मूल रूप में रहती है। गुण या वृद्धि नहीं होती है। इ भी बीच में नहीं लगता। जैसे—विलिख्य, आनीय, विहस्य। **(ख)** (अन्तरङ्गानपि विधीन्०) ल्यप् होने पर धातु को कोई भी आदेश आदि नहीं होगा। जैसे—प्रदाय, विधाय, प्रखन्य, प्रस्थाय, प्रक्रम्य, आपृच्छ्य, प्रदीव्य, प्रपठ्य। इन स्थानों पर दत्, हि, दीर्घ, इ आदि नहीं हुए। **(ग)** (न ल्यपि) दा, धा, मा, स्था, गा, पा, हा, सा के आ को ई नहीं होगा। प्रदाय, प्रधाय, प्रगाय, प्रपाय, विहाय आदि। **(घ)** (वा ल्यपि) गम् आदि के म् का लोप विकल्प से होता है, हन् आदि के न् का लोप नित्य। (लोप होने पर बीच में अगले नियम ङ से त्) आगम्य > आगत्य, प्रणम्य > प्रणत्य। आहत्य, वितत्य, अनुमत्य। **(ङ)** (ह्रस्वत्य पिति कृति तुक्) ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ के बाद ल्यप् से पहले त् लग जाता है। अर्थात् त्य होता है। आगत्य, अधीत्य, विजित्य, संश्रुत्य, प्रहत्य, प्रकृत्य। **(च)** दीर्घ ॠ को ईर्, पॄ को पूर् होगा। उत्तीर्य, विकीर्य, प्रपूर्य। **(छ)** (वचिस्वपि०, ग्रहिज्या०) वच् आदि को संप्रसारण होगा। वच् > प्रोच्य, वद् > अनूद्य, वस् > अध्युष्य, स्वप् > प्रसुप्य, ह्वे > आहूय, ग्रह् > संगृह्य, प्रच्छ् > आपृच्छ्य। **(ज)** (णेरनिटि) णिजन्त धातुओं के 'इ' का लोप हो जाता है। विचारि > विचार्य। **(झ)** (ल्यपि लघुपूर्वात्) धातु की उपधा में ह्रस्व अक्षर हो तो इ को अय् होगा। विगणय्य, प्रणमय्य, विरचय्य। **(ञ)** इनके ये रूप होते हैं—क्षि > प्रक्षीय, प्रापि > प्राप्य, प्रापय्य, वे > प्रवाय, ज्या > प्रज्याय, व्ये > उपव्याय। मी या मि > प्रमाय। ली > विलीय, विलाय।

नियम २२३— **(क)** (आभीक्ष्ण्ये णमुल् च, नित्यवीप्सयोः) 'बार-बार करना' अर्थ में क्त्वा (त्वा) और णमुल् (अम्) दोनों होते हैं। णमुल् में धातु को वृद्धि। इन प्रत्ययों के होने पर शब्द को दो बार पढ़ा जायेगा। स्मृ>स्मारं स्मारम्, स्मृत्वा स्मृत्वा (याद करके)। पायं पायम्, पीत्वा पीत्वा। भोजं भोजम्- भुक्त्वा भुक्त्वा। श्रावं श्रावम्-श्रुत्वा श्रुत्वा। **(ख)** (अन्यथैवं०) अन्यथा, एवम् आदि के साथ णमुल् होगा। अन्यथाकारम्, एवंकारम्, कथंकारं ब्रूते।

अभ्यास ४४

संस्कृत बनाओ—(क) (नौ, वाच् शब्द) १. बड़े **पुण्यरूपी मूल्य से** तुमने यह **शरीररूपी नौका** खरीदी है। २. वह नौका से तीव्र वेगवाली नदी को पार करता है (उत्तॄ)। ३. चित्त, **वाणी** और क्रिया में सज्जनों की एकरूपता होती है। ४. **वाणी उसके पीछे अधीनस्थ के तुल्य चलती है।** ५. लौकिक सज्जनों की **वाणी अर्थ के पीछे चलती है, किन्तु आदिकालीन ऋषियों की वाणी के पीछे अर्थ चलता है।** ६. यह बात सिद्ध है **कि ब्राह्मणों की वाणी में बल होता है और क्षत्रियों के बाहुओं में बल होता है।** ७. **वे लोग** विद्वानों में **सभ्यतम** गिने **जाते हैं, जो मनोगत बात को वाणी से प्रकट कर सकते हैं।** **(ख)** (आप्, शक् धातु) १. **इससे क्या लाभ होगा?** २. इससे यह **निष्कर्ष निकलता है।** ३. तुम चक्रवर्ती पुत्र को **प्राप्त करो** (आप्)। ४. ईश्वर जगत् में व्याप्त है (व्याप्)। ५. परीक्षा **समाप्त हुई** (समाप्)। ६. कौन इस दुष्कर काम को कर सकता है? ७. राम ही रावण को **मार सका।** **(ग)** (ल्यप्, णमुल्) १. तुम **किसलिए** हम पर दोषारोपण कर रहे हो? २. **सत्य विषय पर** गांधीजी ने लेख लिखे हैं। ३. **यदि युद्ध को त्यागकर** मृत्यु का भय न हो तो युद्ध को छोड़कर जाना उचित है। ४. कन्या को पति-गृह **भेजकर** मेरी अन्तरात्मा प्रसन्न हो गई है। ५. **इस पर अधिक विचार मत करो।** ६. **सब लोग इष्ट वस्तु को पाकर** सुखी हो जाते हैं। ७. कान **बन्द करके, ऐसा न हो।** ८. सारी **बात पत्र में लिखकर** दो। ९. वह हाथ **जोड़कर** बोला। १०. उसने **लम्बी साँस लेकर और पृथ्वी पर घुटने टेककर** अपनी करुण कथा कही। ११. **मेरी बात काटकर** क्यों बोलते हो? १२. सज्जन औरों का **सत्कार करके,** उनकी प्रार्थना **स्वीकार करके और उन्हें पुरस्कृत करके** सुखी होते हैं। १३. दुर्जन दुर्भाव को **मन में रखकर, छिपकर, एकत्र होकर, तिरस्कार करके और दुःख देकर** सुख का अनुभव करते हैं। **(घ)** (चतुर्थी)। १. **इससे काम चल जायगा।** २. उसने चावलों को **धूप में डाला।** ३. **उन्होंने लड़ाई के लिए कमर कस ली है।** ४. मैं उनको **कुछ नहीं समझता।** ५. जो आपको रुचे (रुच्) वह कीजिए। ६. **पापियों का नाम भी न लो, उससे अमंगल होगा।** **(ङ)** (फलवर्ग) **डॉक्टर** और वैद्य फलों का बहुत महत्त्व बताते हैं। फल रक्त को शुद्ध करके लाल बनाता है। भोजन के बाद या **तीसरे पहर** फल खावे। आड़ू, शरीफा, फालसा, ककड़ी, खरबूजा, तरबूज, कमरख, सिंघाड़ा और बिदाना सभी लाभप्रद हैं। मेवा भी पौष्टिक और रक्तवर्धक है। बादाम, अखरोट, पिस्ता, काजू, किशमिश, मुनक्का, छुहारा, मखाना, चिरौंजी और पोस्ता का भी सेवन करो।

संकेत—(क) १. पुण्यपण्येन, कायनौः। ३. वाचि। ४. तं वाग् वश्येवानुवर्तते। ५. अर्थं वागनुवर्तते। ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोऽनुधावति। ६. वाचि वीर्यं द्विजानाम्। बाह्वोर्वीर्यं यत् तत् क्षत्रियाणाम्। ७. भवन्ति ते सभ्यतमा विपश्चितां, मनोगतं वाचि निवेशयन्ति ये। **(ख)** १. अतः किं प्राप्यते। २. प्राप्नोति। ३. आप्नुहि। ५. समापत्। ७. हन्तुमशकत्। **(ग)** १. किमुद्दिश्य। २. सत्यमधिकृत्य। ३. यदि समरमपास्य। ४. संप्रेष्य। ५. अलं विचार्य। ६. सर्वः प्रार्थितमर्थमधिगम्य। ७. पिधाय, शान्तं पापम्। ८. वृत्तं पत्रमारोप्य। ९. समानीय। १०. दीर्घं निःश्वस्य, जानुभ्यामवनौ पतित्वा। ११. मद्वचनमाक्षिप्य। १२. सत्कृत्य, उररीकृत्य, पुरस्कृत्य। १३. मनसिकृत्य, तिरोभूय, संहत्य, तिरस्कृत्य, प्रपीड्य। **(घ)** १. इदं मे इष्टसिद्धये कल्पेत। २. आतपे उज्झितवती। ३. युद्धाय बद्धपरिकरास्ते। ४. तृणाय मन्ये। ६. कथाऽपि खलु पापानामलमश्रेयसे यतः। **(ङ)** भिषग्वराः, अपराह्णे।

शब्दकोष-११००+२५=११२५]	**अभ्यास ४५**	(व्याकरण)

(क) केसरिन् (शेर), द्वीपिन् (व्याघ्र, बघेरा), तरक्षुः (पुं०, तेंदुआ), भल्लूकः (भालू), शाखामृगः (बन्दर), गोमायुः (पुं०, गीदड़), वराहः (सूअर), शल्यः (सेंह), वृकः (भेड़िया), कुरङ्गः (मृग), उक्षन् (बैल), लोमशा (लोमड़ी), महिषः (भैंसा), महिषी (स्त्री०, भैंस), अजः (बकरा), मेषः (भेड़), कौलेयकः (कुत्ता), सरमा (कुतिया), खरः (गदहा), मार्जारी (स्त्री०, बिल्ली), वृश्चिकः (बिच्छू), गोधा (गोह), गृहगोधिका (छिपकली), लूता (मकड़ी), कर्णजलौका (१. कानखजूरा, २. गोजर) (२५)

व्याकरण—(स्रज्, सरित्, चि, अश्, तव्य, अनीय, केलिमर्)

१. स्रज् और सरित् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ५३, ५४)

२. चि और अश् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ७०, ७१)

नियम २२४—(कृत्य प्रत्यय) (क) (तव्यत्तव्यानीयरः) 'चाहिए' अर्थ में धातु से तव्य, तव्यत् और अनीयर् प्रत्यय होते हैं। तव्यत् का तव्य और अनीयर् का अनीय शेष रहता है। तव्य और तव्यत् में कोई अन्तर नहीं है। वेद में तव्यत्वाला शब्द स्वरित होगा, तव्यवाला नहीं। **(ख)** (तयोरेव कृत्यक्त०) कृत्य प्रत्यय अर्थात् तव्य, अनीय आदि भाववाच्य और कर्मवाच्य में होते हैं। (१) जब ये कर्मवाच्य में होंगे तो कर्म के अनुसार इनके लिंग, वचन और विभक्ति होंगे। कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया कर्म के अनुसार। जैसे—तेन त्वया मया अस्माभिः वा पुस्तकानि पठितव्यानि, पठनीयानि वा। (२) जब तव्य और अनीय भाववाच्य में होंगे तो इनमें नपुंसक० एकवचन ही रहेगा, कर्ता में तृतीया होगी। जैसे—तेन हसितव्यम्, हसनीयं वा। (३) तव्य और अनीय प्रत्ययान्त के रूप पुं० में रामवत्, स्त्रीलिंग में रमावत् और नपुं० में गृहवत् चलेंगे।

नियम २२५—'तव्य' प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए देखो नियम २१७। वह नियम पूरा लगेगा। 'तव्य' प्रत्यय लगाकर रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि तुमुन्-प्रत्ययान्त धातु-रूप में तुम् के स्थान पर तव्य लगा दो। जैसे—कर्तुम्-कर्तव्य, पठितुम्-पठितव्य। लेखितव्यम्, हर्तव्यम्।

नियम २२६—'अनीय' प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें। ल्युट् (अन), अच् (अ), अप् (अ) में भी ये नियम लगेंगे। **(क)** साधारणतया धातु में कोई अन्तर नहीं होता। धातु मूलरूप में रहती है। बीच में इ नहीं लगेगा। गम् > गमनीय। हसनीय, पठनीय। पा > पानीय। दानीय, स्नानीय। **(ख)** धातु के अन्तिम इ ई को ए, उ ऊ को ओ, ऋ ॠ को अर् गुण होगा। उपधा के इ, उ, ऋ को भी क्रमशः ए, ओ, अर् गुण होगा। जैसे—जि > जयनीय, नी > नयनीय, श्रु > श्रवणीय, भू > भवनीय, कृ > करणीय। लेखनीय, शोचनीय, कर्षणीय। **(ग)** धातु के अन्तिम ए और ऐ को आ होगा। आह्वे > आह्वानीय, गै > गानीय।

नियम २२७—(केलिमर उपसंख्यानम्) चाहिए अर्थ में केलिमर् प्रत्यय भी होता है। इसका एलिम शेष रहता है। पचेलिमा माषाः (पकाने योग्य उड़द)। भिदेलिमाः सरलाः (तोड़ने योग्य चीड़ के वृक्ष)।

अभ्यास ४५

संस्कृत बनाओ—(क) (स्रज्, सरित् शब्द) १. **यदि यह माला प्राणघातक है तो** मेरे हृदय पर **रखी हुई** मुझे क्यों नहीं मारती? २. **अन्धा सिर पर डाली हुई माला को साँप समझकर फेंक देता है।** ३. रोग (रुज्) से पीड़ित को शान्ति नहीं मिलती। ४. ग्रीष्म में नदियों का जल **कम हो जाता है** और वर्षा में बढ़ जाता है। ५. लक्ष्मी बिजली (विद्युत्) की तरह चपला है। ६. स्त्रियाँ (योषित्) अपने बच्चों के लिए क्या कष्ट नहीं **उठातीं? (ख)** (चि, अश् धातु) १. बालिका लता से फूलों को चुनती है (चि)। २. जो धन को इकट्ठा करता है (संचि), पर उसका **उपभोग नहीं करता** (उपभुज्), उसका वह धन व्यर्थ है। ३. व्यायामप्रिय का **शरीर पुष्ट होता है** (प्रचि)। ४. राजहंस, तेरी वही श्वेतता है, **न बढ़ती है और न घटती है। ५. मैं परिचित हूँ** (परिचि) कि वह जो कहता है, वही करता है। ६. व्यापार से धन **बढ़ता है** (उपचि) और अपव्यय से **घटता है** (अपचि)। ७. वह अपने कर्तव्य का **निश्चय करता है** (निश्चि) और उसका पालन करता है। ८. माली माला बनाने के लिए फूलों को इकट्ठा करता है (समुच्चि)। ९. **अर्थ को जाननेवाला ही पूर्ण कुशलता प्राप्त करता है।** १०. अत्युत्कट **पाप-पुण्यों का फल यहीं मिलता** (अश्)। **(ग)** (कृत्यप्रत्यय) १. रात्रि में भी **पूरा सोना नहीं मिलता।** २. गुरुओं की आज्ञा **अनुल्लंघनीय होती है।** ३. इच्छानुसार **काम करना चाहिए, निन्दा कहाँ नहीं मिलती। ४. जलाशय तक प्रेमी के साथ जाए।** ५. कभी भी सज्जन **शोक के अधीन** नहीं होते। ६. भवितव्यता बलवती होती है। ७. **होनहार के** सर्वत्र द्वार हो जाते हैं। ८. मित्र के वाक्य का **उल्लंघन नहीं करना चाहिए।** ९. **परस्त्री को नहीं देखना चाहिए।** १०. **जो सुनना था सुन लिया, जो जानना था जान लिया, जो करना था कर लिया।** ११. **ऐसी स्थिति में** हमें क्या करना चाहिए? १२. **पूज्य का अपमान नहीं करना चाहिए। (घ)** (चतुर्थी) १. युद्ध के लिए **तैयारी करता है।** २. देवदत्त को **पूआ पसन्द है।** ३. यज्ञदत्त राम का सौ रुपये ऋणी है (धारि)। ४. वह विद्या की इच्छा करता है (स्पृह्)। ५. **मैं इस दुलारे** शिशु को चाहता हूँ (स्पृह्)। ६. यह लकड़ी **खंभे के लिए है,** यह सोना कुण्डल के लिए है और यह **ऊखल कूटने के लिए है। (ङ)** (पशुवर्ग) मनुष्य के तुल्य पशु भी दया के पात्र हैं। पशु-हत्या घृणित कार्य है। पशु भी मनुष्य के उपकार को मानते हैं। अकारण ही शेर, बघेरा, तेंदुआ, भालू, बन्दर, गीदड़, सूअर, भेड़िया, मृग, गाय, बैल, बछड़ा, भैंसा, भैंस, कुत्ता, बिल्ली, बकरा, साँप या बिच्छू को नहीं मारना चाहिए।

संकेत—(क) १. स्रगियं यदि जीवितापहा, निहिता। २. स्रजमपि शिरस्यन्धः क्षिप्तां धुनोत्यहिशङ्कया। ४. क्षीयते। ६. सहन्ते। **(ख)** २. नोपभुङ्क्ते। ३. गात्राणि प्रचीयन्ते। ४. चीयते, न चापचीयते। ५. परिचिनोमि। ६. उपचीयते, अपचीयते। ७. निश्चिनोति। ९. अर्थज्ञ इत्सकलं भद्रमश्नुते। १०. पापपुण्यैरिहैव फलमश्नुते। **(ग)** १. निकामं शयितव्यं नास्ति। २. अविचारणीया। ३. सर्वथा व्यवहर्तव्यं कुतो ह्यवचनीयता। ४. ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः। ५. शोकवास्तव्याः। ७. भवितव्यानाम्। ८. अनतिक्रमणीयम्। ९. अनिर्वर्णनीयं परकलत्रम्। १०. श्रुतं श्रोतव्यं, ज्ञातं ज्ञातव्यम्, कृतं कर्तव्यम्। ११. इत्थंगते। १२. अनतिक्रमणीयानि श्रेयांसि। **(घ)** १. संनह्यते। २. स्वदतेऽपूपः। ५. दुर्ललितायास्मै। ६. यूपाय, अवहननाय उलूखलम्।

शब्दकोष-११२५+२५=११५०] **अभ्यास ४६** (व्याकरण)

(क) पारावत: (कबूतर), चटका (चिड़िया), परभृत: (कोयल), मराल: (हंस), बक: (बगुला), सारस: (सारस), वर्तक: (बतख), कीर: (तोता), सारिका (मैना), ध्वाङ्क्ष: (कौआ), चिल्ल: (चील), गृध्र: (गिद्ध), श्येन: (बाज), कौशिक: (उल्लू), खञ्जन: (खंजन), चाष: (नीलकंठ), दार्वाघाट: (कठफोड़ा), चातक: (चातक), चक्रवाक: (चकवा), बर्हिन् (मोर), षट्पद: (भौंरा), शलभ: (१. पतंगा, २. टिड्डी), सरघा (मधुमक्खी), वरटा (१. हंसी, २. भिरड़, ततैया, बर्र), कुलाय: (घोंसला)। (२५)

व्याकरण (समिध्, अप्, सु धातु, यत्, ण्यत्, क्यप्)

१. समिध् और अप् शब्दों के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ५५, ५६)

२. सु धातु के पूरे रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ७२)

नियम २२८—(यत् प्रत्यय) (अचो यत्) चाहिए या योग्य अर्थ में आ, इ, ई, उ, ऊ अन्तवाली धातुओं से यत् प्रत्यय होता है। यत् का य शेष रहता है। यत् प्रत्यय कर्मवाच्य और भाववाच्य में होता है। कर्मवाच्य में कर्म के तुल्य लिंग, विभक्ति और वचन होंगे। कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा, क्रिया कर्मवत्। भाववाच्य में कर्ता में तृतीया, क्रिया में नपुं० एकवचन। मया अस्माभिः वा जलं पेयम्, दानं देयम्, फलानि चेयानि। मया स्थेयम्।

नियम २२९—यत् प्रत्यय लगाने पर धातु में ये अन्तर होते हैं :- (१) (ईद्यति) आ को ई होकर ए हो जायेगा। आ > ए। दा > देयम्, गा > गेयम्, पा > पेयम्, स्था > स्थेयम्, हा > हेयम्। (२) इ और ई को गुण होकर ए हो जायेगा। चि > चेयम्, जि > जेयम्, नी > नेयम्। (३) उ और ऊ को गुण ओ होकर अव् हो जायेगा। श्रु > श्रव्यम्, हु > हव्यम्, सु > सव्यम्, भू > भव्यम्।

नियम २३०—इन स्थानों पर भी यत् (य) होता है—(१) (पोरदुपधात्) पवर्गान्त और उपधा में अ वाली धातुओं से यत्। शप्यम्, लभ्यम्। (२) (हनो वा यद्०) हन् से यत् और हन् को वध। हन् > वध्य:। (३) (शकिसहोश्च) शक् और सह् धातु से यत्। शक्यम्, सह्यम्। (४) (गदमदचर०) गद् मद् चर् और यम् धातु से यत्। गद्यम्, मद्यम्, चर्यम्, यम्यम्। (५) (अवद्यपण्यवर्या०) अवद्यम् (नीच), पण्यम् (विक्रेय), वर्या (वरणयोग्य स्त्री) ये रूप बनते हैं।

नियम २३१—(ण्यत् प्रत्यय) (१) (ऋहलोर्ण्यत्) ऋकारान्त और हलन्त धातुओं से ण्यत् (य) होगा। अन्तिम ऋ को आर् वृद्धि और उपधा के इ उ ऋ को गुण। कृ>कार्यम्। हार्यम्। धार्यम्। मृज् + ण्यत् = मार्ग्य: होगा। भुज् + ण्यत् = भोज्यम् (भक्ष्य), अन्यत्र भोग्यम् होगा। (२) (त्यजेश्च) त्यज् + ण्यत् = त्याज्यम् होगा। (३) (ओरावश्यके) उकारान्त से अवश्य अर्थ में। लू > लाव्यम्, पू > पाव्यम्।

नियम २३२—(क्यप् प्रत्यय) (१) एतिस्तुशास्०) इन धातुओं से क्यप् (य) होगा और ये रूप बनेंगे—इ > इत्य:, स्तु > स्तुत्य:, शास् > शिष्य:, वृ > वृत्य:, आदृ > आदृत्य:, जुष् > जुष्य:। (२) (मृजेर्विभाषा) मृज् > मृज्य:। (३) (भृञोऽसंज्ञायाम्) भृ > भृत्य: (नौकर)। (४) (विभाषा कृवृषो:) कृ > कृत्यम्, वृष् > वृष्यम्। कृ से ण्यत् होकर कार्यम् भी बनेगा।

अभ्यास ४६

संस्कृत बनाओ —(क) (समिध्, अप् शब्द) १. समिधाओं से अग्नि **प्रदीप्त होती है** (समिन्ध्) । २. हम समिधा लाने के लिए जा रहे हैं । ३. **जल हमारे सुख और इष्ट-प्राप्ति के लिए हो**। ४. **जल में ओषधि के गुण हैं**। ५. **जल सुखप्रद है**। **(ख)** (सु धातु) १. उसने **गिलोय का** रस निचोड़ा (सु) । २. प्राचीन काल में यज्ञों में सोमलता का रस **निचोड़ा जाता था**। ३. **मूर्खता दोषों को छिपा लेती है** (संवृ) । ४. **रक्षारूपी योग से** यह भी प्रतिदिन तप का संचय करता है (संचि) । ५. वह **मन के लड्डू खाता है** (चि) । **(ग)** (कृत्य प्रत्यय) १. **अतः परीक्षा करके गुप्त प्रेम करना चाहिए**। २. सुशिष्य को दी हुई विद्या के तुल्य तुम अशोचनीय हो गई हो। ३. सारी अवस्थाओं में **सुन्दर व्यक्ति रमणीय होते हैं**। ४. **इसको अँगूठी कैसे मिली, इस पर विचार करना चाहिए**। ५. **भूख मुझे खा जायगी**। ६. **ब्राह्मण को निःस्वार्थभाव से षडङ्ग वेदों को पढ़ना चाहिए और** जानना **चाहिए**। ७. उसके **एक अंश का अभिनय किया गया**। ८. **मूर्ख की बुद्धि दूसरे के विश्वास पर चलती है**। ९. वह **नींद के अधीन हो गया**। १०. स्वहितपरायण नहीं **होना चाहिए**। ११. ऐसे लोग सभी की **हँसी के पात्र होते हैं**। १२. अतिथि-विशेष का **सम्मान करना चाहिए**। १३. पापी **निन्दा को प्राप्त होता है**। १४. वह **कायर है,** इसलिए निन्दा को प्राप्त हुआ। १५. तुम **मेरी ओर से** राजा से कहना। **(घ)** (पंचमी) १. वह आय से अधिक व्यय करता है। २. मैंने **तुम्हारे विश्वास पर** और हित **समझकर** ऐसा किया है। ३. **लाचार होकर** मैंने चोरी की। ४. यह मेरे शरीर से **अपृथक् है**। ५. **झगड़ालू झगड़े से बाज नहीं आता**। ६. अतिपरिचय से **तिरस्कार होता है, निरन्तर किसीके घर जाने से** अनादर होता है। ७. वह **रास्ता भूल गया**। ८. **कहने से करना अच्छा है**। ९. कठिन समय में भी धैर्य नहीं **छोड़ना चाहिए**। **(ङ)** (पक्षिवर्ग) पक्षियों की मधुर ध्वनि किसके मन को बलात् नहीं हर लेती। वनों और उपवनों में पक्षी मधुर संगीत करते हैं। कबूतर, कोयल, हंस, बगुले, बतख, तोता, मैना, कौवे, चील, गिद्ध, बाज, खंजन, नीलकंठ, कठफोड़ा, चातक, चकवा, चकवी ये सभी आकाश में उड़ते हैं और मनोरंजन करते हैं। पक्षी वृक्षों में घोंसले बनाकर रहते हैं। भौंरे और मधुमक्खी पुष्पों का पराग ले लेते हैं। मधुमक्खियाँ शहद तैयार करती हैं।

संकेत :—(क) १. समिध्यते। ३. शन्नो देवीरभिष्टये आपः। ४. अप्सु भेषजम्। ५. आपो हि ष्ठा मयोभुवः। **(ख)** १. अमृतवल्लरीम्। २. सूयते स्म। ३. संवृणोति खलु दोषमज्ञता। ४. रक्षायोगात्। ५. गगनकुसुमानि चिनोति। **(ग)** १. अतः परीक्ष्य कर्तव्यं विशेषात् संगतं रहः। ३. रमणीयत्वमाकृतिविशेषाणाम्। ४. अङ्गुलीयकदर्शनमस्य विमर्शयितव्यम्। ५. बुभुक्षया खादितव्योऽस्मि। ६. ब्राह्मणेन निष्कारणः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च। ७. एकदेशोऽभिनेयार्थः कृतः। ८. मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः। ९. निद्राविधेयतां गतः। १०. भाव्यम्। ११. उपहास्यतामुपयान्ति। १२. संमान्यः। १३. वाच्यतां याति। १४. कातरः। १५. मद्वचनात्। **(घ)** २. त्वत्प्रत्ययात्, अवेक्ष्य। ३. गत्यन्तराभावात्। ४. अव्यतिरिक्तः। ५. कलहकामः कलहान्न निवर्तते। ६. अवज्ञा, सन्ततगमनात्। ७. मार्गात् भ्रष्टः। ८. वाचः कर्मातिरिच्यते। ९. त्याज्यम्।

शब्दकोष-११५०+२५=११७५] **अभ्यास ४७** (व्याकरण)

(क) अर्णवः (समुद्र), आपगा (नदी), सरस् (नपुं०, तालाब), सरसी (स्त्री०, झील), ह्रदः (बड़ी झील), आहावः (१. हौज, २. टैंक), तोयम् (जल), वीचिः (स्त्री०, तरंग), आवर्तः (भँवर), कूलम् (तट), सैकतम् (रेतीला किनारा), कर्दमः (कीचड़), नौः (नाव), पोतः (पानी का जहाज), कर्णधारः (नाविक, खेवैया), मीनः (मछली), कुलीरः (केकड़ा), कच्छपः (कछुआ), नक्रः (मगर), भेकः (मेढक)। (२०)। **(ख)** विद् (पाना), लिप् (लीपना), सिच् (सींचना), कृत् (काटना), सृज् (बनाना)। (५)।

व्याकरण (गिर्, पुर्, इष्, प्रच्छ्, घञ् प्रत्यय)

१. गिर् और पुर् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ५७, ५८)

२. इष् और प्रच्छ् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ७३, ७४)

नियम २३३—(१. भावे, २. अकर्तरि च कारके०) धातु का अर्थ बताने में तथा कर्ता को छोड़कर अन्य कारक का अर्थ बताने के लिए घञ् प्रत्यय होता है। घञ् का अ शेष रहता है। घञन्त शब्द पुंलिंग होता है। जैसे—हस् > हासः (हँसी), पच् > पाकः (पकना)। घञन्त के साथ कर्म में षष्ठी होती है। भोजनस्य पाकः, रामस्य हासः।

नियम २३४—घञ् (अ) प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें :—(१) धातु के अन्तिम इ ई, उ ऊ और ऋ ॠ को वृद्धि होकर क्रमशः ऐ, औ, आर् होंगे। धातु की उपधा के अ को आ, इ को ए, उ को ओ और ऋ को अर् होगा। चि > कायः, नी > नायः, प्रस्तु > प्रस्तावः, भू > भावः, कृ > कारः, विकारः, प्रकारः, उपकारः आदि, संस्कृ > संस्कारः, अवतृ > अवतारः। पठ् > पाठः, लिख् > लेखः, रुध् > रोधः, विरोधः आदि। (२) (चजोः कु घिण्ण्यतोः) च् को क् और ज् को ग् होगा। पच् > पाकः, शुच् > शोकः, सिच् > सेकः, त्यज् > त्यागः, भज् > भागः, भुज् > भोगः, मृज् > मार्गः, यज् > यागः, युज् > योगः, रुज् > रोगः। (३) इन धातुओं के ये रूप होते हैं—(क) (घञि च भाव०) भाव और करण में रञ्ज् के न् का लोप। रञ्ज् > रागः। अन्यत्र रङ्गः। (ख) (निवासचिति०) चि के च् को क् होगा निवास, समूह, शरीर और ढेर अर्थ में। चि > कायः। निकायः, गोमयनिकायः। (ग) (मृजेर्वृद्धिः) मृज् > मार्गः। अपामार्गः। (घ) (उपसर्गस्य घञि०) उपसर्गों को विकल्प से दीर्घ होता है। प्रतीहारः, परीहारः, अपामार्गः। (ङ) (नोदात्तोपदेशस्य०) म् अन्तवाली धातुओं को प्रायः वृद्धि नहीं होगी। शमः, दमः, विश्रमः। (अनाचमि०) आचम्, कम्, वम् को वृद्धि होगी। आचामः, कामः, वामः। रम् का रामः होगा। विश्राम शब्द अपाणिनीय है।

नियम २३५—इन स्थानों पर घञ् होता है—(१) (इङश्च) इ धातु से। उप + अधि + इ (आ०) > उपाध्यायः। (२) (उपसर्गे रुवः) उपसर्ग पहले हो तो रु धातु से। संरावः। अन्यत्र रवः। (३) (श्रिणीभुवो०) उपसर्गरहित श्रि नी और भू धातु से। श्रायः, नायः, भावः। अन्यत्र प्रश्रयः, प्रणयः, प्रभवः। (४) (प्रे द्रुस्तुस्रुवः) प्रपूर्वक द्रु स्तु स्रु धातु से। प्रद्रावः, प्रस्तावः, प्रस्रावः। (५) (उन्योर्ग्रः) उत् और नि पूर्वक गॄ धातु से। उद्गारः, निगारः। (६) (परिन्योर्नीणोः०) परिणी और नि + इ (पर०) धातु से द्यूत और उचित अर्थ में। परिणायः, न्यायः।

अभ्यास ४७

संस्कृत बनाओ—(क) (गिर्, पुर् शब्द) १. भगवन्, अपने क्रोध को **रोको,** इस प्रकार **जब तक देवों की वाणी आकाश में फैली,** तब तक शिव के नेत्रों से उत्पन्न अग्नि ने मदन को भस्मसात् कर दिया। २. आप लोगों की प्रिय वाणी से ही मेरा आतिथ्य हो गया। ३. उस बात के **समाप्त होने पर वे वचन बोले।** ४. यह नगरी (पुर्) देवभूमि के तुल्य है। ५. राजा भोज की नगरी में सभी संस्कृतज्ञ विद्वान् रहते थे। वहाँ न चोर थे, न **जुआरी,** न शराबी, न **कबाबी। (ख)** (इष्, प्रच्छ्) १. मैं चाहता हूँ कि आपकी **कुछ सेवा कर सकूँ और आप मुझे स्मरण करें।** २. **ब्राह्मण से** कुशल पूछे और क्षत्रिय से अनामय। ३. अपने **साथी से बिदाई लो** (आप्रच्छ्)। ४. बछड़ा **सहस्रों गायों में भी** अपनी माँ को ढूँढ़ **लेता है** (विद्)। ५. **अन्धकार शरीर पर लिप्त-सा हो रहा है** (लिप्)। ६. कन्याएँ पौधों को **सींच रही हैं** (सिच्)। ७. चाकू से पेन्सिल को **काटता है। ८. मकड़ी** अपने शरीर से ही **धागे को उत्पन्न करती** है (सृज्)। ९. कौन भला उष्ण जल से नवमालिका को सींचता है (सिच्)? १०. **रोगी से पूछो, सुख से सोया या नहीं? ११. तुमने घोर अन्धकार दूर किया** (नुद्)। १२. घोर अन्धकार में मेरी अन्तरात्मा **डूब-सी रही है** (मस्ज्)। १३. **भड़भूजा भाड़ में चने भूनता है** (भ्रस्ज्)। **(ग)** (घञ् प्रत्यय) १. **प्रसंग के अनुकूल ही** कहना चाहिए। २. उर्वशी **लक्ष्मी को भी मात करती है।** ३. वह कहानी **समाप्त हुई।** ४. इसका प्रेम **बहुत गहरा हो गया है।** ५. तूने पिता के द्वारा दिए हुए **पैसे को कैसे खर्च किया?** ६. वह **सदा के लिए** सो गई। ७. **सन्तान न होने से** वह बहुत दुःखित हुआ। ८. **हिम्मत न हारना** वैभव का मूल है। ९. **तुम्हारे दुःख का क्या कारण है? १०. जब आँखें चार होती हैं, मुहब्बत हो ही जाती है। ११. तालाब में पानी बढ़ जाए तो उसको निकाल देना ही उसका प्रतिकार है। १२. हृदय शोक से क्षुब्ध होने पर विलाप से ही सँभलता है। (घ)** (पंचमी) १. **कीचड़ को धोने से न छूना ही अच्छा है।** २. चोर **अपमानसहित** नगर **से निकाला गया। ३. उपदेश देने की अपेक्षा स्वयं करना अच्छा है। ४. तेजोमय ज्योति पृथ्वी से नहीं निकलती। (ङ)** (वारिवर्ग) जल जीवन है। तालाब हो या झील, नदी हो या समुद्र, सर्वत्र जल का महत्त्व है। समद्र का जल ही **भाप बनकर** बादल और **मानसून का** रूप ग्रहण करता है और बरसता है। मगर, कछुए, मछली, मेंढक, केकड़े आदि जल में सुख से विचरण करते हैं। जल में तरंग, भँवर और कीचड़ भी होते हैं। नाविक नौका और जहाजों को जल में **चलाते हैं।**

संकेत—(क) १. संहर, यावद् गिरः खे मरुतां चरन्ति। २. सूनृतया। ३. अवसिते, गिरमुज्जगार। ५. द्यूतकाराः, मांसाशिनः। **(ख)** १. कार्यलवोपपादनोपयोगेन स्मारयितुमात्मानम्। २. ब्राह्मणम्। ३. आपृच्छस्व सहचरम्। ४. धेनुसहस्रेषु, विन्दति। ५. लिम्पतीव तमोऽङ्गानि। ६. सिञ्चन्ति। ७. कृन्तति। ८. तन्तुनाभः, तन्तून् सृजति। १०. रुग्णं सुखशयितं पृच्छ। ११. अदस्त्वया नुन्नमनुत्तमं तमः। १२. मज्जतीव। १३. भ्राष्ट्रमिन्धो भ्राष्ट्रे, भृज्जति। **(ग)** १. प्रस्तावसदृशम्। २. प्रत्यादेशः श्रियः। ३. विच्छेदमाप। ४. अतिभूमिं गतः। ५. द्रव्यस्य कथं विनियोगः कृतः। ६. अप्रबोधाय। ७. सन्ततिविच्छेदात्। ८. अनिर्वेदः। ९. किंनिमित्तं ते सन्तापः। १०. तारामैत्रकं चक्षूरागः। ११. पूरोत्पीडे तडागस्य परीवाहः प्रतिक्रिया। १२. शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते। **(घ)** १. प्रक्षालनाद् हि पङ्कस्य दूरादस्पर्शनं वरम्। २. सनिकारं निर्वासितः। ३. शासनात् करणं श्रेयः। ४. न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्। **(ङ)** बाष्परूपेण परिणम्य, जलदागमस्य, संचालयन्ति।

शब्दकोष-११७५+२५=१२००] **अभ्यास ४८** (व्याकरण)

(क) गात्रम् (शरीर), शिरस् (नपुं०, शिर), शिरोरुहः (बाल), शिखा (चोटी), पलितम् (सफेद बाल), ललाटम् (माथा), लोचनम् (नेत्र), घ्राणम् (नाक) आस्यम् (मुँह), रसना (जीभ), रदनः (दाँत), श्रोत्रम् (कान), कण्ठः (गला), ग्रीवा (गर्दन), स्कन्धः (कंधा), जत्रु (नपुं०, कंधे की हड्डी), कूर्चम् (दाढ़ी), श्मश्रु (नपुं० मूँछ), कपोलः (गाल), ओष्ठः (ओठ), अधरः (नीचे का होठ), भ्रूः (स्त्री०, भौं), पक्ष्मन् (नपुं०, पलक), वक्षस् (नपुं०, छाती), कुक्षिः (पुं०, पेट)। (२५)

व्याकरण—(दिश्, उपानह्, लिख्, स्पृश्, तृच्, अच्, अप्)

१. दिश् और उपानह् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ५९, ६०)

२. लिख् और स्पृश् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ७५, ७६)

नियम २३६—(ण्वुल्तृचौ) धातु से 'वाला' (कर्ता) अर्थ में तृच् प्रत्यय होता है। तृच् का 'तृ' शेष रहता है। जैसे—कृ > कर्तृ (करनेवाला), हृ > हर्तृ (हरनेवाला)। कर्ता के अनुसार इसके लिंग, विभक्ति और वचन होते हैं। पुंलिंग में इसके रूप कर्तृ शब्द (शब्द० सं० ११) के तुल्य चलेंगे। स्त्रीलिंग में अन्त में 'ई' लगाकर नदी (शब्द० ४३) के तुल्य और नपुं० में कर्तृ (शब्द० ६७) के तुल्य रूप चलेंगे। प्रायः सभी धातुओं से तृच् प्रत्यय लगता है। तृच् प्रत्ययान्त के साथ कर्म में षष्ठी होती है। पुस्तकस्य कर्ता, धर्ता, हर्ता वा। धातु को गुण होता है।

नियम २३७—तृच् प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए ये नियम स्मरण कर लें। रूप बनाने का सरल उपाय यह है कि धातु के तुमुन्-प्रत्ययान्त रूप में से तुम् के स्थान पर तृ लगाने से तृच् प्रत्ययान्त रूप बन जाता है। तृच् का प्र० १ में ता होता है। नियम २१७ (क) से (ज) पूरा लगेगा। (क) धातु को गुण होगा। कृ > कर्तुम्=कर्तृ। हर्ता, धर्ता, भर्ता। जेता, चेता, भविता। (ख) सेट् में इ लगेगा, अनिट् में नहीं। पठिता, लेखिता, रोदिता। (ग) पक्ता, भोक्ता, छेत्ता। (घ) प्रष्टा, प्रवेष्टा, स्रष्टा। (ङ) आह्वाता, गाता। (च) गन्ता, रन्ता। (छ) दग्धा, द्रोग्धा, दोग्धा, लेढा, वोढा। (ज) सोढा, वोढा, स्रष्टा, द्रष्टा, आरोढा, ग्रहीता प्र० एक० में।

नियम २३८—(१) (पचाद्यच्) पच् आदि धातुओं से अच् प्रत्यय होता है। अच् का अ शेष रहता है। अच् लगाने से संज्ञाशब्द बन जाते हैं। धातु को गुण होता है। पुंलिंग होता है। रामवत् रूप होंगे। पच् > पचः। इसी प्रकार नदः, चोरः, देवः, चरः, चलः, पतः, वदः, मरः, क्षमः, कोपः, व्रणः, सर्पः, दर्पः आदि। (२) (एरच) इ या ई अन्तवाली धातुओं से अच् (अ) प्रत्यय होता है। गुण ए होकर अय् आदेश। चि > चयः, जि > जयः, नी > नयः। आश्रि > आश्रयः। इसी प्रकार प्रश्रयः, विनयः, प्रणयः।

नियम २३९—(ॠदोरप्) दीर्घ ॠ, उ या ऊ अन्तवाली धातुओं से अप् (अ) प्रत्यय होता है। गुण होता है, पुंलिंग होगा। कॄ > करः, गॄ > गरः। यु > यवः, स्तु > स्तवः। पू > पवः, भू > भवः।

अभ्यास ४८

संस्कृत बनाओ—(क) (दिश्, उपानह् शब्द) १. दिशाएँ स्वच्छ हो गईं और हवा सुखद बहने लगी। २. वायु प्रत्येक दिशा में मकरन्द को फैला रही है (कृ)। ३. दक्षिण दिशा में सूर्य का भी तेज मन्द हो जाता है। ४. कुत्ते को यदि राजा बना दिया जाता है तो क्या वह जूता नहीं चाटता? ५. जूता पैर में हो तो सारी पृथ्वी चमड़े से ढकी-सी दीखती है। **(ख)** (लिख्, स्पृश् धातु) १. अरसिकों को कविता सुनाना मेरे भाग्य में मत लिखना। २. रात्रि ने तारे रूपी अक्षरों से आकाश में अन्धकार की प्रशस्ति लिखी है। ३. उसने शिर, बाल, आँख, नाक, कान और पेट को छुआ? ४. हाथी छूता हुआ भी मार डालता है। ५. वह सोलह वर्ष का हो गया। ६. बिना धन के भी वीर बहुत सम्मानवाले उन्नति के पद को पाता है। ७. किसपर दोष डालूँ (निक्षिप्)? **(ग)** (तृच् आदि प्रत्यय) १. कौन शरीर को शान्ति देनेवाली शरत्कालीन चाँदनी को वस्त्र से रोकता है? २. विषय ऊपर से मनोहर लगते हैं, पर उनका अन्त दुःखद होता है। ३. विद्वानों के लिए कुछ भी अज्ञात नहीं है। ४. विनय सज्जनों को प्रिय क्यों न हो, क्योंकि वह योगियों को मुक्ति देता है। ५. लता ही नहीं रही तो फूल कहाँ? ६. जिसको तुम आग समझते थे, वह स्पर्श के योग्य रत्न है। **(घ)** (षष्ठी) १. ऋषियों के लिए क्या परोक्ष है? २. वीरों का निश्चय कठोर कर्मोंवाला होता है, वह प्रेम-मार्ग को छोड़ देता है। ३. उसमें ईर्ष्या नाममात्र को नहीं है। ४. उसे खाना खाए आज तीसरा दिन है। ५. तुम्हारी बात सत्य-सी प्रतीत होती है। ६. वर्षा हुए दो सप्ताह हो गए। ७. भूकम्प आए एक महीना हो गया। ८. उसका मुँह हर्ष से खिल गया। ९. उसका मुख कमल की शोभा को धारण करता है। १०. उसका सौन्दर्य अवर्णनीय है। **(ङ)** (शरीरवर्ग) शरीर ही मुख्यतः धर्म का साधन है। शरीर को स्वस्थ रखना प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है। स्वच्छ वायु में भ्रमण और व्यायाम से शरीर स्वस्थ और हृष्ट-पुष्ट रहता है। नियमित रूप से स्नान करे और शिर, हाथ, नाक, आँख, कान, गर्दन, कन्धा, छाती, पेट, जाँघ, पैर और मुँह को जल से या साबुन से धोवे। शिर में तेल डाले, माथे पर तिलक लगावे, आँख में अंजन लगावे। दाढ़ी को उस्तरे से साफ करे, मूँछ को साफ रखे, नाखूनों को नेल-कटर (नहरनी) से काटे। अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा, इन पाँचों अँगुलियों को पुष्ट रखे।

संकेतः-(क) १. प्रसेदुः, मरुतो ववुः सुखाः। २. दिशि दिशि, किरति। ३. दक्षिणस्यां, मन्दायते। ४. क्रियते, नाश्नात्युपानहम्। ५. उपानद्गूढपादस्य सर्वा चर्मावृतेव भूः। **(ख)** १. अरसिकेषु कवित्वनिवेदनं शिरसि मा लिख। २. ताराक्षरैः, तमःप्रशस्तिम्। ४. स्पृशन्नपि गजो हन्ति। ५. षोडशवर्षवयोऽवस्थामस्पृशत्। ६. स्पृशति बहुमानोन्नतिपदम्। **(ग)** १. शरीरनिर्वापयित्रीम्, वारयति। २. आपातरम्या विषयाः पर्यन्तपरितापिनः। ३. धीमताम्, अविषयः। ४. योगिनां परिणमन् विमुक्तये, केन नास्तु विनयः सतां प्रियः। ५. लतायां पूर्वलूनायां प्रसवस्योद्भवः कुतः। ६. आशङ्कसे यदग्निम्। **(घ)** १. किमृषीणाम्। २. वीराणां समयो हि दारुणरसः स्नेहक्रमं बाधते। ३. अदत्तावकाशो मत्सरस्य। ४. कृताहारस्य तस्य। ५. सत्यमिव प्रतिभाति। ६. सप्ताहद्वयं वृष्टस्य देवस्य। ७. मासैकं भुवः कम्पितायाः। ८. हर्षोत्फुल्लं बभौ। ९. उद्वहति। १०. श्रीर्वचनानामविषया। **(ङ)** शरीरमाद्यम्, फेनिलेन प्रमार्जयेत्, निक्षिपेत्, दद्यात्, कृन्तेत्, नखनिकृन्तनेन, कृन्तेत्।

शब्दकोष-१२००+२५=१२२५] **अभ्यास ४९** (व्याकरण)

(क) पृष्ठम् (पीठ), श्रोणिः (स्त्री०, कमर), ऊरुः (पुं०, जंघा), जानुः (पुं०, घुटना), गुल्फः (टखना, पैर के जोड़ की हड्डी), बाहुः, (बाँह), कफोणिः (स्त्री०, कोहनी), मणिबन्धः (कलाई), चपेटः (चपत), मुष्टिः (स्त्री०, मुट्ठी), करभः (कलाई से कनी अँगुलि तक हाथ का बाहरी भाग), नाडिः (स्त्री०, नाड़ी), शिरा (स्त्री०, नस), फुप्फुसम् (फेफड़ा), हृदयम् (हृदय), यकृत् (नपुं०, जिगर), प्लीहा (तिल्ली), अन्त्रम् (आँत), पृष्ठास्थि (नपुं०, रीढ़), शुक्रम् (वीर्य), रजस् (रज), रुधिरम् (खून), आमिषम् (मांस), वसा (चर्बी), मज्जा (हड्डी के अन्दर की चर्बी)। (२५)

व्याकरण (वारि, दधि, कृ, गृ, ल्युट्, ण्वुल्, ट प्रत्यय।)

१. वारि और दधि शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ६२, ६३)

२. कृ और गृ धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ७७, ७८)

नियम २४०—(ल्युट् प्रत्यय) (१) (ल्युट् च) भाववाचक शब्द बनाने के लिए धातु से ल्युट् प्रत्यय होता है। ल्युट् के यु को 'अन' हो जाता है। अन प्रत्ययान्त शब्द नपुं० होते हैं। धातु को गुण होता है। ल्युट् (अन) प्रत्यय में भी वही नियम लगते हैं जो अनीय प्रत्यय में लगते हैं। देखो नियम २२६। गम् > गमनम् (जाना)। इसी प्रकार पठनम्, लेखनम्, जयनम्, पूजनम्। कृ > करणम्। हरणम्, भरणम्, मरणम्, रोदनम्। (२) (करणाधिकरणयोश्च) करण और अधिकरण अर्थों में भी ल्युट् (अन) होता है। यानम् (जिससे जाते हैं, सवारी), स्थानम् (जहाँ बैठते हैं), उपकरणम् (जिससे काम करते हैं, साधन), आवरणम् (जिससे ढकते हैं)। (३) (कर्मणि च येन०) कर्ता को सुख मिले तो कर्म पहले होने पर धातु से ल्युट् (अन)। नित्य-समास होगा। पयःपानं सुखम्। (४) (नन्दिग्रहि०) नन्द् आदि से ल्यु (अन) होता है। नन्दनः, जनार्दनः, मधुसूदनः।

नियम २४१—(ण्वुल्तृचौ) करनेवाला (कर्ता) अर्थ में धातु से ण्वुल् प्रत्यय होता है। ण्वुल् के वु को 'अक' हो जाता है। नियम २३४ के तुल्य वृद्धि होगी। कर्ता के तुल्य इसके लिंग होंगे। पुं० में रामवत्, स्त्रीलिंग में 'इका' अन्त में होगा और रमावत्, नपुं० में ज्ञानवत्। कृ > कारकः (करनेवाला), कारिका, कारकम्। पाठकः, लेखकः, हारकः, उपकारकः, सेवकः। (१) (आतो युक्०) आकारान्त धातु में बीच में य् लगेगा। दा > दायकः, धा > धायकः, पा > पायकः। (२) (नोदात्तोपदेशस्य०) इनमें वृद्धि नहीं होगी। शमकः, दमकः, गमकः, यमकः। जन् को भी वृद्धि नहीं होती है। जनकः। (३) इन धातुओं के ये रूप होते हैं— हन् > घातकः, वध् > वधकः, रन्ध् > रन्धकः, रभ् > रम्भकः, लभ् > लम्भकः।

नियम २४२—(ट प्रत्यय) इन स्थानों पर ट (अ) होता है-(१) (चरेष्टः) अधिकरण पहले होने पर चर् धातु से। कुरुचरः। (२) (भिक्षासेना०) भिक्षा आदि पहले हों, तो चर् धातु से। भिक्षाचरः, सेनाचरः, आदायचरः। (३) (पुरोऽग्रतो०) पुरः आदि पहले हों तो सृ धातु से। पुरस्सरः, अग्रतस्सरः, अग्रेसरः, अग्रसरः। (४) (कृञो हेतु०) कृ धातु से हेतु, स्वभाव और अनुकूल अर्थ में। यशस्करी विद्या, श्राद्धकरः, वचनकरः। (५) (दिवाविभानिशाप्रभा०) दिवा आदि पहले हों तो कृ धातु से। दिवाकरः, विभाकरः, निशाकरः, प्रभाकरः, भास्करः, किंकरः, लिपिकरः, चित्रकरः। (६) (कर्मणि भृतौ) कर्म पहले हो तो कृ धातु से। कर्मकरः (नौकर)।

अभ्यास ४९

संस्कृत बनाओ—(क) (वारि, दधि शब्द) १. जिस प्रकार **फावड़े से खोदकर** मनुष्य जल **पा लेता है,** उसी प्रकार छात्र सेवा से गुरुगत विद्या को प्राप्त कर लेता है। २. एक बार चन्द्रमा ने समुद्र के **विमल** (शुचि) जल में **पड़े हुए** अपने प्रतिबिम्ब को देखा और उसने खेदपूर्वक तारा के मुख का **स्मरण किया।** ३. दूध **दही के रूप में** परिणत होता है। ४. दही मीठा है, मधु मधुर है, अंगूर मीठे हैं, **चीनी** भी मीठी है। जिसका मन जिसमें लग गया, **उसके लिए वही मीठा है।** (ख) (कृ, गृ धातु) १. यह कोई वीर बालक सेनाओं के ऊपर **बाणरूपी हिम को डाल रहा है** (कृ)। २. हवा प्रत्येक दिशा में पराग को फैला रही है (कृ)। ३. हरिचरणों में यह फूलों की अंजलि **डाल दी है** (प्रकृ)। ४. घोड़े खुरों से धूलि को **उठा रहे हैं** (उत्कृ)। ५. तेरी तलवार शत्रुओं के अंगों को **टुकड़े-टुकड़े कर दे** (विकृ)। ६. बैल प्रसन्नचित्त हो **मिट्टी खोदता है,** अन्नार्थी मुर्गा **कूड़े को खोदता है,** कुत्ता सोने के लिए **मिट्टी खोदता है** (अपस्कृ, आ०)। ७. रोगी दवा की **गोली को** निगलता है (गृ)। ८. राजा ने वचन **कहा** (उद्गृ)। ९. साँप विष को **उगलता है** (उद्गृ)। १०. बालक अन्न के ग्रास को **निगलता है** (निगृ)। ११. **वह शब्द को नित्य मानता है** (संगृ, आ०)। **(ग)** (ल्युट् आदि) १. **उसने राष्ट्रपतिजी से भेंट की।** २. **मैं राष्ट्रपतिजी से मिलना चाहता हूँ।** ३. **मधुर आकृतिवालों के लिए क्या मण्डन नहीं है?** ४. जीवन में हँसना, रोना, मरना, जीना, उत्थान, पतन **लगा ही रहता है।** ५. विद्या यशस्करी है। ६. **अधिक खेलने के कारण मुझे बहुत ताना सहना पड़ा है।** **(घ)** (षष्ठी) १. वह मेरा **निःस्वार्थ** बन्धु है। २. वह मेरा **विश्वासपात्र है।** ३. राजा के पास **जाता हूँ।** ४. वह सत्कार मेरे **मनोरथों से भी परे** था। ५. लक्ष्मण **तुम्हारी याद करता है।** ६. वह **शिशु पर दया करता है।** ७. यदि **अपने-आपको सँभाल सका** तो विदेश जाऊँगा। ८. **आपका शिष्यों पर पूरा अधिकार है।** ९. पाणिनि वैयाकरणों में श्रेष्ठ हैं। १०. वह **साहसियों में धुरीण और विद्वानों में अग्रणी है।** ११. **क्या तुम पति को याद करती हो? (ङ)** (शरीरवर्ग) शरीर की सुरक्षा के लिए प्राणायाम अनिवार्य है। प्राणायाम से फेफड़ों की सफाई होती है। प्राणायाम से शरीर के प्रत्येक अंग में शुद्ध वायु पहुँचती है। पीठ, कमर, घुटना, टखना, कोहनी, कलाई, मुट्ठी, हृदय, आँत, नसें, नाड़ियाँ, सभी को प्राणायाम से लाभ होता है। वैद्यक के अनुसार वात, पित्त और कफ के विकार से ही शरीर में सभी रोगों की उत्पत्ति होती है। ठीक आहार और विहार से शरीर नीरोग रहता है।

संकेत—(क) १. खनन् खनित्रेण, अधिगच्छति। २. शुचिनि, संक्रान्तम्, सस्मार। ३. दधिभावेन। ४. सिता, तस्य तदेव हि मधुरम्। **(ख)** १. शरतुषारं किरति। ३. प्रकीर्णः। ४. उत्किरन्ति। ५. लवशो विकिरतु। ६. अपस्किरते। ७. गोलिकाम्। ८. उज्जगार। ९. उद्गिरति। १०. निगिरति। ११. शब्दं नित्यं संगिरते। **(ग)** १. राष्ट्रपतिदर्शनं लेभे। २. राष्ट्रपतिदर्शनानुग्रहमिच्छामि। ३. किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्। ४. वरीवर्ति। ६. क्रीडातिशयमन्तरेण महदुपालम्भनं गतोऽस्मि। **(घ)** १. निष्कारणः। २. विश्रम्भभूमिः। ३. उपैमि। ४. मनोरथानामप्यभूमिः। ५. अध्येति तव। ६. शिशोः दयते। ७. आत्मनः प्रभविष्यामि। ८. प्रभवत्यार्यः शिष्यजनस्य। १०. धौरेयः साहसिकानाम-ग्रणीर्विदग्धानाम्। ११. कच्चिद्भर्तुः स्मरसि।

शब्दकोष-१२२५+२५=१२५०] **अभ्यास ५०** (व्याकरण)

(क) कञ्चुकः (कुर्ता), कञ्चुलिका (ब्लाउज), अधोवस्त्रम् (धोती), शाटिका (साड़ी), पादयामः (पायजामा), प्रावारः (कोट), प्रावारकम् (शेरवानी), बृहतिका (ओवरकोट), आप्रपदीनम् (पैंट), अन्तरीयम् (पेटीकोट), अर्धोरुकम् (अण्डरवीयर, जाँघिया), नक्तकम् (नाइट ड्रेस), प्रच्छदपटः (ओढ़नी, चुन्नी), स्यूतवरः (सलवार), रल्लकः (लोई), नीशारः (रजाई), तूलसंस्तरः (गद्दा), आस्तरणम् (दरी), प्रच्छदः (चादर), उपधानम् (तकिया), ऊर्णावरकम् (स्वेटर)। (२१)। (घ) कार्पासम् (सूती), कौशेयम् (रेशमी), राङ्कवम् (ऊनी), नवलीनकम् (नाइलोन का)। (४)

व्याकरण (अक्षि, अस्थि, क्षिप्, मृ, क, खल्, णिनि प्रत्यय)

१. अक्षि और अस्थि शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ६४, ६५)

२. क्षिप् और मृ धातुओं के रूप स्मरण करो (देखो धातु० ७९, ८०)

नियम २४३—(क प्रत्यय) इन स्थानों पर क (अ) प्रत्यय होता है। क का 'अ' शेष रहता है। धातु को गुण नहीं होगा। धातु के अन्तिम आ का लोप होता है। 'वाला' (कर्ता) अर्थ में क प्रत्यय होता है। (१) (इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः) जिन धातुओं की उपधा में इ, उ, ऋ हो उनसे तथा ज्ञा, प्री, कृ धातु से क प्रत्यय। लिख् > लिखः (लेखक), बुध् > बुधः (विद्वान्), कृश् > कृशः (निर्बल), ज्ञा > ज्ञः, प्री > प्रियः (प्रिय), कृ > किरः (बखेरनेवाला)। (२) (आतश्चोपसर्गे) उपसर्ग पहले हो तो आकारान्त धातु से क (अ)। क होने पर आ का लोप होता है। प्र+ज्ञा > प्रज्ञः। विज्ञः, सुज्ञः, अभिज्ञः, आ+ह्वा > आह्वः, प्रह्वः। (३) (आतोऽनुपसर्गे कः) उपसर्ग-भिन्न कोई कर्म पहले हो तो आकारान्त धातु से क। दा > सुखदः, दुःखदः, गोदः। त्रा > आतपत्रम्, गोत्रम्, पुत्रः, क्षत्रः। पा > द्विपः, गोपः, महीपः, पादपः। (४) (सुपि स्थः) कोई शब्द पहले हो तो आकारान्त और स्था धातु से क। पा > द्विपः। स्था > समस्थः, विषमस्थः। (५) (मूलविभुजादिभ्यः कः) मूलविभुज आदि में क होता है। मूलविभुजः, महीध्रः, कुध्रः। (६) (गेहे कः) ग्रह् धातु से गृह अर्थ में क। ग्रह् > गृहम्।

नियम २४४—(खल् प्रत्यय) (ईषद्दुःसुषु०) ईषत्, दुर् या सु पहले हो तो धातु से खल् (अ) प्रत्यय ही होता है, कठिन या सरल अर्थ में। धातु को गुण होगा। ईषत्करः, दुष्करः, सुकरः। दुर्लभः, सुलभः, दुर्गमः, सुगमः, दुर्जयः, सुजयः, दुःसहः, सुसहः।

नियम २४५—(णिनि प्रत्यय) इन स्थानों पर णिनि (इन्) प्रत्यय होता है। नियम २३४ (१) के तुल्य वृद्धि या गुण। पुं० में करिन् के तुल्य, स्त्री० में ई लगाकर नदीवत्, नपुं० में वारिवत्। (१) (नन्दिग्रहि०) ग्रह् आदि धातुओं से णिनि (इन्)। ग्रह् > ग्राही। स्थायी, मन्त्री। (२) (सुप्यजातौ णिनिः०) जाति-भिन्न कोई शब्द पहले हो तो धातु से णिनि होगा, स्वभाव अर्थ में। भुज् > उष्णभोजी, आमिषभोजी, निरामिषभोजी। शाकाहारी, मांसाहारी, मिथ्यावादी, मित्रद्रोही, मनोहारी। वस् > निवासी, प्रवासी। कृ > उपकारी, अपकारी, अधिकारी। (३) (साधुकारिणि) अच्छा करने अर्थ में। साधुदायी। (४) (कर्तर्युपमाने) उपमान अर्थ में। उष्ट्रक्रोशी, ध्वांक्षरावी। (५) (व्रते) व्रत में। स्थण्डिलशायी। (६) (मनः, आत्ममाने खश्च) अपने को समझने अर्थ में मन् धातु से णिनि और खश् (अ)। शब्द के अन्त में खश् में म् लगेगा। पण्डितमानी, पण्डितंमन्यः।

अभ्यास ५०

संस्कृत बनाओ—(क) (अक्षि, अस्थि शब्द) १. वह आँख से काणा है। २. उसकी आँख में तिनका गिर गया (पत्)। ३. **उसे जागते ही रात बीती।** ४. कुत्ता हड्डी **चाटता है।** ५. हड्डियों में **फासफोरस** भी होता है। **(ख)** (क्षिप्, मृ धातु) १. नौकर पर **दोष लगाता है** (क्षिप्)। २. हे मूर्ख सुनार, तू मुझे बार-बार आग में क्यों डालता है (क्षिप्)? **जलने पर मेरे अन्दर गुण और बढ़ जाते हैं** और मैं खरा सोना हो जाता हूँ। ३. जल में पत्थर फेंकता है (क्षिप्)। ४. उसने सूक्ष्म वस्त्र **फेंककर** (अवक्षिप्) मुनिवस्त्र **पहने।** ५. उसने **कृष्ण की निन्दा की** (अवक्षिप्)। ६. अरे मूर्ख, क्यों इस प्रकार **अपमान कर रहा है** (आक्षिप्)। ७. बालक ने ढेला **ऊपर फेंका** (उत्क्षिप्)। ८. वह स्त्री अपना आभूषण सुनार के **पास धरोहर रखती है** (निक्षिप्)। ९. राजा ने उस पर क्रूर दृष्टि **डाली** (निक्षिप्)। १०. **जले पर नमक डालता है** (प्रक्षिप्)। ११. **गन्दी चीजें** आग में न डालो (प्रक्षिप्)। १२. उसने अपना निबन्ध **संक्षिप्त करके** लिखा (संक्षिप्)। १३. आत्मा न उत्पन्न होता है (जन्) **और न मरता है** (मृ)। १४. परमात्मा **न कभी मरा, न वृद्ध हुआ। (ग)** (क, खल् आदि) १. विज्ञ सुखद वचन ही कहता है, दुःखद नहीं। २. यह काम **शीघ्र करना तो सुकर है, पर गुप्त रूप से करना कठिन है।** ३. **आंधी में भी** पहाड़ निष्कम्प रहते हैं। ४. **सबके मन की रुचिकर बात कहना अति कठिन है।** ५. प्रिय के प्रवास से उत्पन्न दुःख स्त्रियों के लिए अति दुःसह होते हैं। ६. **संसार में सुन्दरता सुलभ है, गुणार्जन कठिन है।** ७. तुम्हारे लिए **मृग पकड़ना कठिन** नहीं होगा। ८. बड़ों की इच्छा **ऊँची होती है।** ९. बन्धुजनों के वियोग सन्तापकारी होते हैं। १०. **छिद्रान्वेषी लोग** दोषों को ही देखते हैं। ११. उसने पृथ्वी उसके **हाथों में दे दी। (घ)** (सप्तमी) १. **चौदहवें दिन खूब जोर से वर्षा हुई थी।** २. पति के **कहने में** रहना (स्था)। ३. सपत्नीजन पर प्रिय-सखी का **व्यवहार** करना। ४. **ऐसा होने पर** क्या करना चाहिए? ५. सर्वनाश **प्राप्त होने पर** विद्वान् व्यक्ति आधा छोड़ देता है। ६. रण में जयश्री **उत्कर्ष पर निर्भर है। (ङ)** (वस्त्रवर्ग) वस्त्र शरीर को ढकने के लिए हैं। स्वच्छ और धुले हुए वस्त्र पहनने चाहिए (धारि)। प्राचीन पद्धति को **अपनानेवाले लोग** कुर्ता, धोती पहनते हैं। पाश्चात्य पद्धति को अपनानेवाले लोग कोट, पैंट या पायजामा, शेरवानी पहनते हैं। स्त्रियाँ साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट पहनती हैं। कुर्ता, सलवार और ओढ़नी का पंजाब में अधिक प्रचलन है। आजकल सूती, रेशमी, ऊनी और नाइलोन के कपड़े **अधिक चलते हैं। बिस्तर में** दरी, गद्दा, चादर, तकिया, रजाई, लोई, **कम्बल, दुतई काम आते हैं।**

संकेत—(क) ३. तस्याक्ष्णोः प्रभातमासीत्। ४. लेढि। ५. भास्वरम्। **(ख)** १. दोषान् क्षिपति। २. दग्धे पुनर्मयि भवन्ति गुणातिरेकाः, विशुद्धम्। ४. अवक्षिप्य, अवस्त। ५. कृष्णमवाक्षिपत्। ६. आक्षिपसि। ७. उदक्षिपत्। ८. हस्ते निक्षिपति। ९. निचिक्षेप। १०. क्षारं क्षते प्रक्षिपति। ११. अमेध्यम्। १२. संक्षिप्य। १४. न ममार न जीर्यति। **(ग)** २. शीघ्रमिति सुकरम्, निभृतमिति दुष्करम्। ३. प्रवातेऽपि। ४. सुदुर्लभाः सर्वमनोरमा गिरः। ६. सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम्। ७. मृगो दुरासदः। ८. उत्सर्पिणी। १०. छिद्रान्वेषिणः। ११. हस्तगामिनीमकरोत्। **(घ)** १. चतुर्दशे दिवसे धारासारैरवर्षद् देवः। २. शासने। ३. वृत्तिम्। ४. एवं गते सति। ५. समुत्पन्ने। ६. प्रकर्षतन्त्रा। **(ङ)** स्वीकुर्वाणाः, प्रचलन्ति, शय्यायाम्, कम्बलः, द्वितयी, उपयुज्यन्ते।

शब्दकोष-१२५०+२५=१२७५] **अभ्यास ५१** (व्याकरण)

(क) आभरणम् (आभूषण), मूर्धाभरणम् (वेणी), ललाटाभरणम् (टिकुली), नासाभरणम् (१. नथ, २. बुलाक), नासापुष्पम् (नाक का फूल), कर्णपूरः (कनफूल), कुण्डलम् (कान की बाली), कण्ठाभरणम् (कण्ठा), ग्रैवेयकम् (हसुली), हारः (मोती का हार), एकावली (एक लड़ का हार), मुक्तावली (मोती की माला), स्रज् (पुष्प-माला), केयूरम् (बाजूबन्द, ब्रेसलेट), कङ्कणम् (कंगन), काचवलयम् (चूड़ी), अङ्गुलीयकम् (अँगूठी), कटकः (सोने का कड़ा), त्रौटकम् (हाथ का तोड़ा), मेखला (करधन), नूपुरम् (पाजेब), पादाभरणम् (लच्छे), मुकुटम् (मुकुट), मुद्रिका (नामांकित अँगूठी), किंकिणी (घुँघरू)। (२५)

व्याकरण (मधु, कर्तृ, तुद्, मुच्, क्तिन्, अण्, क्विप्)

१. मधु और कर्तृ शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ६६, ६७)

२. तुद् और मुच् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ८१, ८२)

नियम २४६—(क्तिन् प्रत्यय) (१) (स्त्रियां क्तिन्) धातुओं से स्त्रीलिंग में क्तिन् प्रत्यय होता है। क्तिन् का 'ति' शेष रहता है। 'ति' प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिंग ही होते हैं। गुण या वृद्धि नहीं होगी। सम्प्रसारण होगा। ति प्रत्यय से भाववाचक संज्ञाशब्द बनते हैं। जैसे-कृ > कृतिः, धृतिः, स्तुतिः, भूतिः। 'ति' प्रत्यय लगाकर रूप बनाने के लिए देखो नियम २०८ (क), (ग) से (झ)। साधारणतया क्त-प्रत्ययान्त रूप में त के स्थान पर ति लगाने से ति-प्रत्ययान्त रूप बन जाते हैं। जैसे-गा > गीत > गीति, गम् > गत > गति, वच् > उक्त > उक्ति। (क) कृति, हृति, धृति। (ग) गीति, पीति। (घ) उपमिति, स्थिति। (ङ) गति, मति, नति। (छ) जाति, खाति। (ज) उक्ति, इष्टि, सुप्ति। (झ) ग्लानि, म्लानि। (२) (स्थागापापचो भावे) इनसे भावार्थ में क्तिन्। उपस्थितिः, गीतिः, संपीतिः, पक्तिः। (३) (ऊतियूति०) ये रूप बनते हैं-ऊतिः, हेतिः, कीर्तिः। (४) (संपदादिभ्यः०) संपद् आदि से क्तिन्। संपत्तिः, विपत्तिः।

नियम २४७—(अण् प्रत्यय) (कर्मण्यण्) कोई कर्मवाचक शब्द पहले हो तो धातु से अण् (अ) प्रत्यय होता है। धातु को वृद्धि होती है। कुम्भं करोतीति > कुम्भकारः।

नियम २४८—(क्विप् प्रत्यय) इन स्थानों पर क्विप् प्रत्यय होता है। क्विप् का पूरा लोप हो जाएगा, कुछ शेष नहीं रहेगा। (१) (सत्सूद्विष०) उपसर्ग या अन्य कोई शब्द पहले हो तो सद् सू द्विष् दुह् विद् आदि से क्विप्। उपनिषत्। प्रसूः। मित्रद्विट्। गोधुक्। वेदवित्। (२) (क्विप् च) धातुओं से क्विप् होता है। उखास्रत्, पर्णध्वत्, वाहभ्रट्। (३) (ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्) ब्रह्म आदि पहले हो तो भूत अर्थ में हन् धातु से क्विप्। ब्रह्महा, भ्रूणहा, वृत्रहा। (४) (सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः) सु कर्म आदि पहले हों तो कृ धातु से क्विप्। त् अन्त में जुड़ जाएगा। सुकृत्, कर्मकृत्, पापकृत्, मन्त्रकृत्, पुण्यकृत्। भूभृत् के तुल्य रूप चलेंगे। (५) (भ्राजभास०) भ्राज्, भास्, धुर्व्, द्युत्, ऊर्ज्, पुर् आदि से क्विप् होता है। विभ्राट्, भाः, धूः, विद्युत्, ऊर्क्, पूः।

नियम २४९—(क्वनिप् प्रत्यय) इन स्थानों पर क्वनिप् होता है। इसका 'वन्' शेष रहता है। गुण नहीं होगा। रूप आत्मन् के तुल्य। (१) (दृशेः क्वनिप्) दृश् धातु से क्वनिप्। पारदृश्वा। (२) (राजनि युधिकृञः) राजन् पहले हो तो युध् और कृ धातु से क्वनिप्। राजयुध्वा। (३) (सहे च) सह पहले हो तो युध् और कृ धातु से। सहयुध्वा, सहकृत्वा। (४) (अन्येभ्योऽपि०) अन्य धातुओं से भी क्वनिप्। इ>इत्वा, प्रातरित्वा। बीच में त् लगा है।

अभ्यास ५१

संस्कृत बनाओ—(क) (मधु, कर्तृ शब्द) १. भौंरे कमलों से मधु को पीते हैं। २. दुर्जनों के जिह्वाग्र पर मधु रहता है और हृदय में **घोर विष**। ३. भोजन पकाने के लिए लकड़ियाँ (दारु) लाओ और कुएँ से जल (अम्बु) लाओ। ४. पहाड़ की चोटी पर (सानु) ऋषि-मुनि रहते हैं। ५. आग पर राँगा (त्रपु) और लाख (जतु) **पिघलाओ**। ६. आँसू (अश्रु) **मत गिराओ,** धैर्य रखो। ७. प्रातः सेफ्टी-रेज़र से दाढ़ी (श्मश्रु) बनाओ। ८. ब्रह्म जगत् का **कर्ता, धर्ता और संहर्ता है**। **(ख)** (तुद्, मुच्) १. दुर्जन **वाणीरूपी बाण से** सज्जनों को दुःख देते हैं (तुद्)। २. भीम ने गदा से शत्रु को **चोट मारी** (तुद्)। ३. रात्रि बीत गई, **बिस्तर छोड़ो** (मुच्)। ४. मृगों पर बाण छोड़ता है (मुच्)। ५. सत्यवादी सब पापों से मुक्त हो जाता है। ६. मारो या छोड़ो, यह आपकी इच्छा पर है। **(ग)** (क्तिन् आदि प्रत्यय) १. मनोरथ के लिए कुछ भी **अगम्य** नहीं है। २. **मरना मनुष्यों का स्वभाव है, इसका उल्टा जीवन है।** ३. **अविवेक बड़ी आपत्तियों का घर है।** ४. विपत्ति में (विपद्) धैर्य और वैभव में क्षमा, यह महात्माओं में ही होता है। ५. विपत्ति में धैर्य **धारण करके** रहना चाहिए। ६. **जन्म लेनेवालों पर विपत्ति आती ही है।** ७. **विपत्ति के पीछे विपत्ति और संपत्ति के पीछे संपत्ति चलती है।** ८. संपत्तियाँ **अच्छे आचरणवालों को भी विचलित कर देती हैं।** ९. यह वचन **मर्मवेधी है।** १०. **प्राणियों की इस असारता को धिक्कार है।** **(घ)** (सप्तमी) १. भव्यों पर पक्षपात होता ही है। २. **सब अपने साथियों पर विश्वास करते हैं।** ३. प्रायः ऐश्वर्य से उन्मत्तों में ये विकार **बढ़ते हैं।** ४. प्रजा राजा पर बहुत अनुरक्त है। ५. साहस में श्री रहती है। ६. उसने चावलों को **धूप में डाला।** ७. **पढ़ाई शुरू करने के समय** क्यों खेल रहे हो? ८. **प्रसन्नता के स्थान पर दुःख न करो।** ९. **वर्षा रुकने पर** वह घर गया। १०. यह बात **मेरी समझ के बाहर है।** ११. आप मेरे **पिता की जगह पर हैं।** १२. मेरी **आवाज की पहुँच के अन्दर रहना।** १३. **सिपाही के आते ही** चोर भाग गए। १४. **तुम्हारे रहते हुए** कौन दीनों को दुःख दे सकता है। १५. यज्ञ करने पर वर्षा हुई। १६. **आए हुए** बच्चों को मिठाई दो। **(ङ)** (आभूषणवर्ग) अलंकार शरीर को अलंकृत करते हैं। सधवा स्त्रियाँ सिर पर वेणी, माथे पर मुकुट और टिकुली, नाक में नथ और नाक का फूल, कान में कनफूल और बाली, गले में हँसुली, कण्ठा, मोती का हार और फूल-माला, बाँह में बाजूबन्द, कलाई में कंगन और चूड़ी, अँगुलियों में अँगूठी, कमर में करधन, पैरों में पाजेब, लच्छे और घुँघरू पहनती हैं।

संकेत—(क) २. हालाहलम्। ५. द्रावय। ६. पातय। ८. कर्तृ, धर्तृ, संहर्तृ। **(ख)** १. वाग्बाणेन। २. तुतोद। ३. शय्यां मुञ्च। **(ग)** १. अगतिः। २. मरणं प्रकृतिः शरीरिणां विकृतिर्जीवितमुच्यते बुधैः। ३. अविवेकः परमापदां पदम्। ५. अवलम्ब्य। ६. विपदुत्पत्तिमतामुपस्थिता। ७. विपद् विपदमनुबध्नाति संपत् संपदम्। ८. साधुवृत्तानपि विक्षिपन्ति। ९. मर्मच्छिद्। १०. धिगिमां देहभृतामसारताम् **(घ)** २. सर्वः सगन्धेषु विश्वसिति। ३. **मूर्च्छन्ति**। ६. **सूर्यातपे दत्तवती**। ७. अध्ययने प्रारब्धव्ये। ८. हर्षस्थाने अलं विषादेन। ९. **शान्ते पानीयवर्षे। १०. मम धियः पथि न** वर्तते। ११. पितृस्थाने वर्तते। १२. श्रवणगोचरं तिष्ठ। १३. **प्रविष्टमात्र एव रक्षिणि। १४. त्वयि** वर्तमाने। १६. आगतेभ्यः।

शब्दकोष-१२७५+२५=१३००] **अभ्यास ५२** (व्याकरण)

(क) सिन्दूरम् (सिन्दूर), चूर्णकम् (पाउडर), बिन्दुः (बिन्दी), ललाटिका (टीका), तिलकम् (तिलक), पत्रलेखा (पत्रलेखा), कज्जलम् (काजल), गन्धतैलम् (इत्र), हैमम् (स्नो), शरः (क्रीम), दर्पणः (शीशा), प्रसाधनी (कंघी), ओष्ठरञ्जनम् (लिपस्टिक), कपोलरञ्जनम् (रूज़), नखरञ्जनम् (नेल पॉलिश), फेनिलम् (साबुन), शृङ्गारफलकम् (ड्रेसिंग टेबुल), रोममार्जनी (ब्रश), दन्तधावनम् (१. दाँत का ब्रश, २. दातून), दन्तपिष्टकम् (टूथपेस्ट), दन्तचूर्णम् (१. टूथ पाउडर, २. मंजन), मेन्धिका (मेंहदी), अलक्तकः (लाक्षारस, महावर), उद्वर्तनम् (उबटन), शृङ्गारधानम् (सिंगारदान)। (२५)

व्याकरण (जगत्, छिद्, भिद्, इष्णु, खश् आदि प्रत्यय)

१. जगत् शब्द के रूप स्मरण करो (देखो शब्द० ६८)

२. छिद् और भिद् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ८३, ८४)

नियम २५०—(इष्णुच् प्रत्यय) (अलंकृञ्निराकृञ्०) अलंकृ, निराकृ आदि धातुओं से इष्णुच् प्रत्यय होता है। इष्णु शेष रहता है। धातु को गुण, गुरुवत् रूप। अलंकरिष्णुः। निराकरिष्णुः। उत्पतिष्णुः। उन्मदिष्णुः। रोचिष्णुः। वर्धिष्णुः। सहिष्णुः। चरिष्णुः।

नियम २५१—(खश् प्रत्यय) इन स्थानों पर खश् होता है। इसका अ शेष रहता है। (अरुर्द्विषद०) खश् होने पर पहले अजन्त शब्द के अन्त में 'म्' जुड़ जाएगा। गुण होगा। (१) (एजेः खश्) एजि धातु से खश् (अ)। जनमेजयतीति जनमेजयः। (२) इन स्थानों पर खश् होता है-स्तनन्धयः, अभ्रंलिहो वायुः, मितम्पचः, विधुन्तुदः, अरुन्तुदः, असूर्यम्पश्या, ललाटन्तपः। (३) (आत्ममाने खश्च) अपने-आपको समझने अर्थ में खश्। पण्डितंमन्यः। कालिमन्या। स्त्रियंमन्यः। नरंमन्यः।

नियम २५२—(खच् प्रत्यय) खच् का अ शेष रहता है। पूर्वपद में म् जुड़ेगा। गुण होगा। १. (प्रियवशे वदः खच्) प्रिय, वश पहले हों तो वद् से खच्। प्रियंवदः। वशंवदः। (२) (गमेः सुपि, विहायसो विहः) गम् धातु से खच्। भुजंगमः, भुजंगः। विहंगमः, विहंगः। (३) (द्विषत्परयोस्तापेः) द्विषत् या पर पहले हों तो तापि से खच्। द्विषन्तपः, परन्तपः। (४) इन स्थानों पर खच् होता है-वाचंयमः, पुरन्दरः, सर्वंसहः, कूलंकषा नदी, भयंकरः, अभयंकरः, भद्रंकरः, विश्वंभरः, पतिंवरा कन्या, अरिन्दमः।

नियम २५३—(अथुच्) अथुच् का अथु शेष रहता है। गुण होगा। (ट्वितोऽथुच्) जिन धातुओं में से टु हटा है, वहाँ अथुच् होगा। वेप् > वेपथुः, श्वि > श्वयथुः।

नियम २५४—(ष्ट्रन्) (दाम्नीशस०) दा, नी, शस्, स्तु आदि से ष्ट्रन् होता है। इसका त्र शेष रहता है। गुण होगा। दात्रम्, नेत्रम्, शस्त्रम्, पत् > पत्रम्। दंश् > दंष्ट्रा।

नियम २५५—(इत्र) (अर्तिलूधूसूखन०) ऋ, लू, धू, सू, खन्, सह्, चर् धातुओं से इत्र प्रत्यय होता है। गुण होगा। अरित्रम्, लवित्रम्, खनित्रम्, चरित्रम्।

नियम २५६—(उ) (सनाशंसभिक्ष उः) सन् प्रत्यय जिनके अन्त में हो उनसे, आशंस् और भिक्ष् धातु से उ प्रत्यय होता है। चिकीर्षुः, आशंसुः, भिक्षुः।

नियम २५७—(ड) ड का अ शेष रहता है। टि का लोप होगा। (१) (सप्तम्यां जनेर्डः) सप्तम्यन्त शब्द पहले हो तो जन् धातु से ड। सरसिजम्, सरोजम्। (२) इन स्थानों पर भी ड होता है। प्रजा, अजः, द्विजः।

नियम २५८—(अ) (अ प्रत्ययात्) प्रत्ययान्त धातु से स्त्रीलिंग में अ। बाद में टाप्। चिकीर्षा, जिगीषा, जिज्ञासा, पिपासा।

नियम २५९—(युच्) (ण्यासश्रन्थो०) ण्यन्त से युच् (अन) होता है। कारि>कारणा। हारणा, धारणा।

अभ्यास ५२

संस्कृत बनाओ :- (क) (जगत् शब्द) १. सूर्य **जंगम और स्थावर का** आत्मा है। २. जगत् के **माता-पिता** पार्वती और शिव की वन्दना करता हूँ। ३. **यह सारा संसार ही नश्वर है,** इसमें भी यह शरीर और **अधिक** नश्वर है। ४. यदि एक ही काम से संसार को **वश में करना चाहते हो तो पर-निन्दा से** वाणी को **रोको**। ५. **पत्नी के वियोग में यह सारा संसार वनवत् हो जाता है**। ६. **पत्नी के स्वर्गवास होने पर संसार जीर्ण अरण्यवत् हो जाता है**। ७. मृग **ऊँची छलाँग के कारण आकाश में** अधिक और भूमि पर कम चल रहा है। (वियत्)। ८. वृक्ष से पत्ते **गिर रहे हैं** (पतत्)। ९. लता से फूल **गिरे** (पतितवत्)। **(ख)** (छिद्, भिद् धातु) १. इस आत्मा को शस्त्र नहीं काटते हैं (छिद्)। २. हमारे **बन्धनों को** काटो (छिद्)। ३. तृष्णा को नष्ट करो (छिद्)। ४. मेरे इस संशय को दूर करो (छिद्)। ५. इससे **हमारा कुछ नहीं बिगड़ता** (छिद्)। ६. घड़ा **फोड़कर,** कपड़ा **फाड़कर, गधे की सवारी करके, जिस किसी प्रकार हो मनुष्य प्रसिद्धि प्राप्त करे**। ७. ठण्डा जल भी क्या पहाड़ को नहीं तोड़ देता है (भिद्)। ८. शत्रु ने सन्धि को तोड़ा (भिद्)। ९. **गुप्त बात छः कानों में पड़ते ही समाप्त हो जाती है**। १०. **उड़द को पीसता है** (पिष्)। ११. वह व्यर्थ ही पिष्टपेषण करता है। **(ग)** (इष्णु आदि) १. **बन-ठनकर रहनेवाले लोग** बालों में तेल और इत्र डालते हैं, कंघी से बालों को **सँवारते हैं,** मुँह पर स्नो और क्रीम लगाते हैं। दाँत के ब्रश पर टूथपेस्ट लेकर दाँत साफ करते हैं। जूतों पर **पॉलिश कराते हैं** और वस्त्रों पर **लोहा कराते हैं**। २. **बड़े आदमी मर्मवेधी वचन कभी नहीं कहते**। ३. **कमल शेवाल से घिरा हुआ भी मनोहर होता है**। ४. सज्जन **प्रियवादी, शिष्य आज्ञाकारी,** दुर्जन भयंकर, सत्पुरुष अभयंकर, मुनि **वाक्संयमी,** राजा **शत्रुनाशी,** महल **गगनचुम्बी,** राहु **चन्द्र-पीडक,** सूर्य **ललाटतापी** और कृपण **मितभक्षी** हैं। **(घ)** (प्रसाधनवर्ग) स्त्रियाँ प्रायः शृंगार-प्रिय होती हैं। वे **सज-धजकर रहना चाहती हैं**। वे सिर में सिन्दूर लगाती हैं, माथे पर टीका और बेंदी लगाती हैं, आँखों में काजल, देह में उबटन, नाखूनों पर नेल पॉलिश, गालों पर रूज़, ओठों पर लिपस्टिक, मुँह पर स्नो और क्रीम, पैरों में महावर और हाथों पर मेंहदी लगाती हैं। ड्रेसिंग टेबुल पर सिंगारदान और शृंगार का सामान रखती हैं। कुछ स्त्रियाँ **जूड़ा बाँधती हैं,** कुछ **जूड़े में जाली लगाती हैं** और कुछ बालों में **काँटा** लगाती हैं।

संकेत :- (क) १. जगतस्तस्थुषश्च। २. पितरौ। ३. निखिलं जगदेव नश्वरम्, नितराम्। ४. यदीच्छसि वशीकर्तुम्, परापवादात्, निवारय। ५. प्रियानाशे कृत्स्नं किल जगदरण्यं हि भवति। ६. जगज्जीर्णारण्यं भवति च कलत्रे ह्युपरते। ७. उदग्रप्लुतत्वाद् वियति। ८. पतन्ति सन्ति। ९. पतितवन्ति। **(ख)** २. पाशान्। ४. छिन्धि। ५. न नः किंचिद् छिद्यते। ६. भित्त्वा, छित्त्वा, कृत्वा गर्दभरोहणम्। येन केन प्रकारेण प्रसिद्धः पुरुषो भवेत्। ८. अभिनत्। ९. षट्कर्णो भिद्यते मन्त्रः। १०. माषपेषं पिनष्टि। **(ग)** १. अलंकरिष्णवः, प्रसाधयन्ति, पादूरञ्जनं योजयन्ति, अयस्कारयन्ति। २. अरुन्तुदत्वं महतां ह्यगोचरः। ३. सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यम्। ४. प्रियंवदः, वशंवदः, वाचंयमः, अरिन्दमः, अभ्रंलिहः, विधुन्तुदः, ललाटन्तपः, मितंपचः। **(घ)** अलंकरिष्णवो भवन्ति। वेणीबन्धं बध्नन्ति, वेणीजालं युञ्जन्ति, केशशूकान्।

शब्दकोष १३००+२५=१३२५] **अभ्यास ५३** (व्याकरण)

(क) ग्रामः (गाँव), नगरी (कस्बा), नगरम् (शहर), कुटी (कुटिया), भवनम् (मकान), प्रासादः (महल), मार्गः (सड़क), राजमार्गः (मुख्य सड़क), मृन्मार्गः (कच्ची सड़क), दृढमार्गः (पक्की सड़क), रथ्या (चौड़ी सड़क), वीथिका (१. गली, २. गेलरी), नगरपालिका (म्युनिसिपलिटी), निगमः (कार्पोरेशन), नगराध्यक्षः (म्युनिसिपल चेयरमैन), निगमाध्यक्षः (मेयर), चतुष्पथः (१. चौक, २. चौराहा), पुरोद्यानम् (पार्क), रक्षिस्थानम् (थाना), कोटपालिका (कोतवाली), जनमार्गः (आम रास्ता), उपवेशकक्षः (ड्राइंग रूम), भोजनकक्षः (डाइनिंग रूम), स्नानागारम् (बाथरूम), भाण्डागारम् (स्टोर रूम)। (२५)

व्याकरण (नामन्, शर्मन्, हिंस्, भञ्ज्, अपत्यार्थक प्रत्यय)

१. नामन् और शर्मन् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ६९, ७०)

२. हिंस् और भञ्ज् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ८५, ८६)

नियम २६०—सारे तद्धित के लिए यह नियम मुख्यतया स्मरण कर लें। (तद्धितेष्वचामादेः, किति च) जिस तद्धित प्रत्यय में से ण्, ञ् या क् हटा होगा, वहाँ पर शब्द के प्रथम स्वर को वृद्धि हो जायगी। (१) ञ् हटेवाले प्रत्यय। जैसे-अञ्, इञ्, ढञ्, ठञ्। (२) ण् हटेवाले प्रत्यय-अण्, छण्, ण्य। (३) क् हटेवाले=ठक्, ढक्।

नियम २६१—(अण् प्रत्यय) अपत्य अर्थात् पुत्र या पुत्री के अर्थ में इन स्थानों पर अण् प्रत्यय होगा। अण् का अ शेष रहेगा। शब्द के प्रथम अक्षर को वृद्धि। (यस्येति च) शब्द के अन्तिम अ, आ, इ और ई का लोप हो जायगा। (१) (तस्यापत्यम्) अपत्य अर्थ में अण् (अ) होगा। वसुदेवस्यापत्यम् > वासुदेवः। उपगु > औपगवः। (२) (अश्वपत्यादिभ्यश्च) अश्वपति आदि से अपत्य अर्थ में अण्। अश्वपति > आश्वपतम्। गणपति > गाणपतम्। (३) (शिवादिभ्योऽण्०) शिव आदि से अण्। शिवस्यापत्यम् > शैवः। गङ्गा > गाङ्गः। (४) (ऋष्यन्धकवृष्णि०) ऋषि, अन्धकवंशी, वृष्णिवंशी और कुरुवंशी से अपत्यार्थ में अण्। वसिष्ठ > वासिष्ठः। विश्वामित्र > वैश्वामित्रः। अनिरुद्ध > आनिरुद्धः। नकुल > नाकुलः। सहदेव > साहदेवः। (५) (मातुरुत्संख्या०) कोई संख्या, सम् या भद्र पहले होगा तो मातृ शब्द से अपत्यार्थ में अण्। मातृ को मातुर् हो जायगा। द्विमातृ > द्वैमातुरः। षण्मातृ > षाण्मातुरः। संमातृ > सांमातुरः।

नियम २६२—(इञ् प्रत्यय) अपत्य अर्थ में इन स्थानों पर इञ् प्रत्यय होगा। इञ् का इ शेष रहेगा। शब्द के प्रथम अक्षर को वृद्धि। हरिवत् रूप चलेंगे। (१) (अत इञ्) अकारान्त शब्दों से इञ्। दशरथ > दाशरथिः (राम)। दक्ष > दाक्षिः। सुमित्रा > सौमित्रिः (लक्ष्मण)। द्रोण > द्रौणिः (अश्वत्थामा)। (२) (बाह्वादिभ्यश्च) बाहु आदि से इञ्। उ को गुण ओ होकर अव् हो जाएगा। बाहुः > बाहविः।

नियम २६३—(ढक् प्रत्यय) अपत्य अर्थ में इन स्थानों पर ढक् होगा। ढ को एय हो जायगा। प्रथम स्वर को वृद्धि। (१) (स्त्रीभ्यो ढक्) स्त्रीलिंग शब्दों में ढक् (एय)। विनता > वैनतेयः। भगिनी > भागिनेयः। (२) (द्व्यचः) दो स्वरवाले स्त्रीलिंग शब्दों से ढक्। कुन्ती > कौन्तेयः, माद्री > माद्रेयः, राधा > राधेयः, गङ्गा > गाङ्गेयः।

नियम २६४—(ण्य प्रत्यय) अपत्यार्थ में ण्य। य शेष रहेगा। प्रथम स्वर को वृद्धि। (१) (दित्यदित्या०) दिति, अदिति, आदित्य, पति अन्तवाले शब्दों से ण्य। दिति > दैत्यः, अदिति > आदित्यः, आदित्य > आदित्यः, प्रजापति > प्राजापत्यः। (२) (कुरुनादिभ्यो ण्यः) कुरुवंशी और नकारादि से ण्य। कुरु > कौरव्यः। निषध > नैषध्यः।

अभ्यास ५३

संस्कृत बनाओ-(क) (नामन्, शर्मन् शब्द) १. उसने अपने पुत्र का **नाम रघु रखा।** २. मानी लोग **प्राणों और सुख को** सरलता से छोड़ देते हैं। ३. **अपने किये कर्म को कौन नहीं भोगता** (कर्मन्) ? ४. **वह स्थलमार्ग से चल पड़ा** (वर्त्मन्)। ५. **वे सन्मार्ग से जरा भी नहीं हटे** (सद्वर्त्मन्)। ६. उसने **मन, वचन, शरीर और कर्म से** देशसेवा की। ७. उस वचन ने **उस पर पूरा असर किया** (मर्मन्)। **(ख)** (हिंस्, भञ्ज् धातु) १. जो निरपराध जीवों की हिंसा करता है, वह पापी होता है (हिंस्)। २. शुभ कर्म **पापों को नष्ट करता है** (हिंस्)। ३. किसी भी जीव को न मारो। ४. बन्दर बगीचे को **तोड़-फोड़ रहा है** (भञ्ज्)। ५. राम ने धनुष को तोड़ दिया (भञ्ज्)। ६. कुलमर्यादाओं को न तोड़े। ७. यह सुन्दर भाषण उसकी वाग्मिता को **व्यक्त करता है** (वि+अञ्ज्)। **(ग)** (अपत्यार्थक) १. दाशरथि राम ने जामदग्न्य राम को निर्भीकता से उत्तर दिया। २. वासुदेव ने कुन्ती के पुत्र अर्जुन का सारथि होना स्वीकार किया। ३. **पृथा के पुत्र** भीम ने **धृतराष्ट्र के पुत्र** दु:शासन को मार दिया। ४. राधा के पुत्र कर्ण ने द्रोण-पुत्र अश्वत्थामा से कहा-**मैं सारथि होऊँ या सारथि-पुत्र,** अथवा जो कुछ भी होऊँ, इससे क्या ? **सत्कुल में जन्म होना भाग्याधीन है, पर पुरुषार्थ करना मेरे हाथ में है।** ५. माद्री के पुत्र नकुल और सहदेव युधिष्ठिर के साथ ही वन में गए। ६. सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण ने कभी भी राम का साथ नहीं छोड़ा। **(घ)** (पुरवर्ग) नगर में सज्जन, दुर्जन, विद्वान्, अविद्वान्, धनिक, निर्धन, **बड़े-छोटे,** हिन्दू, **मुसलमान, ईसाई** सभी रहते हैं। नगर की उन्नति सभी नागरिकों का कर्तव्य है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव और सहानुभूति से जन-जीवन सुखमय होता है। अत: इन गुणों को **अपनाना** और इनका उपयोग करना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। प्रत्येक देश में गाँव, कस्बे और नगर होते हैं। गाँवों में **झोपड़ियाँ** और कुटिया होती हैं, परन्तु नगरों में मकान और महल अधिक होते हैं। शहरों में पक्की सड़कें, चौड़ी सड़कें, मेन रोड और गलियाँ भी होती हैं। वहाँ पार्क, **बच्चों के पार्क, बिजलीघर, वाटर-वर्क्स,** थाना, कोतवाली भी होते हैं। छोटे शहरों में म्युनिसिपलिटी होती है और उसका अध्यक्ष म्युनिसिपल-चेयरमैन होता है। बड़े शहरों में कार्पोरेशन होता है और उसका अध्यक्ष मेयर होता है। इनका काम होता है कि नगर की सुरक्षा करें और नगर की उन्नति के लिए सभी साधनों को अपनावें। नगरों में प्रत्येक घर में साधारणतया ड्राइंग रूम, डाइनिंग रूम, बाथरूम, स्टोर रूम, **रसोई, सोने का कमरा, रहने का कमरा,** शौचालय, मूत्रालय और अतिथिगृह होते हैं। कुछ मकानों में यज्ञशाला और **बगीचे** भी होते हैं।

संकेत :- (क) १. नाम्ना रघुं चकार। २. असून् शर्म च। ३. कर्म क: स्वकृतमत्र न भुङ्क्ते। ४. प्रतस्थे स्थलवर्त्मना। ५. सद्वर्त्मनो रेखामात्रमपि न व्यतीयु:। ६. मनोवाक्कायकर्मभि:। ७. तस्य हृदयमर्मास्पृशत्। **(ख)** २. दुष्कृतानि हिनस्ति। ४. भनक्ति। ७. व्यनक्ति। **(ग)** ३. पार्थ: धार्तराष्ट्रम्। ४. सूतो वा सूतपुत्रो वा। दैवायत्तं कुले जन्म मदायत्तं तु पौरुषम्। ६. सांनिध्यम्। **(घ)** ज्येष्ठा:, कनिष्ठा:, यवना:, ईसुमतानुयायिन:, धारणम्, उटजा:, बालोद्यानानि, विद्युद्गृहाणि, उदयन्त्राणि, पाकशाला, शयनगृहम्, वासगृहम्, निष्कुटा:।

शब्दकोष-१३२५+२५=१३५०] **अभ्यास ५४** (व्याकरण)

(क) आपणः (दूकान), विपणिः (स्त्री०, बाजार), महाहट्टः (मंडी), प्राकारः (परकोटा), वृतिः (स्त्री०, बाड़, घेरा), भित्तिः (स्त्री०, दीवार), द्विभूमिकः (दुमंजिला), त्रिभूमिकः (तिमंजिला), चतुःशालम् (चारों ओर मकान, बीच में आँगन), उटजः (झोपड़ी), मण्डपः (१. मंडप, २. टेन्ट), अन्तःपुरम् (रनवास), देहली (देहली), प्रपा (प्याऊ), पथिकालयः (मुसाफिरखाना), अट्टः (अटारी, बुर्जी), वलभी (छज्जा), गोपुरम् (मुख्य द्वार), वेदिका (वेदी), द्वारम् (द्वार), चत्वरम् (चबूतरा), अलिन्दः (घर के बाहर का चबूतरा), अजिरम् (आँगन), निश्रेणिः (सीढ़ी, काठ आदि की), सोपानम् (सीढ़ी)। (२५)

व्याकरण (ब्रह्मन्, अहन्, रुध्, भुज्, चातुरर्थिक प्रत्यय)

१. ब्रह्मन् और अहन् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ७१, ७२)

२. रुध् और भुज् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ८७, ८८)

नियम २६५—(रक्तार्थक) रंग आदि से रँगने अर्थ में ये प्रत्यय होते हैं-(१) (तेन रक्तं रागात्) जिससे रँगा जाए, उससे अण् (अ) प्रत्यय। प्रथम स्वर को वृद्धि। कषाय > काषायम् (गेरु से रँगा हुआ वस्त्र)। माञ्जिष्ठम् (मँजीठ से रँगा हुआ)। (२) (नील्या अन्) नीली शब्द से अन् (अ)। नीली>नीलम् (नील से रँगा हुआ)। (३) (पीतात्कन्) पीत से कन् (क)। पीतकम् (पीले रंग से रँगा हुआ)। (४) (हरिद्रा०) हरिद्रा से अञ् (अ)। हारिद्रम् (हल्दी से रँगा हुआ)।

नियम २६६—(कालार्थक) किसी नक्षत्र से युक्त समय या पूर्णिमा होगी तो ये प्रत्यय होंगे। (१) (नक्षत्रेण युक्तः कालः) नक्षत्र से अण् (अ)। पुष्य > पौषम् अहः, पौषी रात्रिः (पुष्य से युक्त दिन या रात)। (२) (सास्मिन्०) नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा होने पर मास का वह नाम पड़ता है। अण् (अ) प्रत्यय। पुष्य से युक्त मास-पौषः। चित्रा > चैत्रः। विशाखा > वैशाखः। ज्येष्ठा > ज्येष्ठः। अषाढा > आषाढः।

नियम २६७—(देवतार्थक) देवता अर्थ में ये प्रत्यय होते हैं। (१) (सास्य देवता) देवता अर्थ में अण् (अ)। इन्द्र > ऐन्द्रं हविः (इन्द्र है देवता जिसका)। पशुपति > पाशुपतम्। (२) (सोमाट् ट्यण्) सोम से ट्यण् (य)। सोम > सौम्यम्। (३) (वाय्वृतु०) वायु आदि से यत् (य)। वायु > वायव्यम्। पितृ > पित्र्यम्। (४) (अग्नेर्ढक्) अग्नि से ढक्। ढ को एय। अग्नि > आग्नेयम्।

नियम २६८—(समूहार्थक) समूह अर्थ में ये प्रत्यय होते हैं:—(१) (तस्य समूहः) समूह अर्थ में अण् (अ)। काक > काकम् (काक-समूह)। बक > बाकम्। (२) (भिक्षादिभ्योऽण्) भिक्षा आदि से अण् (अ)। भिक्षा > भैक्षम्। युवति > यौवनम् (स्त्री-समूह)। (३) (ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्) ग्राम आदि से तल् (ता)। ग्रामता, जन > जनता (जनसमूह)। बन्धु > बन्धुता। (४) (अनुदात्तादेरञ्) इनसे अञ् (अ) होगा। कपोत > कापोतम्। मयूर > मायूरम् (मयूर-समूह)।

नियम २६९—(अध्ययनार्थक) पढ़ने या जानने अर्थ में ये प्रत्यय होते हैं:—(१) (तदधीते तद्वेद) पढ़ने या जानने अर्थ में अण् (अ)। (न य्वाभ्यां०) संयुक्ताक्षरों में य् से पहले ऐ, व् से पहले औ लगेगा। व्याकरण > वैयाकरणः (व्याकरण पढ़ने या जाननेवाला)। न्याय > नैयायिकः। (२) (क्रमादिभ्यो वुन्) क्रम आदि से वुन् (अक) होता है। मीमांसा > मीमांसकः।

अभ्यास ५४

संस्कृत बनाओ-(क) (ब्रह्मन्, अहन् शब्द) १. ब्रह्म नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त-स्वभाव सर्वज्ञ और सर्वशक्तियुक्त है। २. सभी दानों में **विद्या-दान श्रेष्ठ है।** ३. जो ब्रह्म को जानता है, वह ब्राह्मण होता है। ४. वह वेद में (ब्रह्मन्) निष्णात है। ५. चन्द्रमा चाण्डाल के **घर से** (वेश्मन्) चाँदनी को नहीं हटाता। ६. कवच (वर्मन्) धारण करो, त्योहार (पर्वन्) **मनाओ,** वेद (ब्रह्मन्) पढ़ो, घर में (सद्मन्) सुख से रहो, शुभ लक्षण (लक्ष्मन्) धारण करो। ७. दिन ज्योति का प्रतीक है और रात्रि अन्धकार की। ८. दिन में ऐसा काम न करो, जिससे रात्रि दुःखद प्रतीत हो। ९. **दिन प्रायः बीत गया है। (ख)** (रुध्, भुज् धातु) १. वह **बाड़े में** गायों को रोकता है। २. प्राण और अपान की गति को रोककर प्राणायाम करे (रुध्)। ३. **आशा का बन्धन** ही स्त्रियों के अतिकोमल हृदय को वियोग के समय रोकता है (रुध्)। ४. **बिस्तरे पर बैठकर न खावे** (भुज्)। ५. पापी आदमी सैकड़ों दुःखों को **भोगता** है। ६. उसने राज्य का **धरोहर की तरह पालन किया** (भुज्, पर०)। ७. यह अकेला ही सम्पूर्ण पृथ्वी का **पालन करता है** (भुज्)। **(ग)** (चातुरर्थिक प्रत्यय) १. संन्यासी गेरुआ वस्त्र पहनते हैं। कुछ लोग नील से रँगे हुए वस्त्रों को पहनते हैं, कुछ पीले रंग से रँगे हुए और कुछ हल्दी से रँगे हुए वस्त्रों को। २. संस्कृत में महीनों के नाम नक्षत्रों के नामों से पड़े हैं। पूर्णिमा के दिन जो नक्षत्र होता है, उसके नाम से ही वह मास बोला जाता है, जैसे-चित्रा नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा होने पर चैत्र मास, विशाखा से वैशाख, ज्येष्ठा से ज्येष्ठ, अषाढा से आषाढ, श्रवणा से श्रावण, भद्रपदा से भाद्रपद, अश्विनी से आश्विन, कृत्तिका से कार्तिक, मृगशिरा से मार्गशीर्ष, पुष्य से पौष, मघा से माघ और फल्गुनी से फाल्गुन नाम पड़े हैं। ३. प्राचीन समय में बहुत से अद्‌भुत गुणोंवाले अस्त्र थे। जैसे- आग्नेय, वारुण, वायव्य, पाशुपत आदि। ४. जनता में प्रेम और बन्धुता होनी चाहिए। ५. काक-समूह, बक-समूह, कपोत-समूह और मयूर-समूह, ये अपने समूह के साथ ही रहते, उड़ते और बैठते हैं। ६. वैयाकरण व्याकरण पढ़ता है, नैयायिक न्याय को, मीमांसक मीमांसा को और वेदान्ती वेदान्त को। **(घ)** (पुरवर्ग) बड़े शहरों में बाजार, मंडी और दुकानें होती हैं। जहाँ से नगरनिवासी सामान लाकर अपना आवश्यक कार्य करते हैं। शहरों में दुमंजिले, तिमंजिले, **चौमंजिले** और **आठ मंजिले मकान** भी होते हैं। सीढ़ी के द्वारा ऊपर की मंजिलों पर पहुँचते हैं। आजकल बम्बई, कलकत्ता आदि बड़े शहरों में **लिफ्ट के द्वारा ऊपर की मंजिल पर** सरलता से पहुँच जाते हैं और उससे ही **उतर आते हैं।** प्राचीन नगरों के चारों ओर परकोटा या बाड़ होती थी। मकानों में अटारी, छज्जा, द्वार, मुख्यद्वार, आँगन, सीढ़ी, दीवार, चबूतरा, देहली, रनवास, मंडप भी होते थे। नगरों में प्याऊ, मुसाफिरखाने आदि भी होते थे।

संकेत-(क) २. ब्रह्मदानं विशिष्यते। ५. वेश्मनः। ६. विधिवत् संपादय। ९. परिणतप्रायमहः। **(ख)** १. व्रजम्। ३. आशाबन्धः। ४. शयनस्थो न भुञ्जीत। ५. भुङ्क्ते। ६. न्यासमिवाभुनक्। ७. भुनक्ति। **(घ)** चतुर्भूमिकाः, अष्टभूमिकाः प्रसादाः, उत्थापनयन्त्रेण ऊर्ध्वभूमिम्, अवतरन्ति।

शब्दकोष-१३५०+२५=१३७५] **अभ्यास ५५** (व्याकरण)

(क) गवाक्षः (खिड़की), छदिः (स्त्री०, छत), पटलगवाक्षः (स्काई लाइट), वरण्डः (बरामदा), प्रकोष्ठः (पोर्टिको), कुट्टिमम् (फर्श), कपाटम् (किवाड़), अर्गलम् (अर्गला, किवाड़ के पीछे का डंडा), कीलः (चटकनी), नागदन्तकः (खूँटी), कक्षः (कमरा), महाकक्षः (हॉल), लघुकक्षः (कोठरी), स्तम्भः (खंभा), दारु (नपुं०, लकड़ी), काचः (काँच), अश्मचूर्णम् (सीमेंट), प्रलेपः (प्लास्टर), तृणम् (फूँस), त्रपु (नपुं०, टीन), त्रपुफलकम् (टीन की चद्दर), लौहफलकम् (लोहे की चद्दर), प्रणालिका (नाली), खर्परः (खपड़ा)। (२४)। **(घ)** खर्परावृतम् (खपड़ैल का)। (१)

व्याकरण (हविष्, धनुष्, युज्, तन्, शैषिक प्रत्यय)

१. हविष् और धनुष् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ७३, ७४)

२. युज् और तन् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ८९, ९०)

नियम २७०—(तत्र जातः, तत्र भवः) सप्तम्यन्त शब्दों से उत्पन्न होना आदि अर्थों में शैषिक प्रत्यय अण् आदि होते हैं। मुख्य प्रत्यय ये हैं-(१) (शेषे) अपत्य आदि से शेष अर्थों में अण् आदि होते हैं। चक्षुष् > चाक्षुषं रूपम् (आँख से देखने योग्य), श्रवण > श्रावणः शब्दः। (२) (राष्ट्रावारपाराद्०) राष्ट्र शब्द से घ (इय) और अवारपार से ख (ईन) होते हैं। राष्ट्रे जातः > राष्ट्रियः। अवारपार > अवारपारीणः। (३) (ग्रामाद्यखञौ) ग्राम में य और खञ् (ईन) होते हैं। ग्राम्यः, ग्रामीणः। (४) (दक्षिणापश्चात्०) दक्षिणा आदि से त्यक् (त्य) होता है। दक्षिणा > दाक्षिणात्यः। पश्चात् > पाश्चात्यः। पुरस् > पौरस्त्यः (५) (द्युप्रागपागुदक्०) दिव्, प्राच्, अपाच्, उदच् और प्रतीच् से यत् (य) होता है। दिव्यम्, प्राच्यम्, अपाच्यम्, उदीच्यम्, प्रतीच्यम्। (६) (अमेहक्वतसित्रेभ्य०) अमा, इह, क्व, तः और त्र प्रत्ययान्त से त्यप् (त्य) होता है। अमात्यः, इहत्यः, क्वत्यः, ततस्त्यः तत्रत्यः। (७) (त्यदादीनि च) त्यद् आदि सर्वनामों की वृद्ध संज्ञा होने से छ (ईय) प्रत्यय। तदीयः। यदीयः। (८) (वृद्धाच्छः) शब्द का प्रथम अक्षर दीर्घ हो तो छ (ईय) प्रत्यय। शाला>शालीयः। मालीयः। (९) (भवतष्ठक्छसौ) भवत् शब्द से ठक् (क) और छस् (ईय) होते हैं। भावत्कः, भवदीयः। (१०) (युष्मदस्मदो०) युष्मद्, अस्मद् शब्द के ये रूप बनते हैं- युष्मदीयः (तुम्हारा), यौष्माकीणः, यौष्माकः, तावकीनः (तेरा), तावकः, त्वदीयः। अस्मदीयः, आस्माकीनः, आस्माकः, मामकीनः, मामकः, मदीयः। (११) (कालाट्ठञ्) कालवाचकों से ठञ् (इक)। मास > मासिकम्। वार्षिकम्। (१२) (सायंचिरं०) सायंचिरं आदि के अन्त में तन लग जाता है। सायन्तनम्, चिरन्तनम्, पुरातनम्, सनातनम्।

नियम २७१—(प्रभवति) उत्पन्न होना अर्थ में अण् (अ)। हिमवत् > हैमवती गङ्गा।

नियम २७२—(अधिकृत्य कृते०) जिस विषय को लेकर ग्रन्थ बनाया जाए, वहाँ अण् आदि। शकुन्तला > शाकुन्तलम्। कहानी आदि में प्रत्यय का लोप। वासवदत्ता।

नियम २७३—(तेन प्रोक्तम्) कृति अर्थ में अण् आदि। पाणिनि > पाणिनीयम्।

नियम २७४—इन अर्थों में भी अण् (अ) या इक लगता है। (१) **(तद्गच्छति०)** रास्ता या दूत का जाना। स्रुघ्न > स्रौघ्नः। (२) (सोऽस्य निवासः) निवास अर्थ में अण्। स्रौघ्नः। (३) **(तस्येदम्)** इसका यह है अर्थ में अण्। शरद् > शारदम्। (४) **(कृते ग्रन्थे)** उसके रचित ग्रन्थ अर्थ में। वररुचि > वाररुचम्।

अभ्यास ५५

संस्कृत बनाओ-(क) (हविष्, धनुष् शब्द) १. अग्नि विधिपूर्वक हुत हवि को देवों को **पहुँचाता है**। २. वह **सामग्री** और घी से **हवन करता है**। ३. अग्नि पर **घी को** (सर्पिष्) **पिघलाओ**। ४. आकाश में तारों (ज्योतिष्) की **ज्योति** (रोचिष्) **चमक रही है**। ५. उसने धनुष पर अमोघ बाण **रखा**। ६. आँख से (चक्षुष्) देखकर आगे पैर रखो। ७. **यह शरीर बिना कृत्रिमता के ही सुन्दर है** (वपुष्)। ८. इसका शरीर हर्ष से रोमांचित है। ९. **आयु मर्मस्थलों की रक्षा करती है** (आयुष्)। १०. **प्राण ही जीवों की आयु है**। **(ख)** (युज्, तन् धातु) १. **वे सुख के अर्थ में विषय शब्द का प्रयोग नहीं करते हैं**। २. आत्मा को परमात्मा में लगाओ। ३. उसने **आशीर्वाद दिया**। ४. कल नाटक **खेला जाएगा** (प्रयुज्)। ५. ऋषि असाधुदर्शी हैं, जो इस शकुन्तला को **आश्रम के कार्यों में लगाते हैं** (नियुज्)। ६. उन्मत्त मनुष्य को मूर्खता भी नहीं **छोड़ती है** (वियुज्)। ७. सौभाग्य से **उसकी जान नहीं गई** (वियुज्)। ८. विद्या का सत्कार्य में **उपयोग करे** (उपयुज्)। ९. मलिन भी चन्द्रमा का **चिह्न शोभा को करता है** (तन्)। १०. **सज्जनों की संगति क्या मंगल नहीं करती है** (आतन्)? ११. सत्संगति दिशाओं में कीर्ति को फैलाती है (तन्)। १२. नौकरों ने **शामियाना फैलाया** (वितन्)। **(ग)** (शैषिक प्रत्यय) १. पौरस्त्य और पाश्चात्त्य संस्कृतियों में भेद होते हुए भी पर्याप्त समानता है। दोनों ही मौलिक सिद्धान्तों को मानते और अपनाते हैं। पुरातन हो या नूतन, सभी संस्कृतियों ने विश्व को लाभ पहुँचाया है। २. हे गोविन्द, तुम्हारी वस्तु **तुम्हें भेट करते हैं**। ३. पाणिनीय अष्टाध्यायी सारे व्याकरणों का सार है और विद्वत्ता की पराकाष्ठा है। ४. विद्यालयों और महाविद्यालयों में **पाक्षिक**, मासिक, त्रैमासिक, षाण्मासिक और **वार्षिक** परीक्षाएँ भी होती हैं। ५. **कन्या पराई संपत्ति है। (घ)** (गृहवर्ग) निवास के लिए घरों की आवश्यकता सदा रहती है और सदा रहेगी। समयानुसार इनकी निर्माण-विधि में अन्तर होता रहा है। प्राचीन समय में ग्रामों में मकान फूँस के या खपड़ैल के होते थे। आजकल भी ग्रामों में अधिक मकान फूँस और खपड़ैल के हैं। नगरों में अधिकांश मकान **पक्की ईंटों के** होते हैं। उनमें पक्की ईंटों की छतें होती हैं। खिड़कियाँ, स्काईलाइट, बरामदा, फर्श, किवाड़, चटकनी, खूँटी आदि भी होती हैं। मकानों में सीमेंट का प्लास्टर होता है। कुछ मकानों पर टीन या लोहे की चद्दरें भी लगाई जाती हैं। पहाड़ में मकानों में लकड़ी और काँच अधिक लगाया जाता है, जिससे खिड़की आदि **बन्द होने पर भी** प्रकाश अन्दर आ सके और कमरों में अँधेरा न हो।

संकेतः-(क) १. वहति। २. हविषा, जुहोति। ३. सर्पिः द्रावय। ४. रोचींषि द्योतन्ते। ५. समधत्त। ७. इदं किलाव्याजमनोहरं वपुः। ९. आयुर्मर्माणि रक्षति। १०. प्राणो हि भूतानामायुः **(ख)** १. सुखार्थे विषयशब्दं न प्रयुञ्जते। ३. आशिषं युयुजे। ४. प्रयोक्ष्यते। ५. आश्रमधर्मे नियुङ्क्ते। ६. वियुङ्क्ते। ७. प्राणैर्न व्ययुज्यत। ८. उपयुञ्जीत। ९. लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति। १०. सङ्गः सतां किमु न मङ्गलमातनोति। १२. चन्द्रातपं व्यतानिषुः। **(ग)** २. तुभ्यमेव समर्पये। ४. पाक्षिक्यः, वार्षिक्यः। ५. अर्थो हि कन्या परकीय एव। **(घ)** पक्वेष्टकानिर्मितानि, अवरुद्धेष्वपि।

शब्दकोष-१३७५+२५=१४००] **अभ्यास ५६** (व्याकरण)

(ग) अङ्ग (१. संबोधन, २. आदरार्थ में), अथ (१. मंगलार्थक, २. प्रारम्भ में, ३. बाद में, ४. प्रश्नार्थक), अथकिम् (१. और क्या, २. हाँ), अधिकृत्य (बारे में), अपि (१. भी, २. प्रश्नार्थक, ३. संशय), आम् (हाँ), इति (१. कथनोद्धरण में, २. अतएव), इव (१. सदृश, २. मानो), कच्चित् (आशा करता हूँ कि), क्व⋯क्व (बहुत अन्तर-सूचक), कामम् (भले ही), किमुत (क्या भला), किल (१. वस्तुतः, २. ऐसा कहते हैं, ३. आशा अर्थ में), खलु (१. वस्तुतः, २. प्रार्थनासूचक, ३. निषेधार्थक, ४. क्योंकि), ततः (१. इसलिए, २. तो, ३. वहाँ से, ४. आगे), तथा (१. वैसा, २. और भी, ३. हाँ), तावत् (१. तो, २. तब तक, ३. अभी, ४. वस्तुतः), दिष्ट्या (१. भाग्य से, २. बधाई देना), न⋯न (अवश्य), ननु (१. अवश्य, २. कृपया, ३. क्या, ४. चूँकि), बत (खेद, हर्ष), यथा⋯तथा (१. जैसा-वैसा, २. इस प्रकार⋯कि, ३. चूँकि⋯इसलिए, ४. यदि⋯तो, ५. जितना⋯उतना), यावत्⋯तावत् (१. उतना ही⋯जितना, २. सब, ३. जबतक⋯तबतक, ४. ज्योंही⋯त्योंही), वरं⋯न (अच्छा है⋯न कि), स्थाने (उचित है)। (२५)

व्याकरण (पयस्, मनस्, ज्ञा धातु, मत्वर्थक प्रत्यय)

१. पयस् और मनस् शब्दों के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ७५, ७६)

२. ज्ञा धातु के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ९६)

नियम २७५—(१) (तदस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्) इसके पास है या इसमें है, इन अर्थों में मतुप् प्रत्यय होता है। इसका मत् शेष रहता है। पुं० में भगवत् के तुल्य रूप चलेंगे, स्त्री० ई लगाकर नदीवत्, नपुं० में जगत् के तुल्य। (२) (मादुपधायाश्च०) शब्द के अन्त में या उपधा में अ, आ या म् हो तो मत् के म को व होता है, अर्थात् मत् > वत्। धन > धनवान् (धनयुक्त)। गुणवान्, विद्यावान्, धीमान्, श्रीमान्, बुद्धिमान्। यव आदि के बाद म को व नहीं होगा। यवमान्, भूमिमान्। (३) (झयः) वर्ग के १ से ४ के बाद मत् को वत् होगा। विद्युत् > विद्युत्वान्। (४) (रसादिभ्यश्च) रस आदि से मतुप् प्रत्यय होता है। रसवान्, रूपवान्।

नियम २७६—(अत इनिठनौ) अकारान्त शब्दों से युक्त या वाला अर्थ में इनि (इन्) और ठन् (इक) प्रत्यय होते हैं। दण्ड > दण्डी, दण्डिकः (दण्डवाला)। धन > धनी, धनिकः। इन्-प्रत्ययान्त के रूप पुं० में करिन् के तुल्य, स्त्री में ई लाकर नदीवत्, नपुं० में मनोहारिन् के तुल्य।

नियम २७७—(लोमादिपामादि०) (१) लोमन् आदि से श प्रत्यय। लोमन्>लोमशः (लोमयुक्त)। रोमन् > रोमशः। (२) पामन् आदि से न प्रत्यय। पामन् > पामनः (खाजवाला), अङ्ग > अङ्गना (स्त्री), लक्ष्मी > लक्ष्मणः (लक्ष्मीयुक्त)। (३) पिच्छ आदि से इलच् (इल)। पिच्छ > पिच्छिलः। उरस् > उरसिलः।

नियम २७८—(तदस्य संजातं०) युक्त अर्थ में तारका आदि शब्दों से इतच् (इत) प्रत्यय होगा। तारका > तारकितं नभः। पुष्पितः, कुसुमितः, दुःखितः, अङ्कुरितः, क्षुधितः।

नियम २७९—कुछ मत्वर्थक प्रत्यय ये हैं: (१) (अस्मायामेधा०) अस् अन्तवाले शब्दों, माया, मेधा, स्रज् से विनि (विन्) प्रत्यय। यशस्वी, मायावी, मेधावी, स्रग्वी। (२) (वाचो ग्मिनिः) वाच् से ग्मिन् प्रत्यय। वाग्मी (सुन्दर वक्ता)। (३) (अर्श आदिभ्योऽच्) अर्शस् आदि से अच् (अ)। अर्शसः (बवासीर-युक्त)। (४) (दन्त उन्नत०) दन्त से उरच् (उर)। दन्तुरः। (५) (केशाद् वो०) केश से व प्रत्यय। केश > केशवः।

अभ्यास ५६

संस्कृत बनाओ—(क) (पयस्, मनस् शब्द) १. माता शिशु को दूध **पिला रही है।** २. साँप को **दूध पिलाना** केवल उसका विष बढ़ाना है। ३. **महात्माओं के मन,** वचन (वचस्) और कर्म **में एकरूपता होती है,** पर दुरात्माओं के **मन,** वचन और कर्म **में अन्तर होता है।** ४. मैंने मन से भी कभी **आज तक तुम्हारा बुरा नहीं किया है।** ५. मेरा मन **सन्देह में ही पड़ा है।** ६. **दृढ़ निश्चयवाले मन को और नीचे की ओर बहते हुए पानी को कौन रोक सकता है?** ७. हितकारी और मनोहर वचन दुर्लभ है। ८. **यशस्वी को शत्रुओं से अपने यश की रक्षा करनी चाहिए।** ९. **विमल और कलुषित होता हुआ चित्त बता देता है कि कौन उसका हितैषी है और कौन शत्रु है** (चेतस्)। १०. **उसकी बात पर दुर्भाव का आरोप न लगाओ। (ख)** (ज्ञा धातु) १. मैं तपस्या के बल को जानता हूँ। २. जानता हुआ भी मेधावी संसार में जड़ के तुल्य आचरण करे। ३. हमें घर जाने के लिए **आज्ञा दीजिए** (अनुज्ञा)। ४. मैं करूँगा, **यह प्रतिज्ञा करता हूँ, राम दुबारा नहीं कहता** (प्रतिज्ञा)। ५. निर्धनों का **अपमान न करो** (अवज्ञा)। ६. **सौ रुपया लिया है, इस बात से मुकरता है** (अपज्ञा)। ७. बहू की **सास से पटती है** (संज्ञा)। **(ग)** (मत्वर्थक प्रत्यय) १. बलवान्, धनवान्, गुणवान्, बुद्धिमान्, रूपवान् और श्रीमान् सभी को अपनी विशेषता का अभिमान होता है। २. दण्डी, धनी, दानी, मानी, ज्ञानी और गुणी, ये अपने गुणों से दूसरों को उपकृत करते हैं। ३. यशस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी, मेधावी और वाग्मी अपने ज्ञान और तेज से दूसरों का पथप्रदर्शन करते हैं। **(घ)** (अव्ययवर्ग) १. श्रीमन् (अङ्ग), बच्चे को पढ़ा दीजिए। २. अब (अथ) शब्दानुशासन प्रारम्भ होता है। ३. **क्या** यह काम कर सकते हैं? ४. **अब** मैं ग्रीष्म **ऋतु के बारे में** गाऊँगा। ५. **क्या यह चोर तो नहीं है?** ६. मैं विदेशी हूँ, **अतः** पूछता हूँ। ७. वह कृष्ण की **हँसी-सा कर रहा था।** ८. **आशा करता हूँ कि** आप **सकुशल हैं।** ९. **कहाँ** तपस्या और **कहाँ** तुम्हारा कोमल शरीर। १०. भले ही वह मेरे सामने न बैठे। ११. मुझ पर यम भी प्रहार नहीं कर सकता है, **अन्य हिंसकों का तो कहना ही क्या?** १२. **भाग्य से विपत्ति टल गई।** १३. **महाराज आपको विजय के लिए बधाई है।** १४. **वैसा** करना, **जिससे** राजा की कृपा का पात्र हो जाऊँ। १५. मुझे भार **उतना** दुःख नहीं दे रहा है, **जितना बाधति-प्रयोग।** १६. **जितना** पाया, **उतना** खा लिया। १७. **जबतक** एक दुःख समाप्त नहीं होता, **तबतक** दूसरा उपस्थित हो जाता है। १८. प्राणत्याग **अच्छा है, पर** मूर्खों का साथ नहीं।

संकेतः—(क) १. पाययति। २. पयःपानम्। ३. महात्मनाम्, मनस्येकं, मनस्यन्यद्। ४. न ते विप्रियं कृतपूर्वम्। ५. संशयमेव गाहते। ६. क ईप्सितार्थस्थिरनिश्चयं मनः पयश्च निम्नाभिमुखं प्रतीपयेत्। ८. यशस्तु रक्ष्यं गरतो यशोधनैः। ९. विमलं कलुषीभवच्च चेतः कथयत्येव हितैषिणं रिपुं वा। १०. तस्य वचसि दुराशयं मा आरोपय। **(ख)** ३. अनुजानीहि। ४. प्रतिजाने, रामो द्विर्नाभिभाषते। ५. नावजानीत। ६. शतमपजानीते। ७. श्वश्र्वा संजानीते। **(घ)** ३. अथ। ४. ऋतुमधिकृत्य। ५. अपि चौरो भवेत्। ६. इति। ७. जहासेव। ८. कच्चित् कुशली। ९. क्व ... क्व। १०. कामम्। ११. किमुतान्यहिंस्राः। १२. दिष्ट्या प्रतिहतं दुर्जातम्। १३. दिष्ट्या महाराजो विजयेन वर्धते। १४. तथा ... यथा। १५. तथा ... यथा बाधति बाधते। १६. यावत् ... तावत्। १७. यावत् ... तावत्। १८. [illegible]ं ... न।

शब्दकोष-१४००+२५=१४२५] **अभ्यास ५७** (व्याकरण)

(ख) पीड् (उ०, दुःख देना), पॄ (उ०, पूरा करना), तड् (उ०, चोट मारना), खण्ड् (उ०, तोड़ना), क्षल् (उ० धोना), तुल् (उ० तोलना), पाल् (उ०, रक्षा करना), तिज् (उ०, तेज करना), कृत् (उ०, गुणगान करना), तन्त्र् (आ०, शासन करना, पालन करना), मन्त्र् (आ०, मंत्रणा करना), त्रुट् (आ०, तोड़ना), तर्ज् (आ० धमकाना), अर्थ् (आ०, प्रार्थना करना), कुत्स् (आ०, दोष लगाना), भर्त्स् (आ०, डाँटना), टङ्क् (उ०, खोदना, लगाना), पश् (उ०, बाँधना), धृ (उ०, धारण करना), मृष् (उ०, क्षमा करना), लङ्घ् (उ०, उल्लंघन करना), घुष् (उ०, घोषणा करना), ईर् (उ०, प्रेरणा देना), प्री (उ०, प्रसन्न करना), गवेष् (उ०, गवेषणा करना)। (२५)। **सूचना**-इन सबके रूप चुर् के तुल्य चलेंगे।

व्याकरण-(पाद, दन्त, बन्ध्, मन्थ्, विभक्त्यर्थ प्रत्यय)

१. पाद और दन्त के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० २)।

२. बन्ध् और मन्थ् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ९२, ९३)

नियम २८०—(तः प्रत्यय) (१) (पञ्चम्यास्तसिल्) पंचमी विभक्ति के स्थान पर तसिल् (तः) प्रत्यय होता है। यस्मात् > यतः। ततः, इतः, अतः, अग्रतः, सर्वतः, उभयतः। त्वत्तः, मत्तः, अस्मत्तः, युष्मत्तः। (२) (कु तिहोः) किम् को कु हो जाएगा। कस्मात् > कुतः। (३) (पर्यभिभ्यां च) परि और अभि से तः प्रत्यय। परितः, अभितः।

नियम २८१—(त्र प्रत्यय) (१) (सप्तम्यास्त्रल्) सप्तमी के स्थान पर त्रल् (त्र) प्रत्यय होता है। कुत्र, यत्र, तत्र, सर्वत्र, उभयत्र, अत्र, अन्यत्र, बहुत्र। (२) (किमोऽत्, क्वाति) किम् के क्व और कुत्र दोनों रूप होते हैं। (३) (इदमो हः) इदम् का इह (यहाँ) भी रूप बनता है। (४) (इतराभ्योऽपि०) पंचमी और सप्तमी के अतिरिक्त भी तः और त्र होते हैं। स भवान् > तत्रभवान्, ततोभवान् (पूज्य आप)। अयं भवान् > अत्रभवान् (पूज्य आप)। अत्रभवती (पूज्य स्त्री)।

नियम २८२—(१) (सर्वैकान्यकिंयत्तदः काले दा) सर्व आदि से समय अर्थ में 'दा' प्रत्यय होता है। सर्वदा, एकदा, अन्यदा, किम् > कदा, यदा, तदा। (२) (सर्वस्य सो०) सर्व को स भी हो जाता है। सदा। (३) (अधुना) इदम् को अधुना हो जाता है। अधुना (अब)। (४) (दानीं च) इदम् से दानीम् प्रत्यय भी होता है। इदानीम् (अब)। (५) (तदो दा च) तद् से दानीम् भी होता है। तदानीम् (तब)।

नियम २८३—(१) (प्रकारवचने थाल्) 'प्रकार' अर्थ में किम् आदि से थाल् (था) प्रत्यय होगा। तेन प्रकारेण > तथा। इसी प्रकार-यथा, सर्वथा, उभयथा (दोनों प्रकार से), अन्यथा। (२) (इदमस्थमुः) इदम् से था की जगह थम् होगा। इदम् > इत्थम्। (३) (किमश्च) किम् से भी था को थम्। किम् > कथम् (कैसे)।

नियम २८४—(संख्याया विधार्थे धा) संख्यावाची शब्दों से प्रकार अर्थ में 'धा' प्रत्यय होता है। एकधा, द्विधा, त्रिधा, चतुर्धा, पञ्चधा। बहुधा, शतधा, सहस्रधा।

नियम २८५—(प्रमाण आदि अर्थ में) (१) (प्रमाणे द्वयसच्०) प्रमाण अर्थात् नाप-तोल आदि अर्थ में द्वयस, दघ्न और मात्र प्रत्यय होते हैं। जाँघ तक-ऊरुद्वयसम्, ऊरुदघ्नम्, ऊरुमात्रम्। हस्तमात्रम्, मुष्टिमात्रम्, कटिमात्रम्। (२) (यत्तदेतेभ्यः०) यत् आदि से परिमाण अर्थ में वत् प्रत्यय। यावान्, तावान्, एतावान्। किम् का कियान्, इदम् का इयान् होता है।

अभ्यास ५७

संस्कृत बनाओ—(क) (पाद, दन्त, मनस् शब्द) १. उसने गुरु के पैर छुए। २. अपराधी ने राजा के **पैर छूकर क्षमा माँगी**। ३. मनुष्य द्विपाद् और पशु चतुष्पाद् होते **हैं**। ४. इस पुस्तक का मूल्य **सवा रुपया है**। ५. दाँतों को ब्रश से साफ करो और दाँतों में कोई तिनका **फँसा हो तो दाँत सफा करने की सींक से** उसे निकाल दो। ६. उसके वचन (वचस्) से मेरा हृदय **द्रवित हो गया**। ७. उसकी बात (वचस्) **मेरे हृदय पर असर कर गई**। ८. **उसके हृदय (चेतस्) पर उपदेश का प्रभाव नहीं पड़ा**। ९. मेरा मन **सन्देह में पड़ा है**। १०. ये विचार मेरे मन में उत्पन्न हुए (प्रादुर्भू)। ११. आज **हवा बन्द है**। १२. **यहाँ घोर अँधेरा है**। १३. **वृद्धावस्था में** इसे तृष्णा **लगी हुई है**। १४. यह उसकी बात (वचस्) का निष्कर्ष है। १५. **मैं** तुम्हारी **बात का समर्थन नहीं करता**। १६. मेरी **पूरी** बात सुनो। १७. उसके हृदय (चेतस्) **में कुतूहलता उत्पन्न हुई**। १८. उसका मन **नरम हो गया**। १९. तेज तेज में (तेजस्) **शान्त होता है**। **(ख)** (बन्ध्, मन्थ् धातु) १. उसने **उससे** प्रीति **लगाई** (बन्ध्)। २. अपने बालों को ठीक बाँधो (बन्ध्)। ३. पुण्यात्मा कर्मों से **बद्ध नहीं होता**। ४. चूड़ामणि पैर में नहीं **पहना जाता**। ५. चित्रकूट मेरी दृष्टि को **आकृष्ट कर रहा है**। ६. क्या यह श्लोक तुमने **बनाया है** (बन्ध्)? ७. उसने बाहुयुद्ध के लिए **कमर कस ली**। ८. **मैं हाथ जोड़कर तुम्हारी प्रार्थना करता हूँ** (प्रार्थ्)। ९. **इसको बीच में मत टोको**। १०. उसने फिर अपने काम में मन **लगाया**। ११. देवों ने समुद्र से अमृत को मथकर निकाला (मन्थ्)। १२. मैं युद्ध में सौ कौरवों को नष्ट करूँगा (मन्थ्)। **(ग)** (विभक्त्यर्थ प्रत्यय) १. कण्व को आश्रम के वृक्ष **तुझसे** भी अधिक प्रिय हैं, ऐसा **मैं सोचता हूँ**। २. तीर्थ का जल और अग्नि ये **अन्य वस्तु से शुद्धि के योग्य नहीं हैं**। ३. इस विषय में मैं **पूज्य आपको प्रमाण मानता हूँ**। ४. वह वंश **आठ भागों में विभक्त होकर फैला** (प्रसृ)। ५. यहाँ वहाँ जहाँ कहीं से भी छात्र आवें, उन्हें विद्यादान दो। ६. **जब-तब** मुझे पत्र लिखते रहना। ७. कहाँ कैसे व्यवहार करें? यहाँ इस प्रकार से और वहाँ उस प्रकार से बरतें। ८. वहाँ कितना जल है? कहीं **कमर भर**, कहीं **घुटने भर**, कहीं **जाँघ भर**। **(घ)** (क्रियावर्ग) १. जो **दुःख दे**, चोट मारे, **डराये**, धमकावे, डाँटे, व्रत को तोड़े, मर्यादा का उल्लंघन करे और दोष लगावे, उसके साथ न रहे और न उससे मित्रता करे। २. छात्र अपनी प्रतिज्ञा **पूरी करता** है; नौकर बर्तन **धोता है**; बनिया चीनी **तोलता है**; राजा प्रजा की रक्षा करता है (पाल्); धार धरनेवाला शस्त्रों और अस्त्रों को **तेज करता है**; कवि राजा का **गुणगान करता है**; राजा प्रजा पर **शासन करता है**; राजा मंत्रियों से **मंत्रणा करता है** और **सज्जनों को प्रेरित करता है**।

संकेत—(क) १. पस्पर्श। २. पादयोर्निपत्य क्षमां ययाचे। ४. सपादरूप्यकम्। ५. निविष्टं चेत्, दन्तशोधन्या। ६. द्रवीभूतम्। ७. हृदयमर्मास्पृशत्। ८. लेभेऽन्तरं चेतसि नोपदेशः। ९. संशयमेव गाहते। ११. निर्वातं नभः। १२. सूचीभेद्यं तमः। १३. परिणतवयसि, पीडयति। १५. वचो नाभिनन्दामि। १६. सावशेषम्। १७. कुतूहलेन कृतं पदम्। १८. मार्दवमभजत। १९. शाम्यति। **(ख)** १. तस्यां, बबन्ध। ३. न बध्यते। ४. बध्यते। ५. बध्नाति। ६. बद्धः। ७. परिकरं बबन्ध। ८. अञ्जलिं बद्ध्वा, प्रार्थये। ९. मैनमन्तरा प्रतिबधान। १०. बबन्ध। **(ग)** १. त्वत्तः, तर्कयामि। २. नान्यतः शुद्धिमर्हतः। ३. अत्रभवन्तं प्रमाणीकरोमि। ४. भिन्नोऽष्टधा विप्रससार। ६. यदा कदा। ८. कटिदघ्नम्, जानुदघ्नम्, ऊरुमात्रम्। (घ) १. पीडयेत्, भाययेत्। २. पारयति, प्रक्षालयति, तोलयति, तेजयति, कीर्तयति, तन्त्रयते, मन्त्रयते, प्रेरयति।

शब्दकोष-१४२५+२५=१४५०] **अभ्यास ५८** (व्याकरण)

(क) कार्तस्वरम् (सुवर्ण, सोना), रजतम् (चाँदी), चन्द्रलौहम् (जर्मन सिलवर), आयसम् (लोहा), निष्कलङ्कायसम् (स्टेनलेस स्टील), ताम्रकम् (ताँबा), पीतलम् (पीतल), कांस्यम् (काँसा, फूल), कांस्यकूटः (कसकूट), मौक्तिकम् (मोती), इन्द्रनीलः (नीलम), वैदूर्यम् (लहसुनिया), हीरकः (हीरा), प्रवालम् (मूँगा), पुष्परागः (पुखराग), मरकतम् (पन्ना), माणिक्यम् (चुन्नी), अभ्रकम् (अभ्रक), पीतकम् (हरताल), गन्धकः (गन्धक), तुत्थाञ्जनम् (तूतिया), पारदः (पारा), यशदम् (जस्ता), सीसम् (सीसा), स्फटिका (फिटकरी) (२५)

व्याकरण (गोपा, विश्वपा, क्री, ग्रह्, भावार्थक प्रत्यय)

१. गोपा शब्द के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ३) विश्वपा गोपा के तुल्य।

२. क्री और ग्रह् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ९४, ९५)

नियम २८६—(तस्य भावस्त्वतलौ) भाव (हिन्दी 'पन') अर्थ में शब्द के अन्त में त्व और ता लगते हैं। त्व-प्रत्ययान्त के रूप नपुं० में ही चलेंगे, गृहवत्। ता-प्रत्ययान्त के रूप रमावत्। लघु > लघुत्वम्, लघुता (हल्कापन)। गुरु > गुरुत्वम्, गुरुता। ब्राह्मणत्वम्, क्षत्रियत्वम्, विद्वस् > विद्वत्त्वम्, विद्वत्ता। महत् > महत्त्वम्, महत्ता।

नियम २८७—(ष्यञ् प्रत्यय) (१) (वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च) वर्णवाचकों और दृढ आदि शब्दों से ष्यञ् (य) प्रत्यय होगा। प्रथम स्वर को वृद्धि। शुक्ल > शौक्ल्यम् (सफेदी)। कृष्ण > कार्ष्ण्यम् (कालापन)। दृढ > दार्ढ्यम् (दृढता)। (२) (गुणवचनब्राह्मणादिभ्यः०) गुणवाचक और ब्राह्मण आदि शब्दों से ष्यञ् (य)। शूर > शौर्यम्। सुन्दर > सौन्दर्यम्। धीर > धैर्यम्। सुख > सौख्यम्। कवि > काव्यम्। (३) (चतुर्वर्णादीनां स्वार्थे०) चतुर्वर्ण आदि से स्वार्थ में ष्यञ् (य)। चातुर्वर्ण्यम्। चातुराश्रम्यम्। षड्गुण > षाड्गुण्यम्। सेना > सैन्यम्। समीप > सामीप्यम्। त्रिलोक > त्रैलोक्यम्।

नियम २८८—(इमनिच् प्रत्यय) (पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा) पृथु आदि से भाव अर्थ में इमनिच् (इमन्) प्रत्यय होता है। टि (अन्तिम स्वर-सहित अंश) का लोप होगा। (र ऋतो०) शब्द के ऋ को र होगा। पृथु > प्रथिमन्, प्रथिमा प्र० एक०। लघु > लघिमा, गुरु > गरिमा, अणु > अणिमा, महत् > महिमा, मृदु > म्रदिमा। ये प्र० एक० के रूप हैं।

नियम २८९—भावार्थक कुछ अन्य प्रत्यय ये हैं- (१) (इगन्ताच्च लघुपूर्वात्) शब्द के अन्त में इ, उ या ऋ हो और उससे पहले ह्रस्व स्वर हो तो शब्द से अण् (अ) होगा। शुचि > शौचम् (स्वच्छता), मुनि > मौनम् (मौन), पृथु>पार्थवम् (मोटापा)। (२) (सख्युर्यः) सखि से य प्रत्यय होगा। सखि > सख्यम् (मित्रता)। (३) (पत्यन्त०) पति अन्तवाले शब्दों, पुरोहित आदि और राजन् से यक् (य) होगा। प्रथम स्वर को वृद्धि। सेनापति > सैनापत्यम्। पौरोहित्यम्। राजन् > राज्यम्। (४) (प्राणभृज्जाति०) प्राणी, जातिवाचक और आयुवाचक से अञ् (अ)। अश्व > आश्वम्। कुमार > कौमारम्। कैशोरम्। (५) (हायनान्त०) हायन अन्तवाले और युवन् आदि से अण् (अ)। द्वैहायनम् (२ वर्ष का)। युवन् > यौवनम्।

नियम २९०—(वत्, क) (१) (तेन तुल्यं क्रिया चेद् वतिः) तृतीयान्त से तुल्य अर्थ में वति (वत्), क्रियासाम्य में। ब्राह्मणेन तुल्यम् > ब्राह्मणवत् अधीते। (२) (तत्र तस्येव) सप्तम्यन्त और षष्ठ्यन्त से तुल्य अर्थ में वत्। मथुरायामिव > मथुरावत्। चैत्रस्य इव > चैत्रवत्। (३) (इवे प्रतिकृतौ) तत्सदृश मूर्ति या चित्र अर्थ में कन् (क)। अश्व इव > अश्वकः।

अभ्यास ५८

संस्कृत बनाओ—(क) (गोपा, विश्वपा शब्द) १. ग्वाला गायों को चराता है, उनकी सेवा करता है और उनकी रक्षा करता है। २. ईश्वर विश्वपा है, वह विश्व का पालन करता है। ३. शंख बजानेवाला (शंखध्मा) शंख **बजाता है**। ४. धूम्रपान करनेवाले (धूम्रपा) **बीड़ी, सिगरेट** और **हुक्का** पीते हैं। ५. सोमपान करनेवाला (सोमपा) सोम पीता है। **(ख)** (क्री, ग्रह् धातु) १. **प्राणों के मूल्य से** यश खरीदो। २. बनिया **सामान** खरीदता है और ग्राहकों को **बेचता** है (विक्री)। ३. वर वधू का **हाथ पकड़ता है** (ग्रह्)। ४. प्रजा के कल्याण के लिए ही उसने प्रजा से कर लिया (ग्रह्)। ५. राजा चोरों को **पकड़े** (ग्रह्) और उन्हें **जेल में डाल दे**। ६. लोभी को धन से जीतो (ग्रह्)। ७. मुझ मूर्खबुद्धि ने भी वैसा ही **समझ लिया** (ग्रह्)। ८. लोग ऐसा समझते हैं (ग्रह्)। ९. पापी का नाम भी न ले (ग्रह्)। १०. तुमने यह पुस्तक **कितने मूल्य में खरीदी** (ग्रह्) ? ११. मनुष्य पुराने कपड़ों को **उतारकर** नवीन वस्त्रों को **पहनता है** (ग्रह्)। १२. बलवान् के साथ **लड़ाई न करे** (विग्रह्)। १३. आप मुझे विद्यादान से **अनुगृहीत करें** (अनुग्रह्)। १४. राजा पापियों और चोरों को दण्ड दे (निग्रह्)। १५. इस **आतिथ्य-सत्कार को स्वीकार कीजिए** (प्रतिग्रह्)। १६. इन्द्रियों को संयम में रखो (निग्रह्)। १७. माली फूलों को **इकट्ठा करके** (संग्रह्) लाया और उनसे उसने मालाएँ बनाईं। १८. इस विषय में मुनि **बुरा नहीं मानेंगे**। १९. क्या कारण है कि गुरुजी **अभी तक खुश नहीं हुए? (ग)** (भावार्थक) १. प्रतिष्ठा **उत्सुकतामात्र को नष्ट करती है**। २. **ढीठ, क्यों स्वच्छन्द हो रही है ?** ३. इस विषय में उन सबकी **एक राय** है। ४. **नम्बर से** लड़कों को मिठाई बाँटो (वितॄ)। ५. महान् राज्य भी मुझे **सुख नहीं देता**। ६. **संसार में मनुष्य के अपने कर्म ही उसे गौरव या हीनता देते हैं**। ७. **त्रुटि करना** मानव-सुलभ है। ८. **दुष्टों पर सिधाई दिखाना** नीति नहीं है। ९. **सन्तान-हीनता** दुःखद है। १०. क्षण-क्षण में जो **नवीनता को प्राप्त हो, वही सौन्दर्य है**। **(घ)** (धातुवर्ग) संसार में धातुओं का बहुत महत्त्व है। धातुओं से ही सभी उपयोगी वस्तुएँ बनती हैं। सोना, चाँदी, मोती, नीलम, लहसुनिया, हीरा, मूँगा, पुखराग, पन्ना और चुन्नी ये बहुमूल्य धातुएँ हैं और आभूषणों आदि में इनका उपयोग होता है। जर्मन सिलवर, लोहा, स्टेनलेस स्टील, ताँबा, पीतल, काँसा, कसकुट, जस्ता और शीशे के विविध प्रकार के बर्तन आदि बनते हैं।

संकेत :—(क) ३. धमति (ध्मा)। ४. तमाखुवीटिकाम्, तमाखुवर्तिकाम्, धूम्रनलिकाम्। **(ख)** १. प्राणमूल्यैः। २. पण्यान्, विक्रीणीते। ३. पाणिं गृह्णाति। ५. गृह्णीयात्, कारायां निक्षिपेत्। ७. गृहीतम्। १०. कियता मूल्येन गृहीतम्? ११. विहाय, गृह्णाति। १२. न विगृह्णीयात्। १३. अनुगृह्णातु। १५. प्रतिगृह्यतामातिथेयः सत्कारः। १७. संगृह्य। १८. न दोषं ग्रहीष्यति। १९. नाद्यापि प्रसादं गृह्णाति। **(ग)** (भावार्थक) १. औत्सुक्यमात्रमवसाययति। २. पुरोभागे, किं स्वातन्त्र्यमवलम्बसे? ३. ऐकमत्यम्। ४. आनुपूर्व्येण। ५. न सौख्यमावहति। ६. लोके गुरुत्वं विपरीततां वा स्वचेष्टितान्येव नरं नयन्ति। ७. लघिमा। ८. आर्जवं हि कुटिलेषु। ९. अनपत्यता। १०. नवतामुपैति, तदेव रूपं रमणीयतायाः।

शब्दकोष-१४५०+२५=१४७५] **अभ्यास ५९** (व्याकरण)

(क) नव रसाः (नौ रस), सप्त स्वराः (सात स्वर), मन्द्रः (कोमल स्वर), मध्यः (मध्यम स्वर), तारः (तीव्र स्वर), आरोहः (चढ़ाव), अवरोहः (उतार), वीणा (सितार), मुरली (स्त्री०, बाँसुरी), मनोहारिवाद्यम् (हारमोनियम), सारङ्गी (स्त्री०, १. वायोलिन, २. सारंगी), तन्त्रीकवाद्यम् (पियानो), तानपूरः (तानपूरा), जलतरङ्गः (जलतरंग), मुरजः (तबला), ढौलकः (ढोलक), मञ्जीरम् (मंजीरा), दुन्दुभिः (पुं०, स्त्री०, नगाड़ा), पटहः (ढोल), तूर्यम् (तुरही, शहनाई), डिण्डिमः (ढिंढोरा), वादित्रगणः (बैण्ड), वीणावाद्यम् (बीनबाजा, नफीरी), संज्ञाशङ्खः (बिगुल), कोणः (मिज़राब)। (२५)।

व्याकरण (कति, चुर्, चिन्त्, तर, तम, ईयस्, इष्ठ)

१. कति शब्द के रूप स्मरण करो। (देखो शब्द० ९९)।

२. चुर् और चिन्त् धातुओं के रूप स्मरण करो। (देखो धातु० ९७, ९८)।

नियम २९१—(द्विवचनविभज्योपपदे तरबीयसुनौ) दो की तुलना में विशेषण शब्द से तरप् (तर) और ईयसुन् (ईयस्) प्रत्यय होते हैं। तर प्रत्यय लगने पर पुं० में रामवत्, स्त्री० में रमावत् और नपुं० में गृहवत् रूप चलेंगे। ईयस् लगने पर पुं० में श्रेयस् (शब्द० ३९) के तुल्य, स्त्री० में अन्त में ई लगाकर नदीवत् और नपुं० में मनस् के तुल्य रूप चलेंगे। जिससे विशेषता दिखाई जाती है, उसमें पंचमी होगी। रामः श्यामात् पटुतरः, पटीयान् वा।

नियम २९२—(अतिशायने तमबिष्ठनौ) बहुतों में से एक की विशेषता बताने अर्थ में तमप् (तम) और इष्ठन् (इष्ठ) प्रत्यय होते हैं। दोनों के रूप पुं० में रामवत्, स्त्री० में रमावत्, नपुं० में गृहवत् चलेंगे। जिससे विशेषता बताई जाती है, उसमें षष्ठी या सप्तमी होगी। छात्राणां छात्रेषु वा रामः पटुतमः पटिष्ठः वा।

नियम २९३—ईयस् और इष्ठ के बारे में ये बातें स्मरण रखें-(१) (अजादी गुणावचनादेव) ईयस् और इष्ठ गुणवाचकों से ही लगेंगे; अन्य से नहीं। तर, तम सर्वत्र लगते हैं। (२) (टेः) ईयस् या इष्ठ बाद में होगा तो टि (अन्तिम स्वरसहित अंश) का लोप होगा। (३) (र ऋतो०) शब्द के ऋ को र् होगा। (४) (स्थूलदूर०) स्थूल दूर आदि के अन्तिम र, ल या व का लोप होगा, ईयस् या इष्ठ बाद में होगा तो। (५) (प्रियस्थिर०) प्रिय, स्थिर आदि को प्र, स्थ आदि होते हैं। विशेष प्रसिद्ध रूप ये हैं। कोष्ठगत शब्द शेष रहता है। इन शब्दों से तर-तम भी लगते हैं।

प्रशस्य (श्र)	श्रेयान्	श्रेष्ठः	गुरु (गर्)	गरीयान्	गरिष्ठः
वृद्ध, प्रशस्य (ज्य)	ज्यायान्	ज्येष्ठः	दीर्घ (द्राघ्)	द्राघीयान्	द्राघिष्ठः
अन्तिक (नेद्)	नेदीयान्	नेदिष्ठः	बहु (भू)	भूयान्	भूयिष्ठः
बाढ (साध्)	साधीयान्	साधिष्ठः	युवन् (कन्)	कनीयान्	कनिष्ठः
स्थूल (स्थू)	स्थवीयान्	स्थविष्ठः	पटु (पट्)	पटीयान्	पटिष्ठः
दूर (दू)	दवीयान्	दविष्ठः	लघु (लघ्)	लघीयान्	लघिष्ठः
प्रिय (प्र)	प्रेयान्	प्रेष्ठः	महत् (मह्)	महीयान्	महिष्ठः
स्थिर (स्थ)	स्थेयान्	स्थेष्ठः	मृदु (म्रद्)	म्रदीयान्	म्रदिष्ठः
उरु (वर्)	वरीयान्	वरिष्ठः	बलिन् (बल्)	बलीयान्	बलिष्ठः

अभ्यास 59

संस्कृत बनाओ—(क) (कति शब्द) १. कितनी अग्नियाँ हैं और कितने सूर्य हैं ? २. मन, तू स्मरण कर कि तूने कितने पाप किए हैं और कितने पुण्य। ३. **कुछ ही** पैर चलकर वह तन्वी रुक गई। ४. उस पर्वत पर उसने कुछ महीने बिताए (नी)। ५. **कदम्ब पर कुछ फूल खिले हैं।** ६. **कुछ दिन बीतने पर** वह घर लौटा। **(ख)** (चुर्, चिन्त्) १. चोर ने **तिजोरी तोड़कर** तीन **एक हजार रुपये के,** दस एक सौ के, पचास दस रुपये के और अस्सी पाँच रुपये **के नोट** चुराए। २. नारद ने चन्द्रमा की शोभा को **चुराया।** ३. सोचो, किस **बहाने से** हम आश्रम में जावें। ४. सज्जन की हानि को मन से भी न सोचे (चिन्त्)। ५. पिता **तुम्हारी देख-भाल करेंगे** (चिन्त्)। ६. **पाखण्डियों और कुकर्मियों की वाणी से भी पूजा न करे** (अर्च्)। ७. ऐसी वाणी न **कहे** (उदीर्), जिससे दूसरे के हृदय को दुःख पहुँचे। ८. **कार्य पूरा करने का इच्छुक मनस्वी न दुःख की परवाह करता है और न सुख की।** ९. धर्म की प्राचीन मान्यताओं का **पता चलाओ** (गवेष्)। १०. वह **मुँह पर घूँघट काढ़ती है।** ११. भारतीय **सरकार** ने गोहत्या-निरोध की **घोषणा की** (घुष्)। १२. चित्रकार कपड़े पर नेहरूजी का **चित्र बनाता है** (चित्र्)। १३. मैं दुर्योधन की जंघा को **चूर-चूर कर दूँगा** (चूर्ण्)। १४. वह आभूषणों से अपने शरीर को **अलंकृत कर रही है** (अवतंस्)। १५. विद्या और धन को बड़े परिश्रम से **एकत्र करे** (अर्ज्)। **(ग)** (तर, तम आदि) १. **यशोधनों के लिए यश बड़ी चीज है** (गुरु)। २. **बड़े लोग** स्वभाव से ही **कम बोलते हैं।** ३. **बड़ों की सहायता से क्षुद्र भी सफल हो जाता है।** ४. जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी **बढ़कर है** (गुरु)। ५. स्वधर्म परधर्म से **बढ़कर है।** ६. राम श्याम से **अधिक बड़ा (प्रशस्य), अच्छा (बाढ),** प्रिय, विशाल (उरु), भारी (गुरु), लम्बा (दीर्घ), चतुर (पटु), महान् और बलवान् (बलिन्) है और श्याम राम से हलका (लघु), छोटा (युवन्), कोमल (मृदु) और कृश है। **(घ)** ७. कृष्ण सबसे अधिक बड़ा, अच्छा, प्रिय, विशाल, भारी, लम्बा, चतुर, महान् और बलवान् है और यज्ञदत्त सबसे अधिक हलका, छोटा, कोमल और कृश है। (नाट्यवर्ग) विभाव, अनुभाव और संचारिभावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। शृंगार, वीर आदि नौ रस हैं और उनके रति, उत्साह आदि नौ स्थायिभाव हैं। षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद ये सात स्वर हैं। इनके प्रथम अक्षरों को लेकर स रे ग म आदि सरगम बना है। संगीत में कोमल, मध्यम और तीव्र स्वरों के तीन सप्तक होते हैं। स्वरों का आरोह और अवरोह होता है। प्राचीन वाद्यों में से सितार, बाँसुरी, सारंगी, तानपूरा, तबला, ढोलक, मजीरा, नगाड़ा, ढोल, तुरही, ढिंढोरा इनका प्रचलन अभी तक है। नवीन वाद्यों में हारमोनियम, वायोलिन, पियानो, जलतरंग, बैंड, बीनबाजा और बिगुल का अधिक प्रचलन है। संगीत जीवन को सरस और मधुर बनाता है।

संकेत :—(क) ३. कतिचिदेव। ४. कतिचित्। ५. कतिपयकुसुमोद्गमः कदम्बः। ६. कतिपयदिवसापगमे। **(ख)** १. लौहमञ्जूषां विदार्य, सहस्ररूप्यकनाणकानि, नाणकानि। २. अचूचुरत्। ३. अपदेशेन। ५. त्वां चिन्तयिष्यति। ६. पाषण्डिनो विकर्मस्थान् वाङ्मात्रेणापि नार्चयेत्। ७. उदीरयेत्। ८. मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम्। ९. गवेषय। १०. मुखमवगुण्ठयति। ११. सर्वकारः, अघोषयत्। १२. चित्रयति। १३. संचूर्णयिष्यामि। १४. अवतंसयति। १५. अर्जयेत्। **(ग)** १. यशोधनानां हि यशो गरीयः। २. महीयांसः, मितभाषिणः। ३. बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति। ४. गरीयसी। ५. श्रेयान्। ६. ज्यायान्, साधीयान्।

शब्दकोष-१४७५+२५=१५००] **अभ्यास ६०** (व्याकरण)

(क) कासः (खाँसी), प्रतिश्यायः (जुकाम), ज्वरः (बुखार), विषमज्वरः (मलेरिया), शीतज्वरः (इन्फ्लुएन्जा, फ्लु), प्रलापकज्वरः (निमोनिया), संनिपातज्वरः (टाइफाइड), राजयक्ष्मन् (पुं०, तपेदिक, टी० बी०), शीतला (चेचक), मन्थरज्वरः (मोतीझरा), अतिसारः (दस्त), प्रवाहिका (पेचिश, संग्रहणी), वमथुः (पुं०, कै), विषूचिका (हैजा), रक्तचापः (ब्लडप्रेशर), पिटकः (फोड़ा), पिटिका (फुंसी), अर्शस् (नपुं०, बवासीर), प्रमेहः (प्रमेह), मधुमेहः (बहुमूत्र, डाएबिटीज), पाण्डुः (पुं०, पीलिया), अजीर्णम् (कब्ज), उपदंशः (गरमी, सिफलिस), विद्रधिः (पुं०, विषव्रणम्, केन्सर), पक्षाघातः (लकवा मारना)। (२५)

नियम २९४—(विकारार्थक) विकार अर्थ में ये प्रत्यय होते हैं—(१) (तस्य विकारः) विकार अर्थ में अण् (अ)। भस्मन्>भास्मनः। (२) (मयड्वैतयो०) विकार और अवयव अर्थ में मय प्रत्यय। अश्मन् > अश्ममयम्। (३) (गोश्च पुरीषे) गो से गोबर अर्थ में मय। गो > गोमयम्। (४) (गोपयसोर्यत्) गो और पयस् से यत् (य)। गव्यम्। पयस्यम्।

नियम २९५—(ठक्) इन अर्थों में ठक् (इक) होता है। प्रथम स्वर को वृद्धि। (१) (तेन दीव्यति०) जुआ खेलना आदि अर्थों में। अक्ष > आक्षिकः। (२) (संस्कृतम्) बनाने अर्थ में। दधि > दाधिकम्। (३) (तरति) तैरने अर्थ में। उडुप > औडुपिकः (छोटी नाव से पार करनेवाला)। (४) (चरति) सवारी करना अर्थ में। हस्तिन् > हास्तिकः। (५) (रक्षति) रक्षा अर्थ में। समाज > सामाजिकः।

नियम २९६—(यत्) इन स्थानों पर यत् (य) होता है :—(१) (तद्वहति०) ढोने अर्थ में यत्। रथ > रथ्यः। (२) (धुरो यड्ढकौ) धुर् से य और ढक् (एय)। धुर् > धुर्यः, धौरेयः। (३) (नौवयोधर्म०) नौ आदि से। नौ > नाव्यम्। (४) (तत्र साधुः) शिष्ट अर्थ में यत्। शरण > शरण्यः। (५) (सभाया यः) सभा से य प्रत्यय। सभ्यः। (६) (पथ्यतिथि०) पथिन् आदि से ढञ् (एय)। पथिन् > पाथेयम्। अतिथि > आतिथेयम्।

नियम २९७—(छ, यत्) छ का ईय, यत् का य शेष रहता है। (१) (उगवादिभ्यो०) हित अर्थ में उकारान्त और गो आदि से यत्। शङ्कु > शङ्कव्यम्। गो > गव्यम्। (२) (तस्मै हितम्) हित अर्थ में छ (ईय)। वत्स>वत्सीयः। (३) (शरीरावयवाद्यत्) शरीरावयवों से यत् (य)। दन्त्यम्, कण्ठ्यम्। (४) (आत्मन्विश्वजन०) आत्मन् आदि से हित अर्थ में ख (ईन)। आत्मन् > आत्मनीनम्। विश्वजन > विश्वजनीनम्।

नियम २९८—(ठञ्) ठ को इक। (१) (तेन क्रीतम्) खरीदने अर्थ में ठञ् (इक)। सप्तति>साप्ततिकम्। (२) (तदर्हति) योग्य होने अर्थ में ठञ् (इक)। श्वेतछत्र > श्वैतच्छत्रिकः। (३) (दण्डादिभ्यो यत्) दण्ड आदि से यत् (य)। दण्ड > दण्ड्यः।

नियम २९९—(स्वार्थिक) (१) (प्रज्ञादिभ्यश्च) प्रज्ञ आदि से स्वार्थ में अण् (अ)। प्रज्ञ > प्राज्ञः, देवता > दैवतः, बन्धु > बान्धवः। (२) (अल्पे, ह्रस्वे) अल्प और छोटा अर्थ में कन् (क)। तैल > तैलकम्, वृक्ष > वृक्षकः।

नियम ३००—(१) (कृभ्वस्तियोगे०) वैसा हो जाना अर्थ में च्वि प्रत्यय होता है। च्वि का कुछ नहीं शेष रहता है। बाद में कृ, भू, अस् का प्रयोग होता है। च्वि होने पर शब्द के अ को ई, इ और उ को दीर्घ होगा। शुक्ल>शुक्लीकरोति, कृष्णीकरोति। (२) (विभाषा साति०) सम्पूर्ण अर्थ में साति (सात्)। भस्मसात्, अग्निसात्। (३) (नित्यवीप्सयोः) बार-बार और द्विरुक्ति अर्थ में पद को द्वित्व होता है। भुक्त्वा भुक्त्वा। वृक्षं वृक्षं सिञ्चति। (४) (ईषदसमाप्तौ०) कुछ कम अर्थ में कल्प, देश्य, देशीय प्रत्यय होते हैं। लगभग ५ वर्ष का—पञ्चवर्षदेशीयः, पञ्चवर्षदेश्यः। मध्याह्नकल्पः।

अभ्यास ६०

संस्कृत बनाओ :—(क) (कथ्, भक्ष् धातु) १. **उन दोनों की संपत्ति का क्या कहना ?** २. उन्होंने **जनक से कहा** कि राम धनुष को देखना चाहते हैं। ३. कथा के **बहाने से** यहाँ नीति ही कही गई है। ४. दूसरे का उच्छिष्ट न खावे। ५. गुरु आज्ञा देते हैं (आज्ञापि) कि पापों को **छोड़ो**। ६. स्त्री अलंकारों से अपने शरीर को **विभूषित करती है** (भूष्)। ७. बालक मिठाई का **स्वाद लेता है** (आस्वद्)। ८. वह बर्तनों को **माँजता है** (मृज्), शत्रुओं को **तपाता है** (तप्), सज्जनों को **तृप्त करता है** (तृप्), मान्यों का **मान करता है** (मान्) और दुष्टों को **दबाता है** (धृष्)। **(ख)** (तद्धित प्रत्यय) १. शारीरिक पुष्टि के लिए पंचगव्य का सेवन करना चाहिए। २. **जुआरी पासों से** जुआ खेलता है (दिव्)। ३. सभ्य अपने-अपने स्थानों को **लौट गए**। ४. अहिंसा का सिद्धान्त **अपनी भलाई और विश्व की भलाई दोनों के लिए है**। ५. राम **लगभग अठारह वर्ष का है**। ६. अब **लगभग दोपहर का** समय है। ७. वह **लगभग मरा हुआ है**। ८. आग सब वस्तुओं को भस्मसात् कर देती है। ९. नेहरूजी का कथन था कि श्रमिकों की **गन्दी बस्तियों को जला दो** और उनके लिए साफ मकान बनाओ। १०. **एकचित्त होकर** देशोद्धार में लगो (प्रवृत्)। ११. **कुल मिलाकर** मुझे बीस रुपए दो। १२. यह **बात** मुझको ही **संकेत करती है**। १३. मकान **जलकर राख हो गए**। १४. यह **बात सर्वत्र फैल गई है**। **(ग)** (रोगवर्ग) १. **मुझे बड़ा सिरदर्द है**। २. **यह फोड़े पर फोड़ा निकला है**। ३. उसके **रोग का शीघ्र इलाज करो**। ४. आज **मेरी तबीयत पहले से ठीक है**। ५. **रोग को ठीक जाने बिना उसका इलाज नहीं करना चाहिए**। ६. इसका रोग **बहुत बढ़ गया है**। ७. **रोगी की जान खतरे में है**। ८. उसका रोग असाध्य है। **(घ)** (रोगवर्ग) शरीर व्याधियों का घर है। अतः कहा गया है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का सर्वोत्तम मूल आरोग्य है। अतः सदा स्वस्थ रहने का प्रयत्न करना चाहिए। सात्त्विक भोजन, उचित आहार-विहार, दैनिक व्यायाम, भ्रमण, योगासन और प्राणायाम से शरीर नीरोग रहता है। इन नियमों पर ध्यान न देने से ही खाँसी, जुकाम, बुखार, मलेरिया, इन्फ्लुएन्जा, निमोनिया, टाइफाइड, तपेदिक, चेचक, मोतीझरा, दस्त, पेचिश, संग्रहणी, हैजा, फोड़ा, फुंसी, बवासीर, प्रमेह, मधुमेह, कब्ज आदि रोग होते हैं। केन्सर, लकवा मारना, तपेदिक और दिल के रोग, ये घातक रोग हैं। विशेषज्ञों का कथन है कि रोगों का कारण जीवन की अनियमितता है। जीवन को नियमित बनावें और वेद के शब्दों में नीरोग होकर **सौ वर्ष जीवें। सब सुखी हों, सब नीरोग हों, सब सुख देखें और कोई दुःखी न हो।**

संकेत :—(क) १. किं कथ्यते श्रीरुभयस्य तस्य। २. मैथिलाय कथयांबभूव। ३. छलेन। ५. वर्जय। ६. भूषयति। ७. आस्वादयति। ८. मार्जयति, तापयति, तर्पयति, मानयति, धर्षयति। **(ख)** २. आक्षिकः, अक्षैः। ३. प्रतिजग्मुः। ४. आत्मनीनो विश्वजनीनश्च वर्तते। ५. अष्टादशवर्षदेशीयः। ६. मध्याह्नकल्पः। ७. मृतप्रायः। ९. शीर्णान्यावासस्थानानि अग्निसात् कुरुत। १०. एकचित्तीभूय। ११. पिण्डीकृत्य। १२. कथा, लक्ष्यीकरोति। १३. भस्मीभूतानि। १४. वृत्तं बहुलीभूतम्। **(ग)** १. बलवती शिरोवेदना मां बाधते। २. गण्डस्योपरि पिटिका संवृत्ता। ३. विकारो विलम्बाक्षमः। ४. अस्ति मे विशेषोऽद्य। ५. विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारम्भः प्रतीकारस्य। ६. अतिभूमिं गतः। ७. आतुरो जीवितसंशये वर्तते। **(घ)** हृद्रोगाः। जीवेम शरदः शतम्। सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।

व्याकरण

आवश्यक निर्देश

१. शब्दरूप-संग्रह में उन सभी शब्दों (१०० शब्दों) का संग्रह किया गया है, जो अधिक प्रचलित हैं। जिन शब्दों का प्रयोग बहुत कम होता है या सर्वथा नहीं होता है, उनका समावेश इसमें नहीं किया गया है।

२. शब्दों और धातुओं के रूप के साथ अभ्यासों की संख्याएँ दी गई हैं। उसका भाव यह है कि उस शब्द या धातु का प्रयोग उस अभ्यास में हुआ है और उस प्रकार से चलनेवाले शब्द या धातु भी उस अभ्यास में दिए गए हैं। अनुवादवाले प्रकरण में उस शब्द या धातु के अभ्यास में उसी प्रकार चलनेवाले शब्द या धातु यथास्थान कोष्ठ में दिए गए हैं, उनके रूप भी निर्दिष्ट शब्द या धातु के तुल्य चलावें।

३. संक्षेप के लिए निम्नलिखित संकेतों का उपयोग किया गया है :—

(क) शब्दरूपों में प्रथमा आदि के लिए उनके प्रथम अक्षर रखे गए हैं। जैसे-प्र०=प्रथमा, द्वि०=द्वितीया, तृ०=तृतीया, च०=चतुर्थी, पं०=पंचमी, ष०=षष्ठी, स०=सप्तमी, सं०=संबोधन।

(ख) पुं०=पुंलिंग, स्त्री०=स्त्रीलिंग, नपुं०=नपुंसक लिंग। एक०=एकवचन, द्वि०=द्विवचन, बहु०=बहुवचन। दे०अ०=देखो अभ्यास, अ०=अभ्यास। प्रत्येक शब्द या धातु के रूप में ऊपर से नीचे की ओर प्रथम पंक्ति एकवचन की है, दूसरी द्विवचन की और तीसरी बहुवचन की। जो शब्द किसी विशेष वचन में ही चलते हैं, उनके उसी वचन के रूप हैं।

(ग) धातुरूपों में प्र०पु० या प्र०=प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), म०पु० या म०=मध्यम पुरुष, उ०पु० या उ०=उत्तम पुरुष। पर० या प०=परस्मैपद, आत्मने० या आ०=आत्मनेपद, उभय० या उ०=उभयपद।

४. सर्वनाम शब्दों का संबोधन नहीं होता, अत: उनके रूप संबोधन में नहीं दिए गए हैं।

५. शब्दरूपों के लिए ये नियम स्मरण कर लें—(१) (अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि) र् और ष् के बाद न् को ण् होता है, यदि अट् (स्वर, ह, य, व, र), कवर्ग, पवर्ग, आ, न् बीच में हों तो भी न् को ण् होगा। ऋ वाले शब्दों में भी यह नियम लगेगा। अत: र्, ऋ और ष् वाले शब्दों में इस नियम के अनुसार न् को ण् करें, अन्यत्र न् ही रहेगा। (२) (इण्को:, आदेशप्रत्यययो:) अ को छोड़कर अन्य स्वरों के बाद तथा कवर्ग के बाद प्रत्यय के स् को ष् हो जाता है। धातुओं में भी यह नियम लगेगा। जैसे-रामेषु, हरिषु, कर्तृषु, वाक्षु।

(१) शब्दरूप-संग्रह

(क) अजन्त पुंलिंग शब्द

(१) राम (राम) (देखो अभ्यास १)

रामः	रामौ	रामाः	प्र०
रामम्	,,	रामान्	द्वि०
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः	तृ०
रामाय	,,	रामेभ्यः	च०
रामात्	,,	,,	पं०
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्	ष०
रामे	,,	रामेषु	स०
हे राम	हे रामौ	हे रामाः	सं०

(२) पाद (पैर) (देखो अभ्यास ५७)

प्र०	पादः	पादौ	पादाः
द्वि०	पादम्	,,	पदः
तृ०	पदा	पद्भ्याम्	पद्भिः
च०	पदे	,,	पद्भ्यः
पं०	पदः	,,	,,
ष०	पदः	पदोः	पदाम्
स०	पदि	,,	पत्सु
सं०	हे पाद	हे पादौ	हे पादाः

सूचना— पाद के पूरे रूप राम के तुल्य भी चलेंगे। पाद के तुल्य ही दन्त (दत्) के द्वितीया बहु० आदि में दतः, दता, दद्भ्याम् आदि रूप होंगे।

❖ ❖ ❖

(३) गोपा (ग्वाला) (दे० अ० ५८)

गोपाः	गोपौ	गोपाः	प्र०
गोपाम्	,,	गोपः	द्वि०
गोपा	गोपाभ्याम्	गोपाभिः	तृ०
गोपे	,,	गोपाभ्यः	च०
गोपः	,,	,,	पं०
,,	गोपोः	गोपाम्	ष०
गोपि	,,	गोपासु	स०
हे गोपाः	हे गोपौ	हे गोपाः	सं०

(४) हरि (विष्णु) (देखो अ० ४)

प्र०	हरिः	हरी	हरयः
द्वि०	हरिम्	,,	हरीन्
तृ०	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
च०	हरये	,,	हरिभ्यः
पं०	हरेः	,,	,,
ष०	,,	हर्योः	हरीणाम्
स०	हरौ	,,	हरिषु
सं०	हे हरे	हे हरी	हे हरयः

❖ ❖ ❖

(५) सखि (मित्र) (दे० अ० १९)

सखा	सखायौ	सखायः	प्र०
सखायम्	,,	सखीन्	द्वि०
सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः	तृ०
सख्ये	,,	सखिभ्यः	च०
सख्युः	,,	,,	पं०
,,	सख्योः	सखीनाम्	ष०
सख्यौ	,,	सखिषु	स०
हे सखे	हे सखायौ	हे सखायः	सं०

(६) पति (पति) (दे० अ० २०)

प्र०	पतिः	पती	पतयः
द्वि०	पतिम्	,,	पतीन्
तृ०	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
च०	पत्ये	,,	पतिभ्यः
पं०	पत्युः	,,	,,
ष०	,,	पत्योः	पतीनाम्
स०	पत्यौ	,,	पतिषु
सं०	हे पते	हे पती	हे पतयः

सूचना—स्त्रीलिंग में सखी के रूप नदीवत् चलेंगे।

(७) भूपति (राजा) (हरिवत्) (दे० अ० ४) **(८) सुधी (विद्वान्)** (दे० अ०२१)

भूपतिः	भूपती	भूपतयः	प्र०	सुधीः	सुधियौ	सुधियः
भूपतिम्	''	भूपतीन्	द्वि०	सुधियम्	''	''
भूपतिना	भूपतिभ्याम्	भूपतिभिः	तृ०	सुधिया	सुधीभ्याम्	सुधीभिः
भूपतये	''	भूपतिभ्यः	च०	सुधिये	''	सुधीभ्यः
भूपतेः	''	''	पं०	सुधियः	''	''
''	भूपत्योः	भूपतीनाम्	ष०	''	सुधियोः	सुधियाम्
भूपतौ	''	भूपतिषु	स०	सुधियि	''	सुधीषु
हे भूपते	हे भूपती	हे भूपतयः	सं०	हे सुधीः	हे सुधियौ	हे सुधियः

❖ ❖ ❖

(९) गुरु (गुरु) (दे० अ० ५) **(१०) स्वभू (ब्रह्मा)** (दे० अ० २१)

गुरुः	गुरू	गुरवः	प्र०	स्वभूः	स्वभुवौ	स्वभुवः
गुरुम्	''	गुरून्	द्वि०	स्वभुवम्	''	''
गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः	तृ०	स्वभुवा	स्वभूभ्याम्	स्वभूभिः
गुरवे	''	गुरुभ्यः	च०	स्वभुवे	''	स्वभूभ्यः
गुरोः	''	''	पं०	स्वभुवः	''	''
''	गुर्वोः	गुरूणाम्	ष०	''	स्वभुवोः	स्वभुवाम्
गुरौ	''	गुरुषु	स०	स्वभुवि	''	स्वभूषु
हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः	सं०	हे स्वभूः	हे स्वभुवौ	हे स्वभुवः

❖ ❖ ❖

(११) कर्तृ (करनेवाला) (दे० अ० २२) **(१२) पितृ (पिता)** (दे० अ० २३)

कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	प्र०	पिता	पितरौ	पितरः
कर्तारम्	''	कर्तॄन्	द्वि०	पितरम्	''	पितॄन्
कर्त्रा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	तृ०	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
कर्त्रे	''	कर्तृभ्यः	च०	पित्रे	''	पितृभ्यः
कर्तुः	''	''	पं०	पितुः	''	''
''	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्	ष०	''	पित्रोः	पितॄणाम्
कर्तरि	''	कर्तृषु	स०	पितरि	''	पितृषु
हे कर्तः	हे कर्तारौ	हे कर्तारः	सं०	हे पितः	हे पितरौ	हे पितरः

(१३) नृ (मनुष्य) (पितृवत्) (दे० अ० २३) **(१४) गो (बैल या गाय) पुं०, स्त्री०** (दे० अ० २४)

ना	नरौ	नरः	प्र०	गौः	गावौ	गावः
नरम्	''	नॄन्	द्वि०	गाम्	''	गाः
न्रा	नृभ्याम्	नृभिः	तृ०	गवा	गोभ्याम्	गोभिः
न्रे	''	नृभ्यः	च०	गवे	''	गोभ्यः
नुः	''	''	पं०	गोः	''	''
''	न्रोः	नृणाम्, नॄणाम्	ष०	''	गवोः	गवाम्
नरि	''	नृषु	स०	गवि	''	गोषु
हे नः	हे नरौ	हे नरः	सं०	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

❖ ❖ ❖

(ख) हलन्त पुंलिंग शब्द

(१५) पयोमुच् (बादल) (दे० अ० २६) **(१६) प्राञ्च् (पूर्वी)** (दे० अ० २५)

पयोमुक्	पयोमुचौ	पयोमुचः	प्र०	प्राङ्	प्राञ्चौ	प्राञ्चः
पयोमुचम्	''	''	द्वि०	प्राञ्चम्	''	प्राचः
पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः	तृ०	प्राचा	प्राग्भ्याम्	प्राग्भिः
पयोमुचे	''	पयोमुग्भ्यः	च०	प्राचे	''	प्राग्भ्यः
पयोमुचः	''	''	पं०	प्राचः	''	''
''	पयोमुचोः	पयोमुचाम्	ष०	''	प्राचोः	प्राचाम्
पयोमुचि	''	पयोमुक्षु	स०	प्राचि	''	प्राक्षु
हे पयोमुक्	हे पयोमुचौ	हे पयोमुचः	सं०	हे प्राङ्	हे प्राञ्चौ	हे प्राञ्चः

❖ ❖ ❖

(१७) उदञ्च् (उत्तरी) (दे० अ० २५) **(१८) वणिज् (बनिया)** (दे० अ० २६)

उदङ्	उदञ्चौ	उदञ्चः	प्र०	वणिक्	वणिजौ	वणिजः
उदञ्चम्	''	उदीचः	द्वि०	वणिजम्	''	''
उदीचा	उदग्भ्याम्	उदग्भिः	तृ०	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
उदीचे	''	उदग्भ्यः	च०	वणिजे	''	वणिग्भ्यः
उदीचः	''	''	पं०	वणिजः	''	''
''	उदीचोः	उदीचाम्	ष०	''	वणिजोः	वणिजाम्
उदीचि	''	उदक्षु	स०	वणिजि	''	वणिक्षु
हे उदङ्	हे उदञ्चौ	हे उदञ्चः	सं०	हे वणिक्	हे वणिजौ	हे वणिजः

(१९) भूभृत् (राजा, पर्वत) (दे० अ० २७) — **(२०) भगवत् (भगवान्)** (दे० अ० २८)

भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः	प्र०	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
भूभृतम्	,,	,,	द्वि०	भगवन्तम्	,,	भगवतः
भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः	तृ०	भगवता	भगवद्भ्याम्	भगवद्भिः
भूभृते	,,	भूभृद्भ्यः	च०	भगवते	,,	भगवद्भ्यः
भूभृतः	,,	,,	पं०	भगवतः	,,	,,
,,	भूभृतोः	भूभृताम्	ष०	,,	भगवतोः	भगवताम्
भूभृति	,,	भूभृत्सु	स०	भगवति	,,	भगवत्सु
हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृतः	सं०	हे भगवन्	हे भगवन्तौ	हे भगवन्तः

❖ ❖ ❖

(२१) धीमत् (बुद्धिमान्) (दे० अ० २८) **(२२) महत् (महान्)** (दे० अ० २९)

धीमान्	धीमन्तौ	धीमन्तः	प्र०	महान्	महान्तौ	महान्तः
धीमन्तम्	,,	धीमतः	द्वि०	महान्तम्	,,	महतः
धीमता	धीमद्भ्याम्	धीमद्भिः	तृ०	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
धीमते	,,	धीमद्भ्यः	च०	महते	,,	महद्भ्यः
धीमतः	,,	,,	पं०	महतः	,,	,,
,,	धीमतोः	धीमताम्	ष०	,,	महतोः	महताम्
धीमति	,,	धीमत्सु	स०	महति	,,	महत्सु
हे धीमन्	हे धीमन्तौ	हे धीमन्तः	सं०	हे महन्	हे महान्तौ	हे महान्तः

❖ ❖ ❖

(२३) भवत् (आप) (दे० अ० २९) **(२४) पठत् (पढ़ता हुआ)** (दे० अ० ३०)

भवान्	भवन्तौ	भवन्तः	प्र०	पठन्	पठन्तौ	पठन्तः
भवन्तम्	,,	भवतः	द्वि०	पठन्तम्	,,	पठतः
भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः	तृ०	पठता	पठद्भ्याम्	पठद्भिः
भवते	,,	भवद्भ्यः	च०	पठते	,,	पठद्भ्यः
भवतः	,,	,,	पं०	पठतः	,,	,,
,,	भवतोः	भवताम्	ष०	,,	पठतोः	पठताम्
भवति	,,	भवत्सु	स०	पठति	,,	पठत्सु
हे भवन्	हे भवन्तौ	हे भवन्तः	सं०	हे पठन्	हे पठन्तौ	हे पठन्तः

सूचना- स्त्रीलिंग में भवती के रूप नदी (शब्द० ४३) के तुल्य चलेंगे।

(२५) **यावत् (जितना)** (दे० अ० ३०)				(२६) **बुध् (विद्वान्)** (दे० अ० ३१)		
यावान्	यावन्तौ	यावन्तः	प्र०	भुत्	बुधौ	बुधः
यावन्तम्	''	यावतः	द्वि०	बुधम्	''	''
यावता	यावद्भ्याम्	यावद्भिः	तृ०	बुधा	भुद्भ्याम्	भुद्भिः
यावते	''	यावद्भ्यः	च०	बुधे	''	भुद्भ्यः
यावतः	''	''	पं०	बुधः	''	''
''	यावतोः	यावताम्	ष०	''	बुधोः	बुधाम्
यावति	''	यावत्सु	स०	बुधि	''	भुत्सु
हे यावत्	हे यावन्तौ	हे यावन्तः	सं०	हे भुत्	हे बुधौ	हे बुधः

❖ ❖ ❖

(२७) **आत्मन् (आत्मा)** (दे० अ० ३२)				(२८) **राजन् (राजा)** (दे० अ० ३२)		
आत्मा	आत्मानौ	आत्मानः	प्र०	राजा	राजानौ	राजानः
आत्मानम्	''	आत्मनः	द्वि०	राजानम्	''	राज्ञः
आत्मना	आत्मभ्याम्	आत्मभिः	तृ०	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
आत्मने	''	आत्मभ्यः	च०	राज्ञे	''	राजभ्यः
आत्मनः	''	''	पं०	राज्ञः	''	''
''	आत्मनोः	आत्मनाम्	ष०	''	राज्ञोः	राज्ञाम्
आत्मनि	''	आत्मसु	स०	राज्ञि, राजनि	''	राजसु
हे आत्मन्	हे आत्मानौ	हे आत्मानः	सं०	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः

❖ ❖ ❖

(२९) **श्वन् (कुत्ता)** (दे० अ० ३३)				(३०) **युवन् (युवक)** (दे० अ० ३३)		
श्वा	श्वानौ	श्वानः	प्र०	युवा	युवानौ	युवानः
श्वानम्	''	शुनः	द्वि०	युवानम्	''	यूनः
शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः	तृ०	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
शुने	''	श्वभ्यः	च०	यूने	''	युवभ्यः
शुनः	''	''	पं०	यूनः	''	''
''	शुनोः	शुनाम्	ष०	''	यूनोः	यूनाम्
शुनि	''	श्वसु	स०	यूनि	''	युवसु
हे श्वन्	हे श्वानौ	हे श्वानः	सं०	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

(३१) वृत्रहन् (इन्द्र) (दे० अ० ३४) **(३२) मघवन् (इन्द्र)** (दे० अ० ३४)

वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहण:	प्र०	मघवा	मघवानौ	मघवान:
वृत्रहणम्	''	वृत्रघ्न:	द्वि०	मघवानम्	''	मघोन:
वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभि:	तृ०	मघोना	मघवभ्याम्	मघवभि:
वृत्रघ्ने	''	वृत्रहभ्य:	च०	मघोने	''	मघवभ्य:
वृत्रघ्न:	''	''	पं०	मघोन:	''	''
''	वृत्रघ्नो:	वृत्रघ्नाम्	ष०	''	मघोनो:	मघोनाम्
वृत्रघ्नि, वृत्रहणि	''	वृत्रहसु	स०	मघोनि	''	मघवसु
हे वृत्रहन्	हे वृत्रहणौ	हे वृत्रहण:	सं०	हे मघवन्	हे मघवानौ	हे मघवान:

सूचना- मघवन् का ही मघवत् शब्द बनाकर भगवत् (शब्द० २०) के तुल्य भी रूप चलावें।

❖ ❖ ❖

(३३) करिन् (हाथी) (दे० अ० ३५) **(३४) पथिन् (मार्ग)** (दे० अ० ३५)

करी	करिणौ	करिण:	प्र०	पन्था:	पन्थानौ	पन्थान:
करिणम्	''	''	द्वि०	पन्थानम्	''	पथ:
करिणा	करिभ्याम्	करिभि:	तृ०	पथा	पथिभ्याम्	पथिभि:
करिणे	''	करिभ्य:	च०	पथे	''	पथिभ्य:
करिण:	''	''	पं०	पथ:	''	''
''	करिणो:	करिणाम्	ष०	''	पथो:	पथाम्
करिणि	''	करिषु	स०	पथि	''	पथिषु
हे करिन्	हे करिणौ	हे करिण:	सं०	हे पन्था:	हे पन्थानौ	हे पन्थान:

❖ ❖ ❖

(३५) तादृश् (वैसा) (दे० अ० ३६) **(३६) विद्वस् (विद्वान्)** (दे० अ० ३७)

तादृक्	तादृशौ	तादृश:	प्र०	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांस:
तादृशम्	''	''	द्वि०	विद्वांसम्	''	विदुष:
तादृशा	तादृग्भ्याम्	तादृग्भि:	तृ०	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भि:
तादृशे	''	तादृग्भ्य:	च०	विदुषे	''	विद्वद्भ्य:
तादृश:	''	''	पं०	विदुष:	''	''
''	तादृशो:	तादृशाम्	ष०	''	विदुषो:	विदुषाम्
तादृशि	''	तादृक्षु	स०	विदुषि	''	विद्वत्सु
हे तादृक्	हे तादृशौ	हे तादृश:	सं०	हे विद्वन्	हे विद्वांसौ	हे विद्वांस:

(३७) पुंस् (पुरुष) (दे० अ० ३७) **(३८) चन्द्रमस् (चन्द्रमा)** (दे० अ० ३६)

पुंस्				चन्द्रमस्		
पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः	*प्र०*	चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
पुमांसम्	''	पुंसः	*द्वि०*	चन्द्रमसम्	''	''
पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः	*तृ०*	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
पुंसे	''	पुंभ्यः	*च०*	चन्द्रमसे	''	चन्द्रमोभ्यः
पुंसः	''	''	*पं०*	चन्द्रमसः	''	''
''	पुंसोः	पुंसाम्	*ष०*	''	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
पुंसि	''	पुंसु	*स०*	चन्द्रमसि	''	चन्द्रमस्सु
हे पुमन्	हे पुमांसौ	हे पुमांसः	*सं०*	हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः

❖ ❖ ❖

(३९) श्रेयस् (अधिक प्रशंसनीय) (दे० अ० ३८) **(४०) अनडुह् (बैल)** (दे० अ० ३८)

श्रेयस्				अनडुह्		
श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः	*प्र०*	अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
श्रेयांसम्	''	श्रेयसः	*द्वि०*	अनड्वाहम्	''	अनडुहः
श्रेयसा	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभिः	*तृ०*	अनडुहा	अनडुद्भ्याम्	अनडुद्भिः
श्रेयसे	''	श्रेयोभ्यः	*च०*	अनडुहे	''	अनडुद्भ्यः
श्रेयसः	''	''	*पं०*	अनडुहः	''	''
''	श्रेयसोः	श्रेयसाम्	*ष०*	''	अनडुहोः	अनडुहाम्
श्रेयसि	''	श्रेयस्सु	*स०*	अनडुहि	''	अनडुत्सु
हे श्रेयन्	हे श्रेयांसौ	हे श्रेयांसः	*सं०*	हे अनड्वन्	हे अनड्वाहौ	हे अनड्वाहः

❖ ❖ ❖

(ग) स्त्रीलिंग शब्द

(४१) रमा (लक्ष्मी) (दे० अ० ३) **(४२) मति (बुद्धि)** (दे० अ० ३९)

रमा				मति		
रमा	रमे	रमाः	*प्र०*	मतिः	मती	मतयः
रमाम्	''	''	*द्वि०*	मतिम्	''	मतीः
रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः	*तृ०*	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
रमायै	''	रमाभ्यः	*च०*	मत्यै, मतये	''	मतिभ्यः
रमायाः	''	''	*पं०*	मत्याः, मतेः	''	''
''	रमयोः	रमाणाम्	*ष०*	'' ''	मत्योः	मतीनाम्
रमायाम्	''	रमासु	*स०*	मत्याम्, मतौ	''	मतिषु
हे रमे	हे रमे	हे रमाः	*सं०*	हे मते	हे मती	हे मतयः

(४३) नदी (नदी) (दे० अ० ४०) | **(४४) लक्ष्मी (लक्ष्मी)** (दे० अ० ४०)

नदी	नद्यौ	नद्य:	प्र०	लक्ष्मी:	लक्ष्म्यौ	लक्ष्म्य:
नदीम्	''	नदी:	द्वि०	लक्ष्मीम्	''	लक्ष्मी:
नद्या	नदीभ्याम्	नदीभि:	तृ०	लक्ष्म्या	लक्ष्मीभ्याम्	लक्ष्मीभि:
नद्यै	''	नदीभ्य:	च०	लक्ष्म्यै	''	लक्ष्मीभ्य:
नद्या:	''	''	पं०	लक्ष्म्या:	''	''
''	नद्यो:	नदीनाम्	ष०	''	लक्ष्म्यो:	लक्ष्मीणाम्
नद्याम्	''	नदीषु	स०	लक्ष्म्याम्	''	लक्ष्मीषु
हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्य:	सं०	हे लक्ष्मि	हे लक्ष्म्यौ	हे लक्ष्म्य:

❖ ❖ ❖

(४५) स्त्री (स्त्री) (दे० अ० ४१) | **(४६) श्री (लक्ष्मी)** (दे० अ० ४१)

स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रिय:	प्र०	श्री:	श्रियौ	श्रिय:
स्त्रियम्, स्त्रीम्	''	स्त्रिय:, स्त्री:	द्वि०	श्रियम्	''	''
स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभि:	तृ०	श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभि:
स्त्रियै	''	स्त्रीभ्य:	च०	श्रियै, श्रिये	''	श्रीभ्य:
स्त्रिया:	''	''	पं०	श्रिया:, श्रिय:	''	''
''	स्त्रियो:	स्त्रीणाम्	ष०	'' ''	श्रियो:	श्रियाम्
स्त्रियाम्	''	स्त्रीषु	स०	श्रियाम्, श्रियि	''	श्रीषु
हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रिय:	सं०	हे श्री:	हे श्रियौ	हे श्रिय:

❖ ❖ ❖

(४७) धेनु (गाय) (दे० अ० ४२) | **(४८) वधू (बहू)** (दे० अ० ४२)

धेनु:	धेनू	धेनव:	प्र०	वधू:	वध्वौ	वध्व:
धेनुम्	''	धेनू:	द्वि०	वधूम्	''	वधू:
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभि:	तृ०	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभि:
धेन्वै, धेनवे	''	धेनुभ्य:	च०	वध्वै	''	वधूभ्य:
धेन्वा:, धेनो:	''	''	पं०	वध्वा:	''	''
'' ''	धेन्वो:	धेनूनाम्	ष०	''	वध्वो:	वधूनाम्
धेन्वाम्, धेनौ	''	धेनुषु	स०	वध्वाम्	''	वधूषु
हे धेनो	हे धेनू	हे धेनव:	सं०	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्व:

(४९) स्वसृ (बहन) (दे० अ० ४३)				**(५०) मातृ (माता)** (दे० अ० ४३)		
स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः	प्र०	माता	मातरौ	मातरः
स्वसारम्	,,	स्वसॄः	द्वि०	मातरम्	,,	मातॄः
स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः	तृ०	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
स्वस्रे	,,	स्वसृभ्यः	च०	मात्रे	,,	मातृभ्यः
स्वसुः	,,	,,	पं०	मातुः	,,	,,
,,	स्वस्रोः	स्वसॄणाम्	ष०	,,	मात्रोः	मातॄणाम्
स्वसरि	,,	स्वसृषु	स०	मातरि	,,	मातृषु
हे स्वसः	हे स्वसारौ	हे स्वसारः	सं०	हे मातः	हे मातरौ	हे मातरः

❖ ❖ ❖

(५१) नौ (नाव) (दे० अ० ४४)				**(५२) वाच् (वाणी)** (दे० अ० ४४)		
नौः	नावौ	नावः	प्र०	वाक्,-ग्	वाचौ	वाचः
नावम्	,,	,,	द्वि०	वाचम्	,,	,,
नावा	नौभ्याम्	नौभिः	तृ०	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
नावे	,,	नौभ्यः	च०	वाचे	,,	वाग्भ्यः
नावः	,,	,,	पं०	वाचः	,,	,,
,,	नावोः	नावाम्	ष०	,,	वाचोः	वाचाम्
नावि	,,	नौषु	स०	वाचि	,,	वाक्षु
हे नौः	हे नावौ	हे नावः	सं०	हे वाक्,-ग्	हे वाचौ	हे वाचः

❖ ❖ ❖

(५३) स्रज् (माला) (दे० अ० ४५)				**(५४) सरित् (नदी)** (दे० अ० ४५)		
स्रक्	स्रजौ	स्रजः	प्र०	सरित्	सरितौ	सरितः
स्रजम्	,,	,,	द्वि०	सरितम्	,,	,,
स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः	तृ०	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
स्रजे	,,	स्रग्भ्यः	च०	सरिते	,,	सरिद्भ्यः
स्रजः	,,	,,	पं०	सरितः	,,	,,
,,	स्रजोः	स्रजाम्	ष०	,,	सरितोः	सरिताम्
स्रजि	,,	स्रक्षु	स०	सरिति	,,	सरित्सु
हे स्रक्	हे स्रजौ	हे स्रजः	सं०	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

(५५) समिध् (समिधा) (दे० अ० ४६) **(५६) अप् (जल)** (दे० अ० ४६)

समित्	समिधौ	समिधः	*प्र०*	आपः
समिधम्	''	''	*द्वि०*	अपः
समिधा	समिद्भ्याम्	समिद्भिः	*तृ०*	अद्भिः
समिधे	''	समिद्भ्यः	*च०*	अद्भ्यः
समिधः	''	''	*पं०*	''
''	समिधोः	समिधाम्	*ष०*	अपाम्
समिधि	''	समित्सु	*स०*	अप्सु
हे समित्	हे समिधौ	हे समिधः	*सं०*	हे आपः

सूचना—अप् के रूप केवल बहुवचन में ही चलते हैं।

❖ ❖ ❖

(५७) गिर् (वाणी) (दे० अ० ४७) **(५८) पुर् (नगर)** (दे० अ० ४७)

गीः	गिरौ	गिरः	*प्र०*	पूः	पुरौ	पुरः
गिरम्	''	''	*द्वि०*	पुरम्	''	''
गिरा	गीर्भ्याम्	गीर्भिः	*तृ०*	पुरा	पूर्भ्याम्	पूर्भिः
गिरे	''	गीर्भ्यः	*च०*	पुरे	''	पूर्भ्यः
गिरः	''	''	*पं०*	पुरः	''	''
''	गिरोः	गिराम्	*ष०*	''	पुरोः	पुराम्
गिरि	''	गीर्षु	*स०*	पुरि	''	पूर्षु
हे गीः	हे गिरौ	हे गिरः	*सं०*	हे पूः	हे पुरौ	हे पुरः

❖ ❖ ❖

(५९) दिश् (दिशा) (दे० अ० ४८) **(६०) उपानह् (जूता)** (दे० अ० ४८)

दिक्	दिशौ	दिशः	*प्र०*	उपानत्	उपानहौ	उपानहः
दिशम्	''	''	*द्वि०*	उपानहम्	''	''
दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः	*तृ०*	उपानहा	उपानद्भ्याम्	उपानद्भिः
दिशे	''	दिग्भ्यः	*च०*	उपानहे	''	उपानद्भ्यः
दिशः	''	''	*पं०*	उपानहः	''	''
''	दिशोः	दिशाम्	*ष०*	''	उपानहोः	उपानहाम्
दिशि	''	दिक्षु	*स०*	उपानहि	''	उपानत्सु
हे दिक्	हे दिशौ	हे दिशः	*सं०*	हे उपानत्	हे उपानहौ	हे उपानहः

(घ) नपुंसकलिंग शब्द

(६१) गृह (घर) (दे० अ० २) **(६२) वारि (जल)** (दे० अ० ४९)

गृहम्	गृहे	गृहाणि	प्र०	वारि	वारिणी	वारीणि
''	''	''	द्वि०	''	''	''
गृहेण	गृहाभ्याम्	गृहैः	तृ०	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
गृहाय	''	गृहेभ्यः	च०	वारिणे	''	वारिभ्यः
गृहात्	''	''	पं०	वारिणः	''	''
गृहस्य	गृहयोः	गृहाणाम्	ष०	''	वारिणोः	वारीणाम्
गृहे	''	गृहेषु	स०	वारिणि	''	वारिषु
हे गृह	हे गृहे	हे गृहाणि	सं०	हे वारि, वारे	हे वारिणी	हे वारीणि

सूचना— मनोहारिन् आदि इन् अन्तवालों के रूप वारि के तुल्य चलेंगे। दो स्थानों पर अन्तर होगा। षष्ठी बहु० में 'इनाम्' अन्त में रहेगा और सं० एक० में 'इन्'।

❖ ❖ ❖

(६३) दधि (दही) (दे० अ० ४९) **(६४) अक्षि (आँख)** (दधिवत्) (दे० अ० ५०)

दधि	दधिनी	दधीनि	प्र०	अक्षि	अक्षिणी	अक्षीणि
''	''	''	द्वि०	''	''	''
दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः	तृ०	अक्ष्णा	अक्षिभ्याम्	अक्षिभिः
दध्ने	''	दधिभ्यः	च०	अक्ष्णे	''	अक्षिभ्य·
दध्नः	''	''	पं०	अक्ष्णः	''	''
''	दध्नोः	दध्नाम्	ष०	''	अक्ष्णोः	अक्ष्णाम्
दध्नि, दधनि	''	दधिषु	स०	अक्ष्णि, अक्षणि	''	अक्षिषु
हे दधि, दधे	हे दधिनी	हे दधीनि	सं०	हे अक्षि, अक्षे	हे अक्षिणी	हे अक्षीणि

❖ ❖ ❖

(६५) अस्थि (हड्डी) (दधिवत्) (दे० अ० ५०) **(६६) मधु (शहद)** (दे० अ० ५१)

अस्थि	अस्थिनी	अस्थीनि	प्र०	मधु	मधुनी	मधूनि
''	''	''	द्वि०	''	''	''
अस्थ्ना	अस्थिभ्याम्	अस्थिभिः	तृ०	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
अस्थ्ने	''	अस्थिभ्यः	च०	मधुने	''	मधुभ्यः
अस्थ्नः	''	''	पं०	मधुनः	''	''
''	अस्थ्नोः	अस्थ्नाम्	ष०	''	मधुनोः	मधूनाम्
अस्थ्नि, अस्थनि	''	अस्थिषु	स०	मधुनि	''	मधुषु
हे अस्थि, अस्थे	हे अस्थिनी	हे अस्थीनि	सं०	हे मधु, मधो	हे मधुनी	हे मधूनि

(६७) कर्तृ (करनेवाला) (दे० अ० ५१) **(६८) जगत् (संसार)** (दे० अ० ५२)

कर्तृ	कर्तृणी	कर्तृणि	प्र०	जगत्	जगती	जगन्ति
''	''	''	द्वि	''	''	''
कर्तृणा	कर्तृभ्याम्	कर्तृभिः	तृ०	जगता	जगद्भ्याम्	जगद्भिः
कर्तृणे	''	कर्तृभ्यः	च०	जगते	''	जगद्भ्यः
कर्तृणः	''	''	पं०	जगतः	''	''
''	कर्तृणोः	कर्तृणाम्	ष०	''	जगतोः	जगताम्
कर्तृणि	''	कर्तृषु	स०	जगति	''	जगत्सु
हे कर्तृ, कर्तः	हे कर्तृणी	हे कर्तृणि	सं०	हे जगत्	हे जगती	हे जगन्ति

सूचना—कर्तृ के तृतीया एक० से सप्तमी बहु० तक कर्तृ पुं० (शब्द० ११) के तुल्य भी रूप चलेंगे।

❖ ❖ ❖

(६९) नामन् (नाम) (दे० अ० ५३) **(७०) शर्मन् (सुख)** (दे० अ० ५३)

नाम	नाम्नी, नामनी	नामानि	प्र०	शर्म	शर्मणी	शर्माणि
''	'' ''	''	द्वि०	''	''	''
नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः	तृ०	शर्मणा	शर्मभ्याम्	शर्मभिः
नाम्ने	''	नामभ्यः	च०	शर्मणे	''	शर्मभ्यः
नाम्नः	''	''	पं०	शर्मणः	''	''
''	नाम्नोः	नाम्नाम्	ष०	''	शर्मणोः	शर्मणाम्
नाम्नि, नामनि	''	नामसु	स०	शर्मणि	''	शर्मसु
हे नाम, नामन्	नाम्नी, नामनी	नामानि	सं०	हे शर्म, शर्मन्	हे शर्मणी	हे शर्माणि

❖ ❖ ❖

(७१) ब्रह्मन् (ब्रह्म, वेद) (दे० अ० ५४) **(७२) अहन् (दिन)** (दे० अ० ५४)

ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि	प्र०	अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
''	''	''	द्वि०	''	'' ''	''
ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः	तृ०	अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः
ब्रह्मणे	''	ब्रह्मभ्यः	च०	अह्ने	''	अहोभ्यः
ब्रह्मणः	''	''	पं०	अह्नः	''	''
''	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्	ष०	''	अह्नोः	अह्नाम्
ब्रह्मणि	''	ब्रह्मसु	स०	अह्नि, अहनि	''	अहःसु, -स्सु
हे ब्रह्म, ब्रह्मन्	हे ब्रह्मणी	हे ब्रह्माणि	सं०	हे अहः	हे अह्नी, अहनी	हे अहानि

(७३) हविष् (हवि) ((दे० अ० ५५) **(७४) धनुष् (धनुष)** (दे० अ० ५५)

हवि:	हविषी	हवींषि	प्र०	धनु:	धनुषी	धनूंषि
''	''	''	द्वि०	''	''	''
हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भि:	तृ०	धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भि:
हविषे	''	हविर्भ्य:	च०	धनुषे	''	धनुर्भ्य:
हविष:	''	''	पं०	धनुष:	''	''
''	हविषो:	हविषाम्	ष०	''	धनुषो:	धनुषाम्
हविषि	''	हवि:षु,-ष्षु	स०	धनुषि	''	धनु:षु, -ष्षु
हे हवि:	हे हविषी	हवींषि	सं०	हे धनु:	हे धनुषी	हे धनूंषि

❖ ❖ ❖

(७५) पयस् (दूध, जल) (दे० अ० ५६) **(७६) मनस् (मन)** (दे० अ० ५६)

पय:	पयसी	पयांसि	प्र०	मन:	मनसी	मनांसि
''	''	''	द्वि०	''	''	''
पयसा	पयोभ्याम्	पयोभि:	तृ०	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभि:
पयसे	''	पयोभ्य:	च०	मनसे	''	मनोभ्य:
पयस:	''	''	पं०	मनस:	''	''
''	पयसो:	पयसाम्	ष०	''	मनसो:	मनसाम्
पयसि	''	पय:सु,-स्सु	स०	मनसि	''	मन:सु, -स्सु
हे पय:	हे पयसी	हे पयांसि	सं०	हे मन:	हे मनसी	हे मनांसि

❖ ❖ ❖

(ङ) सर्वनाम शब्द

(७७) (क) सर्व (सब) पुंलिंग (दे० अ० ६) **(७७) (ग) सर्व (सब) (स्त्रीलिंग)** (दे० अ० ८)

सर्व:	सर्वौ	सर्वे	प्र०	सर्वा	सर्वे	सर्वा:
सर्वम्	''	सर्वान्	द्वि०	सर्वाम्	''	''
सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वै:	तृ०	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभि:
सर्वस्मै	''	सर्वेभ्य:	च०	सर्वस्यै	''	सर्वाभ्य:
सर्वस्मात्	''	''	पं०	सर्वस्या:	''	''
सर्वस्य	सर्वयो:	सर्वेषाम्	ष०	''	सर्वयो:	सर्वासाम्
सर्वस्मिन्	''	सर्वेषु	स०	सर्वस्याम्	''	सर्वासु

❖ ❖ ❖

(७७) (ख) सर्व (नपुंसकलिंग) (दे० अ० ७)

सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि	प्र०
''	''	''	द्वि०

शेष पुंलिंग के तुल्य (दे० ७७, क)

(७८) (क) विश्व (सब) पुंलिंग (दे० अ० ६)   **(७९) (क) पूर्व (पहला) पुंलिंग** (दे० अ० ६)

विश्वः	विश्वौ	विश्वे	प्र०	पूर्वः	पूर्वौ	पूर्वे, पूर्वाः
विश्वम्	,,	विश्वान्	द्वि०	पूर्वम्	,,	पूर्वान्
विश्वेन	विश्वाभ्याम्	विश्वैः	तृ०	पूर्वेण	पूर्वाभ्याम्	पूर्वैः
विश्वस्मै	,,	विश्वेभ्यः	च०	पूर्वस्मै	,,	पूर्वेभ्यः
विश्वस्मात्	,,	,,	पं०	पूर्वस्मात्, पूर्वात्	,,	,,
विश्वस्य	विश्वयोः	विश्वेषाम्	ष०	पूर्वस्य	पूर्वयोः	पूर्वेषाम्
विश्वस्मिन्	,,	विश्वेषु	स०	पूर्वस्मिन्, पूर्वे	,,	पूर्वेषु

❖ ❖ ❖

(७८) (ख) विश्व (नपुंसकलिंग) (दे० अ० ७)   **(७९) (ख) पूर्व (नपुंसकलिंग)** (दे० अ० ७)

विश्वम्	विश्वे	विश्वानि	प्र०	पूर्वम्	पूर्वे	पूर्वाणि
,,	,,	,,	द्वि०	,,	,,	,,

शेष पुंलिंग के तुल्य (दे० अ० ७८, क)   शेष पुंलिंग के तुल्य (देखो ७९, क)

❖ ❖ ❖

(७८) (ग) विश्व (स्त्रीलिंग) (दे० अ० ८)   **(७९) (ग) पूर्व (स्त्रीलिंग)** (दे० अ० ८)

विश्वा	विश्वे	विश्वाः	प्र०	पूर्वा	पूर्वे	पूर्वाः
विश्वाम्	,,	,,	द्वि०	पूर्वाम्	,,	,,
विश्वया	विश्वाभ्याम्	विश्वाभिः	तृ०	पूर्वया	पूर्वाभ्याम्	पूर्वाभिः
विश्वस्यै	,,	विश्वाभ्यः	च०	पूर्वस्यै	,,	पूर्वाभ्यः
विश्वस्याः	,,	,,	पं०	पूर्वस्याः	,,	,,
,,	विश्वयोः	विश्वासाम्	ष०	,,	पूर्वयोः	पूर्वासाम्
विश्वस्याम्	,,	विश्वासु	स०	पूर्वस्याम्	,,	पूर्वासु

❖ ❖ ❖

(८०) (क) अन्य (दूसरा) पुंलिंग (दे० अ० ६)   **(८०) (ग) अन्य (स्त्रीलिंग)** (दे० अ० ८)

अन्यः	अन्यौ	अन्ये	प्र०	अन्या	अन्ये	अन्याः
अन्यम्	,,	अन्यान्	द्वि०	अन्याम्	,,	,,
अन्येन	अन्याभ्याम्	अन्यैः	तृ०	अन्यया	अन्याभ्याम्	अन्याभिः
अन्यस्मै	,,	अन्येभ्यः	च०	अन्यस्यै	,,	अन्याभ्यः
अन्यस्मात्	,,	,,	पं०	अन्यस्याः	,,	,,
अन्यस्य	अन्ययोः	अन्येषाम्	ष०	,,	अन्दयोः	अन्यासाम्
अन्यस्मिन्	,,	अन्येषु	स०	अन्यस्याम्	,,	अन्यासु

❖ ❖ ❖

(८०) (ख) अन्य (नपुंसकलिंग) (दे० अ० ७)

अन्यत्	अन्ये	अन्यानि	प्र०
,,	,,	,,	द्वि०

शेष पुंलिंग के तुल्य (देखो ८०, क)

(८१) (क) तत् (वह) पुंलिंग (दे० अ० ६) — **(८२) (क) यत् (जो) पुंलिंग** (दे० अ० ६)

सः	तौ	ते	प्र०	यः	यौ	ये
तम्	''	तान्	द्वि०	यम्	''	यान्
तेन	ताभ्याम्	तैः	तृ०	येन	याभ्याम्	यैः
तस्मै	''	तेभ्यः	च०	यस्मै	''	येभ्यः
तस्मात्	''	''	पं०	यस्मात्	''	''
तस्य	तयोः	तेषाम्	ष०	यस्य	ययोः	येषाम्
तस्मिन्	''	तेषु	स०	यस्मिन्	''	येषु

(८१) (ख) तत् (नपुंसकलिंग) (दे० अ० ७) **(८२) (ख) यत् (नपुंसकलिंग)** (दे० अ० ७)

तत्	ते	तानि	प्र०	यत्	ये	यानि
''	''	''	द्वि०	''	''	''

शेष पुंलिंग के तुल्य (देखो ८१, क)   शेष पुंलिंग के तुल्य (देखो ८२, क)

(८१) (ग) तत् (स्त्रीलिंग) (दे० अ० ८) **(८२) (ग) यत् (स्त्रीलिंग)** (दे० अ० ८)

सा	ते	ताः	प्र०	या	ये	याः
ताम्	''	''	द्वि०	याम्	''	''
तया	ताभ्याम्	ताभिः	तृ०	यया	याभ्याम्	याभिः
तस्यै	''	ताभ्यः	च०	यस्यै	''	याभ्यः
तस्याः	''	''	पं०	यस्याः	''	''
''	तयोः	तासाम्	ष०	''	ययोः	यासाम्
तस्याम्	''	तासु	स०	यस्याम्	''	यासु

(८३) (क) एतत् (यह) पुंलिंग (तत् के तुल्य) — **(८४) (क) किम् (क्या) पुंलिंग** (तत् के तुल्य)

एषः	एतौ	एते	प्र०	कः	कौ	के
एतम्	''	एतान्	द्वि०	कम्	''	कान्

शेष तत् पुंलिंग (८१, क) के तुल्य।   शेष तत् पुंलिंग (८१, क) के तुल्य।

(८३) (ख) एतत् (नपुंसकलिंग) — **(८४) (ख) किम् (नपुंसक०)**

एतत्	एते	एतानि	प्र०	किम्	के	कानि
''	''	''	द्वि०	''	''	''

शेष तत् नपुं० (८१, ख) के तुल्य।   शेष तत् नपुं० (८१, ख) के तुल्य।

(८३) (ग) एतत् (स्त्रीलिंग) — **(८४) (ग) किम् (स्त्रीलिंग)**

एषा	एते	एताः	प्र०	का	के	काः
एताम्	''	''	द्वि०	काम्	''	''

शेष तत् स्त्रीलिंग (८१, ग) के तुल्य।   शेष तत् स्त्रीलिंग (८१, ग) के तुल्य।

(८५) युष्मद् (तू) (दे० अ० ११)

त्वम्	युवाम्	यूयम्	प्र०
त्वाम्	''	युष्मान्	द्वि०
त्वा	वाम्	वः	द्वि०
त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः	तृ०
तुभ्यम्	''	युष्मभ्यम्	च०
ते	वाम्	वः	च०
त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्	पं०
तव	युवयोः	युष्माकम्	ष०
ते	वाम्	वः	ष०
त्वयि	युवयोः	युष्मासु	स०

(८६) अस्मद् (मैं) (दे० अ० १२)

प्र०	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वि०	माम्	''	अस्मान्
द्वि०	मा	नौ	नः
तृ०	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
च०	मह्यम्	''	अस्मभ्यम्
च०	मे	नौ	नः
पं०	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
ष०	मम	आवयोः	अस्माकम्
ष०	मे	नौ	नः
स०	मयि	आवयोः	अस्मासु

(८७) (क) इदम् (यह) पुंलिंग
(दे० अ० ९)

अयम्	इमौ	इमे	प्र०
इमम्	''	इमान्	द्वि०
अनेन	आभ्याम्	एभिः	तृ०
अस्मै	''	एभ्यः	च०
अस्मात्	''	''	पं०
अस्य	अनयोः	एषाम्	ष०
अस्मिन्	''	एषु	स०

(८८) (क) अदस् (वह) पुंलिंग
(दे० अ० १०)

प्र०	असौ	अमू	अमी
द्वि०	अमुम्	''	अमून्
तृ०	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
च०	अमुष्मै	''	अमीभ्यः
पं०	अमुष्मात्	''	''
ष०	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
स०	अमुष्मिन्	''	अमीषु

(८७) (ख) इदम् (नपुंसक०)

इदम्	इमे	इमानि	प्र०
''	''	''	द्वि०

शेष पुंलिंग के तुल्य (देखो ८७, क)

(८८) (ख) अदस् (नपुंसक०)

प्र०	अदः	अमू	अमूनि
द्वि०	''	''	''

शेष पुंलिंग के तुल्य (देखो ८८, क)

(८७) (ग) इदम् (स्त्रीलिंग)

इयम्	इमे	इमाः	प्र०
इमाम्	''	''	द्वि०
अनया	आभ्याम्	आभिः	तृ०
अस्यै	''	आभ्यः	च०
अस्याः	''	''	पं०
''	अनयोः	आसाम्	ष०
अस्याम्	''	आसु	स०

(८८) (ग) अदस् (स्त्रीलिंग)

प्र०	असौ	अमू	अमूः
द्वि०	अमूम्	''	''
तृ०	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
च०	अमुष्यै	''	अमूभ्यः
पं०	अमुष्याः	''	''
ष०	''	अमुयोः	अमूषाम्
स०	अमुष्याम्	''	अमूषु

(८९) एक (एक) (दे० अ० १३)

पुंलिंग	*नपुंसक*	*स्त्रीलिंग*	
एक:	एकम्	एका	*प्र०*
एकम्	,,	एकाम्	*द्वि०*
एकेन	एकेन	एकया	*तृ०*
एकस्मै	एकस्मै	एकस्यै	*च०*
एकस्मात्	एकस्मात्	एकस्या:	*पं०*
एकस्य	एकस्य	,,	*ष०*
एकस्मिन्	एकस्मिन्	एकस्याम्	*स०*

सूचना-एक के केवल एक० में रूप चलते हैं।

(९०) द्वि (दो) (दे० अ० १४)

	पुंलिंग	*नपुंसक*	*स्त्रीलिंग*
प्र०	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वि०	,,	,,	,,
तृ०	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
च०	,,	,,	,,
पं०	,,	,,	,,
ष०	द्वयो:	द्वयो:	द्वयो:
स०	,,	,,	,,

सूचना-द्वि के द्वि० में ही रूप चलेंगे।

(९१) (त्रि) (तीन) (दे० अ० १५)

पुंलिंग	*नपुंसक*	*स्त्रीलिंग*	
त्रय:	त्रीणि	तिस्र:	*प्र०*
त्रीन्	,,	,,	*द्वि०*
त्रिभि:	त्रिभि:	तिसृभि:	*तृ०*
त्रिभ्य:	त्रिभ्य:	तिसृभ्य:	*च०*
,,	,,	,,	*पं०*
त्रयाणाम्	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	*ष०*
त्रिषु	त्रिषु	तिसृषु	*स०*

सूचना-त्रि के बहु० में ही रूप चलते हैं।

(९२) चतुर् (चार) (दे० अ० १६)

	पुंलिंग	*नपुंसक*	*स्त्रीलिंग*
प्र०	चत्वार:	चत्वारि	चतस्र:
द्वि०	चतुर:	,,	,,
तृ०	चतुर्भि:	चतुर्भि:	चतसृभि:
च०	चतुर्भ्य:	चतुर्भ्य:	चतसृभ्य:
पं०	,,	,,	,,
ष०	चतुर्णाम्	चतुर्णाम्	चतसृणाम्
स०	चतुर्षु	चतुर्षु	चतसृषु

सूचना-चतुर् के बहु० में ही रूप चलते हैं।

(९३) पञ्चन् (पाँच)	**(९४) षष् (छ:)**		**(९५) सप्तन् (सात)**
पञ्च	षट्, षड्	*प्र०*	सप्त
,,	,,	*द्वि०*	,,
पञ्चभि:	षड्भि:	*तृ०*	सप्तभि:
पञ्चभ्य:	षड्भ्य:	*च०*	सप्तभ्य:
,,	,,	*पं०*	,,
पञ्चानाम्	षण्णाम्	*ष०*	सप्तानाम्
पञ्चसु	षट्सु	*स०*	सप्तसु

सूचना—३ से १८ तक की संख्याओं के रूप केवल बहुवचन में ही चलते हैं।

(९६) अष्टन् (आठ)			**(९७) नवन् (नौ)**	**(९८) दशन् (दश)**
अष्ट	अष्टौ	*प्र०*	नव	दश
''	''	*द्वि०*	''	''
अष्टभिः	अष्टाभिः	*तृ०*	नवभिः	दशभिः
अष्टभ्यः	अष्टाभ्यः	*च०*	नवभ्यः	दशभ्यः
''	''	*पं०*	''	''
अष्टानाम्	अष्टानाम्	*ष०*	नवानाम्	दशानाम्
अष्टसु	अष्टासु	*स०*	नवसु	दशसु

सूचना—अष्टन्, नवन्, दशन् के रूप बहुवचन में ही चलते हैं।

(९९) कति (कितने) (दे० अ० ५९)		**(१००) उभ (दोनों)** (दे० अ० ६०)	
		पुं०	नपुं०, स्त्री०
कति	*प्र०*	उभौ	उभे
''	*द्वि०*	''	''
कतिभिः	*तृ०*	उभाभ्याम्	उभाभ्याम्
कतिभ्यः	*च०*	''	''
''	*पं०*	''	''
कतीनाम्	*ष०*	उभयोः	उभयोः
कतिषु	*स०*	''	''

सूचना—कति के रूप बहु० में ही चलते हैं।

सूचना— उभ के रूप तीनों लिंगों में केवल द्विवचन में ही चलते हैं।

(२) संख्याएँ

१. एकः, एकम्, एका
२. द्वौ, द्वे, द्वे
३. त्रयः, त्रीणि, तिस्रः
४. चत्वारः, चत्वारि, चतस्रः
५. पञ्च
६. षट्
७. सप्त
८. अष्ट, अष्टौ
९. नव
१०. दश
११. एकादश
१२. द्वादश
१३. त्रयोदश
१४. चतुर्दश
१५. पञ्चदश
१६. षोडश
१७. सप्तदश
१८. अष्टादश
१९. नवदश
एकोनविंशतिः
२०. विंशतिः
२१. एकविंशतिः
२२. द्वाविंशतिः
२३. त्रयोविंशतिः
२४. चतुर्विंशतिः
२५. पञ्चविंशतिः
२६. षड्विंशतिः
२७. सप्तविंशतिः
२८. अष्टाविंशतिः
२९. नवविंशतिः
एकोनत्रिंशत्

३०. त्रिंशत्
३१. एकत्रिंशत्
३२. द्वात्रिंशत्
३३. त्रयस्त्रिंशत्
३४. चतुस्त्रिंशत्
३५. पञ्चत्रिंशत्
३६. षट्त्रिंशत्
३७. सप्तत्रिंशत्
३८. अष्टात्रिंशत्
३९. नवत्रिंशत्
एकोनचत्वारिंशत्
४०. चत्वारिंशत्
४१. एकचत्वारिंशत्
४२. द्विचत्वारिंशत्
द्वाचत्वारिंशत्
४३. त्रिचत्वारिंशत्
त्रयश्चत्वारिंशत्
४४. चतुश्चत्वारिंशत्
४५. पञ्चचत्वारिंशत्
४६. षट्चत्वारिंशत्
४७. सप्तचत्वारिंशत्
४८. अष्टचत्वारिंशत्
अष्टाचत्वारिंशत्
४९. नवचत्वारिंशत्
एकोनपञ्चाशत्
५०. पञ्चाशत्
५१. एकपञ्चाशत्
५२. द्विपञ्चाशत्
द्वापञ्चाशत्
५३. त्रिपञ्चाशत्
त्रयःपञ्चाशत्

५४. चतुःपञ्चाशत्
५५. पञ्चपञ्चाशत्
५६. षट्पञ्चाशत्
५७. सप्तपञ्चाशत्
५८. अष्टपञ्चाशत्
अष्टापञ्चाशत्
५९. नवपञ्चाशत्
एकोनषष्टिः
६०. षष्टिः
६१. एकषष्टिः
६२. द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः
६३. त्रिषष्टिः
त्रयःषष्टिः
६४. चतुःषष्टिः
६५. पञ्चषष्टिः
६६. षट्षष्टिः
६७. सप्तषष्टिः
६८. अष्टषष्टिः
अष्टाषष्टिः
६९. नवषष्टिः
एकोनसप्ततिः
७०. सप्ततिः
७१. एकसप्ततिः
७२. द्विसप्ततिः
द्वासप्ततिः
७३. त्रिसप्ततिः
त्रयःसप्ततिः
७४. चतुःसप्ततिः
७५. पञ्चसप्ततिः
७६. षट्सप्ततिः
७७. सप्तसप्ततिः

७८. अष्टसप्तति:
अष्टासप्तति:
७९. नवसप्तति:
एकोनाशीति:
८०. अशीति:
८१. एकाशीति:
८२. द्व्यशीति:
८३. त्र्यशीति:
८४. चतुरशीति:
८५. पञ्चाशीति:
८६. षडशीति:
८७. सप्ताशीति:
८८. अष्टाशीति:
८९. नवाशीति:
एकोननवति:
९०. नवति:
९१. एकनवति:
९२. द्विनवति:
द्वानवति:
९३. त्रिनवति:
त्रयोनवति:
९४. चतुर्नवति:
९५. पञ्चनवति:
९६. षण्णवति:
९७. सप्तनवति:
९८. अष्टनवति:
अष्टानवति:
९९. नवनवति:
एकोनशतम्
१००. शतम्।

१ हजार – सहस्रम्। १० हजार – अयुतम्। १ लाख – लक्षम्। १० लाख – नियुतम्, प्रयुतम्। १ करोड़ – कोटि:। १० करोड़ – दशकोटि:। १ अरब – अर्बुदम्। १० अरब – दशार्बुदम्। १ खरब – खर्वम्। १० खरब – दशखर्वम्। १ नील – नीलम्। १० नील – दशनीलम्। १ पद्म – पद्मम्। १० पद्म – दशपद्मम्। १ शंख – शंखम्। १० शंख – दशशंखम्। १ महाशंख – महाशंखम्।

सूचना-१. (क) १०१ आदि संख्याओं के लिए अधिक शब्द लगाकर संख्याशब्द बनावें। जैसे-१०१ एकाधिकं शतम्। १०२ द्व्यधिकं शतम् आदि। (ख) २०० आदि के लिए दो आदि संख्यावाचक शब्द पहले रखकर बाद में 'शती' रखें, या शत पहले रखकर द्वयम्, त्रयम् आदि रखें। जैसे—२०० द्विशती, शतद्वयम्। ३०० त्रिशती, शतत्रयम्, ४०० चतु:शती, ५०० पञ्चशती, ६०० षट्शती, ७०० सप्तशती (हिन्दी सतसई), ८०० अष्टशती, ९०० नवशती आदि।

२. त्रि ३ से लेकर १८ (अष्टादशन्) तक सारे शब्दों के रूप केवल बहुवचन में चलते हैं। दशन् से अष्टादशन् तक दशन् के तुल्य।

३. एकोनविंशति से नवविंशति तक सारे शब्द एकवचनान्त स्त्रीलिंग हैं। इनके रूप एकवचन में ही चलते हैं। इकारान्त विंशति, सप्तति, अशीति, नवति तथा जिनके अन्त में ये हों, उनके रूप मति के तुल्य चलेंगे। तकारान्त त्रिंशत्, चत्वारिंशत्, पञ्चाशत् के रूप सरित् के तुल्य (शब्द सं० ५४) चलेंगे।

४. शतम्, सहस्रम्, अयुतम्, लक्षम्, नियुतम्, प्रयुतम् आदि शब्द सदा एकवचनान्त नपुंसक हैं। गृहवत् एकवचन में रूप चलेंगे। कोटि के मतिवत्। शत, सहस्र आदि शब्द काव्यों में अनन्त संख्या के अर्थ में भी प्रयुक्त होते हैं। **'शतं सहस्रमयुतं सर्वमानन्त्यवाचकम्'।**

५. संख्येय शब्द (प्रथम, द्वितीय आदि) बनाने के लिए अभ्यास १८ का व्याकरण देखें।

❖ ❖ ❖

(३) धातुरूप-संग्रह

आवश्यक निर्देश

१. संस्कृत में सारी धातुओं को १० विभागों में बाँटा गया है। उन्हें 'गण' कहते हैं, अतः १० गण हैं। धातु और तिङ् (ति, तः आदि) प्रत्यय के बीच में होनेवाले अ, उ, नु आदि को 'विकरण' कहते हैं। इनके अन्तर के आधार पर ही ये गण बनाए गए हैं। ये 'विकरण' लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में ही होते हैं, अन्य ६ लकारों में नहीं होते, यह स्मरण रखें। प्रत्येक गण में तीनों प्रकार की धातुएँ होती हैं, परस्मैपदी (ति, तः, अन्ति आदिवाली), आत्मनेपदी (ते, एते, अन्ते आदिवाली) और उभयपदी (पूर्वोक्त दोनों प्रकार के रूपवाली)। प्रत्येक गण की विशेषताएँ आगे प्रत्येक गण के विवरण में दी गई हैं। यहाँ अधिक प्रसिद्ध १०० धातुओं के रूप दिए गए हैं।

२. प्रत्येक गण के विवरण में उस गण में आनेवाली धातुओं के अन्त में क्या संक्षिप्त रूप लगेंगे, इसका विवरण दिया गया है। उस गण की धातुओं के अन्त में उन लकारों में निर्दिष्ट संक्षिप्त रूप लगावें।

३. गणों के अन्तर के कारण लृट्, लुट्, आशीर्लिङ्, लृङ्, लिट् और लुङ् में कोई अन्तर नहीं होता। अतः सभी गणों में इन लकारों में एक से ही रूप चलेंगे। इन लकारों के संक्षिप्त-रूप आगे दिए हैं, उन्हें स्मरण कर लें। सभी गणों में उन्हीं संक्षिप्त-रूपों को लगावें। अतएव धातु-रूपों में लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् के प्रारम्भिक रूप ही संकेतमात्र दिए गए हैं। सभी धातुओं के लिट् और लुङ् के पूरे रूप दिए गए हैं।

४. दसों गणों के विकरण और मुख्य कार्य ये हैं—

	गण	विकरण	कार्य
(१)	भ्वादिगण	अ	लट् आदि में धातु को गुण होगा।
(२)	अदादिगण	×	लट् आदि के एक० में धातु को गुण होगा।
(३)	जुहोत्यादिगण	×	लट् आदि में धातु को द्वित्व और एक० में गुण।
(४)	दिवादिगण	य	लट् आदि में धातु को गुण नहीं होगा।
(५)	स्वादिगण	नु (नो)	लट् आदि में धातु को गुण नहीं होगा।
(६)	तुदादिगण	अ	,, ,, ,,
(७)	रुधादिगण	न (न्)	,, ,, ,,
(८)	तनादिगण	उ (ओ)	लट् आदि में धातु को पर० में गुण होगा।
(९)	क्र्यादिगण	ना (नी)	लट् आदि में धातु को गुण नहीं होगा।
(१०)	चुरादिगण	अय	लट् आदि में धातु को गुण या वृद्धि होगी।

(क) लकारों के संक्षिप्त रूप

परस्मैपद लट्				आत्मनेपद लट्		
ति	तः	अन्ति	प्र०	ते	इते (आते)	अन्ते (अते)
सि	थः	थ	म०	से	इथे (आथे)	ध्वे
मि	वः	मः	उ०	इ (ए)	वहे	महे

लोट्				लोट्		
तु	ताम्	अन्तु	प्र०	ताम्	इताम् (आताम्)	अन्ताम् (अताम्)
–, हि	तम्	त	म०	स्व	इथाम् (आथाम्)	ध्वम्
आनि	आव	आम	उ०	ऐ	आवहै	आमहै

लङ् (धातु से पहले अ या आ)				लङ् (धातु से पहले अ या आ)		
त्	ताम्	अन्	प्र०	त	इताम् (आताम्)	अन्त (अत)
:	तम्	त	म०	थाः	इथाम् (आथाम्)	ध्वम्
अम्	व	म	उ०	इ	वहि	महि

विधिलिङ्							विधिलिङ्		
ईत्	ईताम्	ईयुः	यात्	याताम्	युः	प्र०	ईत	ईयाताम्	ईरन्
ईः	ईतम्	ईत	याः	यातम्	यात	म०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
ईयम्	ईव	ईम	याम्	याव	याम	उ०	ईय	ईवहि	ईमहि

लृट्					लृट्			
(इ)	स्यति	स्यतः	स्यन्ति	प्र०	(इ)	स्यते	स्येते	स्यन्ते
	स्यसि	स्यथः	स्यथ	म०		स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
	स्यामि	स्यावः	स्यामः	उ०		स्ये	स्यावहे	स्यामहे

लृट्					लृट्			
(इ)	ता	तारौ	तारः	प्र०	(इ)	ता	तारौ	तारः
	तासि	तास्थः	तास्थ	म०		तासे	तासाथे	ताध्वे
	तास्मि	तास्वः	तास्मः	उ०		ताहे	तास्वहे	तास्महे

आशीर्लिङ्					आशीर्लिङ्			
(×)	यात्	यास्ताम्	यासुः	प्र०	(इ)	सीष्ट	सीयास्ताम्	सीरन्
	याः	यास्तम्	यास्त	म०		सीष्ठाः	सीयास्थाम्	सीध्वम्
	यासम्	यास्व	यास्म	उ०		सीय	सीवहि	सीमहि

लृङ् (धातु से पहले अ लगेगा)					**लृङ् (धातु से पहले अ लगेगा)**			
(इ)	स्यत्	स्यताम्	स्यन्	प्र०	(इ)	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
	स्यः	स्यतम्	स्यत	म०		स्यथाः	स्येथाम्	स्यध्वम्
	स्यम्	स्याव	स्याम	उ०		स्ये	स्यावहि	स्यामहि

सूचना—लृट्, लुट् आशीर्लिङ् और लृङ् में सेट् में सं० रूप से पहले इ भी लगेगा।

परस्मैपद-लिट् / **आत्मनेपद-लिट्**

अ	अतुः	उः	*प्र० पु०*	इ	आते	इरे
(इ) थ	अथुः	अ	*म० पु०*	(इ) से	आथे	(इ) ध्वे
अ	(इ) व	(इ)म	*उ० पु०*	ए	(इ)वहे	(इ)महे

लुङ् (१. स्-लोप वाला भेद) / लुङ् (१. स-लोप वाला भेद)

त्	ताम्	उः (अन्)	*प्र० पु०*
ः	तम्	त	*म० पु०*
अम्	व	म	*उ० पु०*

सूचना— यह भेद आत्मनेपद में नहीं होता। लुङ् के ७ भेद होते हैं। आगे रूपों में लुङ् के आगे संख्या से इसका निर्देश होगा।

(२. अ-वाला भेद)

अत्	अताम्	अन्	*प्र० पु०*	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	*म० पु०*	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	*उ० पु०*	ए	आवहि	आमहि

(३. द्वित्व-वाला भेद)

अत्	अताम्	अन्	*प्र० पु०*	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	*म० पु०*	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	*उ० पु०*	ए	आवहि	आमहि

(४. स्-वाला भेद)

सीत्	स्ताम्	सुः	*प्र० पु०*	स्त	साताम्	सत
सीः	स्तम्	स्त	*म० पु०*	स्थाः	साथाम्	ध्वम्
सम्	स्व	स्म	*उ० पु०*	सि	स्वहि	स्महि

(५. इष्-वाला भेद)

ईत्	इष्टाम्	इषुः	*प्र० पु०*	इष्ट	इषाताम्	इषत
ईः	इष्टम्	इष्ट	*म० पु०*	इष्ठाः	इषाथाम्	इध्वम्-ढ्वम्
इषम्	इष्व	इष्म	*उ० पु०*	इषि	इष्वहि	इष्महि

(६. सिष्-वाला भेद)

सीत्	सिष्टाम्	सिषुः	*प्र० पु०*
सीः	सिष्टम्	सिष्ट	*म० पु०*
सिषम्	सिष्व	सिष्म	*उ० पु०*

सूचना—आत्मनेपद में यह भेद नहीं होता।

(७. स-वाला भेद)

सत्	सताम्	सन्	*प्र० पु०*	सत	साताम्	सन्त
सः	सतम्	सत	*म० पु०*	सथाः	साथाम्	सध्वम्
सम्	साव	साम	*उ० पु०*	सि	सावहि	सामहि

(१) भ्वादिगण

(१) भ्वादिगण की प्रथम धातु भू है, अतः इसका नाम भ्वादिगण पड़ा। दसों गणों में यह गण सबसे मुख्य है। सबसे अधिक धातुएँ इसी गण में हैं। चुरादिगण तक धातुपाठ में वर्णित धातुओं की संख्या १९४४ है, तथा कण्ड्वादि को लेकर धातुसंख्या १९९३ है। इसमें से भ्वादिगण की धातुओं की संख्या १०१० है। अतः ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण धातुपाठ की आधे से अधिक धातुएँ भ्वादिगण में हैं।

(२) भ्वादिगण की विशेषताएँ ये हैं—(क) (कर्तरि शप्) धातु और प्रत्यय के बीच में शप् (अ) विकरण लगता है। इसलिए धातु के अन्त में अति, अतः, अन्ति आदि लगेंगे। मूल प्रत्यय ति, तः आदि हैं। (ख) धातु के अन्तिम स्वर इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ को तथा उपधा (अन्तिम अक्षर से पूर्व) के इ, उ, ऋ को क्रमशः ए, ओ, अर् गुण हो जाता है। बाद में गुण के ए को अय् और ओ को अव् हो जाता है। जैसे—भू > भवति, जि > जयति, हृ > हरति, शुच् > शोचति, मुद् > मोदते।

(३) लट् आदि में धातु के अन्त में संक्षिप्तरूप निम्नलिखित लगेंगे। लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृष्ठ १४४ पर निर्दिष्ट संक्षिप्तरूप ही लगेंगे।

परस्मैपद लट्				आत्मनेपद लट्		
अति	अतः	अन्ति	प्र०	अते	एते	अन्ते
असि	अथः	अथ	म०	असे	एथे	अध्वे
आमि	आवः	आमः	उ०	ए	आवहे	आमहे

लोट्				लोट्		
अतु	अताम्	अन्तु	प्र०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
अ	अतम्	अत	म०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
आनि	आव	आम	उ०	ऐ	आवहै	आमहै

लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)				लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)		
अत्	अताम्	अन्	प्र०	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	म०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	उ०	ए	आवहि	आमहि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
एत्	एताम्	एयुः	प्र०	एत	एयाताम्	एरन्
एः	एतम्	एत	म०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
एयम्	एव	एम	उ०	एय	एवहि	एमहि

(१) भ्वादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(१) भू (होना) लट् (वर्तमान) (दे० अ० १) **लोट् (आज्ञा अर्थ)**

भवति	भवतः	भवन्ति	प्र० पु०	भवतु	भवताम्	भवन्तु
भवसि	भवथः	भवथ	म० पु०	भव	भवतम्	भवत
भवामि	भवावः	भवामः	उ० पु०	भवानि	भवाव	भवाम

लङ् (भूतकाल, अनद्यतन) **विधिलिङ् (आज्ञा या चाहिए अर्थ)**

अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र० पु०	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
अभवः	अभवतम्	अभवत	म० पु०	भवेः	भवेतम्	भवेत
अभवम्	अभवाव	अभवाम	उ० पु०	भवेयम्	भवेव	भवेम

लृट् (भविष्यत्) **लुट् (अनद्यतन भविष्यत्)**

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र० पु०	भविता	भवितारौ	भवितारः
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म० पु०	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ० पु०	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

आशीर्लिङ् (आशीर्वाद) **लृङ् (हेतुहेतुमद् भविष्यत्)**

भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः	प्र० पु०	अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त	म० पु०	अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म	उ० पु०	अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

लिट् (परोक्ष भूत) **लुङ् (१) (सामान्य भूत)**

बभूव	बभूवतुः	बभूवुः	प्र० पु०	अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव	म० पु०	अभूः	अभूतम्	अभूत
बभूव	बभूविव	बभूविम	उ० पु०	अभूवम्	अभूव	अभूम

——

सूचना—(१) लङ् लुङ् और लृङ् में धातु से पहले 'अ' लगता है। यदि धातु का प्रथम अक्षर स्वर होगा तो धातु से पहले 'आ' लगेगा और सन्धिकार्य भी होगा।

(२) लुङ् के आगे दी हुई संख्याएँ इस बात का निर्देश करती हैं कि पृष्ठ १४५ पर दिए हुए लुङ् के ७ भेदों में कौन-सा भेद वहाँ पर है। जिस भेद का निर्देश हो, उसी भेद के संक्षिप्त-रूप पृष्ठ १४५ के अनुसार धातु के अन्त में लगावें। सम्पूर्ण धातुरूप के लिए यह निर्देश स्मरण रखें।

(२) हस् (हँसना) (भू के तुल्य) (दे० अ० १) | **(३) पठ् (पढ़ना)** (भू के तुल्य) (दे० अ० २)

लट्				**लट्**		
हसति	हसतः	हसन्ति	*प्र० पु०*	पठति	पठतः	पठन्ति
हससि	हसथः	हसथ	*म० पु०*	पठसि	पठथः	पठथ
हसामि	हसावः	हसामः	*उ० पु०*	पठामि	पठावः	पठामः
लोट्				**लोट्**		
हसतु	हसताम्	हसन्तु	*प्र० पु०*	पठतु	पठताम्	पठन्तु
हस	हसतम्	हसत	*म० पु०*	पठ	पठतम्	पठत
हसानि	हसाव	हसाम	*उ० पु०*	पठानि	पठाव	पठाम
लङ्				**लङ्**		
अहसत्	अहसताम्	अहसन्	*प्र० पु०*	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
अहसः	अहसतम्	अहसत	*म० पु०*	अपठः	अपठतम्	अपठत
अहसम्	अहसाव	अहसाम	*उ० पु०*	अपठम्	अपठाव	अपठाम
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
हसेत्	हसेताम्	हसेयुः	*प्र० पु०*	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
हसेः	हसेतम्	हसेत	*म० पु०*	पठेः	पठेतम्	पठेत
हसेयम्	हसेव	हसेम	*उ० पु०*	पठेयम्	पठेव	पठेम

हसिष्यति	हसिष्यतः	हसिष्यन्ति	*लृट्*	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
हसिता	हसितारौ	हसितारः	*लुट्*	पठिता	पठितारौ	पठितारः
हस्यात्	हस्यास्ताम्	हस्यासुः	*आ० लिङ्*	पठ्यात्	पठ्यास्ताम्	पठ्यासुः
अहसिष्यत्	अहसिष्यताम्	अहसिष्यन्	*लृङ्*	अपठिष्यत्	अपठिष्यताम्	अपठिष्यन्
लिट्				**लिट्**		
जहास	जहसतुः	जहसुः	*प्र० पु०*	पपाठ	पेठतुः	पेठुः
जहसिथ	जहसथुः	जहस	*म० पु०*	पेठिथ	पेठथुः	पेठ
जहास, जहस	जहसिव	जहसिम	*उ० पु०*	पपाठ, पपठ	पेठिव	पेठिम
लुङ् (५)				**लुङ् (५)**		
अहसीत्	अहसिष्टाम्	अहसिषुः	*प्र० पु०*	अपाठीत्	अपाठिष्टाम्	अपाठिषुः
अहसीः	अहसिष्टम्	अहसिष्ट	*म० पु०*	अपाठीः	अपाठिष्टम्	अपाठिष्ट
अहसिषम्	अहसिष्व	अहसिष्म	*उ० पु०*	अपाठिषम्	अपाठिष्व	अपाठिष्म

सूचना—पठ् के लुङ् में अपठीत् आदि भी रूप होते हैं। हस् (लुङ्) के तुल्य रूप चलेंगे।

(४) रक्ष् (रक्षा करना) (भू के तुल्य) (दे० अ० २)

लट्			
रक्षति	रक्षतः	रक्षन्ति	*प्र० पु०*
रक्षसि	रक्षथः	रक्षथ	*म० पु०*
रक्षामि	रक्षावः	रक्षामः	*उ० पु०*
लोट्			
रक्षतु	रक्षताम्	रक्षन्तु	*प्र० पु०*
रक्ष	रक्षतम्	रक्षत	*म० पु०*
रक्षाणि	रक्षाव	रक्षाम	*उ० पु०*
लङ्			
अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्	*प्र० पु०*
अरक्षः	अरक्षतम्	अरक्षत	*म० पु०*
अरक्षम्	अरक्षाव	अरक्षाम	*उ० पु०*
विधिलिङ्			
रक्षेत्	रक्षेताम्	रक्षेयुः	*प्र० पु०*
रक्षेः	रक्षेतम्	रक्षेत	*म० पु०*
रक्षेयम्	रक्षेव	रक्षेम	*उ० पु०*
रक्षिष्यति	रक्षिष्यतः	रक्षिष्यन्ति	*लृट्*
रक्षिता	रक्षितारौ	रक्षितारः	*लुट्*
रक्ष्यात्	रक्ष्यास्ताम्	रक्ष्यासुः	*आ० लिङ्*
अरक्षिष्यत्	अरक्षिष्यताम्	अरक्षिष्यन्	*लृङ्*
लिट्			
ररक्ष	ररक्षतुः	ररक्षुः	*प्र० पु०*
ररक्षिथ	ररक्षथुः	ररक्ष	*म० पु०*
ररक्ष	ररक्षिव	ररक्षिम	*उ० पु०*
लुङ् (५)			
अरक्षीत्	अरक्षिष्टाम्	अरक्षिषुः	*प्र० पु०*
अरक्षीः	अरक्षिष्टम्	अरक्षिष्ट	*म० पु०*
अरक्षिषम्	अरक्षिष्व	अरक्षिष्म	*उ० पु०*

(५) वद् (बोलना) (भू के तुल्य) (दे० अ० ३)

लट्			
प्र० पु०	वदति	वदतः	वदन्ति
म० पु०	वदसि	वदथः	वदथ
उ० पु०	वदामि	वदावः	वदामः
लोट्			
प्र० पु०	वदतु	वदताम्	वदन्तु
म० पु०	वद	वदतम्	वदत
उ० पु०	वदानि	वदाव	वदाम
लङ्			
प्र० पु०	अवदत्	अवदताम्	अवदन्
म० पु०	अवदः	अवदतम्	अवदत
उ० पु०	अवदम्	अवदाव	अवदाम
विधिलिङ्			
प्र० पु०	वदेत्	वदेताम्	वदेयुः
म० पु०	वदेः	वदेतम्	वदेत
उ० पु०	वदेयम्	वदेव	वदेम
लृट्	वदिष्यति	वदिष्यतः	वदिष्यन्ति
लुट्	वदिता	वदितारौ	वदितारः
आ० लिङ्	उद्यात्	उद्यास्ताम्	उद्यासुः
लृङ्	अवदिष्यत्	अवदिष्यताम्	अवदिष्यन्
लिट्			
प्र० पु०	उवाद	ऊदतुः	ऊदुः
म० पु०	उवदिथ	ऊदथुः	ऊद
उ० पु०	उवाद, उवद	ऊदिव	ऊदिम
लुङ् (५)			
प्र० पु०	अवादीत्	अवादिष्टाम्	अवादिषुः
म० पु०	अवादीः	अवादिष्टम्	अवादिष्ट
उ० पु०	अवादिषम्	अवादिष्व	अवादिष्म

(६) गम् (जाना) (भू के तुल्य) (दे० अ० ३)

सूचना—लट् आदि में गम् को गच्छ् होगा।

(७) दृश् (देखना) (भू के तुल्य) (दे० अ० ४)

सूचना—लट् आदि में दृश् को पश्य् होगा।

लट्				लट्		
गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	*प्र० पु०*	पश्यति	पश्यतः	पश्यन्ति
गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ	*म० पु०*	पश्यसि	पश्यथः	पश्यथ
गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः	*उ० पु०*	पश्यामि	पश्यावः	पश्यामः
लोट्				**लोट्**		
गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु	*प्र० पु०*	पश्यतु	पश्यताम्	पश्यन्तु
गच्छ	गच्छतम्	गच्छत	*म० पु०*	पश्य	पश्यतम्	पश्यत
गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम	*उ० पु०*	पश्यानि	पश्याव	पश्याम
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः	*प्र० पु०*	पश्येत्	पश्येताम्	पश्येयुः
गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत	*म० पु०*	पश्येः	पश्येतम्	पश्येत
गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम	*उ० पु०*	पश्येयम्	पश्येव	पश्येम
—				—		
गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति	*लृट्*	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यतः	द्रक्ष्यन्ति
गन्ता	गन्तारौ	गन्तारः	*लुट्*	द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टारः
गम्यात्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः	*आ० लिङ्*	दृश्यात्	दृश्यास्ताम्	दृश्यासुः
अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्	*लृङ्*	अद्रक्ष्यत्	अद्रक्ष्यताम्	अद्रक्ष्यन्
लिट्				**लिट्**		
जगाम	जग्मतुः	जग्मुः	*प्र० पु०*	ददर्श	ददृशतुः	ददृशुः
जग्मिथ, जगन्थ	जग्मथुः	जग्म	*म० पु०*	ददर्शिथ, दद्रष्ठ	ददृशथुः	ददृश
जगाम, जगम	जग्मिव	जग्मिम	*उ० पु०*	ददर्श	ददृशिव	ददृशिम
लुङ् (२)				**लुङ् (२), (४)**		
अगमत्	अगमताम्	अगमन्	*प्र० पु०*	(क) अदर्शत्	अदर्शताम्	अदर्शन्
अगमः	अगमतम्	अगमत	*म० पु०*	अदर्शः	अदर्शतम्	अदर्शत
अगमम्	अगमाव	अगमाम	*उ० पु०*	अदर्शम्	अदर्शाव	अदर्शाम
				(ख) अद्राक्षीत्	अद्राष्टाम्	अद्राक्षुः
				अद्राक्षीः	अद्राष्टम्	अद्राष्ट
				अद्राक्षम्	अद्राक्ष्व	अद्राक्ष्म

(८) पा (पीना) (भू के तुल्य)
(दे० अ० ५)

सूचना—लट् आदि में पा को पिब् होगा।

लट्

पिबति	पिबतः	पिबन्ति	*प्र० पु०*
पिबसि	पिबथः	पिबथ	*म० पु०*
पिबामि	पिबावः	पिबामः	*उ० पु०*

लोट्

पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु	*प्र० पु०*
पिब	पिबतम्	पिबत	*म० पु०*
पिबानि	पिबाव	पिबाम	*उ० पु०*

लङ्

अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्	*प्र० पु०*
अपिबः	अपिबतम्	अपिबत	*म० पु०*
अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम	*उ० पु०*

विधिलिङ्

पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः	*प्र० पु०*
पिबेः	पिबेतम्	पिबेत	*म० पु०*
पिबेयम्	पिबेव	पिबेम	*उ० पु०*

पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति	*लृट्*
पाता	पातारौ	पातारः	*लुट्*
पेयात्	पेयास्ताम्	पेयासुः	*आ० लिङ्*
अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्	*लृङ्*

लिट्

पपौ	पपतुः	पपुः	*प्र० पु०*
पपिथ, पपाथ	पपथुः	पप	*म० पु०*
पपौ	पपिव	पपिम	*उ० पु०*

लुङ् (१)

अपात्	अपाताम्	अपुः	*प्र० पु०*
अपाः	अपातम्	अपात	*म० पु०*
अपाम्	अपाव	अपाम	*उ० पु०*

(९) स्था (रुकना) (भू के तुल्य)
(दे० अ० ९)

सूचना—लट् आदि में स्था को तिष्ठ् होगा।

लट्

तिष्ठति	तिष्ठतः	तिष्ठन्ति
तिष्ठसि	तिष्ठथः	तिष्ठथ
तिष्ठामि	तिष्ठावः	तिष्ठामः

लोट्

तिष्ठतु	तिष्ठताम्	तिष्ठन्तु
तिष्ठ	तिष्ठतम्	तिष्ठत
तिष्ठानि	तिष्ठाव	तिष्ठाम

लङ्

अतिष्ठत्	अतिष्ठताम्	अतिष्ठन्
अतिष्ठः	अतिष्ठतम्	अतिष्ठत
अतिष्ठम्	अतिष्ठाव	अतिष्ठाम

विधिलिङ्

तिष्ठेत्	तिष्ठेताम्	तिष्ठेयुः
तिष्ठेः	तिष्ठेतम्	तिष्ठेत
तिष्ठेयम्	तिष्ठेव	तिष्ठेम

स्थास्यति	स्थास्यतः	स्थास्यन्ति
स्थाता	स्थातारौ	स्थातारः
स्थेयात्	स्थेयास्ताम्	स्थेयासुः
अस्थास्यत्	अस्थास्यताम्	अस्थास्यन्

लिट्

तस्थौ	तस्थतुः	तस्थुः
तस्थिथ, तस्थाथ	तस्थथुः	तस्थ
तस्थौ	तस्थिव	तस्थिम

लुङ् (१)

अस्थात्	अस्थाताम्	अस्थुः
अस्थाः	अस्थातम्	अस्थात
अस्थाम्	अस्थाव	अस्थाम

(१०) घ्रा (सूँघना (भू के तुल्य)

(दे० अ० १३)

सूचना–लट् आदि में घ्रा को जिघ्र् होगा।

लट्

जिघ्रति	जिघ्रतः	जिघ्रन्ति	*प्र० पु०*
जिघ्रसि	जिघ्रथः	जिघ्रथ	*म० पु०*
जिघ्रामि	जिघ्रावः	जिघ्रामः	*उ० पु०*

लोट्

जिघ्रतु	जिघ्रताम्	जिघ्रन्तु	*प्र० पु०*
जिघ्र	जिघ्रतम्	जिघ्रत	*म० पु०*
जिघ्राणि	जिघ्राव	जिघ्राम	*उ० पु०*

लङ्

अजिघ्रत्	अजिघ्रताम्	अजिघ्रन्	*प्र० पु०*
अजिघ्रः	अजिघ्रतम्	अजिघ्रत	*म० पु०*
अजिघ्रम्	अजिघ्राव	अजिघ्राम	*उ० पु०*

विधिलिङ्

जिघ्रेत्	जिघ्रेताम्	जिघ्रेयुः	*प्र० पु०*
जिघ्रेः	जिघ्रेतम्	जिघ्रेत	*म० पु०*
जिघ्रेयम्	जिघ्रेव	जिघ्रेम	*उ० पु०*

घ्रास्यति	घ्रास्यतः	घ्रास्यन्ति	*लृट्*
घ्राता	घ्रातारौ	घ्रातारः	*लुट्*
घ्रेयात्	घ्रेयास्ताम्	घ्रेयासुः	*आ० लिङ्*
घ्रायात्	घ्रायास्ताम्	घ्रायासुः	*आ० लिङ्*
अघ्रास्यत्	अघ्रास्यताम्	अघ्रास्यन्	*लृङ्*

लिट्

जघ्रौ	जघ्रतुः	जघ्रुः	*प्र० पु०*
जघ्रिथ, जघ्राथ	जघ्रथुः	जघ्र	*म० पु०*
जघ्रौ	जघ्रिव	जघ्रिम	*उ० पु०*

लुङ् (क) (१)

अघ्रात्	अघ्राताम्	अघ्रुः	*प्र० पु०*
अघ्राः	अघ्रातम्	अघ्रात	*म० पु०*
अघ्राम्	अघ्राव	अघ्राम	*उ० पु०*

लुङ् (ख) (६)

अघ्रासीत्	अघ्रासिष्टाम्	अघ्रासिषुः	*प्र०*
अघ्रासीः	अघ्रासिष्टम्	अघ्रासिष्ट	*म०*
अघ्रासिषम्	अघ्रासिष्व	अघ्रासिष्म	*उ०*

(११) सद् (बैठना) (भू के तुल्य)

(दे० अ० ५)

सूचना–लट् आदि में सद् को सीद् होगा।

लट्

प्र० पु०	सीदति	सीदतः	सीदन्ति
म० पु०	सीदसि	सीदथः	सीदथ
उ० पु०	सीदामि	सीदावः	सीदामः

लोट्

प्र० पु०	सीदतु	सीदताम्	सीदन्तु
म० पु०	सीद	सीदतम्	सीदत
उ० पु०	सीदानि	सीदाव	सीदाम

लङ्

प्र० पु०	असीदत्	असीदताम्	असीदन्
म० पु०	असीदः	असीदतम्	असीदत
उ० पु०	असीदम्	असीदाव	असीदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	सीदेत्	सीदेताम्	सीदेयुः
म० पु०	सीदेः	सीदेतम्	सीदेत
उ० पु०	सीदेयम्	सीदेव	सीदेम

लृट्	सत्स्यति	सत्स्यतः	सत्स्यन्ति
लुट्	सत्ता	सत्तारौ	सत्तारः
आ० लिङ्	सद्यात्	सद्यास्ताम्	सद्यासुः
लृङ्	असत्स्यत्	असत्स्यताम्	असत्स्यन्

लिट्

प्र० पु०	ससाद	सेदतुः	सेदुः
म० पु०	सेदिथ, ससत्थ	सेदथुः	सेद
उ० पु०	ससाद, ससद	सेदिव	सेदिम

लुङ्(२)

प्र० पु०	असदत्	असदताम्	असदन्
म० पु०	असदः	असदतम्	असदत
उ० पु०	असदम्	असदाव	असदाम

(१२) पच् (पकाना) (भू के तुल्य)
(दे० अ० ११)

लट्

पचति	पचतः	पचन्ति	*प्र० पु०*
पचसि	पचथः	पचथ	*म० पु०*
पचामि	पचावः	पचामः	*उ० पु०*

लोट्

पचतु	पचताम्	पचन्तु	*प्र० पु०*
पच	पचतम्	पचत	*म० पु०*
पचानि	पचाव	पचाम	*उ० पु०*

लङ्

अपचत्	अपचताम्	अपचन्	*प्र० पु०*
अपचः	अपचतम्	अपचत	*म० पु०*
अपचम्	अपचाव	अपचाम	*उ० पु०*

विधिलिङ्

पचेत्	पचेताम्	पचेयुः	*प्र० पु०*
पचेः	पचेतम्	पचेत	*म० पु०*
पचेयम्	पचेव	पचेम	*उ० पु०*

पक्ष्यति	पक्ष्यतः	पक्ष्यन्ति	*लृट्*
पक्ता	पक्तारौ	पक्तारः	*लुट्*
पच्यात्	पच्यास्ताम्	पच्यासुः	*आ० लिङ्*
अपक्ष्यत्	अपक्ष्यताम्	अपक्ष्यन्	*लृङ्*

लिट्

पपाच	पेचतुः	पेचुः	*प्र० पु०*
पेचिथ, पपक्थ	पेचथुः	पेच	*म० पु०*
पपाच, पपच	पेचिव	पेचिम	*उ० पु०*

लुङ् (४)

अपाक्षीत्	अपाक्ताम्	अपाक्षुः	*प्र० पु०*
अपाक्षीः	अपाक्तम्	अपाक्त	*म० पु०*
अपाक्षम्	अपाक्ष्व	अपाक्ष्म	*उ० पु०*

(१३) नम् (नमस्कार करना)
(दे० अ० ११)

लट्

नमति	नमतः	नमन्ति
नमसि	नमथः	नमथ
नमामि	नमावः	नमामः

लोट्

नमतु	नमताम्	नमन्तु
नम	नमतम्	नमत
नमानि	नमाव	नमाम

लङ्

अनमत्	अनमताम्	अनमन्
अनमः	अनमतम्	अनमत
अनमम्	अनमाव	अनमाम

विधिलिङ्

नमेत्	नमेताम्	नमेयुः
नमेः	नमेतम्	नमेत
नमेयम्	नमेव	नमेम

नंस्यति	नंस्यतः	नंस्यन्ति
नन्ता	नन्तारौ	नन्तारः
नम्यात्	नम्यास्ताम्	नम्यासुः
अनंस्यत्	अनंस्यताम्	अनंस्यन्

लिट्

ननाम	नेमतुः	नेमुः
नेमिथ, ननन्थ	नेमतुः	नेम
ननाम, ननम	नेमिव	नेमिम

लुङ् (६)

अनंसीत्	अनंसिष्टाम्	अनंसिषुः
अनंसीः	अनंसिष्टम्	अनंसिष्ट
अनंसिषम्	अनंसिष्व	अनंसिष्म

(१४) स्मृ (स्मरण करना) (दे० अ० १२) **(१५) जि (जीतना)** (दे० अ० १२)

लट् | **लट्**

स्मरति	स्मरतः	स्मरन्ति	*प्र० पु०*	जयति	जयतः	जयन्ति
स्मरसि	स्मरथः	स्मरथ	*म० पु०*	जयसि	जयथः	जयथ
स्मरामि	स्मरावः	स्मरामः	*उ० पु०*	जयामि	जयावः	जयामः

लोट् | **लोट्**

स्मरतु	स्मरताम्	स्मरन्तु	*प्र० पु०*	जयतु	जयताम्	जयन्तु
स्मर	स्मरतम्	स्मरत	*म० पु०*	जय	जयतम्	जयत
स्मराणि	स्मराव	स्मराम	*उ० पु०*	जयानि	जयाव	जयाम

लङ् | **लङ्**

अस्मरत्	अस्मरताम्	अस्मरन्	*प्र० पु०*	अजयत्	अजयताम्	अजयन्
अस्मरः	अस्मरतम्	अस्मरत	*म० पु०*	अजयः	अजयतम्	अजयत
अस्मरम्	अस्मराव	अस्मराम	*उ० पु०*	अजयम्	अजयाव	अजयाम

विधिलिङ् | **विधिलिङ्**

स्मरेत्	स्मरेताम्	स्मरेयुः	*प्र० पु०*	जयेत्	जयेताम्	जयेयुः
स्मरेः	स्मरेतम्	स्मरेत	*म० पु०*	जयेः	जयेतम्	जयेत
स्मरेयम्	स्मरेव	स्मरेम	*उ० पु०*	जयेयम्	जयेव	जयेम

स्मरिष्यति	स्मरिष्यतः	स्मरिष्यन्ति	*लृट्*	जेष्यति	जेष्यतः	जेष्यन्ति
स्मर्ता	स्मर्तारौ	स्मर्तारः	*लुट्*	जेता	जेतारौ	जेतारः
स्मर्यात्	स्मर्यास्ताम्	स्मर्यासुः	*आ० लिङ्*	जीयात्	जीयास्ताम्	जीयासुः
अस्मरिष्यत्	अस्मरिष्यताम्	अस्मरिष्यन्	*लृङ्*	अजेष्यत्	अजेष्यताम्	अजेष्यन्

लिट् | **लिट्**

सस्मार	सस्मरतुः	सस्मरुः	*प्र० पु०*	जिगाय	जिग्यतुः	जिग्युः
सस्मर्थ	सस्मरथुः	सस्मर	*म० पु०*	जिगयिथ जिगेथ	जिग्यथुः	जिग्य
सस्मार, सस्मर	सस्मरिव	सस्मरिम	*उ० पु०*	जिगाय, जिगय	जिग्यिव	जिग्यिम

लुङ् (४) | **लुङ् (४)**

अस्मार्षीत्	अस्मार्ष्टाम्	अस्मार्षुः	*प्र० पु०*	अजैषीत्	अजैष्टाम्	अजैषुः
अस्मार्षीः	अस्मार्ष्टम्	अस्मार्ष्ट	*म० पु०*	अजैषीः	अजैष्टम्	अजैष्ट
अस्मार्षम्	अस्मार्ष्व	अस्मार्ष्म	*उ० पु०*	अजैषम्	अजैष्व	अजैष्म

(१६) श्रु (सुनना) (दे० अ० २०) **(१७) कृष् (जोतना)** (दे० अ० १४)

लट् (श्रु को शृ) — **लट्**

शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति	*प्र० पु०*	कर्षति	कर्षतः	कर्षन्ति
शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ	*म० पु०*	कर्षसि	कर्षथः	कर्षथ
शृणोमि	शृणुवः,-ण्वः	शृणुमः-ण्मः	*उ० पु०*	कर्षामि	कर्षावः	कर्षामः

लोट् (श्रु को शृ) — **लोट्**

शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु	*प्र० पु०*	कर्षतु	कर्षताम्	कर्षन्तु
शृणु	शृणुतम्	शृणुत	*म० पु०*	कर्ष	कर्षतम्	कर्षत
शृणवानि	शृणवाव	शृणवाम	*उ० पु०*	कर्षाणि	कर्षाव	कर्षाम

लङ् (श्रु को शृ) — **लङ्**

अशृणोत्	अशृणुताम्	अशृण्वन्	*प्र० पु०*	अकर्षत्	अकर्षताम्	अकर्षन्
अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत	*म० पु०*	अकर्षः	अकर्षतम्	अकर्षत
अशृणवम्	अशृणुव-ण्व	अशृणुम,-ण्म	*उ० पु०*	अकर्षम्	अकर्षाव	अकर्षाम

विधिलिङ् (श्रु को शृ) — **विधिलिङ्**

शृणुयात्	शृणुयाताम्	शृणुयुः	*प्र० पु०*	कर्षेत्	कर्षेताम्	कर्षेयुः
शृणुयाः	शृणुयातम्	शृणुयात	*म० पु०*	कर्षेः	कर्षेतम्	कर्षेत
शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम	*उ० पु०*	कर्षेयम्	कर्षेव	कर्षेम

श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति	*लृट्*	क्रक्ष्यति / कर्क्ष्यति	क्रक्ष्यतः / कर्क्ष्यतः	क्रक्ष्यन्ति / कर्क्ष्यन्ति
श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः	*लुट्*	क्रष्टा,	कर्ष्टा (दोनों प्रकार से)	
श्रूयात्	श्रूयास्ताम्	श्रूयासुः	*आ० लिङ्*	कृष्यात्	कृष्यास्ताम्	कृष्यासुः
अश्रोष्यत्	अश्रोष्यताम्	अश्रोष्यन्	*लृङ्*	अक्रक्ष्यत,	अकर्क्ष्यत् (दोनों प्रकार से)	

लिट् — **लिट्**

शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः	*प्र० पु०*	चकर्ष	चकृषतुः	चकृषुः
शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव	*म० पु०*	चकर्षिथ	चकृषथुः	चकृष
शुश्राव, शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम	*उ० पु०*	चकर्ष	चकृषिव	चकृषिम

लुङ् (४) — **लुङ् (४)**

अश्रौषीत्	अश्रौष्टाम्	अश्रौषुः	*प्र० पु०*	अकार्क्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्क्षुः
अश्रौषीः	अश्रौष्टम्	अश्रौष्ट	*म० पु०*	अकार्क्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट
अश्रौषम्	अश्रौष्व	अश्रौष्म	*उ० पु०*	अकार्क्षम्	अकार्क्ष्व	अकार्क्ष्म

सूचना—लट् आदि में श्रु को शृ होगा। **सूचना**—लुङ् में अकृक्षत् और अक्राक्षीत् भी रूप बनेंगे। दृश् (७) के लुङ् के तुल्य रूप चलावें।

(१८) वस् (रहना) (दे० अ० १४) **(१९) त्यज् (छोड़ना)** (दे० अ० १५)

लट्

वसति	वसतः	वसन्ति	*प्र० पु०*	त्यजति	त्यजतः	त्यजन्ति
वससि	वसथः	वसथ	*म० पु०*	त्यजसि	त्यजथः	त्यजथ
वसामि	वसावः	वसामः	*उ० पु०*	त्यजामि	त्यजावः	त्यजामः

लोट्

वसतु	वसताम्	वसन्तु	*प्र० पु०*	त्यजतु	त्यजताम्	त्यजन्तु
वस	वसतम्	वसत	*म० पु०*	त्यज	त्यजतम्	त्यजत
वसानि	वसाव	वसाम	*उ० पु०*	त्यजानि	त्यजाव	त्यजाम

लङ्

अवसत्	अवसताम्	अवसन्	*प्र० पु०*	अत्यजत्	अत्यजताम्	अत्यजन्
अवसः	अवसतम्	अवसत	*म० पु०*	अत्यजः	अत्यजतम्	अत्यजत
अवसम्	अवसाव	अवसाम	*उ० पु०*	अत्यजम्	अत्यजाव	अत्यजाम

विधिलिङ्

वसेत्	वसेताम्	वसेयुः	*प्र० पु०*	त्यजेत्	त्यजेताम्	त्यजेयुः
वसेः	वसेतम्	वसेत	*म० पु०*	त्यजेः	त्यजेतम्	त्यजेत
वसेयम्	वसेव	वसेम	*उ० पु०*	त्यजेयम्	त्यजेव	त्यजेम

वत्स्यति	वत्स्यतः	वत्स्यन्ति	*लृट्*	त्यक्ष्यति	त्यक्ष्यतः	त्यक्ष्यन्ति
वस्ता	वस्तारौ	वस्तारः	*लुट्*	त्यक्ता	त्यक्तारौ	त्यक्तारः
उष्यात्	उष्यास्ताम्	उष्यासुः	*आ० लिङ्*	त्यज्यात्	त्यज्यास्ताम्	त्यज्यासुः
अवत्स्यत्	अवत्स्यताम्	अवत्स्यन्	*लृङ्*	अत्यक्ष्यत्	अत्यक्ष्यताम्	अत्यक्ष्यन्

लिट्

उवास	ऊषतुः	ऊषुः	*प्र० पु०*	तत्याज	तत्यजतुः	तत्यजुः
उवसिथ, उवस्थ	उषथुः	ऊष	*म० पु०*	तत्यजिथ, तत्यक्थ	तत्यजथुः	तत्यज
उवास, उवस	ऊषिव	ऊषिम	*उ० पु०*	तत्याज, तत्यज	तत्यजिव	तत्यजिम

लुङ् (४)

अवात्सीत्	अवात्ताम्	अवात्सुः	*प्र० पु०*	अत्याक्षीत्	अत्याक्ताम्	अत्याक्षुः
अवात्सीः	अवात्तम्	अवात्त	*म० पु०*	अत्याक्षीः	अत्याक्तम्	अत्याक्त
अवात्सम्	अवात्स्व	अवात्स्म	*उ० पु०*	अत्याक्षम्	अत्याक्ष्व	अत्याक्ष्म

भ्वादिगण (आत्मनेपदी धातुएँ)

(२०) सेव् (सेवा करना) (दे० अ० ६)

लट्				लोट्		
सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र० पु०	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म० पु०	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ० पु०	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

लङ्				विधिलिङ्		
असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र० पु०	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म० पु०	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ० पु०	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लृट्				लुट्		
सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र० पु०	सेविता	सेवितारौ	सेवितारः
सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म० पु०	सेवितासे	सेवितासाथे	सेविताध्वे
सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ० पु०	सेविताहे	सेवितास्वहे	सेवितास्महे

आशीर्लिङ्				लृङ्		
सेविषीष्ट	सेविषीयास्ताम्	सेविषीरन्	प्र० पु०	असेविष्यत	असेविष्येताम्	असेविष्यन्त
सेविषीष्ठाः	सेविषीयास्थाम्	सेविषीध्वम्	म० पु०	असेविष्यथाः	असेविष्येथाम्	असेविष्यध्वम्
सेविषीय	सेविषीवहि	सेविषीमहि	उ० पु०	असेविष्ये	असेविष्यावहि	असेविष्यामहि

लिट्				लुङ् (५)		
सिषेवे	सिषेवाते	सिषेविरे	प्र० पु०	असेविष्ट	असेविषाताम्	असेविषत
सिषेविषे	सिषेवाथे	सिषेविध्वे	म० पु०	असेविष्ठाः	असेविषाथाम्	असेविध्वम्
सिषेवे	सिषेविवहे	सिषेविमहे	उ० पु०	असेविषि	असेविष्वहि	असेविष्महि

सूचना–लङ्, लुङ् और लृङ् में धातु से पहले 'अ' लगता है। यदि धातु का प्रथम अक्षर स्वर होगा तो धातु से पहले 'आ' लगेगा और सन्धि–कार्य भी होगा।

(२१) लभ् (पाना) (सेव् के तुल्य) (देखो अ० ९) **(२२) वृध् (बढ़ना) (सेव् के तुल्य)** (देखो अ० ७)

	लट्				**लट्**	
लभते	लभेते	लभन्ते	*प्र० पु०*	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
लभसे	लभेते	लभध्वे	*म० पु०*	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
लभे	लभावहे	लभामहे	*उ० पु०*	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे
	लोट्				**लोट्**	
लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्	*प्र० पु०*	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्	*म० पु०*	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
लभै	लभावहै	लभामहै	*उ० पु०*	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै
	लङ्				**लङ्**	
अलभत	अलभेताम्	अलभन्त	*प्र० पु०*	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्	*म० पु०*	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
अलभे	अलभावहि	अलभामहि	*उ० पु०*	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्	*प्र० पु०*	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्	*म० पु०*	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
लभेय	लभेवहि	लभेमहि	*उ० पु०*	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि
लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते	*लृट्*	वर्धिष्यते,	वर्त्स्यति (दोनों प्रकार से)	
लब्धा	लब्धारौ	लब्धारः	*लुट्*	वर्धिता	वर्धितारौ	वर्धितारः
लप्सीष्ट	लप्सीयास्ताम्	लप्सीरन्	*आ० लिङ्*	वर्धिषीष्ट	वर्धिषीयास्ताम्	वर्धिषीरन्
अलप्स्यत	अलप्स्येताम्	अलप्स्यन्त	*लृङ्*	अवर्धिष्यत,	अवर्त्स्यत् (दोनों प्रकार से)	
	लिट्				**लिट्**	
लेभे	लेभाते	लेभिरे	*प्र० पु०*	ववृधे	ववृधाते	ववृधिरे
लेभिषे	लेभाथे	लेभिध्वे	*म० पु०*	ववृधिषे	ववृधाथे	ववृधिध्वे
लेभे	लेभिवहे	लेभिमहे	*उ० पु०*	ववृधे	ववृधिवहे	ववृधिमहे
	लुङ् (४)				**लुङ् (क) (५)**	
अलब्ध	अलप्साताम्	अलप्सत	*प्र० पु०*	अवर्धिष्ट	अवर्धिषाताम्	अवर्धिषत
अलब्धाः	अलप्साथाम्	अलब्ध्वम्	*म० पु०*	अवर्धिष्ठाः	अवर्धिषाथाम्	अवर्धिध्वम्
अलप्सि	अलप्स्वहि	अलप्स्महि	*उ० पु०*	अवर्धिषि	अवर्धिष्वहि	अवर्धिष्महि
					लुङ् (ख) (२)	
				अवृधत्	अवृधताम्	अवृधन्
				अवृधः	अवृधतम्	अवृधत
				अवृधम्	अवृधाव	अवृधाम

(२३) मुद् (प्रसन्न होना) (सेव् के तुल्य) (देखो अ० १०) | **(२४) सह् (सहना)** (सेव् के तुल्य) (देखो अ० १०)

लट्				लट्		
मोदते	मोदेते	मोदन्ते	*प्र०*	सहते	सहेते	सहन्ते
मोदसे	मोदेथे	मोदध्वे	*म०*	सहसे	सहेथे	सहध्वे
मोदे	मोदावहे	मोदामहे	*उ०*	सहे	सहावहे	सहामहे

लोट्				लोट्		
मोदताम्	मोदेताम्	मोदन्ताम्	*प्र०*	सहताम्	सहेताम्	सहन्ताम्
मोदस्व	मोदेथाम्	मोदध्वम्	*म०*	सहस्व	सहेथाम्	सहध्वम्
मोदै	मोदावहै	मोदामहै	*उ०*	सहै	सहावहै	सहामहै

लङ्				लङ्		
अमोदत	अमोदेताम्	अमोदन्त	*प्र० पु०*	असहत	असहेताम्	असहन्त
अमोदथाः	अमोदेथाम्	अमोदध्वम्	*म० पु०*	असहथाः	असहेथाम्	असहध्वम्
अमोदे	अमोदावहि	अमोदामहि	*उ० पु०*	असहे	असहावहि	असहामहि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
मोदेत	मोदेयाताम्	मोदेरन्	*प्र०*	सहेत	सहेयाताम्	सहेरन्
मोदेथाः	मोदेयाथाम्	मोदेध्वम्	*म०*	सहेथाः	सहेयाथाम्	सहेध्वम्
मोदेय	मोदेवहि	मोदेमहि	*उ०*	सहेय	सहेवहि	सहेमहि

मोदिष्यते	मोदिष्येते	मोदिष्यन्ते	*लृट्*	सहिष्यते	सहिष्येते	सहिष्यन्ते
मोदिता	मोदितारौ	मोदितारः	*लुट्*	{ सहिता	सहितारौ	सहितारः
				{ सोढा	सोढारौ	सोढारः
मोदिषीष्ट	मोदिषीयास्ताम्	मोदिषीरन्	*आ० लिङ्*	सहिषीष्ट	सहिषीयास्ताम्०	
अमोदिष्यत	अमोदिष्येताम्	अमोदिष्यन्त	*लृङ्*	असहिष्यत	असहिष्येताम्०	

लिट्				लिट्		
मुमुदे	मुमुदाते	मुमुदिरे	*प्र० पु०*	सेहे	सेहाते	सेहिरे
मुमुदिषे	मुमुदाथे	मुमुदिध्वे	*म० पु०*	सेहिषे	सेहाथे	सेहिध्वे
मुमुदे	मुमुदिवहे	मुमुदिमहे	*उ० पु०*	सेहे	सेहिवहे	सेहिमहे

लुङ् (५)				लुङ् (५)		
अमोदिष्ट	अमोदिषाताम्	अमोदिषत	*प्र०*	असहिष्ट	असहिषाताम्	असहिषत
अमोदिष्ठाः	अमोदिषाथाम्	अमोदिध्वम्	*म०*	असहिष्ठाः	असहिषाथाम्	असहिध्वम्
अमोदिषि	अमोदिष्वहि	अमोदिष्महि	*उ०*	असहिषि	असहिष्वहि	असहिष्महि

(२५) वृत् (होना) (सेव् के तुल्य) (देखो अ० ६)

(२६) ईक्ष् (देखना) (सेव् के तुल्य) (देखो अ० ७)

लट्

वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते	प्र०	ईक्षते	ईक्षेते	ईक्षन्ते
वर्तसे	वर्तेथे	वर्तध्वे	म०	ईक्षसे	ईक्षेथे	ईक्षध्वे
वर्ते	वर्तावहे	वर्तामहे	उ०	ईक्षे	ईक्षावहे	ईक्षामहे

लोट्

वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्	प्र०	ईक्षताम्	ईक्षेताम्	ईक्षन्ताम्
वर्तस्व	वर्तेथाम्	वर्तध्वम्	म०	ईक्षस्व	ईक्षेथाम्	ईक्षध्वम्
वर्तै	वर्तावहै	वर्तामहै	उ०	ईक्षै	ईक्षावहै	ईक्षामहै

लङ्

अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त	प्र०	ऐक्षत	ऐक्षेताम्	ऐक्षन्त
अवर्तथाः	अवर्तेथाम्	अवर्तध्वम्	म०	ऐक्षथाः	ऐक्षेथाम्	ऐक्षध्वम्
अवर्ते	अवर्तावहि	अवर्तामहि	उ०	ऐक्षे	ऐक्षावहि	ऐक्षामहि

विधिलिङ्

वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्	प्र०	ईक्षेत	ईक्षेयाताम्	ईक्षेरन्
वर्तेथाः	वर्तेयाथाम्	वर्तेध्वम्	म०	ईक्षेथाः	ईक्षेयाथाम्	ईक्षेध्वम्
वर्तेय	वर्तेवहि	वर्तेमहि	उ०	ईक्षेय	ईक्षेवहि	ईक्षेमहि

वर्तिष्यते,	वर्त्स्यति (दोनों प्रकार से)		लृट्	ईक्षिष्यते	ईक्षिष्येते	ईक्षिष्यन्ते
वर्तिता	वर्तितारौ	वर्तितारः	लुट्	ईक्षिता	ईक्षितारौ	ईक्षितारः
वर्तिषीष्ट	वर्तिषीयास्ताम्०		आ०लिङ्	ईक्षिषीष्ट	ईक्षिषीयास्ताम्०	
अवर्तिष्यत,	अवर्त्स्यत् (दोनों प्रकार से)		लृङ्	ऐक्षिष्यत	ऐक्षिष्येताम्०	

लिट्

ववृते	ववृताते	ववृतिरे	प्र०	ईक्षांचक्रे	ईक्षांचक्राते	ईक्षांचक्रिरे
ववृतिषे	ववृताथे	ववृतिध्वे	म०	ईक्षांचकृषे	ईक्षांचक्राथे	ईक्षांचकृढ्वे
ववृते	ववृतिवहे	ववृतिमहे	उ०	ईक्षांचक्रे	ईक्षांचकृवहे	ईक्षांचकृमहे

लुङ् (क) (५) — लुङ् (५)

अवर्तिष्ट	अवर्तिषाताम्	अवर्तिषत	प्र०	ऐक्षिष्ट	ऐक्षिषाताम्	ऐक्षिषत
अवर्तिष्ठाः	अवर्तिषाथाम्	अवर्तिध्वम्	म०	ऐक्षिष्ठाः	ऐक्षिषाथाम्	ऐक्षिध्वम्
अवर्तिषि	अवर्तिष्वहि	अवर्तिष्महि	उ०	ऐक्षिषि	ऐक्षिष्वहि	ऐक्षिष्महि

लुङ् (ख) (२)

अवृतत्	अवृतताम्	अवृतन्	प्र०
अवृतः	अवृततम्	अवृतत	म०
अवृतम्	अवृताव	अवृताम	उ०

भ्वादिगण (उभयपदी धातुएँ)

(२७) नी (ले जाना) परस्मैपद **आत्मनेपद** (दे० अ० १८)

लट्				लट्		
नयति	नयतः	नयन्ति	प्र०	नयते	नयेते	नयन्ते
नयसि	नयथः	नयथ	म०	नयसे	नयेथे	नयध्वे
नयामि	नयावः	नयामः	उ०	नये	नयावहे	नयामहे

लोट्				लोट्		
नयतु	नयताम्	नयन्तु	प्र०	नयताम्	नयेताम्	नयन्ताम्
नय	नयतम्	नयत	म०	नयस्व	नयेथाम्	नयध्वम्
नयानि	नयाव	नयाम	उ०	नयै	नयावहै	नयामहै

लङ्				लङ्		
अनयत्	अनयताम्	अनयन्	प्र०	अनयत	अनयेताम्	अनयन्त
अनयः	अनयतम्	अनयत	म०	अनयथाः	अनयेथाम्	अनयध्वम्
अनयम्	अनयाव	अनयाम	उ०	अनये	अनयावहि	अनयामहि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
नयेत्	नयेताम्	नयेयुः	प्र०	नयेत	नयेयाताम्	नयेरन्
नयेः	नयेतम्	नयेत	म०	नयेथाः	नयेयाथाम्	नयेध्वम्
नयेयम्	नयेव	नयेम	उ०	नयेय	नयेवहि	नयेमहि

नेष्यति	नेष्यतः	नेष्यन्ति	लृट्	नेष्यते	नेष्येते	नेष्यन्ते
नेता	नेतारौ	नेतारः	लुट्	नेता	नेतारौ	नेतारः
नीयात्	नीयास्ताम्	नीयासुः	आ० लिङ्	नेषीष्ट	नेषीयास्ताम्	नेषीरन्
अनेष्यत्	अनेष्यताम्	अनेष्यन्	लृङ्	अनेष्यत	अनेष्येताम्	अनेष्यन्त

लिट्				लिट्		
निनाय	निन्यतुः	निन्युः	प्र०	निन्ये	निन्याते	निन्यिरे
निनयिथ, निनेथ	निन्यथुः	निन्य	म०	निन्यिषे	निन्याथे	निन्यिध्वे
निनाय, निनय	निन्यिव	निन्यिम	उ०	निन्ये	निन्यिवहे	निन्यिमहे

लुङ् (४)				लुङ् (४)		
अनैषीत्	अनैष्टाम्	अनैषुः	प्र०	अनेष्ट	अनेषाताम्	अनेषत
अनैषीः	अनैष्टम्	अनैष्ट	म०	अनेष्ठाः	अनेषाथाम्	अनेढ्वम्
अनैषम्	अनैष्व	अनैष्म	उ०	अनेषि	अनेष्वहि	अनेष्महि

(२८) हृ (हरना) परस्मैपद **आत्मनेपद** (दे० अ० १९)

	लट्				**लट्**	
हरति	हरतः	हरन्ति	प्र०	हरते	हरेते	हरन्ते
हरसि	हरथः	हरथ	म०	हरसे	हरेथे	हरध्वे
हरामि	हरावः	हरामः	उ०	हरे	हरावहे	हरामहे
	लोट्				**लोट्**	
हरतु	हरताम्	हरन्तु	प्र०	हरताम्	हरेताम्	हरन्ताम्
हर	हरतम्	हरत	म०	हरस्व	हरेथाम्	हरध्वम्
हराणि	हराव	हराम	उ०	हरै	हरावहै	हरामहै
	लङ्				**लङ्**	
अहरत्	अहरताम्	अहरन्	प्र०	अहरत	अहरेताम्	अहरन्त
अहरः	अहरतम्	अहरत	म०	अहरथाः	अहरेथाम्	अहरध्वम्
अहरम्	अहराव	अहराम	उ०	अहरे	अहरावहि	अहरामहि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
हरेत्	हरेताम्	हरेयुः	प्र०	हरेत	हरेयाताम्	हरेरन्
हरेः	हरेतम्	हरेत	म०	हरेथाः	हरेयाथाम्	हरेध्वम्
हरेयम्	हरेव	हरेम	उ०	हरेय	हरेवहि	हरेमहि

हरिष्यति	हरिष्यतः	हरिष्यन्ति	लृट्	हरिष्यते	हरिष्येते	हरिष्यन्ते
हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः	लुट्	हर्ता	हर्तारौ	हर्तारः
ह्रियात्	ह्रियास्ताम्	ह्रियासुः	आ० लिङ्	हृषीष्ट	हृषीयास्ताम्	हृषीरन्
अहरिष्यत्	अहरिष्यताम्	अहरिष्यन्	लृङ्	अहरिष्यत	अहरिष्येताम्	अहरिष्यन्त
	लिट्				**लिट्**	
जहार	जह्रतुः	जह्रुः	प्र०	जह्रे	जह्राते	जह्रिरे
जहर्थ	जह्रथुः	जह्र	म०	जह्रिषे	जह्राथे	जह्रिध्वे
जहार, जहर	जह्रिव	जह्रिम	उ०	जह्रे	जह्रिवहे	जह्रिमहे
	लुङ् (४)				**लुङ् (४)**	
अहार्षीत्	अहार्ष्टाम्	अहार्षुः	प्र०	अहृत	अहृषाताम्	अहृषत
अहार्षीः	अहार्ष्टम्	अहार्ष्ट	म०	अहृथाः	अहृषाथाम्	अहृढ्वम्
अहार्षम्	अहार्ष्व	अहार्ष्म	उ०	अहृषि	अहृष्वहि	अहृष्महि

(२९) याच् (माँगना) परस्मैपद आत्मनेपद (दे० अ० १६)

लट्				लट्		
याचति	याचतः	याचन्ति	प्र०	याचते	याचेते	याचन्ते
याचसि	याचथः	याचथ	म०	याचसे	याचेथे	याचध्वे
याचामि	याचावः	याचामः	उ०	याचे	याचावहे	याचामहे

लोट्				लोट्		
याचतु	याचताम्	याचन्तु	प्र०	याचताम्	याचेताम्	याचन्ताम्
याच	याचतम्	याचत	म०	याचस्व	याचेथाम्	याचध्वम्
याचानि	याचाव	याचाम	उ०	याचै	याचावहै	याचामहै

लङ्				लङ्		
अयाचत्	अयाचताम्	अयाचन्	प्र०	अयाचत	अयाचेताम्	अयाचन्त
अयाचः	अयाचतम्	अयाचत	म०	अयाचथाः	अयाचेथाम्	अयाचध्वम्
अयाचम्	अयाचाव	अयाचाम	उ०	अयाचे	अयाचावहि	अयाचामहि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
याचेत्	याचेताम्	याचेयुः	प्र०	याचेत	याचेयाताम्	याचेरन्
याचेः	याचेतम्	याचेत	म०	याचेथाः	याचेयाथाम्	याचेध्वम्
याचेयम्	याचेव	याचेम	उ०	याचेय	याचेवहि	याचेमहि

याचिष्यति	याचिष्यतः	याचिष्यन्ति	लृट्	याचिष्यते	याचिष्येते	याचिष्यन्ते
याचिता	याचितारौ	याचितारः	लुट्	याचिता	याचितारौ	याचितारः
याच्यात्	याच्यास्ताम्	याच्यासुः	आ० लिङ्	याचिषीष्ट	याचिषीयास्ताम्०	
अयाचिष्यत्	अयाचिष्यताम्०		लृङ्	अयाचिष्यत	अयाचिष्येताम्०	

लिट्				लिट्		
ययाच	ययाचतुः	ययाचुः	प्र०	ययाचे	ययाचाते	ययाचिरे
ययाचिथ	ययाचथुः	ययाच	म०	ययाचिषे	ययाचाथे	ययाचिध्वे
ययाच	ययाचिव	ययाचिम	उ०	ययाचे	ययाचिवहे	ययाचिमहे

लुङ् (५)				लुङ् (५)		
अयाचीत्	अयाचिष्टाम्	अयाचिषुः	प्र०	अयाचिष्ट	अयाचिषाताम्	अयाचिषत
अयाचीः	अयाचिष्टम्	अयाचिष्ट	म०	अयाचिष्ठाः	अयाचिषाथाम्	अयाचिध्वम्
अयाचिषम्	अयाचिष्व	अयाचिष्म	उ०	अयाचिषि	अयाचिष्वहि	अयाचिष्महि

(३०) वह् (ढोना) परस्मैपद — **आत्मनेपद** (दे० अ० १७)

लट्				**लट्**		
वहति	वहतः	वहन्ति	प्र०	वहते	वहेते	वहन्ते
वहसि	वहथः	वहथ	म०	वहसे	वहेथे	वहध्वे
वहामि	वहावः	वहामः	उ०	वहे	वहावहे	वहामहे
लोट्				**लोट्**		
वहतु	वहताम्	वहन्तु	प्र०	वहताम्	वहेताम्	वहन्ताम्
वह	वहतम्	वहत	म०	वहस्व	वहेथाम्	वहध्वम्
वहानि	वहाव	वहाम	उ०	वहै	वहावहै	वहामहै
लङ्				**लङ्**		
अवहत्	अवहताम्	अवहन्	प्र०	अवहत	अवहेताम्	अवहन्त
अवहः	अवहतम्	अवहत	म०	अवहथाः	अवहेथाम्	अवहध्वम्
अवहम्	अवहाव	अवहाम	उ०	अवहे	अवहावहि	अवहामहि
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
वहेत्	वहेताम्	वहेयुः	प्र०	वहेत	वहेयाताम्	वहेरन्
वहेः	वहेतम्	वहेत	म०	वहेथाः	वहेयाथाम्	वहेध्वम्
वहेयम्	वहेव	वहेम	उ०	वहेय	वहेवहि	वहेमहि

वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति	लृट्	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
वोढा	वोढारौ	वोढारः	लुट्	वोढा	वोढारौ	वोढारः
उह्यात्	उह्यास्ताम्	उह्यासुः	आ० लिङ्	वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्
अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्	लृङ्	अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त
लिट्				**लिट्**		
उवाह	ऊहतुः	ऊहुः	प्र०	ऊहे	ऊहाते	ऊहिरे
उवहिथ, उवोढ	ऊहथुः	ऊह	म०	ऊहिषे	ऊहाथे	ऊहिध्वे
उवाह, उवह	ऊहिव	ऊहिम	उ०	ऊहे	ऊहिवहे	ऊहिमहे
लुङ् (४)				**लुङ् (४)**		
अवाक्षीत्	अवोढाम्	अवाक्षुः	प्र०	अवोढ	अवक्षाताम्	अवक्षत
अवाक्षीः	अवोढम्	अवोढ	म०	अवोढाः	अवक्षाथाम्	अवोढ्वम्
अवाक्षम्	अवाक्ष्व	अवाक्ष्म	उ०	अवक्षि	अवक्ष्वहि	अवक्ष्महि

(२) अदादिगण

(१) इस गण की प्रथम धातु अद् (खाना) है, अतः गण का नाम अदादिगण पड़ा। (अदिप्रभृतिभ्यः शपः) अदादिगण की धातुओं में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में धातु और प्रत्यय के बीच में कोई विकरण नहीं लगता है (शप् का लोप होता है)। धातु के अन्त में केवल ति, तः आदि लगते हैं। उपर्युक्त लकारों में धातु को एकवचन में गुण होता है, अन्यत्र नहीं।

(२) इस गण में ७२ धातुएँ हैं।

(३) लट् आदि में धातु के अन्त में संक्षिप्त-रूप निम्नलिखित लगेंगे। लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृष्ठ १४४ पर निर्दिष्ट संक्षिप्त-रूप ही लगेंगे। लृट् आदि में सेट् (इ वाली) धातुओं में संक्षिप्त-रूप से पहले इ भी लगता है, अनिट् (इ-नहीं वाली) धातुओं में केवल संक्षिप्त-रूप ही लगेंगे।

परस्मैपद (सं० रूप)				**आत्मनेपद** (सं० रूप)		
	लट्				**लट्**	
ति	तः	अन्ति	प्र०	ते	आते	अते
सि	थः	थ	म०	से	आथे	ध्वे
मि	वः	मः	उ०	ए	वहे	महे
	लोट्				**लोट्**	
तु	ताम्	अन्तु	प्र०	ताम्	आताम्	अताम्
हि	तम्	त	म०	स्व	आथाम्	ध्वम्
आनि	आव	आम	उ०	ऐ	आवहै	आमहै
	लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)				**लङ्** (धातु से पूर्व अ या आ)	
त्	ताम्	अन्	प्र०	त	आताम्	अत
:	तम्	त	म०	थाः	आथाम्	ध्वम्
अम्	व	म	उ०	इ	वहि	महि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
यात्	याताम्	युः	प्र०	ईत	ईयाताम्	ईरन्
याः	यातम्	यात	म०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
याम्	याव	याम	उ०	ईय	ईवहि	ईमहि

अदादिगण (परस्मैपदी धातुएँ)

(३१) अद् (खाना) (दे० अ० २३)

लट्				लोट्		
अत्ति	अत्तः	अदन्ति	प्र०	अत्तु	अत्ताम्	अदन्तु
अत्सि	अत्थः	अत्थ	म०	अद्धि	अत्तम्	अत्त
अद्मि	अद्वः	अद्मः	उ०	अदानि	अदाव	अदाम

लङ्				विधिलिङ्		
आदत्	आत्ताम्	आदन्	प्र०	अद्यात्	अद्याताम्	अद्युः
आदः	आत्तम्	आत्त	म०	अद्याः	अद्यातम्	अद्यात
आदम्	आद्व	आद्म	उ०	अद्याम्	अद्याव	अद्याम

लृट्				लुट्		
अत्स्यति	अत्स्यतः	अत्स्यन्ति	प्र०	अत्ता	अत्तारौ	अत्तारः
अत्स्यसि	अत्स्यथः	अत्स्यथ	म०	अत्तासि	अत्तास्थः	अत्तास्थ
अत्स्यामि	अत्स्यावः	अत्स्यामः	उ०	अत्तास्मि	अत्तास्वः	अत्तास्मः

आशीर्लिङ्				लृङ्		
अद्यात्	अद्यास्ताम्	अद्यासुः	प्र०	आत्स्यत्	आत्स्यताम्	आत्स्यन्
अद्याः	अद्यास्तम्	अद्यास्त	म०	आत्स्यः	आत्स्यतम्	आत्स्यत
अद्यासम्	अद्यास्व	अद्यास्म	उ०	आत्स्यम्	आत्स्याव	आत्स्याम

लिट् (क)				लुङ् (२) (अद् को घस्)		
आद	आदतुः	आदुः	प्र०	अघसत्	अघसताम्	अघसन्
आदिथ	आदथुः	आद	म०	अघसः	अघसतम्	अघसत
आद	आदिव	आदिम	उ०	अघसम्	अघसाव	अघसाम

लिट् (ख) (अद् को घस्)			
जघास	जक्षतुः	जक्षुः	प्र०
जघसिथ	जक्षथुः	जक्ष	म०
जघास, जघस	जक्षिव	जक्षिम	उ०

(३२) अस् (होना) (दे० अ० २४) **(३३) इ (जाना)** (दे० अ० ३०)

सूचना—लिट्, लुङ् आदि में अस् को भू होगा। **सूचना**—इ को लुङ् में गा होगा।

	लट्				**लट्**	
अस्ति	स्तः	सन्ति	*प्र०*	एति	इतः	यन्ति
असि	स्थः	स्थ	*म०*	एषि	इथः	इथ
अस्मि	स्वः	स्मः	*उ०*	एमि	इवः	इमः

	लोट्				**लोट्**	
अस्तु	स्ताम्	सन्तु	*प्र०*	एतु	इताम्	यन्तु
एधि	स्तम्	स्त	*म०*	इहि	इतम्	इत
असानि	असाव	असाम	उ०	अयानि	अयाव	अयाम

	लङ्				**लङ्**	
आसीत्	आस्ताम्	आसन्	*प्र०*	ऐत्	ऐताम्	आयन्
आसीः	आस्तम्	आस्त	*म०*	ऐः	ऐतम्	ऐत
आसम्	आस्व	आस्म	*उ०*	आयम्	ऐव	ऐम

	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
स्यात्	स्याताम्	स्युः	*प्र०*	इयात्	इयाताम्	इयुः
स्याः	स्यातम्	स्यात	*म०*	इयाः	इयातम्	इयात
स्याम्	स्याव	स्याम	*उ०*	इयाम्	इयाव	इयाम

भविष्यति	भविष्यतः०	(भू के तुल्य)	*लृट्*	एष्यति	एष्यतः	एष्यन्ति
भविता	भवितारौ०	('')	*लुट्*	एता	एतारौ	एतारः
भूयात्	भूयास्ताम्०	('')	*आ० लिङ्*	ईयात्	ईयास्ताम्	ईयासुः
अभविष्यत्	अभविष्यताम्०	('')	*लृङ्*	ऐष्यत्	ऐष्यताम्	ऐष्यन्

	लिट् (भू के तुल्य)					
बभूव	बभूवतुः	बभूवुः	*प्र०*	इयाय	ईयतुः	ईयुः
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव	*म०*	इययिथ, इयेथ	ईयथुः	ईय
बभूव	बभूविव	बभूविम	*उ०*	इयाय, इयय	ईयिव	ईयिम

	लुङ् (१) (भू के तुल्य)				**लुङ् (१) (इ को गा)**	
अभूत्	अभूताम्	अभूवन्	*प्र०*	अगात्	अगाताम्	अगुः
अभूः	अभूतम्	अभूत	*म०*	अगाः	अगातम्	अगात
अभूवम्	अभूव	अभूम	*उ०*	अगाम्	अगाव	अगाम

(३४) रुद् (रोना) (दे० अ० २८) **(३५) स्वप् (सोना)** (दे० अ० २८)

	लट्				**लट्**	
रोदिति	रुदितः	रुदन्ति	प्र०	स्वपिति	स्वपितः	स्वपन्ति
रोदिषि	रुदिथः	रुदिथ	म०	स्वपिषि	स्वपिथः	स्वपिथ
रोदिमि	रुदिवः	रुदिमः	उ०	स्वपिमि	स्वपिवः	स्वपिमः

	लोट्				**लोट्**	
रोदितु	रुदिताम्	रुदन्तु	प्र०	स्वपितु	स्वपिताम्	स्वपन्तु
रुदिहि	रुदितम्	रुदित	म०	स्वपिहि	स्वपितम्	स्वपित
रोदानि	रोदाव	रोदाम	उ०	स्वपानि	स्वपाव	स्वपाम

	लङ्				**लङ्**	
अरोदीत्, अरोदत्	अरुदिताम्	अरुदन्	प्र०	अस्वपीत्, अस्वपत्	अस्वपिताम्	अस्वपन्
अरोदीः, अरोदः	अरुदितम्	अरुदित	म०	अस्वपीः, अस्वपः	अस्वपितम्	अस्वपित
अरोदम्	अरुदिव	अरुदिम	उ०	अस्वपम्	अस्वपिव	अस्वपिम

	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
रुद्यात्	रुद्याताम्	रुद्युः	प्र०	स्वप्यात्	स्वप्याताम्	स्वप्युः
रुद्याः	रुद्यातम्	रुद्यात	म०	स्वप्याः	स्वप्यातम्	स्वप्यात
रुद्याम्	रुद्याव	रुद्याम	उ०	स्वप्याम्	स्वप्याव	स्वप्याम

रोदिष्यति	रोदिष्यतः	रोदिष्यन्ति	लृट्	स्वप्स्यति	स्वप्स्यतः	स्वप्स्यन्ति
रोदिता	रोदितारौ	रोदितारः	लुट्	स्वप्ता	स्वप्तारौ	स्वप्तारः
रुद्यात्	रुद्यास्ताम्	रुद्यासुः	*आ० लिङ्*	सुप्यात्	सुप्यास्ताम्	सुप्यासुः
अरोदिष्यत्	अरोदिष्यताम्०		लृङ्	अस्वप्स्यत्	अस्वप्स्यताम्०	

	लिट्				**लिट्**	
रुरोद	रुरुदतुः	रुरुदुः	प्र०	सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
रुरोदिथ	रुरुदथुः	रुरुद	म०	सुष्वपिथ, सुष्वप्थ	सुषुपथुः	सुषुप
रुरोद	रुरुदिव	रुरुदिम	उ०	सुष्वाप, सुष्वप	सुषुपिव	सुषुपिम

	लुङ् (क) (२)				**लुङ् (४)**	
अरुदत्	अरुदताम्	अरुदन्	प्र०	अस्वाप्सीत्	अस्वाप्ताम्	अस्वाप्सुः
अरुदः	अरुदतम्	अरुदत	म०	अस्वाप्सीः	अस्वाप्तम्	अस्वाप्त
अरुदम्	अरुदाव	अरुदाम	उ०	अस्वाप्सम्	अस्वाप्स्व	अस्वाप्स्म

	लुङ् (ख) (५)		
अरोदीत्	अरोदिष्टाम्	अरोदिषुः	प्र०
अरोदीः	अरोदिष्टम्	अरोदिष्ट	म०
अरोदिषम्	अरोदिष्व	अरोदिष्म	उ०

(३६) दुह् (दुहना) (दे० अ० २७)

सूचना—केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं।

(३७) लिह् (चाटना) (दे० अ० २७)

सूचना—केवल परस्मैपद के रूप दिये हैं।

	लट्				**लट्**	
दोग्धि	दुग्धः	दुहन्ति	*प्र०*	लेढि	लीढः	लिहन्ति
धोक्षि	दुग्धः	दुग्ध	*म०*	लेक्षि	लीढः	लीढ
दोह्मि	दुह्वः	दुह्मः	*उ०*	लेह्मि	लिह्वः	लिह्मः

	लोट्				**लोट्**	
दोग्धु	दुग्धाम्	दुहन्तु	*प्र०*	लेढु	लीढाम्	लिहन्तु
दुग्धि	दुग्धम्	दुग्ध	*म०*	लीढि	लीढम्	लीढ
दोहानि	दोहाव	दोहाम	*उ०*	लेहानि	लेहाव	लेहाम

	लङ्				**लङ्**	
अधोक्,-ग्	अदुग्धाम्	अदुहन्	*प्र०*	अलेट्,-ड्	अलीढाम्	अलिहन्
अधोक्,-ग्	अदुग्धम्	अदुग्ध	*म०*	अलेट्,-ड्	अलीढम्	अलीढ
अदोहम्	अदुह्व	अदुह्म	*उ०*	अलेहम्	अलिह्व	अलिह्म

	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
दुह्यात्	दुह्याताम्	दुह्युः	*प्र०*	लिह्यात्	लिह्याताम्	लिह्युः
दुह्याः	दुह्यातम्	दुह्यात	*म०*	लिह्याः	लिह्यातम्	लिह्यात
दुह्याम्	दुह्याव	दुह्याम	*उ०*	लिह्याम्	लिह्याव	लिह्याम

धोक्ष्यति	धोक्ष्यतः	धोक्ष्यन्ति	*लृट्*	लेक्ष्यति	लेक्ष्यतः	लेक्ष्यन्ति
दोग्धा	दोग्धारौ	दोग्धारः	*लुट्*	लेढा	लेढारौ	लेढारः
दुह्यात्	दुह्यास्ताम्	दुह्यासुः	*आ० लिङ्*	लिह्यात्	लिह्यास्ताम्	लिह्यासुः
अधोक्ष्यत्	अधोक्ष्यताम्	अधोक्ष्यन्	*लृङ्*	अलेक्ष्यत्	अलेक्ष्यताम्०	

	लिट्				**लिट्**	
दुदोह	दुदुहतुः	दुदुहुः	*प्र०*	लिलेह	लिलिहतुः	लिलिहुः
दुदोहिथ	दुदुहथुः	दुदुह	*म०*	लिलेहिथ	लिलिहथुः	लिलिह
दुदोह	दुदुहिव	दुदुहिम	*उ०*	लिलेह	लिलिहिव	लिलिहिम

	लुङ् (७)				**लुङ् (७)**	
अधुक्षत्	अधुक्षताम्	अधुक्षन्	*प्र०*	अलिक्षत्	अलिक्षताम्	अलिक्षन्
अधुक्षः	अधुक्षतम्	अधुक्षत	*म०*	अलिक्षः	अलिक्षतम्	अलिक्षत
अधुक्षम्	अधुक्षाव	अधुक्षाम	*उ०*	अलिक्षम्	अलिक्षाव	अलिक्षाम

(३८) हन् (मारना) (दे० अ० २९) **(३९) स्तु (स्तुति करना)** (दे० अ० २९)

लट् **लट्**

हन्ति	हतः	घ्नन्ति	प्र०	स्तौति, स्तवीति	स्तुतः	स्तुवन्ति
हन्सि	हथः	हथ	म०	स्तौषि, स्तवीषि	स्तुथः	स्तुथ
हन्मि	हन्वः	हन्मः	उ०	स्तौमि, स्तवीमि	स्तुवः	स्तुमः

लोट् **लोट्**

हन्तु	हताम्	घ्नन्तु	प्र०	स्तौतु, स्तवीतु	स्तुताम्	स्तुवन्तु
जहि	हतम्	हत	म०	स्तुहि	स्तुतम्	स्तुत
हनानि	हनाव	हनाम	उ०	स्तवानि	स्तवाव	स्तवाम

लङ् **लङ्**

अहन्	अहताम्	अघ्नन्	प्र०	अस्तौत्, अस्तवीत्	अस्तुताम्	अस्तुवन्
अहन्	अहतम्	अहत	म०	अस्तौः, अस्तवीः	अस्तुतम्	अस्तुत
अहनम्	अहन्व	अहन्म	उ०	अस्तवम्	अस्तुव	अस्तुम

विधिलिङ् **विधिलिङ्**

हन्यात्	हन्याताम्	हन्युः	प्र०	स्तुयात्	स्तुयाताम्	स्तुयुः
हन्याः	हन्यातम्	हन्यात	म०	स्तुयाः	स्तुयातम्	स्तुयात
हन्याम्	हन्याव	हन्याम	उ०	स्तुयाम्	स्तुयाव	स्तुयाम

हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति	लृट्	स्तोष्यति	स्तोष्यतः	स्तोष्यन्ति
हन्ता	हन्तारौ	हन्तारः	लुट्	स्तोता	स्तोतारौ	स्तोतारः
वध्यात्	वध्यास्ताम्	वध्यासुः	*आ० लिङ्*	स्तूयात्	स्तूयास्ताम्	स्तूयासुः
अहनिष्यत्	अहनिष्यताम्०		लृङ्	अस्तोष्यत्	अस्तोष्यताम्०	

लिट् **लिट्**

जघान	जघ्नतुः	जघ्नुः	प्र०	तुष्टाव	तुष्टुवतुः	तुष्टुवुः
जघनिथ, जघन्थ	जघ्नथुः	जघ्न	म०	तुष्टोथ	तुष्टुवथुः	तुष्टुव
जघान, जघन	जघ्निव	जघ्निम	उ०	तुष्टाव, तुष्टव	तुष्टुव	तुष्टुम

लुङ् (५) (हन् को वध) **लुङ् (५)**

अवधीत्	अवधिष्टाम्	अवधिषुः	प्र०	अस्तावीत्	अस्ताविष्टाम्	अस्ताविषुः
अवधीः	अवधिष्टम्	अवधिष्ट	म०	अस्तावीः	अस्ताविष्टम्	अस्ताविष्ट
अवधिषम्	अवधिष्व	अवधिष्म	उ०	अस्ताविषम्	अस्ताविष्व	अस्ताविष्म

(४०) या (जाना) (दे० अ० २६) **(४१) पा (रक्षा करना)** (दे० अ० २६)

	लट्				**लट्**	
याति	यातः	यान्ति	*प्र०*	पाति	पातः	पान्ति
यासि	याथः	याथ	*म०*	पासि	पाथः	पाथ
यामि	यावः	यामः	*उ०*	पामि	पावः	पामः
	लोट्				**लोट्**	
यातु	याताम्	यान्तु	*प्र०*	पातु	पाताम्	पान्तु
याहि	यातम्	यात	*म०*	पाहि	पातम्	पात
यानि	याव	याम	*उ०*	पानि	पाव	पाम
	लङ्				**लङ्**	
अयात्	अयाताम्	अयुः, अयान्	*प्र०*	अपात्	अपाताम्	अपुः, अपान्
अयाः	अयातम्	अयात	*म०*	अपाः	अपातम्	अपात
अयाम्	अयाव	अयाम	*उ०*	अपाम्	अपाव	अपाम
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
यायात्	यायाताम्	यायुः	*प्र०*	पायात्	पायाताम्	पायुः
यायाः	यायातम्	यायात	*म०*	पायाः	पायातम्	पायात
यायाम्	यायाव	यायाम	*उ०*	पायाम्	पायाव	पायाम
	—				—	
यास्यति	यास्यतः	यास्यन्ति	*लृट्*	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
याता	यातारौ	यातारः	*लुट्*	पाता	पातारौ	पातारः
यायात्	यायास्ताम्	यायासुः	*आ० लिङ्*	पायात्	पायास्ताम्	पायासुः
अयास्यत्	अयास्यताम्	अयास्यन्	*लृङ्*	अपास्यत्	अपास्यताम्	अपास्यन्
	लिट्				**लिट्**	
ययौ	ययतुः	ययुः	*प्र०*	पपौ	पपतुः	पपुः
ययिथ, ययाथ	ययथुः	यय	*म०*	पपिथ, पपाथ	पपथुः	पप
ययौ	ययिव	ययिम	*उ०*	पपौ	पपिव	पपिम
	लुङ् (६)				**लुङ् (६)**	
अयासीत्	अयासिष्टाम्	अयासिषुः	*प्र०*	अपासीत्	अपासिष्टाम्	अपासिषुः
अयासीः	अयासिष्टम्	अयासिष्ट	*म०*	अपासीः	अपासिष्टम्	पासिष्ट
अयासिषम्	अयासिष्व	अयासिष्म	*उ०*	अपासिषम्	अपासिष्व	अपासिष्म

(४२) शास् (शिक्षा देना) (दे० अ० २३) **(४३) विद् (जानना)** (दे अ० ३०)

	लट्				**लट्**	
शास्ति	शिष्टः	शासति	*प्र०*	वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
शास्सि	शिष्टः	शिष्ट	*म०*	वेत्सि	वित्थः	वित्थ
शास्मि	शिष्वः	शिष्मः	*उ०*	वेद्मि	विद्वः	विद्मः
	लोट्				**लोट्**	
शास्तु	शिष्टाम्	शासतु	*प्र०*	वेत्तु	वित्ताम्	विदन्तु
शाधि	शिष्टम्	शिष्ट	*म०*	विद्धि	वित्तम्	वित्त
शासानि	शासाव	शासाम	*उ०*	वेदानि	वेदाव	वेदाम
	लङ्				**लङ्**	
अशात्	अशिष्टाम्	अशासुः	*प्र०*	अवेत्	अवित्ताम्	अविदुः
अशाः, अशात्	अशिष्टम्	अशिष्ट	*म०*	अवेः, अवेत्	अवित्तम्	अवित्त
अशासम्	अशिष्व	अशिष्म	*उ०*	अवेदम्	अविद्व	अविद्म
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
शिष्यात्	शिष्याताम्	शिष्युः	*प्र०*	विद्यात्	विद्याताम्	विद्युः
शिष्याः	शिष्यातम्	शिष्यात	*म०*	विद्याः	विद्यातम्	विद्यात
शिष्याम्	शिष्याव	शिष्याम	*उ०*	विद्याम्	विद्याव	विद्याम
	—				—	
शासिष्यति	शासिष्यतः	शासिष्यन्ति	*लृट्*	वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति
शासिता	शासितारौ	शासितारः	*लुट्*	वेदिता	वेदितारौ	वेदितारः
शिष्यात्	शिष्यास्ताम्	शिष्यासुः	*आ० लिङ्*	विद्यात्	विद्यास्ताम्	विद्यासुः
अशासिष्यत्	अशासिष्यताम्०		*लृङ्*	अवेदिष्यत्	अवेदिष्यताम्०	
	लिट्				**लिट्**	
शशास	शशासतुः	शशासुः	*प्र०*	विवेद	विविदतुः	विविदुः
शशासिथ	शशासतुः	शशास	*म०*	विवेदिथ	विविदथुः	विविद
शशास	शशासिव	शशासिम	*उ०*	विवेद	विविदिव	विविदिम
	लुङ् (२)				**लुङ् (५)**	
अशिषत्	अशिषताम्	अशिषन्	*प्र०*	अवेदीत्	अवेदिष्टाम्	अवेदिषुः
अशिषः	अशिषतम्	अशिषत	*म०*	अवेदीः	अवेदिष्टम्	अवेदिष्ट
अशिषम्	अशिषाव	अशिषाम	*उ०*	अवेदिषम्	अवेदिष्व	अवेदिष्म

सूचना—(१) लट् में वेद विदतुः विदुः, वेत्थ विदथुः विद, वेद विद्व विद्म भी रूप होते हैं।

(२) लिट् और लोट् में विदां + कृ वाले अर्थात् विदांचकार और विदांकरोतु आदि भी रूप होते हैं।

अदादिगण–आत्मनेपदी धातुएँ

(४४) आस् (बैठना) (दे० अ० ३१)

लट्				लोट्		
आस्ते	आसाते	आसते	प्र०	आस्ताम्	आसाताम्	आसताम्
आस्से	आसाथे	आध्वे	म०	आस्स्व	आसाथाम्	आध्वम्
आसे	आस्वहे	आस्महे	उ०	आसै	आसावहै	आसामहै

लङ्				विधिलिङ्		
आस्त	आसाताम्	आसत	प्र०	आसीत	आसीयाताम्	आसीरन्
आस्थाः	आसाथाम्	आध्वम्	म०	आसीथाः	आसीयाथाम्	आसीध्वम्
आसि	आस्वहि	आस्महि	उ०	आसीय	आसीवहि	आसीमहि

लृट्				लुट्		
आसिष्यते	आसिष्येते	आसिष्यन्ते	प्र०	आसिता	आसितारौ	आसितारः
आसिष्यसे	आसिष्येथे	आसिष्यध्वे	म०	आसितासे	आसितासाथे	आसिताध्वे
आसिष्ये	आसिष्यावहे	आसिष्यामहे	उ०	आसिताहे	आसितास्वहे	आसितास्महे

आशीर्लिङ्				लृङ्		
आसिषीष्ट	आसिषीयास्ताम्	आसिषीरन्	प्र०	आसिष्यत	आसिष्येताम्	आसिष्यन्त
आसिषीष्ठाः	आसिषीयास्थाम्	आसिषीध्वम्	म०	आसिष्यथाः	आसिष्येथाम्	आसिष्यध्वम्
आसिषीय	आसिषीवहि	आसिषीमहि	उ०	आसिष्ये	आसिष्यावहि	आसिष्यामहि

लिट् (आसां + कृ)				लुङ् (५)		
आसांचक्रे	आसांचक्राते	आसांचक्रिरे	प्र०	आसिष्ट	आसिषाताम्	आसिषत
—चकृषे	—चक्राथे	—चकृढ्वे	म०	आसिष्ठाः	आसिषाथाम्	आसिध्वम्
—चक्रे	—चकृवहे	—चकृमहे	उ०	आसिषि	आसिष्वहि	आसिष्महि

(४५) शी (सोना) (दे० अ० ३२) (४६) अधि + इ (पढ़ना) (दे० अ० ३२)

लट्				लट्		
शेते	शयाते	शेरते	प्र०	अधीते	अधीयाते	अधीयते
शेषे	शयाथे	शेध्वे	म०	अधीषे	अधीयाथे	अधीध्वे
शये	शेवहे	शेमहे	उ०	अधीये	अधीवहे	अधीमहे

लोट्				लोट्		
शेताम्	शयाताम्	शेरताम्	प्र०	अधीताम्	अधीयाताम्	अधीयताम्
शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्	म०	अधीष्व	अधीयाथाम्	अधीध्वम्
शयै	शयावहै	शयामहै	उ०	अध्ययै	अध्ययावहै	अध्ययामहै

लङ्				लङ्		
अशेत	अशयाताम्	अशेरत	प्र०	अध्यैत	अध्यैयाताम्	अध्यैयत
अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्	म०	अध्यैथाः	अध्यैयाथाम्	अध्यैध्वम्
अशयि	अशेवहि	अशेमहि	उ०	अध्यैयि	अध्यैवहि	अध्यैमहि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्	प्र०	अधीयीत	अधीयीयाताम्	अधीयीरन्
शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्	म०	अधीयीथाः	अधीयीयाथाम्	अधीयीध्वम्
शयीय	शयीवहि	शयीमहि	उ०	अधीयीय	अधीयीवहि	अधीयीमहि

शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते	*लृट्*	अध्येष्यते	अध्येष्येते	अध्येष्यन्ते
शयिता	शयितारौ	शयितारः	*लुट्*	अध्येता	अध्येतारौ	अध्येतारः
शयिषीष्ट	शयिषीयास्ताम्०		*आ०लिङ्*	अध्येषीष्ट	अध्येषीयास्ताम्०	
अशयिष्यत	अशयिष्येताम्०		*लृङ्*	अध्यैष्यत,	अध्यगीष्यत (दोनों प्रकार से)	

लिट्				लिट् (इ को गा)		
शिश्ये	शिश्याते	शिश्यिरे	प्र०	अधिजगे	अधिजगाते	अधिजगिरे
शिश्यिषे	शिश्याथे	शिश्यिध्वे	म०	अधिजगिषे	अधिजगाथे	अधिजगिध्वे
शिश्ये	शिश्यिवहे	शिश्यिमहे	उ०	अधिजगे	अधिजगिवहे	अधिजगिमहे

लुङ् (५)				लुङ् (क) (४)		
अशयिष्ट	अशयिषाताम्	अशयिषत	प्र०	अध्यैष्ट	अध्यैषाताम्	अध्यैषत
अशयिष्ठाः	अशयिषाथाम्	अशयिध्वम्	म०	अध्यैष्ठाः	अध्यैषाथाम्	अध्यैढ्वम्
अशयिषि	अशयिष्वहि	अशयिष्महि	उ०	अध्यैषि	अध्यैष्वहि	अध्यैष्महि

लुङ् (ख) (४) (इ को गा)		
अध्यगीष्ट	अध्यगीषाताम्	अध्यगीषत
अध्यगीष्ठाः	अध्यगीषाथाम्	अध्यगीढ्वम्
अध्यगीषि	अध्यगीष्वहि	अध्यगीष्महि

(४७) ब्रू (कहना) परस्मैपद — **आत्मनेपद** (दे० अ० २५)

सूचना—लृट् आदि में ब्रू को वच् होगा। *सूचना*—लृट् आदि में ब्रू को वच्।

लट्

परस्मैपद				आत्मनेपद		
ब्रवीति, आह	ब्रूतः, आहतुः	ब्रुवन्ति, आहुः	प्र०	ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
ब्रवीषि, आत्थ	ब्रूथः, आहथुः	ब्रूथ	म०	ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः	उ०	ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

लोट्

ब्रवीतु	ब्रूताम्	ब्रुवन्तु	प्र०	ब्रूताम्	ब्रुवाताम्	ब्रुवताम्
ब्रूहि	ब्रूतम्	ब्रूत	म०	ब्रूष्व	ब्रुवाथाम्	ब्रूध्वम्
ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम	उ०	ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

लङ्

अब्रवीत्	अब्रूताम्	अब्रुवन्	प्र०	अब्रूत	अब्रुवाताम्	अब्रुवत
अब्रवीः	अब्रूतम्	अब्रूत	म०	अब्रूथाः	अब्रुवाथाम्	अब्रूध्वम्
अब्रवम्	अब्रूव	अब्रूम	उ०	अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

विधिलिङ्

ब्रूयात्	ब्रूयाताम्	ब्रूयुः	प्र०	ब्रुवीत	ब्रुवीयाताम्	ब्रुवीरन्
ब्रूयाः	ब्रूयातम्	ब्रूयात	म०	ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथाम्	ब्रुवीध्वम्
ब्रूयाम्	ब्रूयाव	ब्रूयाम	उ०	ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति	लृट्	वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते
वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः	लुट्	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
उच्यात्	उच्यास्ताम्	उच्यासुः	आ०लिङ्	वक्षीष्ट	वक्षीयास्ताम्	वक्षीरन्
अवक्ष्यत्	अवक्ष्यताम्	अवक्ष्यन्	लृङ्	अवक्ष्यत	अवक्ष्येताम्	अवक्ष्यन्त

लिट्

उवाच	ऊचतुः	ऊचुः	प्र०	ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे
उवचिथ, उवक्थ	ऊचथुः	ऊच	म०	ऊचिषे	ऊचाथे	ऊचिध्वे
उवाच, उवच	ऊचिव	ऊचिम	उ०	ऊचे	ऊचिवहे	ऊचिमहे

लुङ् (२)

अवोचत्	अवोचताम्	अवोचन्	प्र०	अवोचत	अवोचेताम्	अवोचन्त
अवोचः	अवोचतम्	अवोचत	म०	अवोचथाः	अवोचेथाम्	अवोचध्वम्
अवोचम्	अवोचाव	अवोचाम	उ०	अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि

(३) जुहोत्यादिगण

(१) इस गण की प्रथम धातु हु (हवन करना) है। उसके रूप जुहोति आदि होते हैं, अतः गण का नाम जुहोत्यादिगण पड़ा। जुहोत्यादिगण में भी अदादिगण के तुल्य धातु और प्रत्यय के बीच में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में कोई विकरण नहीं लगता है। (जुहोत्यादिभ्यः श्लुः, श्लौ) उक्त लकारों में धातु को द्वित्व होता है अर्थात् धातु को दो बार पढ़ा जाता है और द्वित्व के प्रथम भाग में कुछ परिवर्तन भी होते हैं। उक्त लकारों में धातु को एकवचन में गुण होता है, अन्यत्र नहीं।

(२) इस गण में २४ धातुएँ हैं।

(३) लट् आदि में धातु के अन्त में संक्षिप्त-रूप निम्नलिखित लगेंगे। लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृष्ठ १४४ पर निर्दिष्ट संक्षिप्तरूप ही लगेंगे। लृट् आदि में सेट् धातुओं में संक्षिप्तरूप से पहले इ भी लगेगा, अनिट् में नहीं।

परस्मैपद (सं० रूप)				**आत्मनेपद** (सं० रूप)		
	लट्				**लट्**	
ति	तः	अति	प्र०	ते	आते	अते
सि	थः	थ	म०	से	आथे	ध्वे
मि	वः	मः	उ०	ए	वहे	महे
	लोट्				**लोट्**	
तु	ताम्	अतु	प्र०	ताम्	आताम्	अताम्
हि	तम्	त	म०	स्व	आथाम्	ध्वम्
आनि	आव	आम	उ०	ऐ	आवहै	आमहै
लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)				**लङ्** (धातु से पूर्व अ या आ)		
त्	ताम्	उः	प्र०	त	आताम्	अत
:	तम्	त	म०	थाः	आथाम्	ध्वम्
अम्	व	म	उ०	इ	वहि	महि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
यात्	याताम्	युः	प्र०	ईत	ईयाताम्	ईरन्
याः	यातम्	यात	म०	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
याम्	याव	याम	उ०	ईय	ईवहि	ईमहि

(४८) हु (हवन करना) (दे० अ० ३३)

परस्मैपदी

लट्

जुहोति	जुहुतः	जुह्वति	प्र०
जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ	म०
जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः	उ०

लोट्

जुहोतु	जुहुताम्	जुह्वतु	प्र०
जुहुधि	जुहुतम्	जुहुत	म०
जुहवानि	जुहवाव	जुहवाम	उ०

लङ्

अजुहोत्	अजुहुताम्	अजुहवुः	प्र०
अजुहोः	अजुहुतम्	अजुहुत	म०
अजुहवम्	अजुहुव	अजुहुम	उ०

विधिलिङ्

जुहुयात्	जुहुयाताम्	जुहुयुः	प्र०
जुहुयाः	जुहुयातम्	जुहुयात	म०
जुहुयाम्	जुहुयाव	जुहुयाम	उ०

होष्यति	होष्यतः	होष्यन्ति	लृट्
होता	होतारौ	होतारः	लुट्
हूयात्	हूयास्ताम्	हूयासुः	आ० लिङ्
अहोष्यत्	अहोष्यताम्	अहोष्यन्	लृङ्

लिट् (क)

जुहाव	जुहुवतुः	जुहुवुः	प्र०
जुहविथ, जुहोथ	जुहुवथुः	जुहुव	म०
जुहाव, जुहव	जुहुविव	जुहुविम	उ०

लिट् (ख) (जुहवां + कृ)

जुहवांचकार	—चक्रतुः	—चक्रुः	प्र०
—चकर्थ	—चक्रथुः	—चक्र	म०
—चकार, चकर	—चकृव	—चकृम	उ०

लुङ् (४)

अहौषीत्	अहौष्टाम्	अहौषुः	प्र०
अहौषीः	अहौष्टम्	अहौष्ट	म०
अहौषम्	अहौष्व	अहौष्म	उ०

(४९) भी (डरना) (दे० अ० ३३)

परस्मैपदी

लट्

प्र०	बिभेति	बिभीतः	बिभ्यति
म०	बिभेषि	बिभीथः	बिभीथ
उ०	बिभेमि	बिभीवः	बिभीमः

लोट्

प्र०	बिभेतु	बिभीताम्	बिभ्यतु
म०	बिभीहि	बिभीतम्	बिभीत
उ०	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम

लङ्

प्र०	अबिभेत्	अबिभीताम्	अबिभयुः
म०	अबिभेः	अबिभीतम्	अबिभीत
उ०	अबिभयम्	अबिभीव	अबिभीम

विधिलिङ्

प्र०	बिभीयात्	बिभीयाताम्	बिभीयुः
म०	बिभीयाः	बिभीयातम्	बिभीयात
उ०	बिभीयाम्	बिभीयाव	बिभीयाम

लृट्	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
लुट्	भेता	भेतारौ	भेतारः
आ० लिङ्	भीयात्	भीयास्ताम्	भीयासुः
लृङ्	अभेष्यत्	अभेष्यताम्	अभेष्यन्

लिट् (क)

प्र०	बिभाय	बिभ्यतुः	बिभ्युः
म०	बिभयिथ, बिभेथ	बिभ्यथुः	बिभ्य
उ०	बिभाय, बिभय	बिभ्यिव	बिभ्यिम

लिट् (ख) (बिभयां + कृ)

प्र०	बिभयांचकार	—चक्रतुः	—चक्रुः
म०	—चकर्थ	—चक्रथुः	—चक्र
उ०	—चकार, चकर	—चकृव	— चकृम

लुङ् (४)

प्र०	अभैषीत्	अभैष्टाम्	अभैषुः
म०	अभैषीः	अभैष्टम्	अभैष्ट
उ०	अभैषम्	अभैष्व	अभैष्म

(५०) हा (छोड़ना) (दे० अ० ३४) **(५१) ह्री (लज्जित होना)** (दे० अ० ३४)

परस्मैपदी **परस्मैपदी**

लट् **लट्**

जहाति	जहीत:	जहति	प्र०	जिह्रेति	जिह्रीत:	जिह्रियति
जहासि	जहीथ:	जहीथ	म०	जिह्रेषि	जिह्रीथ:	जिह्रीथ
जहामि	जहीव:	जहीम:	उ०	जिह्रेमि	जिह्रीव:	जिह्रीम:

लोट् **लोट्**

जहातु	जहीताम्	जहतु	प्र०	जिह्रेतु	जिह्रीताम्	जिह्रियतु
जहाहि,जहीहि	जहीतम्	जहीत	म०	जिह्रीहि	जिह्रीतम्	जिह्रीत
जहानि	जहाव	जहाम	उ०	जिह्रयाणि	जिह्रयाव	जिह्रयाम

लिङ् **लिङ्**

अजहात्	अजहीताम्	अजहु:	प्र०	अजिह्रेत्	अजिह्रीताम्	अजिह्रयु:
अजहा:	अजहीतम्	अजहीत	म०	अजिह्रे:	अजिह्रीतम्	अजिह्रीत
अजहाम्	अजहीव	अजहीम	उ०	अजिह्रयम्	अजिह्रीव	अजिह्रीम

विधिलिङ् **विधिलिङ्**

जह्यात्	जह्याताम्	जह्यु:	प्र०	जिह्रीयात्	जिह्रीयाताम्	जिह्रीयु:
जह्या:	जह्यातम्	जह्यात	म०	जिह्रीया:	जिह्रीयातम्	जिह्रीयात
जह्याम्	जह्याव	जह्याम	उ०	जिह्रीयाम्	जिह्रीयाव	जिह्रीयाम

हास्यति	हास्यत:	हास्यन्ति	लृट्	ह्रेष्यति	ह्रेष्यत:	ह्रेष्यन्ति
हाता	हातारौ	हातार:	लुट्	ह्रेता	ह्रेतारौ	ह्रेतार:
हेयात्	हेयास्ताम्	हेयासु:	आ०लिङ्	ह्रीयात्	ह्रीयास्ताम्	ह्रीयासु:
अहास्यत्	अहास्यताम्	अहास्यन्	लृङ्	अह्रेष्यत्	अह्रेष्यताम्	अह्रेष्यन्

लिट् **लिट्**

जहौ	जहतु:	जहु:	प्र०	जिह्राय	जिह्रियतु:	जिह्रियु:
जहिथ,जहाथ	जहथु:	जह	म०	जिह्रयिथ,जिह्रेथ	जिह्रियथु:	जिह्रिय
जहौ	जहिव	जहिम	उ०	जिह्राय, जिह्रय	जिह्रियिव	जिह्रियिम

लुङ् (६) **लुङ् (४)**

अहासीत्	अहासिष्टाम्	अहासिषु:	प्र०	अह्रैषीत्	अह्रैष्टाम्	अह्रैषु:
अहासी:	अहासिष्टम्	अहासिष्ट	म०	अह्रैषी:	अह्रैष्टम्	अह्रैष्ट
अहासिषम्	अहासिष्व	अहासिष्म	उ०	अह्रैषम्	अह्रैष्व	अह्रैष्म

सूचना—ह्री के लिट् में जिह्रयां + कृ अर्थात् जिह्रयांचकार आदि भी रूप होते हैं।

(५२) भृ (पालन करना) (दे० अ० ३५) **(५३) मा (तोलना, नापना)** (दे० अ० ३५)

उभयपदी **आत्मनेपदी**

***सूचना*–**केवल परस्मैपद के रूप दिए हैं।

लट्				**लट्**		
बिभर्ति	बिभृतः	बिभ्रति	*प्र०*	मिमीते	मिमाते	मिमते
बिभर्षि	बिभृथः	बिभृथ	*म०*	मिमीषे	मिमाथे	मिमीध्वे
बिभर्मि	बिभृवः	बिभृमः	*उ०*	मिमे	मिमीवहे	मिमीमहे

लोट्				**लोट्**		
बिभर्तु	बिभृताम्	बिभ्रतु	*प्र०*	मिमीताम्	मिमाताम्	मिमताम्
बिभृहि	बिभृतम्	बिभृत	*म०*	मिमीष्व	मिमाथाम्	मिमीध्वम्
बिभराणि	बिभराव	बिभराम	*उ०*	मिमै	मिमावहै	मिमामहै

लङ्				**लङ्**		
अबिभः	अबिभृताम्	अबिभरुः	*प्र०*	अमिमीत	अमिमाताम्	अमिमत
अबिभः	अबिभृतम्	अबिभृत	*म०*	अमिमीथाः	अमिमाथाम्	अमिमीध्वम्
अबिभरम्	अबिभृव	अबिभृम	*उ०*	अमिमि	अमिमीवहि	अमिमीमहि

विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
बिभृयात्	बिभृयाताम्	बिभृयुः	*प्र०*	मिमीत	मिमीयाताम्	मिमीरन्
बिभृयाः	बिभृयातम्	बिभृयात	*म०*	मिमीथाः	मिमीयाथाम्	मिमीध्वम्
बिभृयाम्	बिभृयाव	बिभृयाम	*उ०*	मिमीय	मिमीवहि	मिमीमहि

भारष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति	*लृट्*	मास्यते	मास्येते	मास्यन्ते
भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः	*लुट्*	माता	मातारौ	मातारः
भ्रियात्	भ्रियास्ताम्	भ्रियासुः	*आ०लिङ्*	मासीष्ट	मासीयास्ताम्	मासीरन्
अभरिष्यत्	अभरिष्यताम्	अभरिष्यन्	*लृङ्*	अमास्यत	अमास्येताम्	अमास्यन्त

लिट्				**लिट्**		
बभार	बभ्रतुः	बभ्रुः	*प्र०*	ममे	ममाते	ममिरे
बभर्थ	बभ्रथुः	बभ्र	*म०*	ममिषे	ममाथे	ममिध्वे
बभार, बभर	बभृव	बभृम	*उ०*	ममे	ममिवहे	ममिमहे

लुङ् (४)				**लुङ् (४)**		
अभार्षीत्	अभार्ष्टाम्	अभार्षुः	*प्र०*	अमास्त	अमासाताम्	अमासत
अभार्षीः	अभार्ष्टम्	अभार्ष्ट	*म०*	अमास्थाः	अमासाथाम्	अमाध्वम्
अभार्षम्	अभार्ष्व	अभार्ष्म	*उ०*	अमासि	अमास्वहि	अमास्महि

***सूचना*–**लिट् में भृ के बिभरां + कृ अर्थात् बिभरांचकार आदि भी रूप बनेंगे।

(५४) दा (देना) परस्मैपद **आत्मनेपद** (दे० अ० ३६)

लट्				लट्		
ददाति	दत्तः	ददति	प्र०	दत्ते	ददाते	ददते
ददासि	दत्थः	दत्थ	म०	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
ददामि	दद्वः	दद्मः	उ०	ददे	दद्वहे	दद्महे

लोट्				लोट्		
ददातु	दत्ताम्	ददतु	प्र०	दत्ताम्	ददाताम्	ददताम्
देहि	दत्तम्	दत्त	म०	दत्स्व	ददाथाम्	दद्ध्वम्
ददानि	ददाव	ददाम	उ०	ददै	ददावहै	ददामहै

लङ्				लङ्		
अददात्	अदत्ताम्	अददुः	प्र०	अदत्त	अददाताम्	अददत
अददाः	अदत्तम्	अदत्त	म०	अदत्थाः	अददाथाम्	अदद्ध्वम्
अददाम्	अदद्व	अदद्म	उ०	अददि	अदद्वहि	अदद्महि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः	प्र०	ददीत	ददीयाताम्	ददीरन्
दद्याः	दद्यातम्	दद्यात	म०	ददीथाः	ददीयाथाम्	ददीध्वम्
दद्याम्	दद्याव	दद्याम	उ०	ददीय	ददीवहि	ददीमहि

दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	लृट्	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
दाता	दातारौ	दातारः	लुट्	दाता	दातारौ	दातारः
देयात्	देयास्ताम्	देयासुः	आ० लिङ्	दासीष्ट	दासीयास्ताम्	दासीरन्
अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्	लृङ्	अदास्यत	अदास्येताम्	अदास्यन्त

लिट्				लिट्		
ददौ	ददतुः	ददुः	प्र०	ददे	ददाते	ददिरे
ददिथ, ददाथ	ददथुः	दद	म०	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
ददौ	ददिव	ददिम	उ०	ददे	ददिवहे	ददिमहे

लुङ् (१)				लुङ् (४)		
अदात्	अदाताम्	अदुः	प्र०	अदित	अदिषाताम्	अदिषत
अदाः	अदातम्	अदात	म०	अदिथाः	अदिषाथाम्	अदिध्वम्
अदाम्	अदाव	अदाम	उ०	अदिषि	अदिष्वहि	अदिष्महि

(५५) धा (धारण करना) परस्मैपद — आत्मनेपद (दे० अ० ३७)

लट्				लट्		
दधाति	धत्तः	दधति	प्र०	धत्ते	दधाते	दधते
दधासि	धत्थः	धत्थ	म०	धत्से	दधाते	धद्ध्वे
दधामि	दध्वः	दध्मः	उ०	दधे	दध्वहे	दध्महे
लोट्				**लोट्**		
दधातु	धत्ताम्	दधतु	प्र०	धत्ताम्	दधाताम्	दधताम्
धेहि	धत्तम्	धत्त	म०	धत्स्व	दधाथाम्	धद्ध्वम्
दधानि	दधाव	दधाम	उ०	दधै	दधावहै	दधामहै
लङ्				**लङ्**		
अदधात्	अधत्ताम्	अदधुः	प्र०	अधत्त	अदधाताम्	अदधत
अदधाः	अधत्तम्	अधत्त	म०	अधत्थाः	अदधाथाम्	अधद्ध्वम्
अदधाम्	अदध्व	अदध्म	उ०	अदधि	अदध्वहि	अदध्महि
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
दध्यात्	दध्याताम्	दध्युः	प्र०	दधीत	दधीयाताम्	दधीरन्
दध्याः	दध्यातम्	दध्यात	म०	दधीथाः	दधीयाथाम्	दधीध्वम्
दध्याम्	दध्याव	दध्याम	उ०	दधीय	दधीवहि	दधीमहि
—				—		
धास्यति	धास्यतः	धास्यन्ति	लृट्	धास्यते	धास्येते	धास्यन्ते
धाता	धातारौ	धातारः	लुट्	धाता	धातारौ	धातारः
धेयात्	धेयास्ताम्	धेयासुः	आ०लिङ्	धासीष्ट	धासीयास्ताम्	धासीरन्
अधास्यत्	अधास्यताम्	अधास्यन्	लृङ्	अधास्यत	अधास्येताम्	अधास्यन्त
लिट्				**लिट्**		
दधौ	दधतुः	दधुः	प्र०	दधे	दधाते	दधिरे
दधिथ, दधाथ	दधथुः	दध	म०	दधिषे	दधाथे	दधिध्वे
दधौ	दधिव	दधिम	उ०	दधे	दधिवहे	दधिमहे
लुङ् (१)				**लुङ् (४)**		
अधात्	अधाताम्	अधुः	प्र०	अधित	अधिषाताम्	अधिषत
अधाः	अधातम्	अधात	म०	अधिथाः	अधिषाथाम्	अधिध्वम्
अधाम्	अधाव	अधाम	उ०	अधिषि	अधिष्वहि	अधिष्महि

(४) दिवादिगण

(१) इस गण की प्रथम धातु दिव् (चमकना आदि) है, अतः गण का नाम दिवादिगण पड़ा। (दिवादिभ्यः श्यन्) दिवादिगण की धातुओं में धातु और प्रत्यय के बीच में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में श्यन् (य) विकरण लगता है और धातु को गुण नहीं होता। इस गण की धातुओं के रूप चलाने का सरल उपाय यह है कि धातु के अन्त में 'य' लगाकर परस्मैपद में भू धातु के तुल्य और आत्मनेपद में सेव् धातु के तुल्य रूप चलावें।

(२) इस गण में १४१ धातुएँ हैं।

(३) लट् आदि में धातु के अन्त में संक्षिप्तरूप निम्नलिखित लगेंगे।

लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृष्ठ १४४ पर निर्दिष्ट संक्षिप्तरूप ही लगेंगे।

लृट् आदि में सेट् धातुओं में संक्षिप्तरूप से पहले इ भी लगेगा, अनिट् में नहीं।

परस्मैपद (सं रूप)				**आत्मनेपद (सं रूप)**		
	लट्				**लट्**	
यति	यतः	यन्ति	प्र०	यते	येते	यन्ते
यसि	यथः	यथ	म०	यसे	येथे	यध्वे
यामि	यावः	यामः	उ०	ये	यावहे	यामहे
	लोट्				**लोट्**	
यतु	यताम्	यन्तु	प्र०	यताम्	येताम्	यन्ताम्
य	यतम्	यत	म०	यस्व	येथाम्	यध्वम्
यानि	याव	याम	उ०	यै	यावहै	यामहै
लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)				**लङ्** (धातु से पूर्व अ या आ)		
यत्	यताम्	यन्	प्र०	यत	येताम्	यन्त
यः	यतम्	यत	म०	यथाः	येथाम्	यध्वम्
यम्	याव	याम	उ०	ये	यावहि	यामहि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
येत्	येताम्	येयुः	प्र०	येत	येयाताम्	येरन्
येः	येतम्	येत	म०	येथाः	येयाथाम्	येध्वम्
येयम्	येव	येम	उ०	येय	येवहि	येमहि

दिवादिगण—परस्मैपदी धातुएँ

(५६) दिव् (चमकना आदि) (दे० अ० ३८) (५७) नृत् (नाचना) (दे० अ० ३८)

लट्				लट्		
दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति	प्र०	नृत्यति	नृत्यतः	नृत्यन्ति
दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ	म०	नृत्यसि	नृत्यथः	नृत्यथ
दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः	उ०	नृत्यामि	नृत्यावः	नृत्यामः

लोट्				लोट्		
दीव्यतु	दीव्यताम्	दीव्यन्तु	प्र०	नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु
दीव्य	दीव्यतम्	दीव्यत	म०	नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत
दीव्यानि	दीव्याव	दीव्याम	उ०	नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम

लङ्				लङ्		
अदीव्यत्	अदीव्यताम्	अदीव्यन्	प्र०	अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्
अदीव्यः	अदीव्यतम्	अदीव्यत	म०	अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत
अदीव्यम्	अदीव्याव	अदीव्याम	उ०	अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
दीव्येत्	दीव्येताम्	दीव्येयुः	प्र०	नृत्येत्	नृत्येताम्	नृत्येयुः
दीव्येः	दीव्येतम्	दीव्येत	म०	नृत्येः	नृत्येतम्	नृत्येत
दीव्येयम्	दीव्येव	दीव्येम	उ०	नृत्येयम्	नृत्येव	नृत्येम

—

देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति	लृट्	नर्तिष्यति,	नर्त्स्यति	(दोनों प्रकार से)
देविता	देवितारौ	देवितारः	लुट्	नर्तिता	नर्तितारौ	नर्तितारः
दीव्यात्	दीव्यास्ताम्	दीव्यासुः	आ०लिङ्	नृत्यात्	नृत्यास्ताम्	नृत्यासुः
अदेविष्यत्	अदेविष्यताम्०		लृङ्	अनर्तिष्यत्	अनर्त्स्यत्	(दोनों प्रकार से)

लिट्				लिट्		
दिदेव	दिदिवतुः	दिदिवुः	प्र०	ननर्त	ननृततुः	ननृतुः
दिदेविथ	दिदिवथुः	दिदिव	म०	ननर्तिथ	ननृतथुः	ननृत
दिदेव	दिदिविव	दिदिविम	उ०	ननर्त	ननृतिव	ननृतिम

लुङ् (५)				लुङ् (५)		
अदेवीत्	अदेविष्टाम्	अदेविषुः	प्र०	अनर्तीत्	अनर्तिष्टाम्	अनर्तिषुः
अदेवीः	अदेविष्टम्	अदेविष्ट	म०	अनर्तीः	अनर्तिष्टम्	अनर्तिष्ट
अदेविषम्	अदेविष्व	अदेविष्म	उ०	अनर्तिषम्	अनर्तिष्व	अनर्तिष्म

(५८) नश् (नष्ट होना) (दे० अ० ३९) (५९) भ्रम् (घूमना) (दे० अ० ३९)

लट्				लट्		
नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति	*प्र०*	भ्राम्यति	भ्राम्यतः	भ्राम्यन्ति
नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ	*म०*	भ्राम्यसि	भ्राम्यथः	भ्राम्यथ
नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः	*उ०*	भ्राम्यामि	भ्राम्यावः	भ्राम्यामः

लोट्				लोट्		
नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु	*प्र०*	भ्राम्यतु	भ्राम्यताम्	भ्राम्यन्तु
नश्य	नश्यतम्	नश्यत	*म०*	भ्राम्य	भ्राम्यतम्	भ्राम्यत
नश्यानि	नश्याव	नश्याम	*उ०*	भ्राम्याणि	भ्राम्याव	भ्राम्याम

लङ्				लङ्		
अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्	*प्र०*	अभ्राम्यत्	अभ्राम्यताम्	अभ्राम्यन्
अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत	*म०*	अभ्राम्यः	अभ्राम्यतम्	अभ्राम्यत
अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम	*उ०*	अभ्राम्यम्	अभ्राम्याव	अभ्राम्याम

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः	*प्र०*	भ्राम्येत्	भ्राम्येताम्	भ्राम्येयुः
नश्येः	नश्येतम्	नश्येत	*म०*	भ्राम्येः	भ्राम्येतम्	भ्राम्येत
नश्येयम्	नश्येव	नश्येम	*उ०*	भ्राम्येयम्	भ्राम्येव	भ्राम्येम

नशिष्यति, नङ्क्ष्यति (दोनों प्रकार से)			*लृट्*	भ्रमिष्यति	भ्रमिष्यतः	भ्रमिष्यन्ति
नशिता,	नंष्टा (दोनों प्रकार से)		*लुट्*	भ्रमिता	भ्रमितारौ	भ्रमितारः
नश्यात्	नश्यास्ताम्	नश्यासुः	*आ०लिङ्*	भ्रम्यात्	भ्रम्यास्ताम्	भ्रम्यासुः
अनशिष्यत्, अनङ्क्ष्यत् (दोनों प्रकार से)			*लृङ्*	अभ्रमिष्यत्	अभ्रमिष्यताम्०	

लिट्				लिट्		
ननाश	नेशतुः	नेशुः	*प्र०*	बभ्राम	बभ्रमतुः, भ्रेमतुः	बभ्रमुः, भ्रेमुः
नेशिथ, ननंष्ठ	नेशथुः	नेश	*म०*	बभ्रमिथ, भ्रेमिथ	बभ्रमथुः, भ्रेमथुः	बभ्रम, भ्रेम
ननाश, ननश	नेशिव, नेश्व	नेशिम, नेश्म	*उ०*	बभ्राम, बभ्रम	बभ्रमिव, भ्रेमिव	बभ्रमिम, भ्रेमिम

लुङ् (२)				लुङ् (२)		
अनशत्	अनशताम्	अनशन्	*प्र०*	अभ्रमत्	अभ्रमताम्	अभ्रमन्
अनशः	अनशतम्	अनशत	*म०*	अभ्रमः	अभ्रमतम्	अभ्रमत
अनशम्	अनशाव	अनशाम	*उ०*	अभ्रमम्	अभ्रमाव	अभ्रमाम

सूचना—भ्रम् भ्वादिगणी भी है, अतः भ्रमति, भ्रमतु, अभ्रमत्, भ्रमेत् वाले रूप भी बनेंगे।

(६०) श्रम् (परिश्रम करना) (दे० अ० ४०) **(६१) सिव् (सीना)** (दे० अ० ४०)

लट्				लट्		
श्राम्यति	श्राम्यतः	श्राम्यन्ति	*प्र०*	सीव्यति	सीव्यतः	सीव्यन्ति
श्राम्यसि	श्राम्यथः	श्राम्यथ	*म०*	सीव्यसि	सीव्यथः	सीव्यथ
श्राम्यामि	श्राम्यावः	श्राम्यामः	*उ०*	सीव्यामि	सीव्यावः	सीव्यामः

लोट्				लोट्		
श्राम्यतु	श्राम्यताम्	श्राम्यन्तु	*प्र०*	सीव्यतु	सीव्यताम्	सीव्यन्तु
श्राम्य	श्राम्यतम्	श्राम्यत	*म०*	सीव्य	सीव्यतम्	सीव्यत
श्राम्याणि	श्राम्याव	श्राम्याम	*उ०*	सीव्यानि	सीव्याव	सीव्याम

लङ्				लङ्		
अश्राम्यत्	अश्राम्यताम्	अश्राम्यन्	*प्र०*	असीव्यत्	असीव्यताम्	असीव्यन्
अश्राम्यः	अश्राम्यतम्	अश्राम्यत	*म०*	असीव्यः	असीव्यतम्	असीव्यत
अश्राम्यम्	अश्राम्याव	अश्राम्याम	*उ०*	असीव्यम्	असीव्याव	असीव्याम

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
श्राम्येत्	श्राम्येताम्	श्राम्येयुः	*प्र०*	सीव्येत्	सीव्येताम्	सीव्येयुः
श्राम्येः	श्राम्येतम्	श्राम्येत	*म०*	सीव्येः	सीव्येतम्	सीव्येत
श्राम्येयम्	श्राम्येव	श्राम्येम	*उ०*	सीव्येयम्	सीव्येव	सीव्येम

श्रमिष्यति	श्रमिष्यतः	श्रमिष्यन्ति	*लृट्*	सेविष्यति	सेविष्यतः	सेविष्यन्ति
श्रमिता	श्रमितारौ	श्रमितारः	*लुट्*	सेविता	सेवितारौ	सेवितारः
श्रम्यात्	श्रम्यास्ताम्	श्रम्यासुः	*आ०लिङ्*	सीव्यात्	सीव्यास्ताम्	सीव्यासुः
अश्रमिष्यत्	अश्रमिष्यताम्०		*लृङ्*	असेविष्यत्	असेविष्यताम्०	

लिट्				लिट्		
शश्राम	शश्रमतुः	शश्रमुः	*प्र०*	सिषेव	सिषिवतुः	सिषिवुः
शश्रमिथ	शश्रमथुः	शश्रम	*म०*	सिषेविथ	सिषिवथुः	सिषिव
शश्राम, शश्रम	शश्रमिव	शश्रमिम	*उ०*	सिषेव	सिषिविव	सिषिविम

लुङ् (२)				लुङ् (५)		
अश्रमत्	अश्रमताम्	अश्रमन्	*प्र०*	असेवीत्	असेविष्टाम्	असेविषुः
अश्रमः	अश्रमतम्	अश्रमत	*म०*	असेवीः	असेविष्टम्	असेविष्ट
अश्रमम्	अश्रमाव	अश्रमाम	*उ०*	असेविषम्	असेविष्व	असेविष्म

(६२) सो (नष्ट होना) (दे० अ० ४१) (६३) शो (छीलना) (दे० अ० ४१)

लट्				लट्		
स्यति	स्यतः	स्यन्ति	प्र०	श्यति	श्यतः	श्यन्ति
स्यसि	स्यथः	स्यथ	म०	श्यसि	श्यथः	श्यथ
स्यामि	स्यावः	स्यामः	उ०	श्यामि	श्यावः	श्यामः
लोट्				**लोट्**		
स्यतु	स्यताम्	स्यन्तु	प्र०	श्यतु	श्यताम्	श्यन्तु
स्य	स्यतम्	स्यत	म०	श्य	श्यतम्	श्यत
स्यानि	स्याव	स्याम	उ०	श्यानि	श्याव	श्याम
लङ्				**लङ्**		
अस्यत्	अस्यताम्	अस्यन्	प्र०	अश्यत्	अश्यताम्	अश्यन्
अस्यः	अस्यतम्	अस्यत	म०	अश्यः	अश्यतम्	अश्यत
अस्यम्	अस्याव	अस्याम	उ०	अश्यम्	अश्याव	अश्याम
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
स्येत्	स्येताम्	स्येयुः	प्र०	श्येत्	श्येताम्	श्येयुः
स्येः	स्येतम्	स्येत	म०	श्येः	श्येतम्	श्येत
स्येयम्	स्येव	स्येम	उ०	श्येयम्	श्येव	श्येम

सास्यति	सास्यतः	सास्यन्ति	लृट्	शास्यति	शास्यतः	शास्यन्ति
साता	सातारौ	सातारः	लुट्	शाता	शातारौ	शातारः
सेयात्	सेयास्ताम्	सेयासुः	आ०लिङ्	शायात्	शायास्ताम्	शायासुः
असास्यत्	असास्यताम्	असास्यन्	लृङ्	अशास्यत्	अशास्यताम्	अशास्यन्
लिट्				**लिट्**		
ससौ	ससतुः	ससुः	प्र०	शशौ	शशतुः	शशुः
ससिथ, ससाथ	ससथुः	सस	म०	शशिथ, शशाथ,	शशथुः	शश
ससौ	ससिव	ससिम	उ०	शशौ	शशिव	शशिम
लुङ् (क) (१)				**लुङ् (क) (१)**		
असात्	असाताम्	असुः	प्र०	अशात्	अशाताम्	अशुः
असाः	असातम्	असात	म०	अशाः	अशातम्	अशात
असाम्	असाव	असाम	उ०	अशाम्	अशाव	अशाम
लुङ् (ख) (६)				**लुङ् (ख) (६)**		
असासीत्	असासिष्टाम्	असासिषुः	प्र०	अशासीत्	अशासिष्टाम्	अशासिषुः
असासीः	असासिष्टम्	असासिष्ट	म०	अशासीः	अशासिष्टम्	अशासिष्ट
असासिषम्	असासिष्व	असासिष्म	उ०	अशासिषम्	अशासिष्व	अशासिष्म

(६४) कुप् (क्रुद्ध होना) (दे० अ० ४२) **(६५) पद् (जाना)** (दे० अ० ४२)

परस्मैपदी				**आत्मनेपदी**		
	लट्				**लट्**	
कुप्यति	कुप्यतः	कुप्यन्ति	*प्र०*	पद्यते	पद्येते	पद्यन्ते
कुप्यसि	कुप्यथः	कुप्यथ	*म०*	पद्यसे	पद्येथे	पद्यध्वे
कुप्यामि	कुप्यावः	कुप्यामः	*उ०*	पद्ये	पद्यावहे	पद्यामहे
	लोट्				**लोट्**	
कुप्यतु	कुप्यताम्	कुप्यन्तु	*प्र०*	पद्यताम्	पद्येताम्	पद्यन्ताम्
कुप्य	कुप्यतम्	कुप्यत	*म०*	पद्यस्व	पद्येथाम्	पद्यध्वम्
कुप्यानि	कुप्याव	कुप्याम	*उ०*	पद्यै	पद्यावहै	पद्यामहै
	लङ्				**लङ्**	
अकुप्यत्	अकुप्यताम्	अकुप्यन्	*प्र०*	अपद्यत	अपद्येताम्	अपद्यन्त
अकुप्यः	अकुप्यतम्	अकुप्यत	*म०*	अपद्यथाः	अपद्येथाम्	अपद्यध्वम्
अकुप्यम्	अकुप्याव	अकुप्याम	*उ०*	अपद्ये	अपद्यावहि	अपद्यामहि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
कुप्येत्	कुप्येताम्	कुप्येयुः	*प्र०*	पद्येत	पद्येयाताम्	पद्येरन्
कुप्येः	कुप्येतम्	कुप्येत	*म०*	पद्येथाः	पद्येयाथाम्	पद्येध्वम्
कुप्येयम्	कुप्येव	कुप्येम	*उ०*	पद्येय	पद्येवहि	पद्येमहि

कोपिष्यति	कोपिष्यतः	कोपिष्यन्ति	*लृट्*	पत्स्यते	पत्स्येते	पत्स्यन्ते
कोपिता	कोपितारौ	कोपितारः	*लुट्*	पत्ता	पत्तारौ	पत्तारः
कुप्यात्	कुप्यास्ताम्	कुप्यासुः	*आ०लिङ्*	पत्सीष्ट	पत्सीयास्ताम्	पत्सीरन्
अकोपिष्यत्	अकोपिष्यताम्०		*लृङ्*	अपत्स्यत	अपत्स्येताम्०	
	लिट्				**लिट्**	
चुकोप	चुकुपतुः	चुकुपुः	*प्र०*	पेदे	पेदाते	पेदिरे
चुकोपिथ	चुकुपथुः	चुकुप	*म०*	पेतिषे	पेदाथे	पेदिध्वे
चुकोप	चुकुपिव	चुकुपिम	*उ०*	पेदे	पेदिवहे	पेदिमहे
	लुङ् (२)				**लुङ् (४)**	
अकुपत्	अकुपताम्	अकुपन्	*प्र०*	अपादि	अपत्साताम्	अपत्सत
अकुपः	अकुपतम्	अकुपत	*म०*	अपत्थाः	अपत्साथाम्	अपद्ध्वम्
अकुपम्	अकुपाव	अकुपाम	*उ०*	अपत्सि	अपत्स्वहि	अपत्स्महि

आत्मनेपदी — धातुएँ

(६६) युध् (लड़ना) (दे० अ० ४३) **(६७) जन् (उत्पन्न होना)** (दे० अ० ४३)

सूचना—लट् आदि में जन् को जा होगा।

लट्				लट् (जन् को जा)		
युध्यते	युध्येते	युध्यन्ते	प्र०	जायते	जायेते	जायन्ते
युध्यसे	युध्येथे	युध्यध्वे	म०	जायसे	जायेथे	जायध्वे
युध्ये	युध्यावहे	युध्यामहे	उ०	जाये	जायावहे	जायामहे

लोट्				लोट् (जन् को जा)		
युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्	प्र०	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्	म०	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै	उ०	जायै	जायावहै	जायामहै

लङ्				लङ् (जन् को जा)		
अयुध्यत	अयुध्येताम्	अयुध्यन्त	प्र०	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
अयुध्यथाः	अयुध्येथाम्	अयुध्यध्वम्	म०	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
अयुध्ये	अयुध्यावहि	अयुध्यामहि	उ०	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

विधिलिङ्				विधिलिङ् (जन् को जा)		
युध्येत	युध्येयाताम्	युध्येरन्	प्र०	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
युध्येथाः	युध्येयाथाम्	युध्येध्वम्	म०	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
युध्येय	युध्येवहि	युध्येमहि	उ०	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

योत्स्यते	योत्स्येते	योत्स्यन्ते	लृट्	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
योद्धा	योद्धारौ	योद्धारः	लुट्	जनिता	जनितारौ	जनितारः
युत्सीष्ट	युत्सीयास्ताम्०		आ०लिङ्	जनिषीष्ट	जनिषीयास्ताम्०	
अयोत्स्यत	अयोत्स्येताम्०		लृङ्	अजनिष्यत	अजनिष्येताम्०	

लिट्				लिट्		
युयुधे	युयुधाते	युयुधिरे	प्र०	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
युयुधिषे	युयुधाथे	युयुधिध्वे	म०	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
युयुधे	युयुधिवहे	युयुधिमहे	उ०	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे

लुङ् (४)				लुङ् (५)		
अयुद्ध	अयुत्साताम्	अयुत्सत	प्र०	अजनि / अजनिष्ट	अजनिषाताम्	अजनिषत
अयुद्धाः	अयुत्साथाम्	अयुद्ध्वम्	म०	अजनिष्ठाः	अजनिषाथाम्	अजनिध्वम्
अयुत्सि	अयुत्स्वहि	अयुत्स्महि	उ०	अजनिषि	अजनिष्वहि	अजनिष्महि

(५) स्वादिगण

(१) इस गण की प्रथम धातु सु (रस निकालना) है, अतः गण का नाम स्वादिगण पड़ा। (स्वादिभ्यः श्नुः) स्वादिगण की धातुओं में धातु और प्रत्यय के बीच में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में श्नु (नु) विकरण लगता है और धातु को गुण नहीं होता।

(२) (क) 'नु' को परस्मैपद में लट्, लोट् (म० पु० एक० को छोड़कर) और लङ् में एकवचन में गुण होता है। (ख) (लोपश्चान्यतरस्यां म्वोः) यदि कोई व्यंजन पहले न हो तो नु के उ का लोप विकल्प से होता है, बाद में व् या म् हो तो। अतः लट् आदि में उ० पु० द्विवचन और बहुवचन में दो रूप बनेंगे।

(३) इस गण में ३४ धातुएँ हैं।

(४) लट् आदि में धातु के अन्त में संक्षिप्तरूप निम्नलिखित लगेंगे। लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृष्ठ १४४ पर निर्दिष्ट संक्षिप्तरूप ही लगेंगे। लृट् आदि में सेट् धातुओं में संक्षिप्तरूप से पहले इ भी लगेगा, अनिट् में नहीं।

परस्मैपद (सं रूप) — **आत्मनेपद (सं रूप)**

लट् — **लट्**

नोति	नुतः	न्वन्ति, नुवन्ति	प्र०	नुते	नुवाते, न्वाते	नुवते, न्वते
नोषि	नुथः	नुथ	म०	नुषे	नुवाथे, न्वाथे	नुध्वे
नोमि	नुवः, न्वः	नुमः, न्मः	उ०	न्वे, नुवे	नुवहे, न्वहे,	नुमहे, न्महे

लोट् — **लोट्**

नोतु	नुताम्	न्वन्तु, नुवन्तु	प्र०	नुताम्	नुवाताम्, न्वाताम्	नुवताम्, न्वताम्
नु, नुहि	नुतम्	नुत	म०	नुष्व	नुवाथाम्, न्वाथाम्	नुध्वम्
नवानि	नवाव	नवाम	उ०	नवै	नवावहै	नवामहै

लङ् (धातु से पूर्व अ या आ) — **लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)**

नोत्	नुताम्	न्वन्, नुवन्	प्र०	नुत	नुवाताम्, न्वाताम्	नुवत, न्वत
नोः	नुतम्	नुत	म०	नुथाः	नुवाथाम्, न्वाथाम्	नुध्वम्
नवम्	नुव, न्व	नुम, न्म	उ०	नुवि, न्वि	नुवहि, न्वहि	नुमहि, न्महि

विधिलिङ् — **विधिलिङ्**

नुयात्	नुयाताम्	नुयुः	प्र०	न्वीत	न्वीयाताम्	न्वीरन्
नुयाः	नुयातम्	नुयात	म०	न्वीथाः	न्वीयाथाम्	न्वीध्वम्
नुयाम्	नुयाव	नुयाम	उ०	न्वीय	न्वीवहि	न्वीमहि

सूचना— जहाँ दो सं० रूप दिए हैं, उनमें से एक या दोनों रूप होना धातु पर निर्भर है।

स्वादिगण–परस्मैपदी धातुएँ

(६८) आप् (पाना) (दे० अ० ४४) **(६९) शक् (सकना)** (दे०अ० ४४)

लट् **लट्**

आप्नोति	आप्नुतः	आप्नुवन्ति	प्र०	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
आप्नोषि	आप्नुथः	आप्नुथ	म०	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
आप्नोमि	आप्नुवः	आप्नुमः	उ०	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लोट् **लोट्**

आप्नोतु	आप्नुताम्	आप्नुवन्तु	प्र०	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
आप्नुहि	आप्नुतम्	आप्नुत	म०	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
आप्नवानि	आप्नवाम	आप्नवाम	उ०	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

लङ् **लङ्**

आप्नोत्	आप्नुताम्	आप्नुवन्	प्र०	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
आप्नोः	आप्नुतम्	आप्नुत	म०	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
आप्नवम्	आप्नुव	आप्नुम	उ०	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

विधिलिङ् **विधिलिङ्**

आप्नुयात्	आप्नुयाताम्	आप्नुयुः	प्र०	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
आप्नुयाः	आप्नुयातम्	आप्नुयात	म०	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
आप्नुयाम्	आप्नुयाव	आप्नुयाम	उ०	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

आप्स्यति	आप्स्यतः	आप्स्यन्ति	लृट्	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
आप्ता	आप्तारौ	आप्तारः	लुट्	शक्ता	शक्तारौ	शक्तारः
आप्यात्	आप्यास्ताम्	आप्यासुः	आ० लिङ्	शक्यात्	शक्यास्ताम्	शक्यासुः
आप्स्यत्	आप्स्यताम्	आप्स्यन्	लृङ्	अशक्ष्यत्	अशक्ष्यताम्०	

लिट् **लिट्**

आप	आपतुः	आपुः	प्र०	शशाक	शेकतुः	शेकुः
आपिथ	आपथुः	आप	म०	शेकिथ, शशक्थ	शेकथुः	शेक
आप	आपिव	आपिम	उ०	शशाक, शशक	शेकिव	शेकिम

लुङ् (२) **लुङ् (२)**

आपत्	आपताम्	आपन्	प्र०	अशकत्	अशकताम्	अशकन्
आपः	आपतम्	आपत	म०	अशकः	अशकतम्	अशकत
आपम्	आपाव	आपाम	उ०	अशकम्	अशकाव	अशकाम

(७०) चि (इकट्ठा करना) (दे० अ० ४५) **(७१) अश् (व्याप्त होना)** (दे० अ० ४५)

सूचना—उभय० है, केवल परस्मै० के रूप दिए हैं।

आत्मनेपदी

लट्				**लट्**		
चिनोति	चिनुतः	चिन्वन्ति	*प्र०*	अश्नुते	अश्नुवाते	अश्नुवते
चिनोषि	चिनुथः	चिनुथ	*म०*	अश्नुषे	अश्नुवाथे	अश्नुध्वे
चिनोमि	चिनुवः, न्वः	चिनुमः, न्मः	*उ०*	अश्नुवे	अश्नुवहे	अश्नुमहे

लोट्				**लोट्**		
चिनोतु	चिनुताम्	चिन्वन्तु	*प्र०*	अश्नुताम्	अश्नुवाताम्	अश्नुवताम्
चिनु	चिनुतम्	चिनुत	*म०*	अश्नुष्व	अश्नुवाथाम्	अश्नुध्वम्
चिनवानि	चिनवाव	चिनवाम	*उ०*	अश्नवै	अश्नवावहै	अश्नवामहै

लङ्				**लङ्**		
अचिनोत्	अचिनुताम्	अचिन्वन्	*प्र०*	आश्नुत	आश्नुवाताम्	आश्नुवत
अचिनोः	अचिनुतम्	अचिनुत	*म०*	आश्नुथाः	आश्नुवाथाम्	आश्नुध्वम्
अचिनवम्	अचिनुव	अचिनुम	*उ०*	आश्नुवि	आश्नुवहि	आश्नुमहि

विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
चिनुयात्	चिनुयाताम्	चिनुयुः	*प्र०*	अश्नुवीत	अश्नुवीयाताम्	अश्नुवीरन्
चिनुयाः	चिनुयातम्	चिनुयात	*म०*	अश्नुवीथाः	अश्नुवीयाथाम्	अश्नुवीध्वम्
चिनुयाम्	चिनुयाव	चिनुयाम	*उ०*	अश्नुवीय	अश्नुवीवहि	अश्नुवीमहि

चेष्यति	चेष्यतः	चेष्यन्ति	*लृट्*	अशिष्यते,	अक्ष्यते	(दोनों प्रकार से)
चेता	चेतारौ	चेतारः	*लुट्*	अशिता,	अष्टा	(,,)
चीयात्	चीयास्ताम्	चीयासुः	*आ०लिङ्*	अशिषीष्ट,	अक्षीष्ट	(,,)
अचेष्यत्	अचेष्यताम्	अचेष्यन्	*लृङ्*	आशिष्यत,	आक्ष्यत	(,,)

लिट् (क)				**लिट्**		
चिचाय	चिच्यतुः	चिच्युः	*प्र०*	आनशे	आनशाते	आनशिरे
चिचयिथ, चिचेथ	चिच्यथुः	चिच्य	*म०*	आनशिषे	आनशाथे	आनशिध्वे
चिचाय, चिचय	चिच्यिव	चिच्यिम	*उ०*	आनशे	आनशिवहे	आनशिमहे

(ख) चिकाय चिक्यतुः० आदि

लुङ् (४)				**लुङ् (क) (५)**		
अचैषीत्	अचैष्टाम्	अचैषुः	*प्र०*	आशिष्ट	आशिषाताम्	आशिषत
अचैषीः	अचैष्टम्	अचैष्ट	*म०*	आशिष्ठाः	आशिषाथाम्	आशिध्वम्
अचैषम्	अचैष्व	अचैष्म	*उ०*	आशिषि	आशिष्वहि	आशिष्महि

सूचना—आत्मने० में सु (७२) आ० के तुल्य। (ख) आष्ट, आक्षाताम् इत्यादि।

उभयपदी धातु

(७२) सु (रस निकालना) (दे० अ० ४६)

परस्मैपद-लट्				आत्मनेपद-लट्		
सुनोति	सुनुतः	सुन्वन्ति	*प्र०*	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
सुनोषि	सुनुथः	सुनुथ	*म०*	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
सुनोमि	सुनुवः	सुनुमः	*उ०*	सुन्वे	सुनुवहे	सुनुमहे
लोट्				**लोट्**		
सुनोतु	सुनुताम्	सुन्वन्तु	*प्र०*	सुनुताम्	सुन्वाताम्	सुन्वताम्
सुनु	सुनुतम्	सुनुत	*म०*	सुनुष्व	सुन्वाथाम्	सुनुध्वम्
सुनवानि	सुनवाव	सुनवाम	*उ०*	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै
लङ्				**लङ्**		
असुनोत्	असुनुताम्	असुन्वन्	*प्र०*	असुनुत	असुन्वाताम्	असुन्वत
असुनोः	असुनुतम्	असुनुत	*म०*	असुनुथाः	असुन्वाथाम्	असुनुध्वम्
असुनवम्	असुनुव	असुनुम	*उ०*	असुन्वि	असुनुवहि	असुनुमहि
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
सुनुयात्	सुनुयाताम्	सुनुयुः	*प्र०*	सुन्वीत	सुन्वीयाताम्	सुन्वीरन्
सुनुयाः	सुनुयातम्	सुनुयात	*म०*	सुन्वीथाः	सुन्वीयाथाम्	सुन्वीध्वम्
सुनुयाम्	सुनुयाव	सुनुयाम	*उ०*	सुन्वीय	सुन्वीवहि	सुन्वीमहि

सोष्यति	सोष्यतः	सोष्यन्ति	*लृट्*	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
सोता	सोतारौ	सोतारः	*लुट्*	सोता	सोतारौ	सोतारः
सूयात्	सूयास्ताम्	सूयासुः	*आ० लिङ्*	सोषीष्ट	सोषीयास्ताम्०	
असोष्यत्	असोष्यताम्०		*लृङ्*	असोष्यत	असोष्येताम्०	

लिट्				**लिट्**		
सुषाव	सुषुवतुः	सुषुवुः	*प्र०*	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
सुषुविथ, सुषोथ	सुषुवथुः	सुषुव	*म०*	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविध्वे
सुषाव, सुषव	सुषुविव	सुषुविम	*उ०*	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे
लुङ् (५)				**लुङ् (४)**		
असावीत्	असाविष्टाम्	असाविषुः	*प्र०*	असोष्ट	असोषाताम्	असोषत
असावीः	असाविष्टम्	असाविष्ट	*म०*	असोष्ठाः	असोषाथाम्	असोढ्वम्
असाविषम्	असाविष्व	असाविष्म	*उ०*	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि

(६) तुदादिगण

(१) इस गण की प्रथम धातु तुद् (दुःख देना) है, अतः गण का नाम तुदादिगण पड़ा। (तुदादिभ्यः शः) तुदादिगण की धातुओं में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में श (अ) विकरण लगता है। भ्वादिगण में भी 'अ' विकरण लगता है। अन्तर यह है कि भ्वादिगण में लट् आदि में धातु को गुण होता है, परन्तु तुदादि० में धातु को गुण नहीं होगा।

(२) **(क)** लट् आदि में धातु के अन्तिम इ और ई को इय् होगा, उ और ऊ को उव्, ऋ को रिय् और ॠ को ईर् होगा। जैसा—रि > रियति, सू > सुवति, मृ > म्रियते, गॄ > गिरति।

(ख) (शे मुचादीनाम्) मुच् आदि धातुओं में बीच में न् लग जाता है। मुच् > मुञ्चति, विद् > विन्दति, लिप् > लिम्पति, सिच् > सिञ्चति, कृत् > कृन्तति।

(३) इस गण में १५७ धातुएँ हैं।

(४) लट् आदि में संक्षिप्तरूप निम्नलिखित लगेंगे। परस्मैपद में भू के तुल्य और आत्मनेपद में सेव् के तुल्य रूप चलावें। लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृष्ठ १४४ पर निर्दिष्ट सं० रूप ही लगेंगे। सेट् में लृट् आदि में सं० रूप से पहले इ भी लगेगा।

परस्मैपद (सं० रूप)				**आत्मनेपद** (सं० रूप)		
	लट्				**लट्**	
अति	अतः	अन्ति	प्र०	अते	एते	अन्ते
असि	अथः	अथ	म०	असे	एथे	अध्वे
आमि	आवः	आमः	उ०	ए	आवहे	आमहे
	लोट्				**लोट्**	
अतु	अताम्	अन्तु	प्र०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
अ	अतम्	अत	म०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
आनि	आव	आम	उ०	ऐ	आवहै	आमहै
लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)				**लङ्** (धातु से पूर्व अ या आ)		
अत्	अताम्	अन्	प्र०	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	म०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	उ०	ए	आवहि	आमहि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
एत्	एताम्	एयुः	प्र०	एत	एयाताम्	एरन्
एः	एतम्	एत	म०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
एयम्	एव	एम	उ०	एय	एवहि	एमहि

परस्मैपदी धातुएँ

(७३) इष् (चाहना) (दे० अ० ४७) **(७४) प्रच्छ् (पूछना)** (दे० अ० ४७)

सूचना—लट् आदि में इष् को इच्छ् होगा। *सूचना*—लट् आदि में प्रच्छ् को पृच्छ्।

लट्				लट्		
इच्छति	इच्छतः	इच्छन्ति	*प्र०*	पृच्छति	पृच्छतः	पृच्छन्ति
इच्छसि	इच्छथः	इच्छथ	*म०*	पृच्छसि	पृच्छथः	पृच्छथ
इच्छामि	इच्छावः	इच्छामः	*उ०*	पृच्छामि	पृच्छावः	पृच्छामः
लोट्				**लोट्**		
इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु	*प्र०*	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
इच्छ	इच्छतम्	इच्छत	*म०*	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम	*उ०*	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम
लङ्				**लङ्**		
ऐच्छत्	ऐच्छताम्	ऐच्छन्	*प्र०*	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
ऐच्छः	ऐच्छतम्	ऐच्छत	*म०*	अपृच्छः	अपृच्छतम्	अपृच्छत
ऐच्छम्	ऐच्छाव	ऐच्छाम	*उ०*	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
इच्छेत्	इच्छेताम्	इच्छेयुः	*प्र०*	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयुः
इच्छेः	इच्छेतम्	इच्छेत	*म०*	पृच्छेः	पृच्छेतम्	पृच्छेत
इच्छेयम्	इच्छेव	इच्छेम	*उ०*	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

एषिष्यति	एषिष्यतः	एषिष्यन्ति	*लृट्*	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यतः	प्रक्ष्यन्ति
एषिता, एष्टा (दोनों प्रकार से)			*लुट्*	प्रष्टा	प्रष्टारौ	प्रष्टारः
इष्यात्	इष्यास्ताम्	इष्यासुः	*आ०लिङ्*	पृच्छ्यात्	पृच्छ्यास्ताम्०	
ऐषिष्यत्	ऐषिष्यताम्	ऐषिष्यन्	*लृङ्*	अप्रक्ष्यत्	अप्रक्ष्यताम्०	
लिट्				**लिट्**		
इयेष	ईषतुः	ईषुः	*प्र०*	पप्रच्छ	पप्रच्छतुः	पप्रच्छुः
इयेषिथ	ईषथुः	ईष	*म०*	पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ	पप्रच्छथुः	पप्रच्छ
इयेष	ईषिव	ईषिम	*उ०*	पप्रच्छ	पप्रच्छिव	पप्रच्छिम
लुङ् (५)				**लुङ् (४)**		
ऐषीत्	ऐषिष्टाम्	ऐषिषुः	*प्र०*	अप्राक्षीत्	अप्राष्टाम्	अप्राक्षुः
ऐषीः	ऐषिष्टम्	ऐषिष्ट	*म०*	अप्राक्षीः	अप्राष्टम्	अप्राष्ट
ऐषिषम्	ऐषिष्व	ऐषिष्म	*उ०*	अप्राक्षम्	अप्राक्ष्व	अप्राक्ष्म

(७५) लिख् (लिखना) (दे० अ० ४८)

लट्

लिखति	लिखतः	लिखन्ति	प्र०
लिखसि	लिखथः	लिखथ	म०
लिखामि	लिखावः	लिखामः	उ०

लोट्

लिखतु	लिखताम्	लिखन्तु	प्र०
लिख	लिखतम्	लिखत	म०
लिखानि	लिखाव	लिखाम	उ०

लङ्

अलिखत्	अलिखताम्	अलिखन्	प्र०
अलिखः	अलिखतम्	अलिखत	म०
अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम	उ०

विधिलिङ्

लिखेत्	लिखेताम्	लिखेयुः	प्र०
लिखेः	लिखेतम्	लिखेत	म०
लिखेयम्	लिखेव	लिखेम	उ०

—

लेखिष्यति	लेखिष्यतः	लेखिष्यन्ति	लृट्
लेखिता	लेखितारौ	लेखितारः	लुट्
लिख्यात्	लिख्यास्ताम्	लिख्यासुः	आ० लिङ्
अलेखिष्यत्	अलेखिष्यताम्०		लृङ्

लिट्

लिलेख	लिलिखतुः	लिलिखुः	प्र०
लिलेखिथ	लिलिखथुः	लिलिख	म०
लिलेख	लिलिखिव	लिलिखिम	उ०

लुङ् (५)

अलेखीत्	अलेखिष्टाम्	अलेखिषुः	प्र०
अलेखीः	अलेखिष्टम्	अलेखिष्ट	म०
अलेखिषम्	अलेखिष्व	अलेखिष्म	उ०

—

(७६) स्पृश् (छूना) (दे० अ० ४८)

लट्

स्पृशति	स्पृशतः	स्पृशन्ति
स्पृशसि	स्पृशथः	स्पृशथ
स्पृशामि	स्पृशावः	स्पृशामः

लोट्

स्पृशतु	स्पृशताम्	स्पृशन्तु
स्पृश	स्पृशतम्	स्पृशत
स्पृशानि	स्पृशाव	स्पृशाम

लङ्

अस्पृशत्	अस्पृशताम्	अस्पृशन्
अस्पृशः	अस्पृशतम्	अस्पृशत
अस्पृशम्	अस्पृशाव	अस्पृशाम

विधिलिङ्

स्पृशेत्	स्पृशेताम्	स्पृशेयुः
स्पृशेः	स्पृशेतम्	स्पृशेत
स्पृशेयम्	स्पृशेव	स्पृशेम

—

लृट्	स्पर्क्ष्यति,	स्प्रक्ष्यति (दोनों प्रकार से)
लुट्	स्पर्ष्टा,	स्प्रष्टा ,,
आ० लिङ्	स्पृश्यात्	स्पृश्यास्ताम्०
लृङ्	अस्पर्क्ष्यत्,	अस्प्रक्ष्यत् (दोनों प्रकार से)

लिट्

पस्पर्श	पस्पृशतुः	पस्पृशुः
पस्पर्शिथ	पस्पृशथुः	पस्पृश
पस्पर्श	पस्पृशिव	पस्पृशिम

लुङ् (क) (४)

अस्पार्क्षीत्	अस्पार्ष्टाम्	अस्पार्क्षुः
अस्पार्क्षीः	अस्पार्ष्टम्	अस्पार्ष्ट
अस्पार्क्षम्	अस्पार्क्ष्व	अस्पार्क्ष्म

लुङ् (ख) (४) अस्प्राक्षीत् अस्प्राष्टाम्० (पूर्ववत्)

लुङ् (ग) (७)

अस्पृक्षत्	अस्पृक्षताम्	अस्पृक्षन्
अस्पृक्षः	अस्पृक्षतम्	अस्पृक्षत
अस्पृक्षम्	अस्पृक्षाव	अस्पृक्षाम

(७७) कॄ (फैलाना) (दे० अ० ४९) **(७८) गॄ (निगलना)** (दे० अ० ४९)

	लट्				**लट्**	
किरति	किरतः	किरन्ति	*प्र०*	गिरति	गिरतः	गिरन्ति
किरसि	किरथः	किरथ	*म०*	गिरसि	गिरथः	गिरथ
किरामि	किरावः	किरामः	*उ०*	गिरामि	गिरावः	गिरामः
	लोट्				**लोट्**	
किरतु	किरताम्	किरन्तु	*प्र०*	गिरतु	गिरताम्	गिरन्तु
किर	किरतम्	किरत	*म०*	गिर	गिरतम्	गिरत
किराणि	किराव	किराम	*उ०*	गिराणि	गिराव	गिराम
	लङ्				**लङ्**	
अकिरत्	अकिरताम्	अकिरन्	*प्र०*	अगिरत्	अगिरताम्	अगिरन्
अकिरः	अकिरतम्	अकिरत	*म०*	अगिरः	अगिरतम्	अगिरत
अकिरम्	अकिराव	अकिराम	*उ०*	अगिरम्	अगिराव	अगिराम
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
किरेत्	किरेताम्	किरेयुः	*प्र०*	गिरेत्	गिरेताम्	गिरेयुः
किरेः	किरेतम्	किरेत	*म०*	गिरेः	गिरेतम्	गिरेत
किरेयम्	किरेव	किरेम	*उ०*	गिरेयम्	गिरेव	गिरेम

—

करिष्यति, करीष्यति (दोनों प्रकार से)			*लृट्*	गरिष्यति, गरीष्यति (दोनों प्रकार से)		
करिता, करीता (,,)			*लुट्*	गरिता, गरीता (,,)		
कीर्यात्	कीर्यास्ताम्	कीर्यासुः	*आ० लिङ्*	गीर्यात्	गीर्यास्ताम्	गीर्यासुः
अकरिष्यत्, अकरीष्यत् (दोनों प्रकार से)			*लृङ्*	अगरिष्यत्, अगरीष्यत् (दोनों प्रकार से)		
	लिट्				**लिट्**	
चकार	चकरतुः	चकरुः	*प्र०*	जगार	जगरतुः	जगरुः
चकरिथ	चकरथुः	चकर	*म०*	जगरिथ	जगरथुः	जगर
चकार, चकर	चकरिव	चकरिम	*उ०*	जगार, जगर	जगरिव	जगरिम
	लुङ् (५)				**लुङ् (५)**	
अकारीत्	अकारिष्टाम्	अकारिषुः	*प्र०*	अगारीत्	अगारिष्टाम्	अगारिषुः
अकारीः	अकारिष्टम्	अकारिष्ट	*म०*	अगारीः	अगारिष्टम्	अगारिष्ट
अकारिषम्	अकारिष्व	अकारिष्म	*उ०*	अगारिषम्	अगारिष्व	अगारिष्म

सूचना—(अचि विभाषा) गॄ धातु के र् को ल् होता है, स्वर बाद में हो तो। अतः आशीर्लिङ् को छोड़कर सर्वत्र र के स्थान पर ल वाले भी रूप बनेंगे। जैसे—गिलति, गिलतु, अगिलत्, गिलेत्, गलिष्यति, गलिता, अगलिष्यत्, जगाल, अगालीत्।

(७९) क्षिप् (फेंकना) (दे० अ० ५०)

सूचना—धातु उभयपदी है। यहाँ परस्मैपद के ही रूप दिये हैं। आत्मनेपद में तुद् (८१) के तुल्य।

लट्

क्षिपति	क्षिपतः	क्षिपन्ति	प्र०
क्षिपसि	क्षिपथः	क्षिपथ	म०
क्षिपामि	क्षिपावः	क्षिपामः	उ०

लोट्

क्षिपतु	क्षिपताम्	क्षिपन्तु	प्र०
क्षिप	क्षिपतम्	क्षिपत	म०
क्षिपाणि	क्षिपाव	क्षिपाम	उ०

लङ्

अक्षिपत्	अक्षिपताम्	अक्षिपन्	प्र०
अक्षिपः	अक्षिपतम्	अक्षिपत	म०
अक्षिपम्	अक्षिपाव	अक्षिपाम	उ०

विधिलिङ्

क्षिपेत्	क्षिपेताम्	क्षिपेयुः	प्र०
क्षिपेः	क्षिपेतम्	क्षिपेत	म०
क्षिपेयम्	क्षिपेव	क्षिपेम	उ०

—

क्षेप्स्यति	क्षेप्स्यतः	क्षेप्स्यन्ति	लृट्
क्षेप्ता	क्षेप्तारौ	क्षेप्तारः	लुट्
क्षिप्यात्	क्षिप्यास्ताम्	क्षिप्यासुः	आ० लिङ्
अक्षेप्स्यत्	अक्षेप्स्यताम्	अक्षेप्स्यन्	लृङ्

लिट्

चिक्षेप	चिक्षिपतुः	चिक्षिपुः	प्र०
चिक्षेपिथ	चिक्षिपथुः	चिक्षिप	म०
चिक्षेप	चिक्षिपिव	चिक्षिपिम	उ०

लुङ् (४)

अक्षैप्सीत्	अक्षैप्ताम्	अक्षैप्सुः	प्र०
अक्षैप्सीः	अक्षैप्तम्	अक्षैप्त	म०
अक्षैप्सम्	अक्षैप्स्व	अक्षैप्स्म	उ०

(८०) मृ (मरना) (दे० अ० ५०)

सूचना—यह लृट्, लुट्, लृङ् और लिट् में परस्मै० है, अन्यत्र आत्मनेपदी।

लट्

प्र०	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
म०	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
उ०	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे

लोट्

प्र०	म्रियताम्	म्रियेताम्	म्रियन्ताम्
म०	म्रियस्व	म्रियेथाम्	म्रियध्वम्
उ०	म्रियै	म्रियावहै	म्रियामहै

लङ्

प्र०	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त
म०	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम्
उ०	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि

विधिलिङ्

प्र०	म्रियेत	म्रियेयाताम्	म्रियेरन्
म०	म्रियेथाः	म्रियेयाथाम्	म्रियेध्वम्
उ०	म्रियेय	म्रियेवहि	म्रियेमहि

—

लृट्	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
लुट्	मर्ता	मर्तारौ	मर्तारः
आ० लिङ्	मृषीष्ट	मृषीयास्ताम्	०
लृङ्	अमरिष्यत्	अमरिष्यताम्	०

लिट्

प्र०	ममार	मम्रतुः	मम्रुः
म०	ममर्थ	मम्रथुः	मम्र
उ०	ममार, ममर	मम्रिव	मम्रिम

लुङ् (४)

प्र०	अमृत	अमृषाताम्	अमृषत
म०	अमृथाः	अमृषाथाम्	अमृढ्वम्
उ०	अमृषि	अमृष्वहि	अमृष्महि

तुदादिगण, उभयपदी धातुएँ

(८१) तुद् (दुःख देना) (दे०अ० ५१)

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्		
तुदति	तुदतः	तुदन्ति	*प्र०*	तुदते	तुदेते	तुदन्ते
तुदसि	तुदथः	तुदथ	*म०*	तुदसे	तुदेथे	तुदध्वे
तुदामि	तुदावः	तुदामः	*उ०*	तुदे	तुदावहे	तुदामहे
	लोट्				**लोट्**	
तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु	*प्र०*	तुदताम्	तुदेताम्	तुदन्ताम्
तुद	तुदतम्	तुदत	*म०*	तुदस्व	तुदेथाम्	तुदध्वम्
तुदानि	तुदाव	तुदाम	*उ०*	तुदै	तुदावहै	तुदामहै
	लङ्				**लङ्**	
अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्	*प्र०*	अतुदत	अतुदेताम्	अतुदन्त
अतुदः	अतुदतम्	अतुदत	*म०*	अतुदथाः	अतुदेथाम्	अतुदध्वम्
अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम	*उ०*	अतुदे	अतुदावहि	अतुदामहि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः	*प्र०*	तुदेत	तुदेयाताम्	तुदेरन्
तुदेः	तुदेतम्	तुदेत	*म०*	तुदेथाः	तुदेयाथाम्	तुदेध्वम्
तुदेयम्	तुदेव	तुदेम	*उ०*	तुदेय	तुदेवहि	तुदेमहि
	—				—	
तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति	*लृट्*	तोत्स्यते	तोत्स्येते	तोत्स्यन्ते
तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः	*लुट्*	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः
तुद्यात्	तुद्यास्ताम्	तुद्यासुः	*आ० लिङ्*	तुत्सीष्ट	तुत्सीयास्ताम्	०
अतोत्स्यत्	अतोत्स्यताम्	०	*लृङ्*	अतोत्स्यत	अतोत्स्येताम्	०
	लिट्				**लिट्**	
तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः	*प्र०*	तुतुदे	तुतुदाते	तुतुदिरे
तुतोदिथ	तुतुदथुः	तुतुद	*म०*	तुतुदिषे	तुतुदाथे	तुतुदिध्वे
तुतोद	तुतुदिव	तुतुदिम	*उ०*	तुतुदे	तुतुदिवहे	तुतुदिमहे
	लुङ् (४)				**लुङ् (४)**	
अतौत्सीत्	अतौत्ताम्	अतौत्सुः	*प्र०*	अतुत्त	अतुत्साताम्	अतुत्सत
अतौत्सीः	अतौत्तम्	अतौत्त	*म०*	अतुत्थाः	अतुत्साथाम्	अतुद्ध्वम्
अतौत्सम्	अतौत्स्व	अतौत्स्म	*उ०*	अतुत्सि	अतुत्स्वहि	अतुत्स्महि

(८२) मुच् (छोड़ना) (दे० अ० ५१)

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्		
मुञ्चति	मुञ्चतः	मुञ्चन्ति	प्र०	मुञ्चते	मुञ्चेते	मुञ्चन्ते
मुञ्चसि	मुञ्चथः	मुञ्चथ	म०	मुञ्चसे	मुञ्चेथे	मुञ्चध्वे
मुञ्चामि	मुञ्चावः	मुञ्चामः	उ०	मुञ्चे	मुञ्चावहे	मुञ्चामहे
लोट्				**लोट्**		
मुञ्चतु	मुञ्चताम्	मुञ्चन्तु	प्र०	मुञ्चताम्	मुञ्चेताम्	मुञ्चन्ताम्
मुञ्च	मुञ्चतम्	मुञ्चत	म०	मुञ्चस्व	मुञ्चेथाम्	मुञ्चध्वम्
मुञ्चानि	मुञ्चाव	मुञ्चाम	उ०	मुञ्चै	मुञ्चावहै	मुञ्चामहै
लङ्				**लङ्**		
अमुञ्चत्	अमुञ्चताम्	अमुञ्चन्	प्र०	अमुञ्चत	अमुञ्चेताम्	अमुञ्चन्त
अमुञ्चः	अमुञ्चतम्	अमुञ्चत	म०	अमुञ्चथाः	अमुञ्चेथाम्	अमुञ्चध्वम्
अमुञ्चम्	अमुञ्चाव	अमुञ्चाम	उ०	अमुञ्चे	अमुञ्चावहि	अमुञ्चामहि
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
मुञ्चेत्	मुञ्चेताम्	मुञ्चेयुः	प्र०	मुञ्चेत	मुञ्चेयाताम्	मुञ्चेरन्
मुञ्चेः	मुञ्चेतम्	मुञ्चेत	म०	मुञ्चेथाः	मुञ्चेयाथाम्	मुञ्चेध्वम्
मुञ्चेयम्	मुञ्चेव	मुञ्चेम	उ०	मुञ्चेय	मुञ्चेवहि	मुञ्चेमहि
—				—		
मोक्ष्यति	मोक्ष्यतः	मोक्ष्यन्ति	लृट्	मोक्ष्यते	मोक्ष्येते	मोक्ष्यन्ते
मोक्ता	मोक्तारौ	मोक्तारः	लुट्	मोक्ता	मोक्तारौ	मोक्तारः
मुच्यात्	मुच्यास्ताम्	मुच्यासुः	आ० लिङ्	मुक्षीष्ट	मुक्षीयास्ताम्०	
अमोक्ष्यत्	अमोक्ष्यताम्	अमोक्ष्यन्	लृङ्	अमोक्ष्यत	अमोक्ष्येताम्०	
लिट्				**लिट्**		
मुमोच	मुमुचतुः	मुमुचुः	प्र०	मुमुचे	मुमुचाते	मुमुचिरे
मुमोचिथ	मुमुचथुः	मुमुच	म०	मुमुचिषे	मुमुचाथे	मुमुचिध्वे
मुमोच	मुमुचिव	मुमुचिम	उ०	मुमुचे	मुमुचिवहे	मुमुचिमहे
लुङ् (२)				**लुङ् (४)**		
अमुचत्	अमुचताम्	अमुचन्	प्र०	अमुक्त	अमुक्षाताम्	अमुक्षत
अमुचः	अमुचतम्	अमुचत	म०	अमुक्थाः	अमुक्षाताम्	अमुग्ध्वम्
अमुचम्	अमुचाव	अमुचाम	उ०	अमुक्षि	अमुक्ष्वहि	अमुक्ष्महि

(७) रुधादिगण

(१) इस गण की प्रथम धातु रुध् (रोकना) है, अतः गण का नाम रुधादिगण पड़ा। (रुधादिभ्यः श्नम्) रुधादिगण की धातुओं में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में धातु के प्रथम स्वर के बाद श्नम् (न) विकरण लगता है। वह कभी न् हो जाता है। लट् आदि में धातु को गुण नहीं होता।

(२) (क) सन्धि-नियमों के अनुसार यथास्थान धातु के ध् को द् या त्, द् को त्, ज् को क् या ग् होते हैं। (ख) विकरण के न को परस्मैपद के लट्, लोट् (म० १ को छोड़कर) और लङ् के एकवचन में प्रायः न रहेगा, अन्यत्र न् होगा। (ग) विकरण के न् को सन्धि-नियमानुसार ङ् और ञ् भी होता है। 'न' का विशेष विवरण सं० रूप से समझें।

(३) इस गण में २५ धातुएँ हैं।

(४) लट् आदि में संक्षिप्तरूप निम्नलिखित लगेंगे। न या न् धातु के प्रथम स्वर के बाद लगावें। लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृष्ठ १४४ पर निर्दिष्ट संक्षिप्तरूप ही लगेंगे। सेट् में लृट् आदि में सं० रूप से पहले इ भी लगेगा, अनिट् के नहीं।

परस्मैपद (सं० रूप)				**आत्मनेपद** (सं० रूप)		
	लट्				**लट्**	
(न) ति	(न्) तः	(न्) अन्ति	*प्र०*	(न्) ते	(न्) आते	(न्) अते
(न) सि	(न्) थः	(न्) थ	*म०*	(न्) से	(न्) आथे	(न्) ध्वे
(न) मि	(न्) वः	(न्) मः	*उ०*	(न्) ए	(न्) वहे	(न्) महे
	लोट्				**लोट्**	
(न) तु	(न्) ताम्	(न्) अन्तु	*प्र०*	(न्) ताम्	(न्) आताम्	(न्) अताम्
(न्) हि	(न्) तम्	(न्) त	*म०*	(न्) स्व	(न्) आथाम्	(न्) ध्वम्
(न) आनि	(न) आव	(न) आम	*उ०*	(न) ऐ	(न) आवहै	(न) आमहै
	लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)				**लङ्** (धातु से पूर्व अ या आ)	
(न) त्	(न्) ताम्	(न्) अन्	*प्र०*	(न्) त	(न्) आताम्	(न्) अत
(न) :	(न्) तम्	(न्) त	*म०*	(न्) थाः	(न्) आथाम्	(न्) ध्वम्
(न) अम्	(न्) व	(न्) म	*उ०*	(न्) इ	(न्) वहि	(न्) महि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
(न्) यात्	(न्) याताम्	(न्) युः	*प्र०*	(न्) ईत	(न्) ईयाताम्	(न्) ईरन्
(न्) याः	(न्) यातम्	(न्) यात	*म०*	(न्) ईथाः	(न्) ईयाथाम्	(न्) ईध्वम्
(न्) याम्	(न्) याव	(न्) याम	*उ०*	(न्) ईय	(न्) ईवहि	(न्) ईमहि

(८३) छिद् (काटना) (दे० अ० ५२)

सूचना—केवल परस्मै० के रूप दिए हैं।

लट्

छिनत्ति	छिन्तः	छिन्दन्ति	प्र०
छिनत्सि	छिन्त्थः	छिन्त्थ	म०
छिनद्मि	छिन्द्वः	छिन्द्मः	उ०

लोट्

छिनत्तु	छिन्ताम्	छिन्दन्तु	प्र०
छिन्धि	छिन्तम्	छिन्त	म०
छिनदानि	छिनदाव	छिनदाम	उ०

लङ्

अच्छिनत्	अच्छिन्ताम्	अच्छिन्दन्	प्र०
अच्छिनः	अच्छिन्तम्	अच्छिन्त	म०
अच्छिनदम्	अच्छिन्द्व	अच्छिन्द्म	उ०

विधिलिङ्

छिन्द्यात्	छिन्द्याताम्	छिन्द्युः	प्र०
छिन्द्याः	छिन्द्यातम्	छिन्द्यात	म०
छिन्द्याम्	छिन्द्याव	छिन्द्याम	उ०

—

छेत्स्यति	छेत्स्यतः	छेत्स्यन्ति	लृट्
छेत्ता	छेत्तारौ	छेत्तारः	लुट्
छिद्यात्	छिद्यास्ताम्	छिद्यासुः	आ० लिङ्
अच्छेत्स्यत्	अच्छेत्स्यताम्	०	लृङ्

लिट्

चिच्छेद	चिच्छिदतुः	चिच्छिदुः	प्र०
चिच्छेदिथ	चिच्छिदथुः	चिच्छिद	म०
चिच्छेद	चिच्छिदिव	चिच्छिदिम	उ०

लुङ् (क) (४)

अच्छैत्सीत्	अच्छैत्ताम्	अच्छैत्सुः	प्र०
अच्छैत्सीः	अच्छैत्तम्	अच्छैत्त	म०
अच्छैत्सम्	अच्छैत्स्व	अच्छैत्स्म	उ०

(ख) (२) अच्छिदत् अच्छिदताम् आदि।

(८४) भिद् (तोड़ना) (दे०अ० ५२)

सूचना—केवल परस्मै० के रूप दिए हैं।

लट्

प्र०	भिनत्ति	भिन्तः	भिन्दन्ति
म०	भिनत्सि	भिन्त्थः	भिन्त्थ
उ०	भिनद्मि	भिन्द्वः	भिन्द्मः

लोट्

प्र०	भिनत्तु	भिन्ताम्	भिन्दन्तु
म०	भिन्धि	भिन्तम्	भिन्त
उ०	भिनदानि	भिनदाव	भिनदाम

लङ्

प्र०	अभिनत्	अभिन्ताम्	अभिन्दन्
म०	अभिनः	अभिन्तम्	अभिन्त
उ०	अभिनदम्	अभिन्द्व	अभिन्द्म

विधिलिङ्

प्र०	भिन्द्यात्	भिन्द्याताम्	भिन्द्युः
म०	भिन्द्याः	भिन्द्यातम्	भिन्द्यात
उ०	भिन्द्याम्	भिन्द्याव	भिन्द्याम

—

लृट्	भेत्स्यति	भेत्स्यतः	भेत्स्यन्ति
लुट्	भेत्ता	भेत्तारौ	भेत्तारः
आ० लिङ्	भिद्यात्	भिद्यास्ताम्	भिद्यासुः
लृङ्	अभेत्स्यत्	अभेत्स्यताम्	०

लिट्

प्र०	बिभेद	बिभिदतुः	बिभिदुः
म०	बिभेदिथ	बिभिदथुः	बिभिद
उ०	बिभेद	बिभिदिव	बिभिदिम

लुङ् (क) (४)

प्र०	अभैत्सीत्	अभैत्ताम्	अभैत्सुः
म०	अभैत्सीः	अभैत्तम्	अभैत्त
उ०	अभैत्सम्	अभैत्स्व	अभैत्स्म

(ख) (२) अभिदत् अभिदताम् आदि।

(७७) हिंस् (हिंसा करना) (दे० अ० ५३) **(८६) भञ्ज् (तोड़ना)** (दे० अ० ५३)

परस्मैपदी				परस्मैपदी		
	लट्				**लट्**	
हिनस्ति	हिंस्तः	हिंसन्ति	*प्र०*	भनक्ति	भङ्क्तः	भञ्जन्ति
हिनस्सि	हिंस्थः	हिंस्थ	*म०*	भनक्षि	भङ्क्थः	भङ्क्थ
हिनस्मि	हिंस्वः	हिंस्मः	*उ०*	भनज्मि	भञ्ज्वः	भञ्ज्मः
	लोट्				**लोट्**	
हिनस्तु	हिंस्ताम्	हिंसन्तु	*प्र०*	भनक्तु	भङ्क्ताम्	भञ्जन्तु
हिन्धि	हिंस्तम्	हिंस्त	*म०*	भङ्ग्धि	भङ्क्तम्	भङ्क्त
हिनसानि	हिनसाव	हिनसाम	*उ०*	भनजानि	भनजाव	भनजाम
	लङ्				**लङ्**	
अहिनत्	अहिंस्ताम्	अहिंसन्	*प्र०*	अभनक्	अभङ्क्ताम्	अभञ्जन्
अहिनः	अहिंस्तम्	अहिंस्त	*म०*	अभनक्	अभङ्क्तम्	अभङ्क्त
अहिनसम्	अहिंस्व	अहिंस्म	*उ०*	अभनजम्	अभञ्ज्व	अभञ्ज्म
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
हिंस्यात्	हिंस्याताम्	हिंस्युः	*प्र०*	भञ्ज्यात्	भञ्ज्याताम्	भञ्ज्युः
हिंस्याः	हिंस्यातम्	हिंस्यात	*म०*	भञ्ज्याः	भञ्ज्यातम्	भञ्ज्यात
हिंस्याम्	हिंस्याव	हिंस्याम	*उ०*	भञ्ज्याम्	भञ्ज्याव	भञ्ज्याम
	—				—	
हिंसिष्यति	हिंसिष्यतः	हिंसिष्यन्ति	*लृट्*	भङ्क्ष्यति	भङ्क्ष्यतः	भङ्क्ष्यन्ति
हिंसिता	हिंसितारौ	हिंसितारः	*लुट्*	भङ्क्ता	भङ्क्तारौ	भङ्क्तारः
हिंस्यात्	हिंस्यास्ताम्	हिंस्यासुः	*आ० लिङ्*	भज्यात्	भज्यास्ताम्	भज्यासुः
अहिंसिष्यत्	अहिंसिष्यताम्	०	*लृङ्*	अभङ्क्ष्यत्	अभङ्क्ष्यताम्	०
	लिट्				**लिट्**	
जिहिंस	जिहिंसतुः	जिहिंसुः	*प्र०*	बभञ्ज	बभञ्जतुः	बभञ्जुः
जिहिंसिथ	जिहिंसथुः	जिहिंस	*म०*	बभञ्जिथ, बभङ्क्थ	बभञ्जथुः	बभञ्ज
जिहिंस	जिहिंसिव	जिहिंसिम	*उ०*	बभञ्ज	बभञ्जिव	बभञ्जिम
	लुङ् (५)				**लुङ् (४)**	
अहिंसीत्	अहिंसिष्टाम्	अहिंसिषुः	*प्र०*	अभाङ्क्षीत्	अभाङ्क्ताम्	अभाङ्क्षुः
अहिंसीः	अहिंसिष्टम्	अहिंसिष्ट	*म०*	अभाङ्क्षीः	अभाङ्क्तम्	अभाङ्क्त
अहिंसिषम्	अहिंसिष्व	अहिंसिष्म	*उ०*	अभाङ्क्षम्	अभाङ्क्ष्व	अभाङ्क्ष्म

(८७) रुध् (रोकना, ढकना) (दे०अ० ५४)

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्		
रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति	प्र०	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध	म०	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः	उ०	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे
लोट्				**लोट्**		
रुणद्धु	रुन्धाम्	रुन्धन्तु	प्र०	रुन्धाम्	रुन्धाताम्	रुन्धताम्
रुन्धि	रुन्धम्	रुन्ध	म०	रुन्त्स्व	रुन्धाथाम्	रुन्ध्वम्
रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम	उ०	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै
लङ्				**लङ्**		
अरुणत्	अरुन्धाम्	अरुन्धन्	प्र०	अरुन्ध	अरुन्धाताम्	अरुन्धत
अरुणः	अरुन्धम्	अरुन्ध	म०	अरुन्धाः	अरुन्धाथाम्	अरुन्ध्वम्
अरुणधम्	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म	उ०	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
रुन्ध्यात्	रुन्ध्याताम्	रुन्ध्युः	प्र०	रुन्धीत	रुन्धीयाताम्	रुन्धीरन्
रुन्ध्याः	रुन्ध्यातम्	रुन्ध्यात	म०	रुन्धीथाः	रुन्धीयाथाम्	रुन्धीध्वम्
रुन्ध्याम्	रुन्ध्याव	रुन्ध्याम	उ०	रुन्धीय	रुन्धीवहि	रुन्धीमहि
—				—		
रोत्स्यति	रोत्स्यतः	रोत्स्यन्ति	लृट्	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः	लुट्	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः
रुध्यात्	रुध्यास्ताम्	रुध्यासुः	आ० लिङ्	रुत्सीष्ट	रुत्सीयास्ताम्	०
अरोत्स्यत्	अरोत्स्यताम्	०	लृङ्	अरोत्स्यत	अरोत्स्येताम्	०
लिट्				**लिट्**		
रुरोध	रुरुधतुः	रुरुधुः	प्र०	रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे
रुरोधिथ	रुरुधथुः	रुरुध	म०	रुरुधिषे	रुरुधाथे	रुरुधिध्वे
रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम	उ०	रुरुधे	रुरुधिवहे	रुरुधिमहे
लुङ् (क) (४)				**लुङ् (४)**		
अरौत्सीत्	अरौद्धाम्	अरौत्सुः	प्र०	अरुद्ध	अरुत्साताम्	अरुत्सत
अरौत्सीः	अरौद्धम्	अरौद्ध	म०	अरुद्धाः	अरुत्साथाम्	अरुद्ध्वम्
अरौत्सम्	अरौत्स्व	अरौत्स्म	उ०	अरुत्सि	अरुत्स्वहि	अरुत्स्महि

(ख) (२)			
अरुधत्	अरुधताम्	अरुधन्	प्र०
अरुधः	अरुधतम्	अरुधत	म०
अरुधम्	अरुधाव	अरुधाम	उ०

(८८) भुज् (पालन करना) (दे० अ० ५४)

सूचना—पालन करना अर्थ में परस्मैपदी है।

(८८) भुज् (खाना) (दे० अ० ५४)

सूचना—खाना और उपभोग करना अर्थ में आत्मनेपदी है।

परस्मैपद—लट् / **आत्मनेपद—लट्**

भुनक्ति	भुङ्क्तः	भुञ्जन्ति	प्र०	भुङ्क्ते	भुञ्जाते	भुञ्जते
भुनक्षि	भुङ्क्थः	भुङ्क्थ	म०	भुङ्क्षे	भुञ्जाथे	भुङ्ग्ध्वे
भुनज्मि	भुञ्ज्वः	भुञ्ज्मः	उ०	भुञ्जे	भुञ्ज्वहे	भुञ्ज्महे

लोट् / **लोट्**

भुनक्तु	भुङ्क्ताम्	भुञ्जन्तु	प्र०	भुङ्क्ताम्	भुञ्जाताम्	भुञ्जताम्
भुङ्ग्धि	भुङ्क्तम्	भुङ्क्त	म०	भुङ्क्ष्व	भुञ्जाथाम्	भुङ्ग्ध्वम्
भुनजानि	भुनजाव	भुनजाम	उ०	भुनजै	भुनजावहै	भुनजामहै

लङ् / **लङ्**

अभुनक्	अभुङ्क्ताम्	अभुञ्जन्	प्र०	अभुङ्क्त	अभुञ्जाताम्	अभुञ्जत
अभुनक्	अभुङ्क्तम्	अभुङ्क्त	म०	अभुङ्क्थाः	अभुञ्जाथाम्	अभुङ्ग्ध्वम्
अभुनजम्	अभुञ्ज्व	अभुञ्ज्म	उ०	अभुञ्जि	अभुञ्ज्वहि	अभुञ्ज्महि

विधिलिङ् / **विधिलिङ्**

भुञ्ज्यात्	भुञ्ज्याताम्	भुञ्ज्युः	प्र०	भुञ्जीत	भुञ्जीयाताम्	भुञ्जीरन्
भुञ्ज्याः	भुञ्ज्यातम्	भुञ्ज्यात	म०	भुञ्जीथाः	भुञ्जीयाथाम्	भुञ्जीध्वम्
भुञ्ज्याम्	भुञ्ज्याव	भुञ्ज्याम	उ०	भुञ्जीय	भुञ्जीवहि	भुञ्जीमहि

—

भोक्ष्यति	भोक्ष्यतः	भोक्ष्यन्ति	लृट्	भोक्ष्यते	भोक्ष्येते	भोक्ष्यन्ते
भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तारः	लुट्	भोक्ता	भोक्तारौ	भोक्तारः
भुज्यात्	भुज्यास्ताम्	भुज्यासुः	आ० लिङ्	भुक्षीष्ट	भुक्षीयास्ताम्	०
अभोक्ष्यत्	अभोक्ष्यताम्	०	लृङ्	अभोक्ष्यत	अभोक्ष्येताम्	

लिट् / **लिट्**

बुभोज	बुभुजतुः	बुभुजुः	प्र०	बुभुजे	बुभुजाते	बुभुजिरे
बुभोजिथ	बुभुजथुः	बुभुज	म०	बुभुजिषे	बुभुजाथे	बुभुजिध्वे
बुभोज	बुभुजिव	बुभुजिम	उ०	बुभुजे	बुभुजिवहे	बुभुजिमहे

लुङ् (४) / **लुङ् (४)**

अभौक्षीत्	अभौक्ताम्	अभौक्षुः	प्र०	अभुक्त	अभुक्षाताम्	अभुक्षत
अभौक्षीः	अभौक्तम्	अभौक्त	म०	अभुक्थाः	अभुक्षाथाम्	अभुग्ध्वम्
अभौक्षम्	अभौक्ष्व	अभौक्ष्म	उ०	अभुक्षि	अभुक्ष्वहि	अभुक्ष्महि

(८९) युज् (लगाना, जोड़ना, मिलाना, नियुक्त करना) (दे०अ० ५५)

परस्मैपद—लट् | **आत्मनेपद—लट्**

युनक्ति	युङ्क्तः	युञ्जन्ति	प्र०	युङ्क्ते	युञ्जाते	युञ्जते
युनक्षि	युङ्क्थः	युङ्क्थ	म०	युङ्क्षे	युञ्जाथे	युङ्ग्ध्वे
युनज्मि	युञ्ज्वः	युञ्ज्मः	उ०	युञ्जे	युञ्ज्वहे	युञ्ज्महे
	लोट्				**लोट्**	
युनक्तु	युङ्क्ताम्	युञ्जन्तु	प्र०	युङ्क्ताम्	युञ्जाताम्	युञ्जताम्
युङ्ग्धि	युङ्क्तम्	युङ्क्त	म०	युङ्क्ष्व	युञ्जाथाम्	युङ्ग्ध्वम्
युनजानि	युनजाव	युनजाम	उ०	युनजै	युनजावहै	युनजामहै
	लङ्				**लङ्**	
अयुनक्	अयुङ्क्ताम्	अयुञ्जन्	प्र०	अयुङ्क्त	अयुञ्जाताम्	अयुञ्जत
अयुनक्	अयुङ्क्तम्	अयुङ्क्त	म०	अयुङ्क्थाः	अयुञ्जाथाम्	अयुङ्ग्ध्वम्
अयुनजम्	अयुञ्ज्व	अयुञ्ज्म	उ०	अयुञ्जि	अयुञ्ज्वहि	अयुञ्ज्महि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
युञ्ज्यात्	युञ्ज्याताम्	युञ्ज्युः	प्र०	युञ्जीत	युञ्जीयाताम्	युञ्जीरन्
युञ्ज्याः	युञ्ज्यातम्	युञ्ज्यात	म०	युञ्जीथाः	युञ्जीयाथाम्	युञ्जीध्वम्
युञ्ज्याम्	युञ्ज्याव	युञ्ज्याम	उ०	युञ्जीय	युञ्जीवहि	युञ्जीमहि
	—				—	
योक्ष्यति	योक्ष्यतः	योक्ष्यन्ति	लृट्	योक्ष्यते	योक्ष्येते	योक्ष्यन्ते
योक्ता	योक्तारौ	योक्तारः	लुट्	योक्ता	योक्तारौ	योक्तारः
युज्यात्	युज्यास्ताम्	युज्यासुः	आ० लिङ्	युक्षीष्ट	युक्षीयास्ताम्	०
अयोक्ष्यत्	अयोक्ष्यताम्	०	लृङ्	अयोक्ष्यत	अयोक्ष्येताम्	०
	लिट्				**लिट्**	
युयोज	युयुजतुः	युयुजुः	प्र०	युयुजे	युयुजाते	युयुजिरे
युयोजिथ	युयुजथुः	युयुज	म०	युयुजिषे	युयुजाथे	युयुजिध्वे
युयोज	युयुजिव	युयुजिम	उ०	युयुजे	युयुजिवहे	युयुजिमहे
	लुङ् (क) (४)				**लुङ् (४)**	
अयौक्षीत्	अयौक्ताम्	अयौक्षुः	प्र०	अयुक्त	अयुक्षाताम्	अयुक्षत
अयौक्षीः	अयौक्तम्	अयौक्त	म०	अयुक्थाः	अयुक्षाथाम्	अयुग्ध्वम्
अयौक्षम्	अयौक्ष्व	अयौक्ष्म	उ०	अयुक्षि	अयुक्ष्वहि	अयुक्ष्महि

लुङ् (ख) (२)

अयुजत् अयुजताम् अयुजन् आदि।

(८) तनादिगण

(१) इस गण की प्रथम धातु तन् (फैलाना) है, अत: गण का नाम तनादिगण पड़ा। (तनादिकृञ्भ्य उ:) तनादिगण की धातुओं में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में धातु और प्रत्यय के बीच में 'उ' विकरण लगता है।

(२) (क) धातुओं की उपधा के इ उ और ऋ को लट् आदि में विकल्प से गुण होता है। अत: उनके लट् आदि में दो रूप बनेंगे। क्षिण् > क्षिणोति, क्षेणोति। (ख) (अत उत्सार्वधातुके) कृ धातु के ऋ को उर् हो जाता है, कित् और ङित् वाले स्थानों पर। अत: परस्मैपद में लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में द्विवचन और बहुवचन मे ऋ को उर् होता है। आत्मनेपद में लट् आदि में सर्वत्र उर्। लोट् उत्तमपुरुष में दोनों पदों में गुण ही होता है। (ग) उ विकरण को परस्मै० लट् आदि के एक० में गुण होता है। परस्मै० विधिलिङ् और आत्मने० में उ ही रहता है। लोट् उ० पु० में गुण होगा।

(३) इस गण में १० धातुएँ हैं।

(४) लट् आदि में संक्षिप्तरूप निम्नलिखित लगेंगे। लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृ० १४४ पर निर्दिष्ट संक्षिप्त रूप ही लगेंगे।

परस्मैपद (सं० रूप)				**आत्मनेपद** (सं० रूप)		
	लट्				**लट्**	
ओति	उत:	वन्ति	प्र०	उते	वाते	वते
ओषि	उथ:	उथ	म०	उषे	वाथे	उध्वे
ओमि	उव:, व:	उम:, म:	उ०	वे	उवहे, वहे	उमहे, महे
	लोट्				**लोट्**	
ओतु	उताम्	वन्तु	प्र०	उताम्	वाताम्	वताम्
उ	उतम्	उत	म०	उष्व	वाथाम्	उध्वम्
अवानि	अवाव	अवाम	उ०	अवै	अवावहै	अवामहै
लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)				**लङ्** (धातु से पूर्व अ या आ)		
ओत्	उताम्	वन्	प्र०	उत	वाताम्	वत
ओ:	उतम्	उत	म०	उथा:	वाथाम्	उध्वम्
अवम्	उव, व	उम, म	उ०	वि	उवहि, वहि	उमहि, महि
	विधिलिङ्				**विधिलिङ्**	
उयात्	उयाताम्	उयु:	प्र०	वीत	वीयाताम्	वीरन्
उया:	उयातम्	उयात	म०	वीथा:	वीयाथाम्	वीध्वम्
उयाम्	उयाव	उयाम	उ०	वीय	वीवहि	वीमहि

तनादिगण, उभयपदी धातुएँ

(१०) तन् (फैलाना) (दे० अ० ५५)

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्		
तनोति	तनुतः	तन्वन्ति	प्र०	तनुते	तन्वाते	तन्वते
तनोषि	तनुथः	तनुथ	म०	तनुषे	तन्वाथे	तनुध्वे
तनोमि	तनुवः	तनुमः	उ०	तन्वे	तनुवहे	तनुमहे

लोट्				लोट्		
तनोतु	तनुताम्	तन्वन्तु	प्र०	तनुताम्	तन्वाताम्	तन्वताम्
तनु	तनुतम्	तनुत	म०	तनुष्व	तन्वाथाम्	तनुध्वम्
तनवानि	तनवाव	तनवाम	उ०	तनवै	तनवावहै	तनवामहै

लङ्				लङ्		
अतनोत्	अतनुताम्	अतन्वन्	प्र०	अतनुत	अतन्वाताम्	अतन्वत
अतनोः	अतनुतम्	अतनुत	म०	अतनुथाः	अतन्वाथाम्	अतनुध्वम्
अतनवम्	अतनुव	अतनुम	उ०	अतन्वि	अतनुवहि	अतनुमहि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
तनुयात्	तनुयाताम्	तनुयुः	प्र०	तन्वीत	तन्वीयाताम्	तन्वीरन्
तनुयाः	तनुयातम्	तनुयात	म०	तन्वीथाः	तन्वीयाथाम्	तन्वीध्वम्
तनुयाम्	तनुयाव	तनुयाम	उ०	तन्वीय	तन्वीवहि	तन्वीमहि

—				—		
तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति	लृट्	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
तनिता	तनितारौ	तनितारः	लुट्	तनिता	तनितारौ	तनितारः
तन्यात्	तन्यास्ताम्	तन्यासुः	आ० लिङ्	तनिषीष्ट	तनिषीयास्ताम्	०
अतनिष्यत्	अतनिष्यताम्	०	लृङ्	अतनिष्यत	अतनिष्येताम्	०

लिट्				लिट्		
ततान	तेनतुः	तेनुः	प्र०	तेने	तेनाते	तेनिरे
तेनिथ	तेनथुः	तेन	म०	तेनिषे	तेनाथे	तेनिध्वे
ततान, ततन	तेनिव	तेनिम	उ०	तेने	तेनिवहे	तेनिमहे

लुङ् (क) (५)				लुङ् (५)		
अतनीत्	अतनिष्टाम्	अतनिषुः	प्र०	अतत, अतनिष्ट	अतनिषाताम्	अतनिषत
अतनीः	अतनिष्टम्	अतनिष्ट	म०	अतथाः, अतनिष्ठाः	अतनिषाथाम्	अतनिध्वम्
अतनिषम्	अतनिष्व	अतनिष्म	उ०	अतनिषि	अतनिष्वहि	अतनिष्महि

लुङ् (ख) (५)

अतानीत् अतानिष्टाम्० आदि (पूर्ववत्)।

(९१) कृ (करना) (दे० अ० २१-२२)

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्		
करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति	प्र०	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
करोषि	कुरुथः	कुरुथ	म०	कुरुषे	कुर्वाथे	कुरुध्वे
करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ०	कुर्वे	कुर्वहे	कुर्महे
लोट्				**लोट्**		
करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	प्र०	कुरुताम्	कुर्वाताम्	कुर्वताम्
कुरु	कुरुतम्	कुरुत	म०	कुरुष्व	कुर्वाथाम्	कुरुध्वम्
करवाणि	करवाव	करवाम	उ०	करवै	करवावहै	करवामहै
लङ्				**लङ्**		
अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	प्र०	अकुरुत	अकुर्वाताम्	अकुर्वत
अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	म०	अकुरुथाः	अकुर्वाथाम्	अकुरुध्वम्
अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	उ०	अकुर्वि	अकुर्वहि	अकुर्महि
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	प्र०	कुर्वीत	कुर्वीयाताम्	कुर्वीरन्
कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	म०	कुर्वीथाः	कुर्वीयाथाम्	कुर्वीध्वम्
कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	उ०	कुर्वीय	कुर्वीवहि	कुर्वीमहि
—				—		
करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	लृट्	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते
कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	लुट्	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः	आ० लिङ्	कृषीष्ट	कृषीयास्ताम्	०
अकरिष्यत्	अकरिष्यताम	०	लृङ्	अकरिष्यत	अकरिष्येताम्	०
लिट्				**लिट्**		
चकार	चक्रतुः	चक्रुः	प्र०	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	म०	चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे
चकार, चकर	चकृव	चकृम	उ०	चक्रे	चकृवहे	चकृमहे
लुङ् (४)				**लुङ् (४)**		
अकार्षीत्	अकार्ष्टाम्	अकार्षुः	प्र०	अकृत	अकृषाताम्	अकृषत
अकार्षीः	अकार्ष्टम्	अकार्ष्ट	म०	अकृथाः	अकृषाथाम्	अकृढ्वम्
अकार्षम्	अकार्ष्व	अकार्ष्म	उ०	अकृषि	अकृष्वहि	अकृष्महि

(९) क्र्यादिगण

(१) इस गण की प्रथम धातु क्री (मोल लेना) है, अतः गण का नाम क्र्यादिगण पड़ा। (क्र्यादिभ्यः श्ना) क्र्यादिगण की धातुओं से लट्, लोट्, लङ् और विधिलिङ् में धातु और प्रत्यय के बीच में श्ना (ना) विकरण होता है।

(२) (क) लट् आदि में धातु को गुण नहीं होता। (ख) 'ना' विकरण परस्मै० के लट्, लोट्, लङ् के एक० में ना रहता है। दोनों पदों में लोट् उ०पु० में ना रहेगा। अन्यत्र ना को नी होता है। जहाँ बाद में स्वर होता है, वहाँ ना का न् रहता है। परस्मै० लोट् म० पु० एक० में ना को नी होता है या आन होता है। (ग) धातु की उपधा में न् होगा तो लट् आदि में न् का लोप हो जाएगा। (घ) (हलः श्नः शानज्झौ) व्यंजनान्त धातुओं के बाद परस्मै० लोट् म०पु० एक० में ना को आन हो जायगा और हि का लोप होगा। अतः 'आन' शेष रहेगा। बन्ध् > बधान, ग्रह् > गृहाण। (ङ) (प्वादीनां ह्रस्वः) पू आदि धातुओं को लट् आदि में ह्रस्व होगा। पू > पुनाति। धू > धुनाति। (च) (ग्रहोऽलिटि दीर्घः) ग्रह् धातु के बाद इ को ई हो जाएगा, लिट् को छोड़कर। ग्रहीष्यति, ग्रहीता।

(३) इस गण में ६१ धातुएँ हैं।

(४) लट् आदि में धातु के बाद ये संक्षिप्तरूप लगेंगे। लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृष्ठ १४४ पर निर्दिष्ट सं० रूप ही लगेंगे।

परस्मैपद (सं० रूप)				**आत्मनेपद** (सं० रूप)		
लट्				**लट्**		
नाति	नीतः	नन्ति	प्र०	नीते	नाते	नते
नासि	नीथः	नीथ	म०	नीषे	नाथे	नीध्वे
नामि	नीवः	नीमः	उ०	ने	नीवहे	नीमहे
लोट्				**लोट्**		
नातु	नीताम्	नन्तु	प्र०	नीताम्	नाताम्	नताम्
नीहि (आन)	नीतम्	नीत	म०	नीष्व	नाथाम्	नीध्वम्
नानि	नाव	नाम	उ०	नै	नावहै	नामहै
लङ् (धातु से पूर्व अ या आ)				**लङ्** (धातु से पूर्व अ या आ)		
नात्	नीताम्	नन्	प्र०	नीत	नाताम्	नत
नाः	नीतम्	नीत	म०	नीथाः	नाथाम्	नीध्वम्
नाम्	नीव	नीम	उ०	नि.	नीवहि	नीमहि
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
नीयात्	नीयाताम्	नीयुः	प्र०	नीत	नीयाताम्	नीरन्
नीयाः	नीयातम्	नीयात	म०	नीथाः	नीयाथाम्	नीध्वम्
नीयाम्	नीयाव	नीयाम	उ०	नीय	नीवहि	नीमहि

क्र्यादिगण। परस्मैपदी धातुएँ

(९२) बन्ध् (बाँधना) (दे० अ० ५७) **(९३) मन्थ् (मथना)** (दे० अ० ५७)

लट् / **लट्**

बध्नाति	बध्नीतः	बध्नन्ति	प्र०	मथ्नाति	मथ्नीतः	मथ्नन्ति
बध्नासि	बध्नीथः	बध्नीथ	म०	मथ्नासि	मथ्नीथः	मथ्नीथ
बध्नामि	बध्नीवः	बध्नीमः	उ०	मथ्नामि	मथ्नीवः	मथ्नीमः

लोट् / **लोट्**

बध्नातु	बध्नीताम्	बध्नन्तु	प्र०	मथ्नातु	मथ्नीताम्	मथ्नन्तु
बधान	बध्नीतम्	बध्नीत	म०	मथान	मथ्नीतम्	मथ्नीत
बध्नानि	बध्नाव	बध्नाम	उ०	मथ्नानि	मथ्नाव	मथ्नाम

लङ् / **लङ्**

अबध्नात्	अबध्नीताम्	अबध्नन्	प्र०	अमथ्नात्	अमथ्नीताम्	अमथ्नन्
अबध्नाः	अबध्नीतम्	अबध्नीत	म०	अमथ्नाः	अमथ्नीतम्	अमथ्नीत
अबध्नाम्	अबध्नीव	अबध्नीम	उ०	अमथ्नाम्	अमथ्नीव	अमथ्नीम

विधिलिङ् / **विधिलिङ्**

बध्नीयात्	बध्नीयाताम्	बध्नीयुः	प्र०	मथ्नीयात्	मथ्नीयाताम्	मथ्नीयुः
बध्नीयाः	बध्नीयातम्	बध्नीयात	म०	मथ्नीयाः	मथ्नीयातम्	मथ्नीयात
बध्नीयाम्	बध्नीयाव	बध्नीयाम	उ०	मथ्नीयाम्	मथ्नीयाव	मथ्नीयाम

भन्त्स्यति	भन्त्स्यतः	भन्त्स्यन्ति	लृट्	मन्थिष्यति	मन्थिष्यतः	मन्थिष्यन्ति
बन्द्धा	बन्द्धारौ	बन्द्धारः	लुट्	मन्थिता	मन्थितारौ	मन्थितारः
बध्यात्	बध्यास्ताम्	बध्यासुः	आ०लिङ्	मथ्यात्	मथ्यास्ताम्	मथ्यासुः
अभन्त्स्यत्	अभन्त्स्यताम्	०	लृङ्	अमन्थिष्यत्	अमन्थिष्यताम्	०

लिट् / **लिट्**

बबन्ध	बबन्धतुः	बबन्धुः	प्र०	ममन्थ	ममन्थतुः	ममन्थुः
बबन्धिथ	बबन्धथुः	बबन्ध	म०	ममन्थिथ	ममन्थथुः	ममन्थ
बबन्ध	बबन्धिव	बबन्धिम	उ०	ममन्थ	ममन्थिव	ममन्थिम

लुङ् (४) / **लुङ् (५)**

अभान्त्सीत्	अबान्द्धाम्	अभान्त्सुः	प्र०	अमन्थीत्	अमन्थिष्टाम्	अमन्थिषुः
अभान्त्सीः	अबान्द्धम्	अबान्द्ध	म०	अमन्थीः	अमन्थिष्टम्	अमन्थिष्ट
अभान्त्सम्	अभान्त्स्व	अभान्त्स्म	उ०	अमन्थिषम्	अमन्थिष्व	अमन्थिष्म

उभयपदी धातुएँ

(१४) क्री (मोल लेना) (दे० अ० ५८)

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्		
क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति	*प्र०*	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ	*म०*	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणीध्वे
क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः	*उ०*	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे

लोट्				लोट्		
क्रीणातु	क्रीणीताम्	क्रीणन्तु	*प्र०*	क्रीणीताम्	क्रीणाताम्	क्रीणताम्
क्रीणीहि	क्रीणीतम्	क्रीणीत	*म०*	क्रीणीष्व	क्रीणाथाम्	क्रीणीध्वम्
क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम	*उ०*	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै

लङ्				लङ्		
अक्रीणात्	अक्रीणीताम्	अक्रीणन्	*प्र०*	अक्रीणीत	अक्रीणाताम्	अक्रीणत
अक्रीणाः	अक्रीणीतम्	अक्रीणीत	*म०*	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथाम्	अक्रीणीध्वम्
अक्रीणाम्	अक्रीणीव	अक्रीणीम	*उ०*	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
क्रीणीयात्	क्रीणीयाताम्	क्रीणीयुः	*प्र०*	क्रीणीत	क्रीणीयाताम्	क्रीणीरन्
क्रीणीयाः	क्रीणीयातम्	क्रीणीयात	*म०*	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथाम्	क्रीणीध्वम्
क्रीणीयाम्	क्रीणीयाव	क्रीणीयाम	*उ०*	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति	*लृट्*	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः	*लुट्*	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
क्रीयात्	क्रीयास्ताम्	क्रीयासुः	*आ० लिङ्*	क्रेषीष्ट	क्रेषीयास्ताम्	०
अक्रेष्यत्	अक्रेष्यताम्	०	*लृङ्*	अक्रेष्यत	अक्रेष्येताम्	०

लिट्				लिट्		
चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः	*प्र०*	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
चिक्रयिथ, चिक्रेथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय	*म०*	चिक्रियिषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिध्वे
चिक्राय, चिक्रय	चिक्रियिव	चिक्रियिम	*उ०*	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे

लुङ् (४)				लुङ् (४)		
अक्रैषीत्	अक्रैष्टाम्	अक्रैषुः	*प्र०*	अक्रेष्ट	अक्रेषाताम्	अक्रेषत
अक्रैषीः	अक्रैष्टम्	अक्रैष्ट	*म०*	अक्रेष्ठाः	अक्रेषाथाम्	अक्रेढ्वम्
अक्रैषम्	अक्रैष्व	अक्रैष्म	*उ०*	अक्रेषि	अक्रेष्वहि	अक्रेष्महि

(९५) ग्रह् (पकड़ना) (दे० अ० ५८)

सूचना—लट् आदि में ग्रह् को गृह् होगा। **सूचना**—लट् आदि में ग्रह् को गृह्।

परस्मैपद—लट् / **आत्मनेपद—लट्**

गृह्णाति	गृह्णीतः	गृह्णन्ति	प्र०	गृह्णीते	गृह्णाते	गृह्णते
गृह्णासि	गृह्णीथः	गृह्णीथ	म०	गृह्णीषे	गृह्णाथे	गृह्णीध्वे
गृह्णामि	गृह्णीवः	गृह्णीमः	उ०	गृह्णे	गृह्णीवहे	गृह्णीमहे

लोट् / **लोट्**

गृह्णातु	गृह्णीताम्	गृह्णन्तु	प्र०	गृह्णीताम्	गृह्णाताम्	गृह्णताम्
गृहाण	गृह्णीतम्	गृह्णीत	म०	गृह्णीष्व	गृह्णाथाम्	गृह्णीध्वम्
गृह्णानि	गृह्णाव	गृह्णाम	उ०	गृह्णै	गृह्णावहै	गृह्णामहै

लङ् / **लङ्**

अगृह्णात्	अगृह्णीताम्	अगृह्णन्	प्र०	अगृह्णीत	अगृह्णाताम्	अगृह्णत
अगृह्णाः	अगृह्णीतम्	अगृह्णीत	म०	अगृह्णीथाः	अगृह्णाथाम्	अगृह्णीध्वम्
अगृह्णाम्	अगृह्णीव	अगृह्णीम	उ०	अगृह्णि	अगृह्णीवहि	अगृह्णीमहि

विधिलिङ् / **विधिलिङ्**

गृह्णीयात्	गृह्णीयाताम्	गृह्णीयुः	प्र०	गृह्णीत	गृह्णीयाताम्	गृह्णीरन्
गृह्णीयाः	गृह्णीयातम्	गृह्णीयात	म०	गृह्णीथाः	गृह्णीयाथाम्	गृह्णीध्वम्
गृह्णीयाम्	गृह्णीयाव	गृह्णीयाम	उ०	गृह्णीय	गृह्णीवहि	गृह्णीमहि

ग्रहीष्यति	ग्रहीष्यतः	ग्रहीष्यन्ति	लृट्	ग्रहीष्यते	ग्रहीष्येते	ग्रहीष्यन्ते
ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः	लुट्	ग्रहीता	ग्रहीतारौ	ग्रहीतारः
गृह्यात्	गृह्यास्ताम्	गृह्यासुः	आ०लिङ्	ग्रहीषीष्ट	ग्रहीषीयास्ताम्	०
अग्रहीष्यत्	अग्रहीष्यताम्	०	लृङ्	अग्रहीष्यत	अग्रहीष्येताम्	०

लिट् / **लिट्**

जग्राह	जगृहतुः	जगृहुः	प्र०	जगृहे	जगृहाते	जगृहिरे
जग्रहिथ	जगृहथुः	जगृह	म०	जगृहिषे	जगृहाथे	जगृहिध्वे
जग्राह, जग्रह	जगृहिव	जगृहिम	उ०	जगृहे	जगृहिवहे	जगृहिमहे

लुङ् (५) / **लुङ् (५)**

अग्रहीत्	अग्रहीष्टाम्	अग्रहीषुः	प्र०	अग्रहीष्ट	अग्रहीषाताम्	अग्रहीषत
अग्रहीः	अग्रहीष्टम्	अग्रहीष्ट	म०	अग्रहीष्ठाः	अग्रहीषाथाम्	अग्रहीध्वम्
अग्रहीषम्	अग्रहीष्व	अग्रहीष्म	उ०	अग्रहीषि	अग्रहीष्वहि	अग्रहीष्महि

(९६) ज्ञा (जानना) (दे० अ० ५६)

सूचना—लट् आदि में ज्ञा को 'जा' होगा। ***सूचना***—लट् आदि में ज्ञा को 'जा' होगा।

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्		
जानाति	जानीतः	जानन्ति	*प्र०*	जानीते	जानाते	जानते
जानासि	जानीथः	जानीथ	*म०*	जानीषे	जानाथे	जानीध्वे
जानामि	जानीवः	जानीमः	*उ०*	जाने	जानीवहे	जानीमहे
लोट्				**लोट्**		
जानातु	जानीताम्	जानन्तु	*प्र०*	जानीताम्	जानाताम्	जानताम्
जानीहि	जानीतम्	जानीत	*म०*	जानीष्व	जानाथाम्	जानीध्वम्
जानानि	जानाव	जानाम	*उ०*	जानै	जानावहै	जानामहै
लङ्				**लङ्**		
अजानात्	अजानीताम्	अजानन्	*प्र०*	अजानीत	अजानाताम्	अजानत
अजानाः	अजानीतम्	अजानीत	*म०*	अजानीथाः	अजानाथाम्	अजानीध्वम्
अजानाम्	अजानीव	अजानीम	उ०	अजानि	अजानीवहि	अजानीमहि
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
जानीयात्	जानीयाताम्	जानीयुः	*प्र०*	जानीत	जानीयाताम्	जानीरन्
जानीयाः	जानीयातम्	जानीयात	*म०*	जानीथाः	जानीयाथाम्	जानीध्वम्
जानीयाम्	जानीयाव	जानीयाम	*उ०*	जानीय	जानीवहि	जानीमहि
——				——		
ज्ञास्यति	ज्ञास्यतः	ज्ञास्यन्ति	*लृट्*	ज्ञास्यते	ज्ञास्येते	ज्ञास्यन्ते
ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः	*लुट्*	ज्ञाता	ज्ञातारौ	ज्ञातारः
ज्ञायात्,	ज्ञेयात्	(दोनों प्रकार से)	*आ०लिङ्*	ज्ञासीष्ट	ज्ञासीयास्ताम्	०
अज्ञास्यत्	अज्ञास्यताम्	०	*लृङ्*	अज्ञास्यत	अज्ञास्येताम्	०
लिट्				**लिट्**		
जज्ञौ	जज्ञतुः	जज्ञुः	*प्र०*	जज्ञे	जज्ञाते	जज्ञिरे
जज्ञिथ } जज्ञाथ	जज्ञथुः	जज्ञ	*म०*	जज्ञिषे	जज्ञाथे	जज्ञिध्वे
जज्ञौ	जज्ञिव	जज्ञिम	*उ०*	जज्ञे	जज्ञिवहे	जज्ञिमहे
लुङ् (६)				**लुङ् (४)**		
अज्ञासीत्	अज्ञासिष्टाम्	अज्ञासिषुः	*प्र०*	अज्ञास्त	अज्ञासाताम्	अज्ञासत
अज्ञासीः	अज्ञासिष्टम्	अज्ञासिष्ट	*म०*	अज्ञास्थाः	अज्ञासाथाम्	अज्ञाध्वम्
अज्ञासिषम्	अज्ञासिष्व	अज्ञासिष्म	*उ०*	अज्ञासि	अज्ञास्वहि	अज्ञास्महि

(१०) चुरादिगण

(१) इस गण की प्रथम धातु चुर् (चुराना) है, अतः गण का नाम चुरादिगण पड़ा। (सत्याप······चुरादिभ्यो णिच्) चुरादिगण में दसों लकारों में धातु से णिच् (अय्) प्रत्यय होता है। लट् आदि में शप् (अ) और लग जाने से धातु और प्रत्यय के बीच में 'अय' विकरण हो जाता है।

(२) **सूचना**—प्रेरणार्थक धातुओं में भी 'हेतुमति च' सूत्र से णिच् प्रत्यय करने पर चुरादिगण की धातुओं के तुल्य ही दसों लकारों में रूप चलेंगे।

(३) **(क)** णिच् (अय्) करने पर धातु के अन्तिम इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ को क्रमशः ऐ, औ, आर् वृद्धि होगी। पृ > पारयति, चि > चाययति। **(ख)** उपधा में अ, इ, उ, ऋ हों तो उन्हें क्रमशः आ, ए, ओ, अर् होगा। कथ्, गण्, रच् आदि कुछ धातुओं में अ को आ नहीं होता है। **(ग)** लृट् में परस्मै० इष्यति लगेगा और आत्मने० में इष्यते आदि। **(घ)** (अर्तिह्री······आतां पुङ् णौ) आकारान्त धातुओं में आ के बाद प् और लग जाता है। आ + ज्ञा > आज्ञापयति।

(४) इस गण में ४१० धातुएँ हैं। चुरादिगण तक पूरी धातुसंख्या १९४४ है।

(५) चुरादिगणी धातुओं के रूप चलाने का सरल उपाय यह है कि धातु के अन्त में 'अय' लगाकर परस्मै० में भू के तुल्य और आत्मने० में सेव् के तुल्य रूप चलावें। लृट्, लुट्, आशीर्लिङ् और लृङ् में पृष्ठ १४४ पर निर्दिष्ट सं० रूप ही लगेंगे।

परस्मैपद (सं० रूप) **आत्मनेपद** (सं० रूप)

लट् (धातु + अय्) **लट् (धातु + अय्)**

अति	अतः	अन्ति	प्र०	अते	एते	अन्ते
असि	अथः	अथ	म०	असे	एथे	अध्वे
आमि	आवः	आमः	उ०	ए	आवहे	आमहे

लोट् (धातु + अय्) **लोट् (धातु + अय्)**

अतु	अताम्	अन्तु	प्र०	अताम्	एताम्	अन्ताम्
अ	अतम्	अत	म०	अस्व	एथाम्	अध्वम्
आनि	आव	आम	उ०	ऐ	आवहै	आमहै

लङ् (धातु + अय्) (धातु से पहले अ या आ) **लङ् (धातु + अय्)**

अत्	अताम्	अन्	प्र०	अत	एताम्	अन्त
अः	अतम्	अत	म०	अथाः	एथाम्	अध्वम्
अम्	आव	आम	उ०	ए	आवहि	आमहि

विधिलिङ् (धातु + अय्) **विधिलिङ् (धातु + अय्)**

एत्	एताम्	एयुः	प्र०	एत	एयाताम्	एरन्
एः	एतम्	एत	म०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
एयम्	एव	एम	उ०	एय	एवहि	एमहि

चुरादिगण। उभयपदी धातुएँ

(१७) चुर् (चुराना) (दे० अ० ५९)

परस्मैपद —लट्				आत्मनेपद—लट्		
चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति	प्र०	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ	म०	चोरयसे	चोरयेथे	चोरयध्वे
चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः	उ०	चोरये	चोरयावहे	चोरयामहे
लोट्				**लोट्**		
चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु	प्र०	चोरयताम्	चोरयेताम्	चोरयन्ताम्
चोरय	चोरयतम्	चोरयत	म०	चोरयस्व	चोरयेथाम्	चोरयध्वम्
चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम	उ०	चोरयै	चोरयावहै	चोरयामहै
लङ्				**लङ्**		
अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्	प्र०	अचोरयत	अचोरयेताम्	अचोरयन्त
अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत	म०	अचोरयथाः	अचोरयेथाम्	अचोरयध्वम्
अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम	उ०	अचोरये	अचोरयावहि	अचोरयामहि
विधिलिङ्				**विधिलिङ्**		
चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः	प्र०	चोरयेत	चोरयेयाताम्	चोरयेरन्
चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत	म०	चोरयेथाः	चोरयेयाथाम्	चोरयेध्वम्
चोरयेयम्	चोरयेव	चोरयेम	उ०	चोरयेय	चोरयेवहि	चोरयेमहि

चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति	लृट्	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	०
चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः	लुट्	चोरयिता	चोरयितारौ	०
चोर्यात्	चोर्यास्ताम्	चोर्यासुः	आ०लिङ्	चोरयिषीष्ट	चोरयिषीयास्ताम्	०
अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यताम्	०	लृङ्	अचोरयिष्यत	अचोरयिष्येताम्	०

लिट् (क) (चोरयां + कृ)				**लिट् (क)** (चोरयां + कृ)		
चोरयांचकार	-चक्रतुः	-चक्रुः	प्र०	चोरयांचक्रे	-चक्राते	-चक्रिरे
-चकर्थ	-चक्रथुः	-चक्र	म०	-चकृषे	-चक्राथे	-चकृढ्वे
-चकार, चकर	-चकृव	-चकृम	उ०	-चक्रे	-चकृवहे	-चकृमहे

(ख) (चोरयां + भू) चोरयांबभूव आदि। — (ख) (चोरयां + भू) चोरयांबभूव आदि

(ग) (चोरयाम् + अस्) चोरयामास आदि। — (ग) (चोरयाम् + अस्) चोरयामास आदि

लुङ् (३)				**लुङ् (३)**		
अचूचुरत्	अचूचुरताम्	अचूचुरन्	प्र०	अचूचुरत	अचूचुरेताम्	अचूचुरन्त
अचूचुरः	अचूचुरतम्	अचूचुरत	म०	अचूचुरथाः	अचूचुरेथाम्	अचूचुरध्वम्
अचूचुरम्	अचूचुराव	अचूचुराम	उ०	अचूचुरे	अचूचुरावहि	अचूचुरामहि

(९८) **चिन्त् (सोचना)** (दे० अ० ५९) (दोनों पदों में चुर् के तुल्य)

परस्मैपद—लट्				आत्मनेपद—लट्		
चिन्तयति	चिन्तयतः	चिन्तयन्ति	प्र०	चिन्तयते	चिन्तयेते	चिन्तयन्ते
चिन्तयसि	चिन्तयथः	चिन्तयथ	म०	चिन्तयसे	चिन्तयेथे	चिन्तयध्वे
चिन्तयामि	चिन्तयावः	चिन्तयामः	उ०	चिन्तये	चिन्तयावहे	चिन्तयामहे

लोट्				लोट्		
चिन्तयतु	चिन्तयताम्	चिन्तयन्तु	प्र०	चिन्तयताम्	चिन्तयेताम्	चिन्तयन्ताम्
चिन्तय	चिन्तयतम्	चिन्तयत	म०	चिन्तयस्व	चिन्तयेथाम्	चिन्तयध्वम्
चिन्तयानि	चिन्तयाव	चिन्तयाम	उ०	चिन्तयै	चिन्तयावहै	चिन्तयामहै

लङ्				लङ्		
अचिन्तयत्	अचिन्तयताम्	अचिन्तयन्	प्र०	अचिन्तयत	अचिन्तयेताम्	अचिन्तयन्त
अचिन्तयः	अचिन्तयतम्	अचिन्तयत	म०	अचिन्तयथाः	अचिन्तयेथाम्	अचिन्तयध्वम्
अचिन्तयम्	अचिन्तयाव	अचिन्तयाम	उ०	अचिन्तये	अचिन्तयावहि	अचिन्तयामहि

विधिलिङ्				विधिलिङ्		
चिन्तयेत्	चिन्तयेताम्	चिन्तयेयुः	प्र०	चिन्तयेत	चिन्तयेयाताम्	चिन्तयेरन्
चिन्तयेः	चिन्तयेतम्	चिन्तयेत	म०	चिन्तयेथाः	चिन्तयेयाथाम्	चिन्तयेध्वम्
चिन्तयेयम्	चिन्तयेव	चिन्तयेम	उ०	चिन्तयेय	चिन्तयेवहि	चिन्तयेमहि

चिन्तयिष्यति	चिन्तयिष्यतः०	लृट्	चिन्तयिष्यते	चिन्तयिष्येते	०
चिन्तयिता	चिन्तयितारौ०	लुट्	चिन्तयिता	चिन्तयितारौ	०
चिन्त्यात्	चिन्त्यास्ताम्०	आ०लिङ्	चिन्तयिषीष्ट	चिन्तयिषीयास्ताम्	०
अचिन्तयिष्यत्	अचिन्तयिष्यताम्०	लृङ्	अचिन्तयिष्यत	अचिन्तयिष्येताम्	०

लिट् (क) (चिन्तयां + कृ)				लिट् (क) (चिन्तयां + कृ)		
चिन्तयांचकार	–चक्रतुः	–चक्रुः	प्र०	चिन्तयांचक्रे	–चक्राते	–चक्रिरे
–चकर्थ	–चक्रथुः	–चक्र	म०	–चकृषे	–चक्राथे	–चकृढ्वे
–चकार, चकर	–चकृव	–चकृम	उ०	–चक्रे	–चकृवहे	–चकृमहे

(ख)(चिन्तयां + भू) चिन्तयांबभूव आदि। (ख) (चिन्तयां + भू) चिन्तयांबभूव आदि

(ग) (चिन्तयाम्+ अस्) चिन्तयामास आदि। (ग) (चिन्तयाम् + अस्) चिन्तयामास आदि

लुङ् (३)				लुङ् (३)		
अचिचिन्तत्	अचिचिन्तताम्	अचिचिन्तन्	प्र०	अचिचिन्तत	अचिचिन्तेताम्	अचिचिन्तन्त
अचिचिन्तः	अचिचिन्ततम्	अचिचिन्तत	म०	अचिचिन्तथाः	अचिचिन्तेथाम्	अचिचिन्तध्वम्
अचिचिन्तम्	अचिचिन्ताव	अचिचिन्ताम	उ०	अचिचिन्ते	अचिचिन्तावहि	अचिचिन्तामहि

(९९) कथ् (कहना) (दे० अ० ६०)

सूचना—दोनों पदों में पूरे रूप चुर् के तुल्य।

परस्मैपद—लट्

कथयति	कथयतः	कथयन्ति	*प्र०*
कथयसि	कथयथः	कथयथ	*म०*
कथयामि	कथयावः	कथयामः	*उ०*

कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु	*लोट्*
अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्	*लङ्*
कथयेत्	कथयेताम्	कथयेयुः	*वि०लिङ्*
कथयिष्यति	कथयिष्यतः०		*लृट्*
कथयिता	कथयितारौ		*लुट्*
कथ्यात्	कथ्यास्ताम्०		*आ०लिङ्*
अकथयिष्यत्	अकथयिष्यताम्०		*लृङ्*
(क) कथयांचकार-चक्रतुः-चक्रुः			*लिट्*
(ख) कथयांबभूव (ग) कथयामास			,,
अचकथत्	अचकथताम्०		*लुङ्*

आत्मनेपद

कथयते	कथयेते	कथयन्ते	*लट्*
कथयताम्	कथयेताम्	कथयन्ताम्	*लोट्*
अकथयत	अकथयेताम्	अकथयन्त	*लङ्*
कथयेत	कथयेयाताम्	कथयेरन्	*वि० लिङ्*
कथयिष्यते	कथयिष्येते	कथयिष्यन्ते	*लृट्*
कथयिता	कथयितारौ०		*लुट्*
कथयिषीष्ट	कथयिषीयास्ताम्०		*आ०लिङ्*
अकथयिष्यत	अकथयिष्येताम्०		*लृङ्*
(क) कथयांचक्रे-चक्राते-चक्रिरे			*लिट्*
(ख) कथयांबभूव (ग) कथयामास			,,
अचकथत	अचकथेताम्०		*लुङ्*

---

(१००) भक्ष् (खाना) (दे० अ० ६०)

सूचना—दोनों पदों में पूरे रूप चुर् के तुल्य।

परस्मैपद—लट्

प्र०	भक्षयति	भक्षयतः	भक्षयन्ति
म०	भक्षयसि	भक्षयथः	भक्षयथ
उ०	भक्षयामि	भक्षयावः	भक्षयामः

लोट्	भक्षयतु	भक्षयताम्	भक्षयन्तु
लङ्	अभक्षयत्	अभक्षयताम्	अभक्षयन्
वि०लिङ्	भक्षयेत्	भक्षयेताम्	भक्षयेयुः
लृट्	भक्षयिष्यति	भक्षयिष्यतः०	
लुट्	भक्षयिता	भक्षयितारौ०	
आ०लिङ्	भक्ष्यात्	भक्ष्यास्ताम्०	
लृङ्	अभक्षयिष्यत्	अभक्षयिष्यताम्०	
लिट्	(क) भक्षयांचकार - चक्रतुः - चक्रुः		
,,	(ख) भक्षयांबभूव (ग) भक्षयामास		
लुङ्	अबभक्षत्	अबभक्षताम्०	

आत्मनेपद

लट्	भक्षयते	भक्षयेते	भक्षयन्ते
लोट्	भक्षयताम्	भक्षयेताम्	भक्षयन्ताम्
लङ्	अभक्षयत	अभक्षयेताम्	अभक्षयन्त
वि० लिङ्	भक्षयेत	भक्षयेयाताम्	भक्षयेरन्
लृट्	भक्षयिष्यते	भक्षयिष्येते०	
लुट्	भक्षयिता	भक्षयितारौ०	
आ०लिङ्	भक्षयिषीष्ट	भक्षयिषीयास्ताम्०	
लृङ्	अभक्षयिष्यत	अभक्षयिष्येताम्०	
लिट्	(क) भक्षयांचक्रे-चक्राते-चक्रिरे		
,,	(ख) भक्षयांबभूव (ग) भक्षयामास		
लुङ्	अबभक्षत	अबभक्षेताम्०	

(क) णिजन्त (प्रेरणार्थक) धातु

(१०१) कारि (करवाना) (व्याकरणादि के लिए देखो अभ्यास ३३-३४)

सूचना—परस्मै० और आत्मने० दोनों पदों में रूप चुर् (९७) धातु के तुल्य चलेंगे।

परस्मैपद—लट् | **आत्मनेपद—लट्**

कारयति	कारयतः	कारयन्ति	*प्र०*	कारयते	कारयेते	कारयन्ते
कारयसि	कारयथः	कारयथ	*म०*	कारयसे	कारयेथे	कारयध्वे
कारयामि	कारयावः	कारयामः	*उ०*	कारये	कारयावहे	कारयामहे

लोट् | **लोट्**

कारयतु	कारयताम्	कारयन्तु	*प्र०*	कारयताम्	कारयेताम्	कारयन्ताम्
कारय	कारयतम्	कारयत	*म०*	कारयस्व	कारयेथाम्	कारयध्वम्
कारयाणि	कारयाव	कारयाम	*उ०*	कारयै	कारयावहै	कारयामहै

लङ् | **लङ्**

अकारयत्	अकारयताम्	अकारयन्	*प्र०*	अकारयत	अकारयेताम्	अकारयन्त
अकारयः	अकारयतम्	अकारयत	*म०*	अकारयथाः	अकारयेथाम्	अकारयध्वम्
अकारयम्	अकारयाव	अकारयाम	*उ०*	अकारये	अकारयावहि	अकारयामहि

विधिलिङ् | **विधिलिङ्**

कारयेत्	कारयेताम्	कारयेयुः	*प्र०*	कारयेत	कारयेयाताम्	कारयेरन्
कारयेः	कारयेतम्	कारयेत	*म०*	कारयेथाः	कारयेयाथाम्	कारयेध्वम्
कारयेयम्	कारयेव	कारयेम	*उ०*	कारयेय	कारयेवहि	कारयेमहि

कारयिष्यति	कारयिष्यतः०	*लृट्*	कारयिष्यते	कारयिष्येते०
कारयिता	कारयितारौ०	*लुट्*	कारयिता	कारयितारौ०
कार्यात्	कार्यास्ताम्०	*आ०लिङ्*	कारयिषीष्ट	कारयिषीयास्ताम्०
अकारयिष्यत्	अकारयिष्यताम्०	*लृङ्*	अकारयिष्यत	अकारयिष्येताम्०

लिट् (क) (कारयां + कृ) | **लिट् (क) (कारयां + कृ)**

कारयांचकार	-चक्रतुः	-चक्रुः	*प्र०*	कारयांचक्रे	-चक्राते	-चक्रिरे
-चकर्थ	-चक्रथुः	-चक्र	*म०*	-चकृषे	-चक्राथे	-चकृढ्वे
-चकार, चकर	-चकृव	-चकृम	*उ०*	-चक्रे	-चकृवहे	-चकृमहे

(ख) (कारयां + भू) कारयांबभूव आदि। (ख) (कारयां + भू) कारयांबभूव आदि

(ग) (कारयाम् + अस्) कारयामास आदि। (ग) (कारयाम् + अस्) कारयामास आदि

लुङ् (३) | **लुङ् (३)**

अचीकरत्	अचीकरताम्	अचीकरन्	*प्र०*	अचीकरत	अचीकरेताम्	अचीकरन्त
अचीकरः	अचीकरतम्	अचीकरत	*म०*	अचीकरथाः	अचीकरेथाम्	अचीकरध्वम्
अचीकरम्	अचीकराव	अचीकराम	*उ०*	अचीकरे	अचीकरावहि	अचीकरामहि

(ख) सन्नन्त (इच्छार्थक) धातुएँ (देखो अभ्यास ३५)

(१०२) पिपठिष (पठ् + सन्) (पढ़ना चाहना) — (१०३) जिज्ञास (ज्ञा + सन्) (जिज्ञासा करना)

सूचना—परस्मै० में भू के तुल्य। *सूचना*—आत्मने० में सेव् के तुल्य।

परस्मैपद—लट् — **आत्मनेपद—लट्**

पेपठिषति	पिपठिषतः	पिपठिषन्ति	*प्र०*	जिज्ञासते	जिज्ञासेते	जिज्ञासन्ते
पेपठिषसि	पिपठिषथः	पिपठिषथ	*म०*	जिज्ञाससे	जिज्ञासेथे	जिज्ञासध्वे
पेपठिषामि	पिपठिषावः	पिपठिषामः	*उ०*	जिज्ञासे	जिज्ञासावहे	जिज्ञासामहे

लोट् — **लोट्**

पेपठिषतु	पिपठिषताम्	पिपठिषन्तु	*प्र०*	जिज्ञासताम्	जिज्ञासेताम्	जिज्ञासन्ताम्
पेपठिष	पिपठिषतम्	पिपठिषत	*म०*	-सस्व	-सेथाम्	-सध्वम्
पेपठिषाणि	पिपठिषाव	पिपठिषाम	*उ०*	-सै	-सावहै	-सामहै

लङ् — **लङ्**

अपिपठिषत्	अपिपठिषताम्	अपिपठिषन्	*प्र०*	अजिज्ञासत	-सेताम्	-सन्त
अपिपठिषः	अपिपठिषतम्	अपिपठिषत	*म०*	-सथाः	-सेथाम्	-सध्वम्
अपिपठिषम्	अपिपठिषाव	अपिपठिषाम	*उ०*	-से	-सावहि	-सामहि

विधिलिङ् — **विधिलिङ्**

पिपठिषेत्	पिपठिषेताम्	पिपठिषेयुः	*प्र०*	जिज्ञासेत	जिज्ञासेयाताम्	जिज्ञासेरन्
पिपठिषेः	पिपठिषेतम्	पिपठिषेत	*म०*	-सेथाः	-सेयाथाम्	-सेध्वम्
पिपठिषेयम्	पिपठिषेव	पिपठिषेम	*उ०*	-सेय	-सेवहि	-सेमहि

पिपठिषिष्यति	पिपठिषिष्यतः०	*लृट्*	जिज्ञासिष्यते	जिज्ञासिष्येते०
पिपठिषिता	पिपठिषितारौ०	*लुट्*	जिज्ञासिता	जिज्ञासितारौ०
पिपठिष्यात्	पिपठिष्यास्ताम्०	*आ०लिङ्*	जिज्ञासिषीष्ट	जिज्ञासिषीयास्ताम्०
अपिपठिषिष्यत्	अपिपठिषिष्यताम्०	*लृङ्*	अजिज्ञासिष्यत	अजिज्ञासिष्येताम्०

लिट् (पिपठिष + आम् + कृ, भू, अस्) लिट् (जिज्ञास + आम् + कृ, भू, अस्)

(क) पिपठिषांचकार - चकतुः आदि — (क) जिज्ञासांचक्रे-चक्राते आदि

(ख) पिपठिषांबभूव-बभूवतुः आदि — (ख) जिज्ञासांबभूव -बभूवतुः आदि

(ग) पिपठिषामास	-आसतुः	-आसुः	*प्र०*	(ग) जिज्ञासामास	-आसतुः	-आसुः
-आसिथ	-आसथुः	-आस	*म०*	-आसिथ	-आसथुः	-आस
-आस	-आसिव	-आसिम	*उ०*	-आस	-आसिव	-आसिम

लुङ् (५) — **लुङ् (५)**

अपिपठिषीत्	-ठिषिष्टाम्	-ठिषिषुः	*प्र०*	अजिज्ञासिष्ट	-सिषाताम्	-सिषत
-ठिषीः	-ठिषिष्टम्	-ठिषिष्ट	*म०*	-सिष्ठाः	-सिषाथाम्	-सिध्वम्
-ठिषिषम्	-ठिषिष्व	-ठिषिष्म	*उ०*	-सिषि	-सिष्वहि	-सिष्महि

(ग) भाव-कर्म-वाच्य

(१०४) कृ (करना) (दे० अ० ३१-३२) **(१०५) दा (देना)** (दे० अ० ३१-३२)

सूचना—भाववाच्य में प्र० पु० एक० ही रहेगा। *सूचना*—भाववाच्य में प्र० पु० एक० ही रहेगा।

कर्मवाच्य—लट् | **कर्मवाच्य—लट्**

क्रियते	क्रियेते	क्रियन्ते	*प्र०*	दीयते	दीयेते	दीयन्ते
क्रियसे	क्रियेथे	क्रियध्वे	*म०*	दीयसे	दीयेथे	दीयध्वे
क्रिये	क्रियावहे	क्रियामहे	*उ०*	दीये	दीयावहे	दीयामहे

लोट् | **लोट्**

क्रियताम्	क्रियेताम्	क्रियन्ताम्	*प्र०*	दीयताम्	दीयेताम्	दीयन्ताम्
क्रियस्व	क्रियेथाम्	क्रियध्वम्	*म०*	दीयस्व	दीयेथाम्	दीयध्वम्
क्रियै	क्रियावहै	क्रियामहै	*उ०*	दीयै	दीयावहै	दीयामहै

लङ् | **लङ्**

अक्रियत	अक्रियेताम्	अक्रियन्त	*प्र०*	अदीयत	अदीयेताम्	अदीयन्त
अक्रियथाः	अक्रियेथाम्	अक्रियध्वम्	*म०*	अदीयथाः	अदीयेथाम्	अदीयध्वम्
अक्रिये	अक्रियावहि	अक्रियामहि	*उ०*	अदीये	अदीयावहि	अदीयामहि

विधिलिङ् | **विधिलिङ्**

क्रियेत	क्रियेयाताम्	क्रियेरन्	*प्र०*	दीयेत	दीयेयाताम्	दीयेरन्
क्रियेथाः	क्रियेयाथाम्	क्रियेध्वम्	*म०*	दीयेथाः	दीयेयाथाम्	दीयेध्वम्
क्रियेय	क्रियेवहि	क्रियेमहि	*उ०*	दीयेय	दीयेवहि	दीयेमहि

करिष्यते,	कारिष्यते	(दोनों प्रकार से)	*लृट्०*	दास्यते,	दायिष्यते	(दोनों प्रकार से)
कर्ता,	कारिता	(,, ,,)	*लुट्*	दाता,	दायिता	(,, ,,)
कृषीष्ट,	कारिषीष्ट	(,, ,,)	*आ०लिङ्*	दासीष्ट,	दायिषीष्ट	(,, ,,)
अकरिष्यत,	अकारिष्यत	(,, ,,)	*लृङ्*	अदास्यत,	अदायिष्यत	(,, ,,)

लिट् | **लिट्**

चक्रे	चक्राते	चक्रिरे	*प्र०*	ददे	ददाते	ददिरे
चकृषे	चक्राथे	चकृढ्वे	*म०*	ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
चक्रे	चकृवहे	चकृमहे	*उ०*	ददे	ददिवहे	ददिमहे

लुङ् (५) | **लुङ् (५)**

अकारि	अकारिषाताम्	अकारिषत	*प्र०*	अदायि	अदायिषाताम्	अदायिषत
अकारिष्ठाः	अकारिषाथाम्	अकारिध्वम्	*म०*	अदायिष्ठाः	अदायिषाथाम्	अदायिध्वम्
अकारिषि	अकारिष्वहि	अकारिष्महि	*उ०*	अदायिषि	अदायिष्वहि	अदायिष्महि